राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन

संस्कृतोन्मेष

महाधिवेशन ५-७ मई '८६ जयपुर

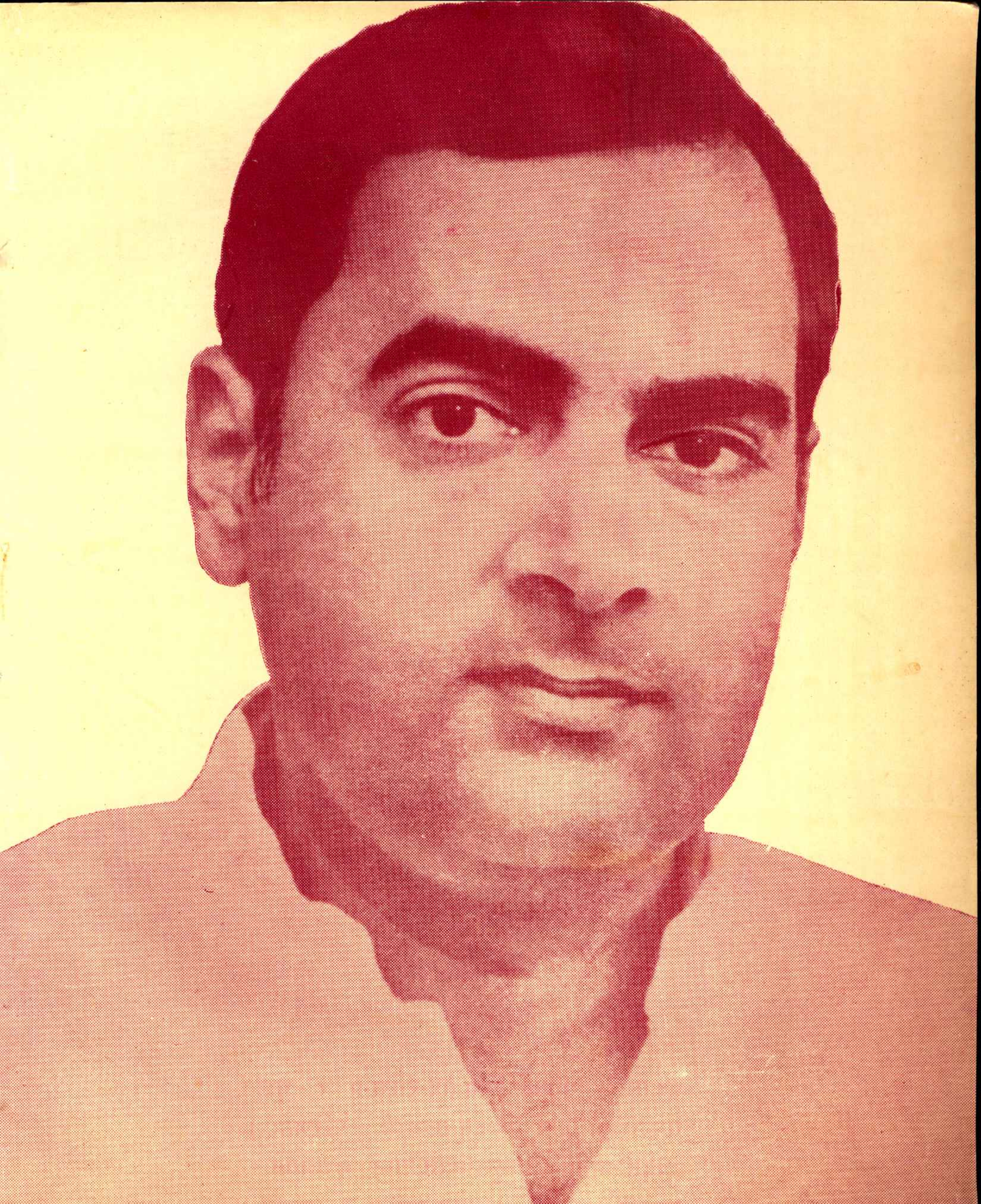

सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक राष्ट्रनेता : माननीय श्री राजीव गांधी

प्रकाशः सर्वेषां तरुण-तर-रश्मि-प्रकर - भूः
समुल्लासः पूर्णः स्वजन-सहयोगैः परिणतः ।
तपद्भीष्म-ग्रीष्माऽऽकुल-भरत-राष्ट्रं कुशलयन्
सुधीरो "राजीवः" सुखमय-समीरः स जयतात् ।।

—श्रीगिरिजाप्रसादः 'गिरीशः'

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन

चतुर्दश महाधिवेशन

5 – 7 मई, 1986

शाहपुरा बाग, आमेर रोड, जयपुर

संस्कृतोन्मेष

सम्पादक

श्रीकृष्ण शर्मा

नरोत्तम चतुर्वेदी

राधेश्याम कलावटिया

पं० श्यामसुन्दर चूलेट

जगदीश शर्मा वेदाचार्य

डॉ० हरि महर्षि

प्रबन्धसम्पादक

राजकुमार जोशी

राजस्थानसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनस्य

संस्कृतोन्मेषः

भारतीयसंस्कृतिसंस्कृतसम्पोषकानां संस्कृतविद्यानुरक्तानां विक्रमार्जितराज्यानां

राजस्थानप्रकर्षाणां मनस्विनां मुख्यमन्त्रिणां

श्रीमतां हरिदेवजोशीमहाभागानां

सेवायां

२०४३तमवैक्रमे श्रावणीपूर्णिमायां

(19 अगस्त, 1986)

संस्कृतदिवससमारोहावसरे

सादरं समर्प्यते

कमला
अध्यक्ष

मोतीलाल जोशी
महामंत्री

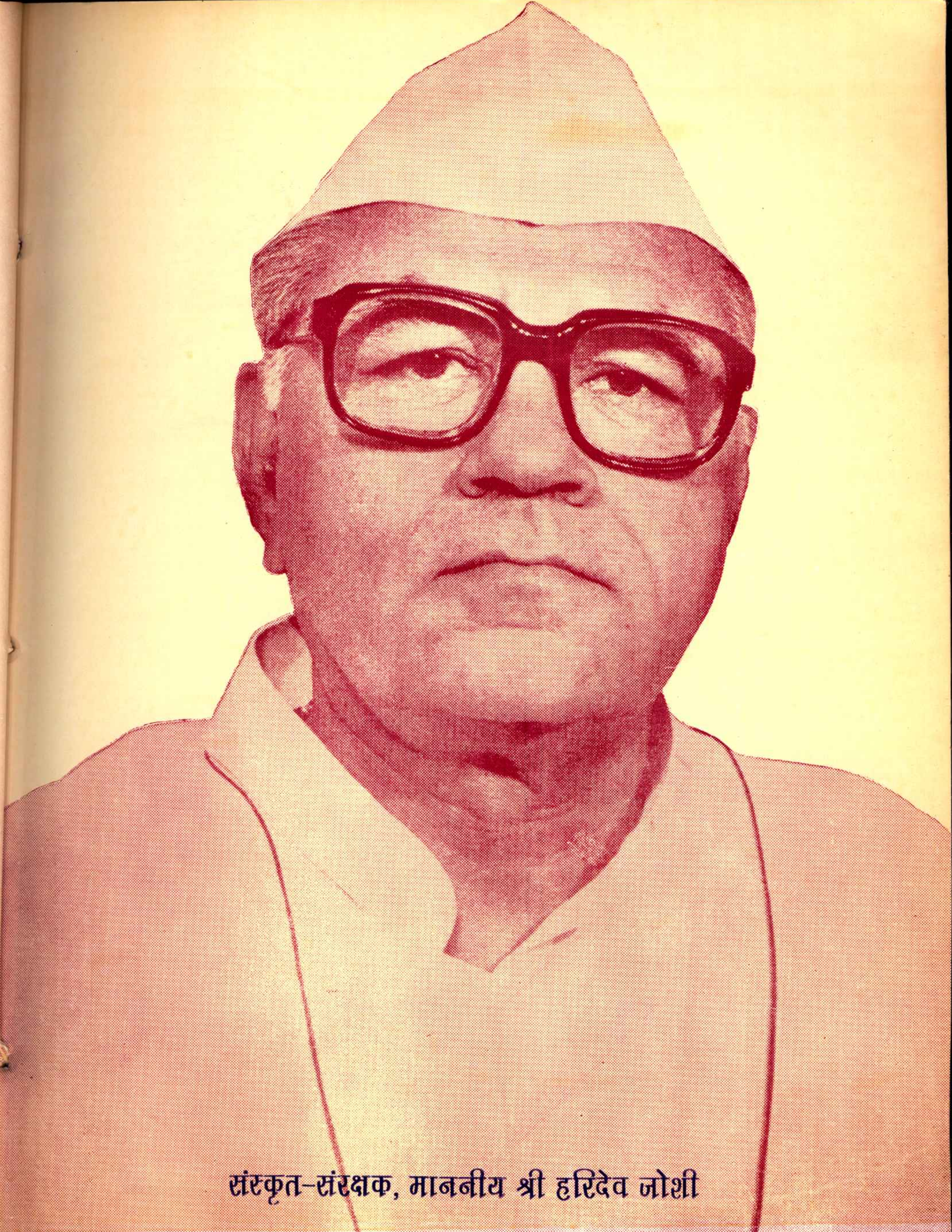

संस्कृत-संरक्षक, माननीय श्री हरिदेव जोशी

स्वकं राजस्थानं नयनमिव योऽवत्यनुदिनं
प्रकृत्या सन्मत्या सकल - जन - सौख्याय यतते ।
मुदा राष्ट्रैक्यं स्वैरसुरभिरधिकं यश्च मनुते
नृदेवो भूदेवो जगति "हरिदेवः" स जयतात् ॥

—श्रीगिरिजाप्रसादः 'गिरीशः'

सम्मेलन अतिथियों के लिए कुसुमाञ्जलि

श्रीमन् देवगिरां बुधैरभिनुतो सम्मेलने सांप्रतम्
मान्यो मन्त्रिपरम्परामणिगणैर्मालासुमेरूपमः ।
जोषं त्वन्नवनीतिरीतिपुरतः सर्वैः समालम्ब्यते
शीघ्रं संस्कृतिसंस्कृतोन्नतिपरं ते स्वागतं स्वागतम् ।।1।।

हर्षोद्रेकः प्रभवति पुरः श्रीहरिर्मुख्यदेवो
रिक्थस्वामी यदिह समभूत् संपदो देववाण्याः ।
देवा अस्याः समुदयविधौ बद्धभावाः क्षणेऽस्मिन्
वस्थु:श्रेष्ठप्रथमकुसुमैः स्वागतं व्याहरन्ति ।।2।।

हीराख्यं मणिमुज्ज्वलं मतिमतां मध्ये भवन्तं मुदा
राज्ये प्राज्यनिलिम्पवाङ्मयसुधासंप्लावनं प्रार्थ्यते ।
लालित्यं च जने जने प्रकटनं ह्यस्याः समृद्धिं परां
लब्धोऽयं समयस्तदुन्नतिकृते तत्स्वागतं स्वागतम् ।।3।।

जगदिदं कमलाकलितकान्त्यैव निखिलं काशते
मतिविवेकबलं बलं कमलां विना न हि शोभते ।
प्राप्य तत्सम्पर्कमिह मोदं जनाः परमं लभन्ते
संस्कृतस्योन्नतिकृते तत्स्वागतं समुदाऽभिधत्ते ।।4।।

यत्र श्रीर्निजवेश्मनीव सततं वासं विधत्ते नवं
या वैदुष्यपरम्पराभिरपरा वाराणसी मन्यते ।
श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दालीभवच्चेतसा
सेयं वो जयपत्तनीयधरणिर्ब्रूते सतां स्वागतम् ।।5।।

मान्याः सत्कविपुङ्गवाः नवनवप्रज्ञाप्रभावान्विताः
मुग्धा वा कवयोऽपि ये सुरगवीसेवारसोल्लासिनः
नानाशास्त्रविचारचारुचरिताः श्रद्धास्पदाःकोविदाः
सर्वेषां भवतां सतामिह मुदा सुस्वागतम् स्वागतम् ।।6।।

शिक्षारीतिविवेकनीतिनिपुणाः सच्छास्त्रपारङ्गताः
नैकज्ञानकलाविलासचतुराः सम्मेलने दूरतः
श्रीमन्तोऽप्यथ लोकनायकगणाः संप्राप्तवन्तोऽत्र ये
तेषां स्वागतमद्य सादरमिदं भावप्रसूनैर्नवैः ।।7।।

ये सेवारसचञ्चरीकचतुराः विद्वत्सु बद्धादराः
ये वा संस्कृतिसंस्कृतोन्नतिरताः दानेन कृत्येन वा ।
ये वा केवलमेव संस्कृतसुधानन्दप्रभावान्विताः
तेषां स्वागतमाचरामि सुहृदां स्वान्तेन शान्तेन वा ।।8।।

राधाकृष्णशास्त्री
धर्मशास्त्रविभागाध्यक्षः
महाराज-संस्कृत-कालेजः

आद्या पुण्याऽतिधन्या विविधरसमयी मूलभूता गिरां या
यस्यां कोषोऽतिपुष्टः सकल-बुध-जनैरादृतः सर्वसेव्यः ।
यस्यां ज्ञानं समस्तं निहितमिति यया मोदते सर्वलोकः
सेयं दिव्याऽतिदिव्या जगति विजयते शाश्वती देवभाषा ।।1।।

एधन्तां कवयो धियोऽपि विदुषां शास्त्रार्थ - निर्णायिका
दिव्या भारत-संस्कृतिश्च लभतां राष्ट्रे सदा गौरवम् ।
स्यात् साहित्य - समृद्धये सुरगवी - साहित्य-सम्मेलनं
सर्वे सन्तु जनाः स्वकार्य - निरता निर्मत्सराः साधवः ।।2।।

राजस्थानमिदं समस्तजगतामाद्यं सुधी - सेवितं
सत्साहित्य - समेधितं सुमनसां सेवारतं भारते ।
नाना - वेद - पुराण - पाठ - महितं तीर्थैः सुपुण्यैर्युतं
देवस्थानमिवाऽस्ति गौरवमयं सम्पूजितं मानवैः ।।3।।

जगद्गुरु-वृन्दावनदेवाचार्य-निर्देशाज्जयसिंहवर्मणाऽश्वमेध-मखोऽनुष्ठितः ।
सम्पूज्य प्रधानं वरदराजं ततोऽवाप्य वरं परशुरामद्वाराऽभिधे बलदेवः प्रतिष्ठितः ।।
पौण्डरीक-पर्वणीकर-महाशब्दे-देवर्षि गोस्वामि-प्रभृति-बुधवर्ग इहाऽधिष्ठितः
मन्त्र-तन्त्र-दर्शन-ज्यौतिष-धर्मशास्त्र-साहित्यानामतुलो ग्रन्थ-रत्न-निधिरत्र प्रतिष्ठितः ।।4।।

धी-यतेन्द्रियाणां श्रीनिम्बार्काचार्याणां विद्याजुषां दर्शनेन व्रजिनं विलीयते ।
लीयते मनः कविता-कामिनी-विलासेषु हीयते न सुखं, विदुषां प्रतिभा न मीयते ।।
मीयते शलाका-परीक्षासु मतिर्धीमतां ज्ञानं वेद-दर्शनादि-परिषत्सु दीयते ।
दीयते संवादः पत्रकार - संमेलनेषु मान्यानां समेषामिह स्वागतमभिधीयते ।।5।।

राजस्थान-संस्कृत-साहित्य-संमेलनस्य चतुर्दशाधिवेशनं सोल्लासं विधीयते ।
राजस्थान-राजधानी-गौरवाभिमानिनोऽस्य जयपत्तनस्याऽनेन महिमा कोऽपि चीयते ।।
माननीया श्रीमती कमला सभाध्यक्षा श्रीहीरालालदेवपुरा मुख्यातिथिर्गीयते ।
भ्रष्टाचार-शोषी सदा सदाचार-पोषी श्रीहरिदेवजोशी समुद्घाटको महीयते ।।6।।

रामगोपालशास्त्री
धर्मशास्त्राचार्यः
'भारती'-सह-संपादकः

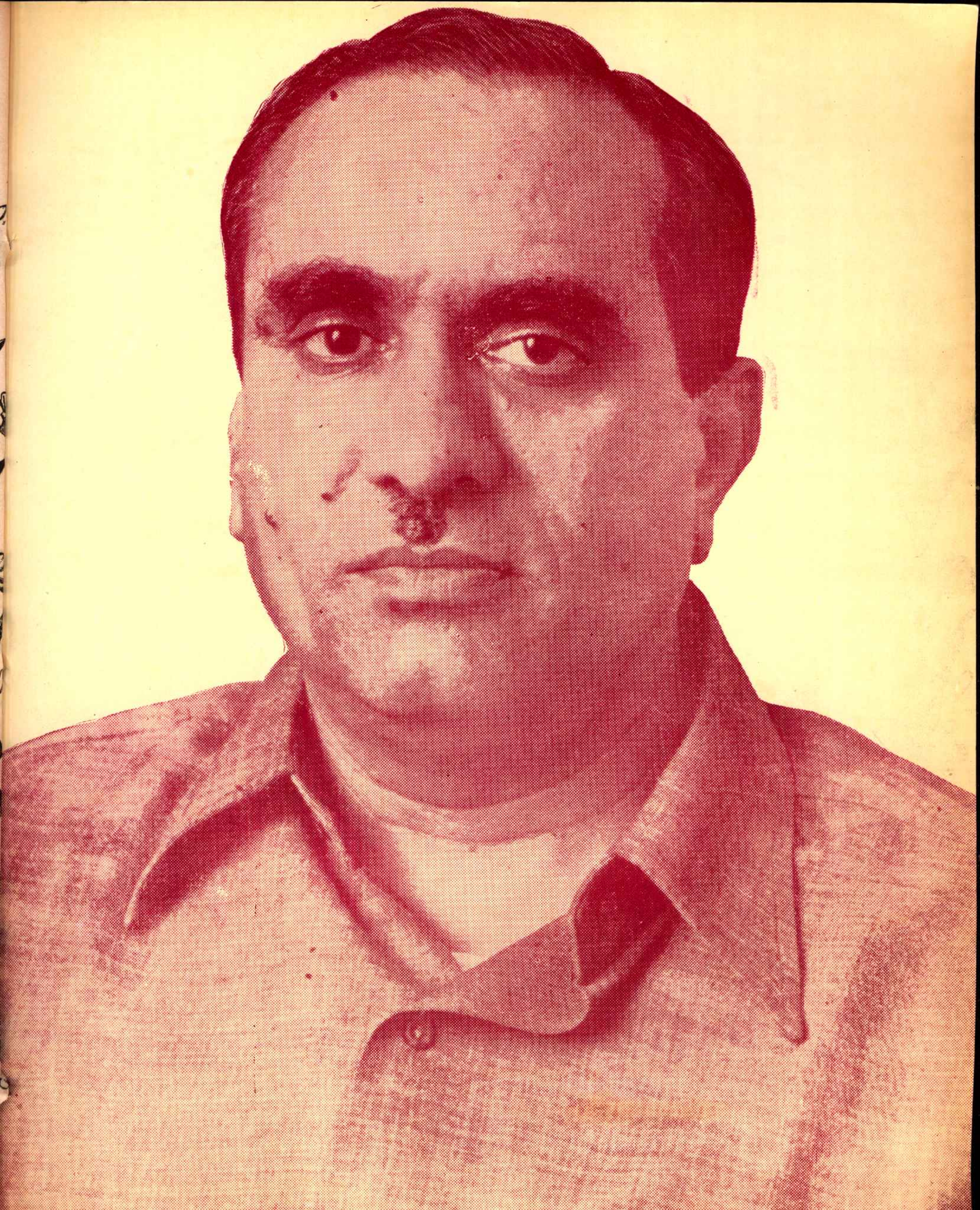

संस्कृत संपोषक, महाधिवेशन के उद्घाटनकर्त्ता, माननीय श्री हीरालाल देवपुरा

सदा शिक्षाऽऽयत्तं चरितमथ लोकस्य भवति
प्रधानः शिक्षायाः सुगुण इह हीरः स्वचरितैः ।
विशाल सन्नीत्या सुकृतमिव राज-स्थल-भुवाम्
असौ 'हीरालालः' सुभविक-रसालः स जयतात् ।।

—श्रीगिरिजाप्रसादः 'गिरीशः'

सम्पादकीय

हमारे सांस्कृतिक मूल्य और भारतीय संस्कृति का अमृतत्व विश्वजनीन मानवता के लिए अमूल्य निधि सिद्ध हुआ है। संस्कृत हमारी राष्ट्रीय चेतना और अस्मिता की संवाहक रही है। सामाजिक जागरण और भावात्मक एकता के लिए सुबोध सुगम माध्यम रही है। विश्व लोक शासन-प्रशासन-संरचना का वर्तमान स्वरूप संस्कृत की समसामयिक प्रासंगिकता से सम्पृक्त है। शासक, प्रशासक के चरित्र में प्रबुद्धि, बलबुद्धि, सत्यवादी, तत्ववेत्ता, उच्चादर्शी, दृढ़-निश्चयी, विवेकी सदाचारी होने के गुणों का होना आवश्यक माना गया है और चूँकि शासक के अनुरूप ही कर्मचारी तथा प्रजा का आचरण होना स्वाभाविक है, अतः श्रेष्ठ-शासक का प्रशासन तभी श्रेष्ठता लिए होगा जब कि उसका संचालन ठीक हो। संस्कृत-साहित्य ने इन गुणों को समादृत करते हुए अनेक ग्रन्थ समुपस्थित किए हैं।

बाह्य आक्रमण भी, शस्त्र पूजा के साथ शास्त्रों की उपासना तथा संस्कृति अध्ययन-अध्यापन की सशक्त परम्परा शासकों की आश्रयवृत्ति एवं श्रेष्ठिवर्ग का आर्थिक प्रोत्साहन ऊर्जा को कम नहीं कर पाए अपितु वाराणसी, दरभंगा तथा पुरी में संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना; कलकत्ता, इलाहाबाद, पटना होशियारपुर, पूना में संस्कृत शोध केन्द्रों की संस्थापना, राज्य एवं केन्द्र में संस्कृत परामर्शमण्डलों का अस्तित्वमान होना, आकाशवाणी से प्रातः एवं सायं संस्कृत में समाचारों का प्रसारण आधुनिक संस्कृत के संवर्द्धन के बहुमुखी आयामों की ओर इंगित करता है।

संस्कृत के गौरवमय अतीत परम्परागत शिक्षण, जन-मानस की अभिरुचि के फलस्वरूप जयपुर को द्वितीय काशी भी कहा जाता है। जयपुर नगर में अश्वमेध यज्ञ और यन्त्र-शाला जैसी ऐतिहासिक घटनाओं के कारण यहाँ देश के कौने-कौने से मूर्धन्य विद्वान् आए और बस गए। फलतः राजगुरु रत्नाकर पौण्डरीक ने 'जयसिंह कल्पद्रुम,' कवि कलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट ने 'ईश्वर विलास' तथा हरिकृष्ण मिश्र ने 'वैदिक वैष्णव सदाचार' तथा प्रभोवैदिकी पूजा आदि धर्मग्रन्थ तथा व्रजनाथ भट्ट ने पुष्टिमार्ग के दर्शन ग्रन्थ रचकर संस्कृत साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया। जयपुर नरेश के राजमहल स्थित 'पोथीखाना' जैसे स्वतन्त्र विभाग में पुण्डरीक विट्ठल, हरि-जीवन मिश्र एवं विश्वनाथ रानाडे जैसे शीर्षस्थ विद्वानों के उच्चस्तरीय अलभ्य ग्रन्थ संग्रहीत हैं।

राज्याश्रय प्राप्त कवि कवीश्वर कहलाते थे। कृष्णराम भट्ट ने 'जयपुर विलास', हरिवल्लभ भट्ट ने 'जयनगर पचरंग' और मथुरानाथ भट्ट ने 'जयपुर वैभव' ग्रन्थ लिखकर जयपुर को विश्वनगर बनाने में मदद की, सम्भवतः यह श्रेय और किसी नगर को नहीं जिस पर कि इतने मूल्यवान ग्रन्थ इतनी बड़ी मात्रा में लिखे गए हों।

1844 में संस्थापित महाराजा कॉलेज में संस्कृत शिक्षण की व्यवस्था अवश्य हुई थी पर 1852 में स्वतन्त्ररूप से स्थापित महाराज संस्कृत कॉलेज भारत के तीन प्राचीनतम कॉलेजों में परिगणित किया जाता है।

वेद की वैज्ञानिक व्याख्या कर मधुसूदन ओझा ने एक नई परम्परा का श्रीगणेश किया जिनके शिष्य महा-महोपाध्याय पं० गिरधरशर्मा चतुर्वेदी भारत विख्यात संस्कृत के विद्वान् हुए हैं, और इनके शिष्य पं० मोतीलाल शास्त्री ने न केवल 'मानवाश्रम' की स्थापना की अपितु वेद विद्याग्रन्थ लिख कर जयपुर की ओर संस्कृत के विद्वानों का ध्यानाकर्षित किया।

आयुर्वेद के उद्‌भट विद्वान् श्यामलाल वैद्य, गोपीनाथ शर्मा, नरहरि भट्ट, मुकुन्ददेव को आज कौन नहीं जानता?

शिवराम शर्मा, मधुसूदन ओझा, गिरधर शर्मा, घूटर झा, पट्टाभिराम शास्त्री और गोविन्दनारायण शर्मा ने दर्शन, मीमांसा, न्यायादि के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की।

दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, केदारनाथ शर्मा, भवदत्त, विन्ध्याचल प्रसाद, बद्रीनारायणजी को ज्यौतिष विद्वान् के रूप में समादृत किया जाता है जबकि गोकुलचन्द्र भावन तथा केदारनाथ शर्मा को यन्त्रालय-विज्ञ माना जाता रहा है।

संस्कृत साहित्य शास्त्र के क्षेत्र में श्रीकृष्णशास्त्री द्राविड़ मथुरानाथ भट्ट, नन्दकिशोर नामावल, हरिशास्त्री सदैव ही सुपरिचय के पात्र रहे हैं।

सोमदेव गुलेरी और वृद्धिचन्द शास्त्री धर्मशास्त्र के मनीषी विद्वान् माने जाते रहे हैं।

आज भी राजस्थान विश्वविद्यालय, शाहपुरा बाग स्थित राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ एवं प्राच्य विद्यापीठ दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, दादू महाविद्यालय, लाल भवन का जैन पुस्तकालय, ब्रह्मपुरी स्थित सरस्वती विद्यापीठ गंगवाल पार्क स्थित 'रामचरण व्याकुल प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान' नाहरगढ़ रोड स्थित व्यास बालाबक्ष शोध संस्थान, राजस्थान संस्कृत अकादमी, संस्कृत प्रचार परिषद् (भारतभवन) फिल्म कॉलोनो स्थित निखिल भाषा विद्यापीठ, संस्कृत सवर्द्धन के कार्य में अहर्निश संलग्न है। संस्कृत शिक्षा के व्यापक प्रसार प्रचार के लिए एक सशक्त संगठन के रूप में राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन गत चार दशक से कार्यरत है।

14 वें सम्मेलन में महाधिवेशन के जयपुर आयोजन पर बिहार, व उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, कर्नाटक तथा तमिलनाडु राज्यों से पचास से अधिक मूर्धन्य मनीषी विद्वानों तथा एक हजार सम्भागियों ने व्याकरण परिषद्, दर्शन परिषद्, ज्यौतिष परिषद्, वेद परिषद्, साहित्य परिषद्, शलाका परिषद्, शास्त्रार्थ परिषद्, अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकार सम्मेलन, संस्कृत शिक्षा परिषदों में सक्रिय भाग लेकर सफल बनाया। यही नहीं संस्कृत के अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में वाराणसी, दिल्ली, पटियाला, मुजफ्फरनगर, मेरठ, लखनऊ, जयपुर, सीकर, उदयपुर, बीकानेर, अजमेर, जोधपुर से प्रसिद्ध कवियों ने भाग लेकर संस्कृत काव्य के बहुआयामी एवं समसामयिक विषयों पर तीखी एवं पैनी रचनाओं का रसास्वादन कराया। इसी अवसर पर आयोजित वैदिक यज्ञ एवं प्रदर्शनी में वैदिक यन्त्र, वैदिक चार्ट्स, मूर्धन्य विद्वानों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व से परिचय कराया गया।

सम्मेलन में संस्कृत संवर्द्धन, शिक्षण-प्रशिक्षण, प्रचार, प्रसार के लिए तैंतीस प्रस्ताव पारित कर केन्द्रीय एवं राज्य सरकार से उन्हें त्वरित गति से क्रियान्वित करने का अनुरोध किया गया। सम्मेलन की सफलता के लिए महामहिम राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, माननीय लोकसभाध्यक्ष, विभिन्न राज्यों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्रियों तथा संस्कृत के मूर्धन्य मनीषियों ने शुभकामना संदेश सम्प्रेषित किए। जयपुर महाधिवेशन की ऐतिहासिक सफलता संस्कृत के विकास प्रसार और प्रचार के लिए आकाशदीप की तरह संस्कृतकर्मियों के लिए मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का अजस्र स्रोत सिद्ध होगा। सम्मेलन की सफलता के लिए राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय श्री हरिदेव जोशी एवं शिक्षामंत्री माननीय श्री हीरालाल देवपुरा, माननीय श्री रत्नप्रकाश अग्रवाल, कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय, पं० नरोत्तमलाल जोशी की उपस्थिति संस्कृत विद्वानों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर रही थी।

शासन सचिव, शिक्षा विभाग, संस्कृत शिक्षा निदेशालय, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर नगर परिषद्, सम्बद्ध विभागों तथा संस्कृतानुरागियों ने अपूर्व योगदान कर महाधिवेशन को सफल बनाने में मदद की। स्वागतमंत्री श्री श्रीराम गोटेवाले के अपने व्यक्तिगत प्रभाव से महाधिवेशन हेतु अर्थ व्यवस्था के लिये प्रभावी भूमिका निर्वाहित की तथा सक्रिय रुचि लेकर संस्कृत विद्वानों के स्वागत सत्कार में तल्लीनता बरती।

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की अध्यक्ष एवं राजस्थान सरकार की राजस्वमंत्री माननीया श्रीमती कमला ने आद्योपान्त सक्रिय रूप से मार्गदर्शन कर अधिवेशन को जीवन्त बनाया।

महाधिवेशन के सूत्रधार एवं सम्मेलन के महामंत्री पं० मोतीलाल जोशी द्वारा किया गया अहर्निश परिश्रम एवं सगठनात्मक कौशल स्तुत्य है।

महाधिवेशन की समस्त कार्यवाही को समावेशित करते हुए 'संस्कृतोन्मेष' आप जैसे सुधि पाठकों को प्रस्तुत करते हुए हमें अतीव हर्ष है।

श्रीकृष्ण शर्मा

श्रावणी पूर्णिमा, '86
जयपुर

●●●●

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षा, माननीया श्रीमती कमला

गुणौघै रत्नौघैर्जलधितनयेवाति विमला
धृतिर्वा कल्याणी नृपनय-विधौ सत्त्व-सबला ।
अवन्तो राजस्वं नियतिरिव सिद्धान्त-कुशला
धरापुत्री सेयं भवतु भुवि भव्याय "कमला" ॥

—श्रीगिरिजाप्रसादः 'गिरीशः'

संस्कृत संवर्धन और राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन

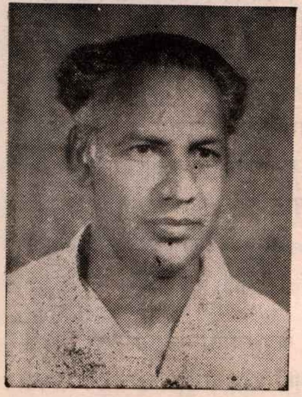

मोतीलाल जोशी
महामंत्री

सम्मेलन का उद्भव

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन राजस्थान का सबसे पुराना और प्रमुख संगठन हैं, जिसका जन्म देश की आज़ादी के साथ हुआ।

सम्मेलन का उद्देश्य संस्कृत शिक्षा के प्रचार-प्रसार तथा संस्कृत भाषा एवं साहित्य को राजकीय योजनाओं और कार्यक्रमों में समुचित स्थान दिलाना और इसमें विद्यमान वैज्ञानिक एवं तात्विक पक्ष को जन-जन तक पहुँचाना है।

सम्मेलन का गतिशील नेतृत्व

सम्मेलन के स्वरूप, उसकी व्यापकता और साधना की परम्परा गौरवपूर्ण रही है। सम्मेलन को सदैव चोटी के विद्वानों एवं प्रमुख जननायकों का नेतृत्व प्राप्त होना, इसके गौरव और प्रकर्ष का जीवन्त प्रमाण है। महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा, रामधारी शास्त्री, डॉ० मथुरालाल शर्मा, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, विद्याधर शास्त्री, नरोत्तमलाल जोशी, देवीशंकर तिवाड़ी, लक्ष्मीलाल जोशी और मोहनलाल सुखाड़िया का नाम इस प्रसंग में उल्लेखनीय है।

स्वतंत्र संस्कृत विभाग

वस्तुतः इस सम्मेलन के माध्यम से ही राजस्थान की संस्कृत शिक्षा के पुनरुद्धार और विकास का सूत्रपात हुआ। सम्मेलन ने सर्वप्रथम कक्षा 6 से 8 में संस्कृत विषय का समावेश, सामान्य शिक्षा के विद्यालय, महाविद्यालयों में संस्कृत विषय प्रारम्भ करने का प्रयास से प्रारंभ किया। बाद में संस्कृत विकास के लिये संस्कृत समिति और उसकी अनुशंसाओं को लागू कराने में पहल की।

1958 के उदयपुर अधिवेशन में राजस्थान के मुख्यमंत्री सुखाड़िया साहब द्वारा स्वतंत्र संस्कृत विभाग की स्थापना के साथ अन्यान्य सिफारिशों को स्वीकृति दी गई।

वेतन श्रृंखला में वृद्धि

1961 के नवम अजमेर अधिवेशन में संस्कृत महाविद्यालयों के प्राचार्यों, आचार्यों, उपनिरीक्षकों एवं अध्यापकों की वेतन श्रृङ्खला में वृद्धि की घोषणा हुई।

समान वेतनमान

1965 के भीलवाड़ा अधिवेशन पर कक्षा 9 व 10 को पढ़ाने वाले संस्कृत विद्यालयों के शिक्षकों को 1–3–65 से समान वेतनमान देने व छात्रवृत्ति दरों की समानता घोषित हुई।

1966 में मनोहरपुर अधिवेशन के अवसर पर प्रत्येक जिला मुख्यालय के एक तथा उपखण्ड अधिकारी क्षेत्र के न्यूनतम दो उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत वैकल्पिक विषय प्रारम्भ करने, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में संस्कृत अध्यापकों की नियुक्ति के लिये प्रवेशिका / उपाध्याय योग्यता प्राप्त को ही नियुक्त करने तथा स्नातकोत्तर शिक्षा शास्त्री प्रशिक्षण की सम्मेलन द्वारा प्रस्तुत योजना को स्वीकारने की घोषणा हुई।

सम्मेलन के उद्देश्यों एवं विषयों के प्रति समर्पित सदस्य तेरहवें मनोहरपुर महाधिवेशन से अब तक दो दशक के इतिहास पर दृष्टिपात करेंगे तो एक नया चित्र उनके सामने होगा :—

● यह अवश्य है कि जहाँ हमारी विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं, वहाँ लम्बे समय तक अधिवेशन न करा पाने की न्यूनता भी है, किन्तु हमारे कदमइस संगठन को मजबूत और गतिशील बनाने तथा नयी शक्ति देने में आगे बढ़ते रहे हैं।

● यह कहना अतिरंजन नहीं होगा कि समूचे देश में शायद ही कोई प्रादेशिक संस्कृत सम्मेलन इसकी समानता रखता हो। आज इसके पास राजधानी में निजी भवन है, छात्रावास का स्वतंत्र भवन है। स्नातकोत्तर प्रशिक्षण तथा शास्त्री, आचार्य शिक्षण के दो महाविद्यालय हैं। इसकी परिसम्पत्ति दो दशक में दस लाख से अधिक आंकी जानी चाहिये। इसका स्थायी कोष डेढ़ लाख से अधिक है। 500 के करीब तो इसके आजीवन सदस्य हैं।

● आलोच्य अवधि में सम्मेलन ने आत्मनिर्भरता के साथ विभागीय शास्त्री, आचार्य परीक्षाओं को प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय से संस्कृत निदेशालय में तथा बाद में संस्कृत संकाय बनवाकर राजस्थान विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित कराने की सफलता अर्जित की है।

● शिक्षण में गुणात्मकता की प्रतिस्पर्धा के लिए सम्मेलन शास्त्री, आचार्य और शिक्षाशास्त्री में सर्वप्रथम आने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष राजस्थान विश्वविद्यालय के माध्यम से स्थायी स्वर्णपदक प्रदान कर रहा है जो मोहनलाल सुखाड़िया, राव धीरसिंह तथा लक्ष्मीलाल जोशी स्वर्णपदक के नाम से जाने जाते हैं।

● विश्वविद्यालय में व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद और दर्शन के लिये विश्वविद्यालय स्वर्णपदकों का प्रावधान कराया गया है तथा कुलाधिपति पदक संस्कृत संकाय को भी रोटेशन से देने का परिनियमों में संशोधन हुआ है।

● अन्य शिक्षण विभागों की तरह परम्परागत संस्कृत शिक्षण का विभाग खोलने की माँग विश्वविद्यालय ने स्वीकार ली है जो राज्य सरकार के पास प्रशासनिक स्वीकृति के लिये विचाराधीन है।

● महिला वर्ष में संस्कृत के क्षेत्र में भी बालिका विद्यालयों की स्थापना के कठिन प्रयास किये गये। आज राजस्थान में संस्कृत बालिका विद्यालयों की संख्या एक दर्जन से अधिक है।

● सम्मेलन के प्रस्तावानुसार उत्तम कोटि के संस्कृत कॉलेजों को 90 प्रतिशत अनुदान स्वीकृत हुआ। 1974 में वर्गीकरण के फलस्वरूप समान स्तर की संस्कृत संस्थाओं में अनुदान प्रतिशत की जो विषमता कायम हो गई थी, वह विसंगति समाप्त करायी गई है।

● सामान्य शिक्षा के समानान्तर संस्कृत शिक्षा के वेतनमानों के सुधार की 1965 से चली आ रही माँग माननीय शिक्षामंत्री देवपुरा साहब तथा पूर्व शिक्षामंत्री, वर्तमान राजस्वमंत्री श्रीमती कमला जी के अथक प्रयासों से विद्यालय स्तर तक आंशिक रूप से पूर्ण हो सकी है, किन्तु प्रवेशिका और उपाध्याय के प्रधानों के वेतनमान विद्यालय स्तर पर भी एक स्टेज नीचे हैं, संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य और प्रोफेसर का भी वेतनमान माध्यमिक और उच्चमाध्यमिक प्रधानों के समतुल्य है, तथा इसी प्रकार व्याख्याता कॉलेज का एक स्तर नीचा है।

महाधिवेशन का आयोजन

सम्मेलन का त्रयोदश महाधिवेशन जो मनोहरपुर में हुआ उस आयोजन को समीक्षकों ने अभूतपूर्व आयोजन के रूप में परिभाषित किया था – वह माननीया श्रीमती कमला जी के आशीर्वाद का ही प्रतिफल था। 20 वर्ष के अन्तराल के बाद प्रस्तुत चतुर्दश महाधिवेशन भी इनकी शक्ति और सामर्थ्य के बलबूते पर ही सम्भव हो सका है। नये राज्य में संस्कृत विद्यालयों की स्थापना, नये विषय खोलना तथा क्रमोन्नतिका का सूत्रपात्र हुआ है। ऐसे ही अन्यान्य मूलभूत और प्रामाणिक तथ्य हैं– जिनकी पृष्ठभूमि में कमलाजी का नाम संस्कृत का पर्याय बन गया है। इस जयपुर महाधिवेशन की आयोजना में माननीय श्री श्रीराम गोटेवाला की अभिरुचि एवं सक्रिय भूमिका ने हमें साहस दिया। वे सम्मेलन के और संस्कृत के पक्षधर के रूप में हमारे अभिनन्दनीय है।

सबल नेतृत्व

सुखाड़ियाजी जैसे महान् व्यक्ति ने सम्मेलन को लगातार 16 वर्ष तक सभापति के रूप में जो सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया उसी के परिणामस्वरूप यह अनेक उपलब्धियाँ अर्जित कर सका है–इसी परम्परा में सम्मेलन को एक ऐसे व्यक्तित्व का सीधा नेतृत्व प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिनकी संस्कृत के विकास के लिए नैसर्गिक निष्ठा है, संकल्प और चिन्तन की प्रखरता है। इसी प्रकर्ष ने राजस्थान के संस्कृत जगत् के भावी जीवन के स्वागत में अपने जो पदचिह्न अंकित किये हैं वे अमृतमय, अमिट और मंजिल की सही दिशा में बढ़ने वाले रहे हैं।

नई शिक्षा नीति

प्रधानमंत्री माननीय श्री राजीवजी गाँधी द्वारा प्रवर्तित नई शिक्षा नीति में मानवता और चारित्रिक उत्थान के लिये जो प्राथमिकताएँ रेखांकित की गयी हैं उनसे संस्कृत के प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथों का मूल्यांकन आवश्यक हो गया है; तभी भारतीय संस्कृति की पूर्णता संस्कृत से सिद्ध हो सकेगी संस्कृत के नवोन्मेष क्षणों में परम विदुषी माननीया कमलाजी द्वारा सम्मेलन का नेतृत्व ग्रहण करना संस्कृत के लिये, संस्कृतकर्मियों के लिये और संस्कृत के विद्वान्, विचारक, चिंतक और मनीषियों के लिये सदा सर्वदा संबल का काम करेगा।

संस्कृत शोध संस्थान की स्थापना

सच पूछा जाय तो माननीया कमला जी की पहल पर संस्कृत शोध संस्थान परियोजना का प्रारूपण जितना प्रभावोत्पादक एवं सुव्यवस्थित हुवा है अब उसका मूर्तरूप भी उतना ही सुगठित आधार पर अनुकरणीय बन सकेगा ऐसी संस्कृत जगत् की मनोकामना है।

विकास में गतिरोध

राजस्थान में संस्कृत शिक्षा की स्थिति के विकास में निरन्तरता का अभाव रहा है और उसका कारण राज और समाज के लिये संस्कृत की उपयोगिता और आवश्यकता को न समझ पाना रहा है। राष्ट्रीय एकता, अनुशासन, साम्प्रदायिक सद्भाव कुछ ऐसी मूलभूत जरुरतें हैं, जिनमें संस्कृत ही प्रकाश देती है और यह हमेशा-हमेशा प्रकाश देती रहेगी।

मुख्यमंत्री जी से आकांक्षा

हमारे मुख्यमंत्री माननीय श्री हरिदेव जोशी राजस्थान मंत्रिमण्डल में प्रभावशाली मंत्री के रूप में रहते आए हैं। सुखाड़ियाजी जैसे दूरदर्शी एवं साहित्य, कला और संस्कृति के प्रेमी ने नए राजस्थान का निर्माण किया है और वह निर्माण निरन्तर बना रहे इसके लिए जोशी जी का अथक प्रयास रहा है। उस परिपक्व अनुभव के आधार पर राजस्थान के नागरिक एवं संस्कृतानुरागी यह आशा करते हैं कि माननीय जोशी साहब के नेतृत्व में संस्कृत शिक्षा अनवरत पुष्पित एवं फलित होगी।

●

परामर्श

पं० देवीशंकर तिवाड़ी

पं० लक्ष्मीलाल जोशी

पं० नरोत्तमलाल जोशी

पं० गोविन्दनारायण शर्मा

श्री राजेन्द्रशंकर भट्ट

डॉ० पी० एल० भार्गव

श्री श्रीराम गोटेवाला

डॉ० आर० एन० चतुर्वेदी

श्री जीवानन्द आनन्द

वैद्य रामप्रकाश स्वामी

म० मुरलीमनोहरशरण

पं० प्यारेमोहन शर्मा

पं० मोतीलाल जोशी

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन

त्रिदिवसीय जयपुर महाधिवेशन

अभिनन्दन :
माननीया श्रीमती कमला द्वारा

अधिवेशन के मुख्य अतिथि और राजस्थान के शिक्षा मन्त्री माननीय श्री देवपुरा जी। संस्कृत साहित्य सम्मेलन के अवसर पर देश और प्रदेश के विभिन्न कोनों से आये उद्भट विद्वान् संस्कृत शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत संस्थाएँ और उनके पदाधिकारी, सम्मेलन के पदाधिकारी तथा विशेष रूप से निमन्त्रित महानुभावों और सज्जनों !

आज इस संस्कृत साहित्य सम्मेलन के लिए यह बहुत गौरव का विषय है और संस्कृत जगत् के लिए यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि संस्कृत के महत्व को उजागर करने के लिए, संस्कृत शिक्षा के सम्बन्ध में चर्चा करने के लिए, संस्कृत के इस रूप को समाज, सरकार व जन-जन तक पहुँचाने के लिए और इसके मूल में जो तत्व-दर्शन छिपा हुआ है, उसे हमारे कर्णधारों तक पहुँचाने के लिए हमारे देश के राज्य के सभी विद्वज्जन व मनीषी महानुभाव इस त्रिदिवसीय चर्चा में उपस्थित हुए हैं। मैं आप सभी का हृदय से बहुत-बहुत अभिनन्दन करती हूँ, स्वागत करती हूँ और आभार मानती हूँ कि आप सबने इस विषय में अपनी रुचि, अपनी लगन और अपना मार्गदर्शन देने के लिए हमको आभारित किया। विशेष तौर से मैं माननीय देवपुराजी का आभार प्रकट करना चाहती हूँ कि वे इस सम्मेलन को अपना आशीर्वाद देने के लिए और शिक्षा विभाग तथा संस्कृत विभाग के माध्यम से इसे और सक्रिय करने की दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए यहाँ पधारे।

मैं इस मौके पर राष्ट्र के विभिन्न कोनों से आये विद्वानों का स्वागत करती हूँ और देश के कर्णधारों से प्राप्त मार्गदर्शन, आशीर्वाद और संदेशों के लिए अपनी ओर से, सम्मेलन की ओर से तथा प्रदेश के संस्कृत जगत् की ओर से आभार व्यक्त करती हूँ।

स्वागत :
श्रीराम गोटेवाला द्वारा

महाधिवेशन के स्वागत मन्त्री श्रीराम गोटेवाला ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि नई शिक्षा नीति में संस्कृत को पर्याप्त स्थान नहीं दिया जाना, बिना आत्मा वाले शरीर के समान है। उन्होंने राज्य सरकार से संस्कृत के विकास कार्यों के लिए शोध संस्थान की स्थापना किए जाने का अनुरोध किया।

उद्घाटन :
माननीय श्री हीरालाल देवपुरा द्वारा

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष जी, अध्यक्षा जी, उपकुलपति जी एवं विद्वत्जन !

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन में मुझे याद किया, उसके लिए मैं आप सबका आभारी हूँ। मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ। सौभाग्यशाली; इसलिए कि मैं अपने आपको इससे जुड़ा पाता हूँ। सस्कृत हमसे, हमारे जीवन से आज से नहीं वरन् आदिकाल से जुड़ी हुई है। संस्कृत के लिए आज जितना कहना पड़ रहा है. वस्तुतः इसे हम अपना दुर्भाग्य मानते हैं, क्योंकि संस्कृत को हम जीवन पद्धति मानते हैं। उसे केवल भाषा के रूप में नहीं, अपितु संस्कृति के रूप में देखते हैं, पर आज संस्कृति हमसे दूर लगने लगी है, आज उसके लिए चिन्तन करना पड़ रहा है। कमला जी जब अपनी बात कह रही थीं, तो उन्होंने भी संस्कृत को जीवन-पद्धति माना, मात्र भाषा के रूप में नहीं; वह हमारी अपनी संस्कृति है, जीवन-पद्धति है। समय के अन्तराल से ऐसी परिस्थितियाँ आईं। हम

संस्कृत या संस्कृति को भूल गए और हमने अपने आपको ही विदेशियों को सौंप दिया। भूली बातों को आज याद करना पड़ रहा है। वातावरण इतनी तेज गति से बदल रहा है कि हम कदम से कदम मिलाकर चलने में अपने को असमर्थ पाते हैं।

श्री देवपुरा ने कहा कि वैज्ञानिक युग है, नई शोध अन्वेषण के साथ कुदरत में छिपी वस्तुएँ उजागर हो रही हैं। जब उसको हम अपने ग्रन्थों में, साहित्य में देखते हैं तो प्रकृति के साथ जुड़े नजर आते हैं। सच पूछा जाय तो हम ही 'मूल' हैं; हम जन्मदाता हैं पर 'वे' हम पर हावी हो गए हैं, इस स्थिति से ऊपर उठना है। दुर्भाग्य है हमारा, हम पाश्चात्य रंग में रंग गए, वही रंग हम पर छाया हुआ है। हमारी संस्कृति पिछड़ी हुई कही जा रही है। विज्ञान के युग में अग्रगामी स्थिति बननी चाहिए, पर हम दिन-ब-दिन पीछे की ओर चलते चले जाते हैं। क्यों?

21वीं सदी में कदम से कदम मिलाकर

श्री देवपुरा ने कहा कि 21वीं सदी में दुनियाँ में कदम से कदम मिलाकर चलना है। उसके पीछे एक दृष्टिकोण है, सारी दुनियाँ के साथ अपने आपको आगे बढ़ाने का। आगे देखते हुए हमें आगे बढ़ना है।

नई शिक्षा नीति का जिक्र करते हुए श्री देवपुरा ने कहा कि वह मानवता और चारित्रिक उन्नयन पर बल देती है। वह संस्कृति को आधार मानकर चल रही है। हम अखिल भारतीय सम्मेलन में बैठे हैं, जहाँ देश के कोने-कोने से संस्कृत के विद्वान् आए हैं, परिवर्तन की बात सोचते हैं? वर्तमान शिक्षा नीति में क्या दोष है? मेरे खयाल से दोष केवल है तो इतना भर कि इसने हमें विद्वान् अवश्य बनाया है पर मानव नहीं बनाया। अगर यह कहें कि मानव को मानवता से दूर हटा दिया, इसीलिए आज सारी चिन्ताएँ हैं? आवश्यकता है बालक को ढालने की, मानव के रूप में उभर कर सामने लाने की। नैतिकता और संस्कृति के साथ जोड़कर शिक्षा नीति को अब क्रियान्वित किया जाना है। "संस्कृत" भाषा नहीं "संस्कृति" है। एक जीती जागती संस्कृति, इसीलिए नई शिक्षा नीति में नैतिकता और मानवता पर बल दिया गया है।

विद्व्जनों की भाषा

श्री देवपुरा ने कहा कि हमें व्यावहारिक बनना है, संस्कृत बोलचाल की भाषा बन जाए, यह मेरे खयाल से फिलहाल संभव नहीं। संस्कृत विद्वज्जनों की भाषा है और वह विद्वज्जनों की ही रहेगी। संस्कृत जितनी शुद्ध रूप में दक्षिण में बोली व समझी जाती है, उतनी उत्तर में नहीं। संस्कृत साहित्य में उदात्त जीवन और चारित्रिक उन्नयन के असंख्य उदाहरण भरे पड़े हैं। रामायण घटी है या नहीं? कोई कहता है कि वह काल्पनिक है। वाल्मीकी ने रामायण की कल्पना की। राम का सारा चरित्र चित्रण किया है, बालपन से अन्त समय तक। मित्र-मित्र से, मित्र-दुश्मन से, भाई-भाई के प्रति, पति-पत्नी के प्रति कैसा व्यवहार करे? यह हमें सिर्फ संस्कृत के माध्यम से ही पता चल पाता है। राम रावण की कल्पना कौन सी संस्कृति करती है? अतः संस्कृत में छिपे जीवन चरित्रों को जन-जन तक पहुँचाना है। अब भाषा की समस्या आ सकती है? लोगों तक पहुँचना है तो संस्कृत से अनुवाद करके पहुँचना चाहिये। विश्व मानव बनना है तो अनुवाद करके समझना होगा। भौतिक युग में मन अशान्त रहता है, पर हमारा दुर्भाग्य है कि हम अपनी विद्या को सीमित दृष्टिकोण के कारण किसी को नहीं देते। विद्या का तो कायदा है कि इसे जितना खर्च किया जाएगा, वह उतनी ही बढ़ेगी, पर हमने उल्टा किया। हमने सोचा मेरा ज्ञान दूसरे तक क्यों पहुँचे? ज्ञान किसी की धरोहर नहीं, किसी की सम्पत्ति नहीं, आप कहीं भी हों, ज्ञान ही आपको अमर कर सकता है। अतः संस्कृत को बाँटो, खर्चो। तभी संस्कृत का फैलाव होगा, संस्कृत का फैलाव करिये।

संस्कृत संवर्द्धन : शासकीय प्रयास

श्री देवपुरा ने बताया कि सुखाड़िया जी ने संस्कृत प्रचार-प्रसार के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये। संस्कृत को शिक्षा क्रम में ऐच्छिक विषय के रूप में प्रविष्ट किया गया है। राजस्थान में स्वतन्त्र रूप से संस्कृत निदेशालय है। संस्कृत पाठशालाएँ खोली गई हैं। संस्कृत को विश्वविद्यालय की डिग्री तक जोड़ा है। संस्कृत में पढ़ने वालों के साथ भी समान स्तर पर व्यवहार किया गया है। हमने राजस्थान में संस्कृत अकादमी बनाई है।

कमला जी ने शोध संस्थान की परियोजना बनाई है, वह तो बनना ही चाहिये। राजस्थान सरकार शोध संस्थान के लिए हर सम्भव सहायता करेगी, माना कि सरकार के सामने प्राथमिकताएँ होती है, फिर भी हम यथासाध्य सहायता करेंगे।

मुझे इस जयपुर महाधिवेशन का उद्घाटन करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता है।

धन्यवाद! जयहिन्द।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन : मानीनीया श्रीमती कमला द्वारा

संस्कृत, हमारा जीवन है

मेरी मान्यता है कि जितनी हमारी श्रुतियाँ हैं और जो हमारे देश का धरातल है उसको समझें, सोचें, अपनी योजनाओं में रखें, उसके लिए ज्यादा से ज्यादा प्रावधान कर सकें, इस तरह के सामूहिक प्रयत्न करने के लिए मैंने आप सबको तकलीफ दी है। मैं समझती हूँ कि इसमें दो राय नहीं है कि आज संस्कृत भाषा समाज में चाहे जिस छोटे से छोटे रूप में हो, संस्कृत का अपना उजाला है और अपना प्रकाश है, जो सभी के हृदयों में प्रेरणा फूँकता है, किसी को अनजाने में और किसी को ज्ञान के माध्यम से, तो किसी को संस्कारों के माध्यम से। किसी न किसी रूप में देश का हर इन्सान, हर नागरिक इसके साथ जुड़ा हुआ है। इसे हम ज्ञान के साथ, चेतना के साथ समझ कर, राज और समाज को समझाएँ कि संस्कृत तुम्हारा जीवन है, संस्कृत तुम्हारी धरोहर है। इसने अपने को जीवन के साथ जोड़ा है। आज संसार और समाज बहुत सारी समस्याओं से पीड़ित है, उनका निराकरण संस्कृत में निहित है।

प्रकाम्य अभिव्यक्ति का माध्यम

भाषा, सभ्यता और संस्कृति को अलग-अलग स्वरूप प्रदान करती है। तमाम देशों की अपनी अलग-अलग सभ्यता और संस्कृति है। अलग-अलग देश अपनी अलग-अलग भाषाओं में काम करते हैं और उसीमें अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। भाषा इन्सान के भावों की, विचारों की, क्रियाकलापों की, कुछ संदेशों की, कुछ उच्चारण कर सकने की उद्विग्नता और अविघ्नता की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। अपनी बात को कहने के लिए अनादिकाल से मनुष्य सुनियोजित ढंग से काम करता है। लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए वह भाषा का आश्रय लेता है। सब अपनी-अपनी बातको समझाने के लिए भाषा को माध्यमरूप में काम लेते हैं। इससे अपना हँसना भी बताते हैं, रोना भी बताते हैं, सब कुछ प्रकट करते हैं।

चिरन्तन-भाषा

हमारी भाषा और दूसरी भाषाओं में यदि कोई फर्क है तो वह यह है कि हमारी भाषा 'संस्कृत' अभिव्यक्ति का बहुत सशक्त माध्यम है। तात्विक विश्लेषण के आधार पर बनी भाषा है। हमारे अंतरिक्ष में अनादि नाद के साथ जो स्वर लहरी गूँजती है, शब्दों का तन्त्र जो काम करता है, उसके साथ हमारा मनोयोग, हमारे प्रकट होने की अभिलाषा, हमारे उच्चारण की विधाएँ हैं, व हमारे शब्द की तन्त्रिकायें है वह चिरन्तन है, शाश्वत हैं, सत्य है, व्योम में गूँजती हैं। उसके साथ हम जो नैसर्गिक रूप से प्रकट करते हैं वह और ब्रह्माण्ड में गूँजता अनादि नाद, इन्सान में प्रकट करने की अभिलाषा के साथ जुड़ा हुआ है, इसीलिए संस्कृत शाश्वत है, सत्य है, चिरन्तन है, हमारे विचारों को आधार देनेवाली है।

संस्कृत के तपस्वी-निर्माता

संस्कृत को बनाने वाले बहुत बड़े पढ़े-लिखे विद्वान् नहीं थे, लिखने-पढ़ने में बहुत कुशल लोग नहीं थे, लेकिन उन लोगों ने अपनी तपस्या और साधना के साथ युग-युगों तक इस सृष्टि के तमाम क्रियाकलापों में अपने आपको समाहित किया। इसको वे हवा के साथ, सूर्य की रोशनी के साथ, इसके तानेबाने के साथ, इसके झरने की बहती मन्द-मन्द जल धारा के साथ और इन्सान के साथ जुड़े पेड़-पौधे, पत्थर, पहाड़ तथा उनमें से निकलने वाली ध्वनियों के साथ जिन्हें कि आम आदमी नहीं सुन सकता, हमारे ऋषि-महर्षियों ने अपनी साधना से प्रकृति के वास्तविक रूप से जोड़ा अपने आप को व्यापकरूप और प्रकृति में जितनी भी शक्तियाँ हैं—चाहे सोने की हो, चाहे पीने की हो, चाहे हवा की हो, चाहे पृथ्वी की हो, हर किसी चीज की शक्ति का भाषा के साथ उन्होंने इस प्रकार नैसर्गिक रूप से जोड़ा कि प्रकृति और पुरुष में जो शक्तियाँ समाहित हैं, उन्हें समाज को आगे बढ़ाने के लिये, समाज को स्वस्थ रखने के लिये, कल्याण के लिये, उसे सुखी और उन्नतिशील बनाने के लिये काम में लिया जा सके। प्रकृति में अपने आपको खोकर और प्रकृति के ऊपर खड़े होकर, देखकर सारो संस्कृत भाषा को संरचना की। आप कल्पना कीजिये कि एक भाषा जो सिर्फ लाइब्रेरी में बैठ कर तैयार की गई, और एक भाषा वह तैयार की गई जो मनुष्य और युगों-युगों की तपस्या के बाद प्रकृति, विद्वान् पुरुष और इस सारी संस्कृति का अध्ययन करके, देखकर के, अपनी जरूरत के अनुसार जिसे उभारा गया। यद्यपि आज संस्कृत भाषा हमारी अभिव्यक्ति की भाषा नहीं है, अपितु संस्कृत भाषा के अन्दर इस सृष्टि के सारे क्रियाकलाप हैं, इसकी क्रिया, प्रतिक्रिया और अन्तः क्रियाओं में क्या-क्या संघर्ष होता है? कैसे शक्ति पैदा होती है? उस शक्ति से क्या-क्या किया जा सकता है और उस शक्ति का मनुष्य की देह से क्या ताल्लुक है?

मनुष्य की देह में क्या-क्या आयोजन किए गए हैं? और उसने कितने बारीक तन्त्रों के साथ बड़ी से बड़ी साधना से इन सब चीजों का इस भाषा में विश्लेषण किया गया है। संस्कृत देव-वाणी है, ऋषि-मुनियों ने इसको बनाया है। इसलिए कि यह संसार का मर्म है, प्रकृति का जीवन है। संस्कृत भाषा अपने आप में संसार की सर्वोत्कृष्ट भाषा है। इससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता। इस भाषा के साथ इस देश की संस्कृति, सभ्यता जुड़ी हुई है। इसमें अपार आधार है, मानव के जीवन का। इसने देश की संस्कृति के लिए जीने का, मरने का दर्शन दिया। मानव किस प्रकार अपने जीवन को सुखी बनाए, देह को स्वस्थ बनाए, और मानव कल्याण के लिए कार्य करे। यह सारा का सारा जितना संस्कृत साहित्य में है, उतना और किसी में नहीं। सारा संस्कृत साहित्य इसी से भरा पड़ा है। एक तरफ उन्होंने इन्सान को प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना माना। भगवान ने सृष्टि में जो रचना की है, अगर कोई उसमें कृति है तो वह अनुपम और श्रेष्ठतम कृति मनुष्य ही है। मनुष्य के मस्तिष्क में, इस मानस में, इस कुण्डली में, इस देह में, ब्रह्माण्ड का एक तरह से उसने स्वरूप उंडेला है। मनुष्य उन तमाम को साधना के जरिए, अपनी मेहनत के जरिए किस तरह उन शक्तियों को उजागर करे, उन्हें प्रस्फुटित करे जिससे कि उसे प्रकृति जो देना चाहती है, उसे वह पकड़ सके।

सृष्टि में सब कुछ है। सृष्टि से लेने का ज्ञान हमारे संस्कृत साहित्य में भरा पड़ा है। चाहे कैमिस्ट्री की बात हो, फिजिक्स की बात हो, साइन्स की बात हो या अस्त्र-शस्त्र बनाने की बात हो। इस संसार और समाज में जितने भी ज्ञान और विज्ञान को बढ़ाने के तरीके हैं, उन सबके सूत्र, उन सबके ज्ञान तत्व एवं उन सबके मार्गदर्शन संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों में मौजूद हैं। कालान्तर में एक ऐसा समय आया जब उसे पीछे हटना पड़ा, नीचे जाना पड़ा और जब हमारा देश आजाद हुआ, हमें खुशी है कि हमारी भारत सरकार ने और राज्य सरकारों ने भी इसके पुनरुत्थान के लिए, इसको अपना सही स्थान दिलाने के लिए बहुत से प्रयत्न किए और हम काफी कुछ आगे उठकर आने की कोशिश में लगे। अभी बहुत कुछ कमियाँ हैं। बहुत कुछ करना है, बहुत कुछ सुनना है। अपनी आकांक्षाओं को उजागर किया है और हम कह सकते हैं कि हमें अपना स्थान मिलना चाहिए पर यह हमारा लक्ष्य नहीं है। हम कहते हैं कि समाज और राज यह समझे कि संस्कृत हमारा जीवन है, संस्कृत हमारी संस्कृति है, संस्कृत हमारा आधार है, संस्कृत हमारा उन्नत मस्तक है और संस्कृत समाज का, दुनियां का, मानव कल्याण का एक स्रोत है। जिस दिन हमारा समाज और हमारी सरकार यह मान जाए, उस दिन हमारी उपलब्धि बहुत कुछ हो सकेगी। इसलिए इस सम्मेलन के माध्यम से जहाँ एक ओर हम सरकार से कुछ कहेंगे, उससे पहले हम अपने आपसे कहना चाहते हैं कि संस्कृत में जितनी अनोखी धरोहर ज्ञान-विज्ञान की है, उसे आज उजागर करना चाहिए, प्रकाश में लाना चाहिए। अनुवाद कर लोगों को आज की भाषा में पहुँचाना चाहिये। संस्कृत जो मूलभूत है और संस्कृत के साथ जो ज्ञान-विज्ञान जुड़ा है, जो अथाह सागर है, उसमें डुबकी लगाकर, उन रत्नों को निकाल कर संसार के सामने रखने का यह बहुत बड़ा ज्वलन्त प्रश्न है? इस दिशा में हम बहुत कुछ नहीं कर सके हैं।

मेरा संस्थाओं से, विद्वज्जनों से करबद्ध निवेदन है कि जितने हमारे संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ हैं, उनका छोटा-छोटा सरल रूप में सार करके लोगों को उनकी भाषा में पहुँचाएँ तो जो एक निराधार धारणा कुछ लोगों में पनपी है कि यह धर्म विशेष के ग्रन्थ हैं या किसी एक जाति विशेष के ग्रन्थ हैं वह समाप्त हो सके। सच तो यह है कि संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में न किसी जाति विशेष का उल्लेख है, न किसी धर्म विशेष का उल्लेख है बल्कि उनमें सृष्टि का, सृष्टि के रचियता का और जो उसकी श्रेष्ठतम कृति इन्सान है, उस का उल्लेख है।

एक-डेढ़ महिना लगाकर राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान का एक मसौदा सातवीं पंचवर्षीय योजना के लिए हमने तैयार किया। उसके सम्बन्ध में सरकार का अपना मन बना और उन्होंने कहा कि हम इसके लिये प्रावधान करने का विचार करेंगे। इस पूरे मसौदे में संस्कृत के शोध के लिए ग्रन्थों के संकलन के लिए, अनुवाद के लिए और संस्कृत संवर्धन के लिए जो काम आगे होना है उसके लिए सुविधाएँ करनी हैं, उसका हमने उसमें प्रावधान किया है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि आप इस मसौदे पर चिन्तन करें-परिवर्तन का परिवर्द्धन का, संशोधन का सुझाव हमें दें। वस्तुतः संस्कृत को अगर जीवन्त रखना है तो, या संस्कृत में समाविष्ट ज्ञान को हमें जन-जन तक पहुँचाना है तो जरूरी है कि शोध संस्थान जैसी संस्था की स्थापना की जाए।

मैं एक बार पुनः माननीय देवपुरा जी और सम्मेलन में पधारे सभी विद्वज्जनों का हृदय से अभिनन्दन एवं आभार प्रकट करती हूँ।

सम्मेलन के महामन्त्री पं० मोतीलाल जोशी ने राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यवाहक सभापति डॉ० पी. एल. भार्गव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

उद्‌बोधन :
माननीय श्री हरिदेव जोशी द्वारा

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी ने कहा है कि राज्य में संस्कृत के विकास में पैसे की कमी को बाधा नहीं बनने दिया जाएगा परन्तु हम सब को भी इसके विकास के लिये समर्पित होकर काम करना होगा। श्री जोशी ने कहा कि राजस्थान देश का पहला राज्य है जहाँ संस्कृत को जन-जन तक पहुँचाये जाने के लिये संस्कृत का पृथक् निदेशालय एवं संस्कृत अकादमी की स्थापना की गयी है। त्रिभाषा फार्मूले में भी राजस्थान में इसे प्रमुख स्थान दिया गया है। आपने कहा कि जयपुर को संस्कृत विद्वानों का जनकी होने का गौरव प्राप्त है, जिसे बनाये रखना है।

श्री जोशी ने कहा कि अनेक संस्कृतियाँ इस संसार में आई और विलीन हो गई लेकिन हमारी हस्ती नहीं मिटी। संस्कृत के कारण ही हमारी संस्कृति बनी हुई है। भारत के प्राचीन वाङ्मय को समझने की आकाँक्षा है तो संस्कृत को समझना आवश्यक है। श्री जोशी ने कहा कि उपनिवेशवादी समय में संस्कृत को मातृ-भाषा माना जाता था लेकिन परिवर्तन के दौर के साथ-साथ यह सिद्ध हो गया है कि संस्कृत में मौलिक चिन्तन की पर्याप्त क्षमता है। उन्होंने कहा कि दुनियाँ में संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का जितना अनुवाद हुआ है उतना अन्य किसी भी भाषा के ग्रन्थों का नहीं हुआ।

श्री जोशी ने कहा कि हमें दूसरों से नहीं अपनों से अपनी चीज को समझने का प्रयास करना चाहिये। हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले 'वसुधैव कुटुम्बकम् के' माध्यम से संसार में शांति का सन्देश दिया था जो उस समय सत्य था और आज भी सत्य है, हमें अपनी संस्कृति के इस तथ्य को उजागर करना है।

सम्मेलन की ओर से विशिष्ट सेवाओं पर तीन संस्कृत विद्वानों, पं. जगदीश शर्मा, पं. नवल किशोर काँकर एवँ डॉ. मण्डन मिश्र को शाल और श्रीफल से सम्मानित किया गया। जोशी ने इस अवसर पर सम्मेलन की ओर से प्रकाशित चार पुस्तकों का भी विमोचन किया। इनमें शंकरलाल शर्मा, फतेहपुर की "शशिप्रभा" राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय मनोहरपुर के प्राचार्य मोतीलाल जोशी की, "प्रबोध-चन्द्रिका" व प्रो० राजेन्द्र मिश्र, वेद विभागाध्यक्ष, महाराज संस्कृत कॉलेज जयपुर की "आपस्तम्बीयोद्वाह मोक्षगम" तथा आचार्य उमेश शास्त्री का "बिल्वमंगलम्" (उपन्यास) है।

सम्मेलन के महामन्त्री पं. श्री मोतीलाल जोशी ने महाधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका मुख्यमन्त्री को भेंट की।

समापन :
माननीय श्री हीरालाल देवपुरा द्वारा

माननीया श्रीमती कमला जी, राज० विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० अग्रवाल साहब, उपस्थित विद्वज्जन, देवियों एवं सज्जनों!

वास्तव में मुझे बहुत प्रसन्नता है कि सम्मेलन में जो परिषदें बनीं उन परिषदों ने संस्कृत के विकास की दृष्टि से, संस्कृत के शोध की दृष्टि से और संस्कृत में छुपे हुये विज्ञान को विश्व के सामने लाने की दृष्टि से जो सुझाव, जो सिफारशें की गई और साथ ही साथ संस्कृत में जो सेवारत स्कूल, कॉलेज चाहे विश्वविद्यालय हो उनके साथ जो कुछ असंगतियाँ रही उससे मुझे लगा यह सम्मेलन केवल आमतौर पर जो दूसरे साहित्य सम्मेलन है उस प्रकार का सम्मेलन न होकर एक बिजनैसमैन-सम्मेलन हुआ। जिस सम्मेलन में कुछ ठोस कार्य कर, कुछ ठोस सुझाव अपने स्वयं के लिये भी, राज्य सरकार के लिये भी और शिक्षण जगत् में संस्कृत को बढ़ावा देने के लिये किये जायें या फिर यू.जी. सी. के लिये हो चाहे विश्वविद्यालय के लिये हो, कुछ ठोस सुझाव दिये; यदि यह परम्परा इसी प्रकार के सम्मेलनों के तहत चलती रही तो मैं मानता हूँ यह सम्मेलन सफल सम्मेलन होगा और हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में निश्चित रूप से सफल हो सकेगें।

माँग नहीं, समर्पण का भाव

श्री देवपुरा ने कहा कि माँगने से कोई चीज मिलती नहीं लेकिन उसके पीछे अगर कार्य की शक्ति है तो कोई कारण नहीं कि उसकी माँग को स्वीकार नहीं किया जाये। जिस किसी को भी स्वीकार करना हो स्वीकार न किया जाय और

उसको सफलता न मिले तो आपका यह निश्चय कि संस्कृत के लिये आप केवल माँग ही नहीं रहे हैं वरन् स्वयं अपने आपको समर्पित करते हुये, इसको आगे बढ़ाने के लिये कृत संकल्प हैं। यह सबसे बड़ी बात और सबसे बड़ी सफलता की बात मैं इस सम्मेलन के लिए मानता हूँ। जहाँ तक राज्य सरकार का सवाल है और जो दायित्व आपने इसमें राज्य सरकार पर दिया है, मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूँ कि इसको बढ़ावा देने के लिये पूरे विवरण के साथ बता चुका हूँ इसको मैं दुहराने की आवश्यकता नहीं समझता हूँ। जहाँ तक विसंगतियों का सवाल है सम्बन्धित व्यक्ति इस बात को जानते होंगे कि इन विसंगतियों को दूर करने में शायद उनको ख्याल हो तो, सबसे पहला काम हमने ही शुरू किया था और विसंगति तभी से दूर होना प्रारम्भ हुई। यह बहुत बड़ी विसंगतियाँ थी और ऐसा माना जाता था कि आयुर्वेद और संस्कृत के लोग जैसे दूसरी पंक्ति के लोग हों लेकिन जब से यह प्रश्न हमारे सामने आया तो हमने कहा कि यह बात सही नहीं है जो जिसके समकक्ष हों उनको उसी रूप में माना जाना चाहिये। आयुर्वेद के वैद्यों को डॉक्टरों से हम क्यों किसी कदर कम मानें उनकी शिक्षा, उनका सारा कार्यक्रम उनका सारा पाठ्यक्रम उसी के अनुरूप है उतना ही समय उनको देना पड़ता है तो क्यों उनको किसी तरह कम माना जाय। संस्कृत के हमारे प्राध्यापक, अध्यापक और व्याख्याता जो भी हों वे अगर उसी के समकक्ष हैं, उसी हिसाब से है तो फिर क्यों उनको कम माना जाय इसीलिये उस समय मैंने आपसे कहा था कि संस्कृत की हमारी उपाधियाँ पहले संस्कृत के अनुरूप उसी हिसाब से होती थी आचार्य, शास्त्री, उपाध्याय आदि लेकिन आज कुछ मान्यतायें ऐसी बन गयी हैं कि समकक्ष हमको ना मिले तो इनको यूनिवर्सिटी के समकक्ष लाने के लिये, यूनिवर्सिटी में जो उपाधियाँ दी जाती हैं उस हिसाब से इन उपाधियों को भी स्वीकार किया गया, ताकि लोगों में इस बात का अहसासहो कि ये सब समकक्ष हैं। आज तक जोउपाधियाँ हम देते थे विद्वद्जन तो जानते हैं,वेउपाधियाँ विश्वविद्यालय से दी जाने वाली उपाधियों के समकक्ष हैं, बराबर हैं लेकिन फिर भी आप लोग ऐसे समझते थे शायद इनमें कोई भेद है। तब हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने फैसला किया, केवल इसलिये ऐसा फैसला किया कि आम लोगों की निगाह में संस्कृत का भी वही स्थान बने जो स्थान संस्कृत अपने आप में माँगती है।

जिस रूप में, जिस भाषा में और जिस प्रकार से लोग उसको ग्राह्य करते हैं उसी रूप में उसी भाषा में और उसी अनुरूप हमको उनके पास पहुँचाना पड़ेगा तब तो उनको वह स्वीकार्य होगा और अगर हमने केवल यह 'दिस इक्वस टु दिस' यह समान है इसके और इसी तरह से हम चलते रहे बताते रहे तो संभवतया आम लोग इस बात को नहीं समझें।

मैं आप के इस समापन के समारोह में उपस्थित नहीं होता तो मैं खुद में अपने आप में कुछ कमी महसूस करता।

मन्त्री महोदय ने इस अवसर पर शास्त्रार्थ परिषद् में संस्कृत के विद्वान् ज्ञानदत्त पॉण्डेय और कन्हैयालाल शास्त्री तथा शलाका परीक्षा में प्रथम रहे विद्यामार्त्तण्ड पं० श्री घनश्यामचन्द्र शास्त्री–लक्ष्मणगढ़ को चेरिटेबिल ट्रस्ट बम्बई की ओर से स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया गया।

सम्मेलन की स्वागताध्यक्ष और राजस्वमन्त्री माननीया श्रीमती कमला ने कहा कि देश की एकता अखण्डता नैतिकता और जीवन दर्शन के लिए संस्कृत को प्रोत्साहन देना होगा और इस प्रकार त्रिदिवसीय महाधिवेशन सानन्द सम्पन्न हुआ।

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र

नई दिल्ली
29 अप्रैल, 1986

संस्कृत के प्रसार हेतु 'सम्मेलन' का महत्वपूर्ण योगदान

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चौदहवें अधिवेशन के अवसर पर मैं अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ। इस संस्थान ने संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषाओं में से है। यह हमारे देश की अधिकांश भाषाओं की जननी है। इसका साहित्य भण्डार बहुत ही विपुल और विस्तृत है। विभिन्न विषयों पर इसमें अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गए हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रतियाँ भी अनगिनत हैं, जो आधुनिक ढंग से प्रकाशित नहीं हो पाई हैं। हमारी संस्कृति का आधार भी इसी साहित्य में मिलता है। मुझे प्रसन्नता होती है जब मैं सुनता हूँ कि संस्कृत के प्रचार और प्रसार के लिए कोई प्रबन्ध किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण आशा है कि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा परस्पर सद्भावना को ध्यान में रखते हुए राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार में निरन्तर अपना योगदान देता रहेगा।

मैं इस अधिवेशन की सफलता की कामना करता हुँ।

जैलसिंह

(जैलसिंह)

सत्यमेव जयते

उप राष्ट्रपति, भारत

नई दिल्ली
अप्रैल 29, 1986

संस्कृत के अध्ययन से एकता एवं नैतिकता में वृद्धि

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की चौदहवीं बैठक का इस मई में आयोजन हो रहा है। संस्कृत के अध्ययन से भारतवर्ष में एकता, नैतिकता और संस्कृति के स्तर में वृद्धि होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।

सम्मेलन की परिपूर्ण सफलता के लिए मैं उसके आयोजकों को अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

आर वेंकटरामन

(आर. वेंकटरामन)

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री, भारत

नई दिल्ली
1 मई, 1986

राजस्थान में संस्कृत का सराहनीय कार्य

भाषा के रूप में संस्कृत केवल संचार और अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं रही है। एक परिपक्व और समृद्ध भाषा के रूप में संस्कृत प्राचीन काल से ही हमारे दर्शन व संस्कृति की उन्नति में सहायक रही है। विदेशों में संस्कृत के प्रसार और प्रभाव के साथ-साथ हमारी संस्कृति अन्य देशों तक पहुँची।

आज भी जबकि यह व्यवहार में इतनी प्रचलित नहीं है, इसके द्वारा हिन्दी सहित भारत की बहुत सी प्रमुख भाषाओं की समृद्धि हो रही है। मुझे प्रसन्नता है कि संस्कृत के अध्ययन और उपयोग में राजस्थान की सरकारी एवं स्वयंसेवी संगठनों ने सराहनीय कार्य किया है।

5 मई को जयपुर में हो रहे राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के 14 वें अधिवेशन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(राजीव गाँधी)

सत्यमेव जयते

नई दिल्ली
30 अप्रैल, 1986

डॉ0 बलराम जाखड़
अध्यक्ष, लोक सभा

संस्कृत विश्व की आदिकालीन भाषा

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन अपना 14वाँ अधिवेशन जयपुर में आयोजित कर रहा है।

देव वाणी संस्कृत विश्व की आदिकालीन भाषा है जिसमें हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की और संसार को सभ्यता तथा संस्कृति का संदेश दिया। संस्कृत का महत्व, आधुनिक काल में इस कारण और भी अधिक बढ़ जाता है कि इसी के माध्यम से ऋषि-मुनियों ने राष्ट्रीय भावना, चरित्र निर्माण, देशभक्ति, एकता, कला एवं साहित्य की भावना जन-जन में प्रस्फुटित की थी किन्तु दुःख है कि इन्हीं से आज का मानव विमुख होता जा रहा है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि संस्कृत भाषा के अध्ययन तथा अध्यापन से सभी देशवासियों का मनोबल ऊँचा उठेगा और वे सद्कार्यों में अपना मन लगाकर देश के उत्थान में अपना योगदान दे सकेंगे।

अधिवेशन की सफलता के लिए आयोजकों को मेरी शुभकामनाएँ।

बलराम जाखड़

(बलराम जाखड़)

सत्यमेव जयते
GOVERNOR OF MADHYA PRADESH

RAJ BHAVAN
BHOPAL - 462003
May 2, 1986

The Key to our Rich & Glorious Cultural Heritage

Sanskrit holds the key to our rich and glorious cultural heritage and only those who have a fairly good knowledge of the past can contribute substantially to the building of the future. This emphasises the importance of the study of Sanskrit in the present day context and I extend my good wishes to the Rajasthan Sanskrit Sahitya Sammelan at Jaipur with the hope that the Sammelan will address itself to the problems in the promotion of Sanskrit as a live language.

K. M. Chandy
Governor, Madhya Pradesh

सत्यमेव जयते
GOVERNOR OF WEST BENGAL

RAJ BHAVAN
CALCUTTA

5 मई, 1986

प्राचीन तथा अर्वाचीन के समन्वय पर संस्कृत भाषा का भविष्य निर्भर

यह निर्विवाद सत्य है कि भारत की वर्तमान संस्कृति एक मिलीजुली संस्कृति है । परन्तु साथ में ही यह भी निर्विवाद है कि विभिन्न धाराओं का न्यूनाधिक समन्वय या समुच्चय तो हुआ है परन्तु भारत की मुख्य विशाल संस्कृति की धारा में दूसरी छोटी-मोटी धाराएँ अपना रंग-रूप आज भी अलग लिए साथ बह रही हैं ।

प्रथम तीनों वेदों एवं तत्सम्बन्धी ब्राह्मण ग्रन्थों और अरण्यकों की दिशा एक जैसी थी । अथर्व वेद ने उसमें कुछ परिवर्तन किये । उपनिषदों में वेदान्तसार समुच्चित हुआ । परन्तु उनमें भी कहीं-कहीं भिन्न प्रकार की ध्वनि निकलती है । स्वयं भगवत् गीता भी जिसे अन्तिम उपनिषद् कहना चाहिए, अन्य उपनिषदों से गुणात्मक रूप में भिन्न हैं । बौद्ध तथा जैन तत्व-ज्ञानियों के प्रभाव, शताब्दियों तक, भिन्न दिशा में पड़ते रहे और आज उनका भी भारतीय संस्कृति में अपना स्थान बना हुआ है ।

परन्तु एक निष्कर्ष स्पष्ट एवं निर्विवाद है अर्थात् भारतीय संस्कृति एवं भारतीय तत्व-ज्ञान भौतिक जीवन को नकारता नहीं है । जीवन का स्वीकार एवं उसका उत्तरोत्तर विकास हमारे तत्वज्ञान का वास्तविक स्वरूप सिद्ध होता है ।

भारतीय संस्कृति का अर्वाचीन जगत में सबसे महत्वपूर्ण योगदान पारिवारिक स्नेह सहयोग तथा सामाजिक एकसूत्रता में है । मुझे आशा करनी चाहिए कि संस्कृत वाङ्मय के ज्ञाता और प्रेमी प्राचीन तथा अर्वाचीन के समन्वय के आधार पर, संस्कृत भाषा के भविष्य की कल्पना करेंगे । उसी दिशा में वास्तविक प्रयास यशस्वी होगा ।

उमाशंकर दीक्षित

सत्यमेव जयते
B. N. PANDE
GOVERNOR, ORISSA

RAJ BHAVAN
BHUBANESWAR-751008
26-4-1986

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राजस्थान सरकार संस्कृत भाषा को वही गौरव और प्रतिष्ठा प्रदान करना चाहती है जो प्राचीन भारत में उसे प्राप्त थी। संस्कृत की श्रेष्ठता को आज यूरोप और अमरीका के विद्वान भी मुक्तकंठ से स्वीकार करते हैं।

सन् 1786 ईस्वी में रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल का उद्घाटन करते हुए उसके अध्यक्ष सर विलियम जोन्स ने अपने उद्बोधन भाषण में कहा था :

"संस्कृत भाषा की प्राचीनता निर्विवाद है। उसका रूप और संरचना अद्भुत है। वह ग्रीक भाषा की तुलना में कहीं अधिक उत्कृष्ट है तथा लैटिन भाषा की तुलना में प्रचुर है और दोनों यूरोपीय भाषाओं से कहीं अधिक परिष्कृत है। फिर भी दोनों प्राचीन यूरोपीय भाषाओं के साथ उसका अद्भुत सामंजस्य है। शब्दों के धातुओं में, क्रिया में और व्याकरण के नियमों में। यह सामंजस्य अकस्मात् नहीं है। कोई भी भाषा विज्ञान शास्त्री इस सामंजस्य को देखकर यही कहेगा कि कदाचित् तीनों भाषाओं का उद्गम एक ही है। किन्तु, समान उद्गम के ऐसे कोई प्रमाण नहीं हैं।"

प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक, आटो जैसपरसन अपनी प्रसिद्ध पुस्तक—"लेन्गुएज़ इट्स नेचर डेवेलपमेन्ट एण्ड ओरिजिन" में लिखता है :

"पश्चिमी भाषा विज्ञान शास्त्रियों को जब संस्कृत भाषा का पता लगा तब वह भाषा विज्ञान के इतिहास में क्रान्तिकारी साबित हुआ। यूरोपीय भाषा विज्ञान शास्त्रियों का जब संस्कृत से प्रथम परिचय हुआ तो उस परिचय के साथ-साथ भाषा विज्ञान के अध्ययन के प्रति विद्वानों में अत्यन्त अभिरुचि बढ़ी। संस्कृत भाषा के प्रकाश में ही यूरोपीय भाषा का अध्ययन प्रारम्भ हुआ। भाषा विज्ञान की दृष्टि से, भाषा विज्ञान के समन्वयात्मक अध्ययन की दृष्टि से संस्कृत सदा-सर्वदा मार्गदर्शन का काम

करेगी । भाषा वैज्ञानिक के लिये संस्कृत का अध्ययन उतना ही आवश्यक है जितना ज्योतिष के अध्ययन के लिये गणित का ज्ञान ।"

अमेरिकन भाषा विज्ञान के जनक लिओनार्ड ब्लुमफील्ड संस्कृत के ऋण को स्वीकार करते हुए कहते हैं :

"भारत में एक ऐसे ज्ञान का उदय हुआ जिसने भाषा-विज्ञान के सम्बन्ध में यूरोपीय भाषा शास्त्रियों के दृष्टिकोण में एक क्रान्ति का सृजन कर दिया। जब संस्कृत व्याकरण पहली बार यूरोपीय विद्वानों की आँखों के सामने आया तब उन्होंने समझा कि व्याकरण के द्वारा भाषा को कैसे सम्पूर्ण, सुघड़ और परिष्कृत बनाया जा सकता है। यूरोपीय भाषाएँ इस दृष्टि से संस्कृत की ऋणी रहेंगी ।"

ए. ए. मैकडोनाल्ड अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास में लिखता है :

"संस्कृत भाषा की वर्णमाला सम्पूर्ण वर्णमाला है। उसका वर्गीकरण ध्वनि के सिद्धान्त पर किया गया है। यह ध्वनि वर्णमाला, सहस्रों वर्षों से इसी भाँति चली आ रही है। इससे अधिक वैज्ञानिक वर्णमाला कोई दूसरी नहीं है। दूसरी ओर हम यूरोपियन, प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण शास्त्री पाणिनि के ढाई हजार वर्ष बाद, यह दावा करते हैं कि हम एक वैज्ञानिक युग में रह रहे हैं; किन्तु हम एक ऐसी वर्णमाला का प्रयोग कर रहे हैं जो हमारी भाषा को ध्वनियों में प्रवाह करने में असमर्थ है। हमने स्वरों और व्यजनों को इस तरह मिला कर रखा है जो अत्यन्त अवैज्ञानिक है ।"

आपके इस प्रस्तावित संस्कृत महाधिवेशन में संस्कृत के विद्वान् संस्कृत के व्यापक प्रचार और प्रसार के लिये उत्साहवर्द्धक मार्गदर्शन देंगे ।

मैं आपके अधिवेशन की सफलता की कामना करता हूँ ।

विश्वम्भरनाथ पांडे

राज भवन
जयपुर

4 मई, 1986

संस्कृत संरक्षण की गौरवशाली परम्परा

राजस्थान में संस्कृत भाषा और साहित्य के समुन्नयन एवं विद्वद्जनों को संरक्षण देने की गौरवशाली परम्पराएँ रही हैं। इन परम्पराओं को आगे बनाये रखने की जरूरत है।

(वसन्तराव पाटील)

सत्यमेव जयते

राज्यपाल
उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ

4 मई, 1986

मुझे यह जानकर हर्ष है कि राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का 14वाँ अधिवेशन 5 मई, 1986 को जयपुर में व्यापक स्तर पर प्रारम्भ होने जा रहा है, जिसमें प्रदेश और देश के ख्यातिलब्ध संस्कृत विद्वानों, साहित्यकारों और जन प्रतिनिधियों का समागम होने की आशा है।

मुझे विश्वास है कि अधिवेशन में अन्य विषयों के अतिरिक्त नई शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ में संस्कृत भाषा और साहित्य के योगदान पर भी विचार-विमर्श किया जायगा।

मैं इस अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

मोहम्मद उस्मान आरिफ़

सत्यमेव जयते

CHIEF JUSTICE
RAJASTHAN HIGH COURT

जोधपुर
3 मई, 1986

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन ने संस्कृत शिक्षा एवं साहित्य सृजन के क्षेत्र में सदैव सामयिक पहल की है तथा राजस्थान को संस्कृत अध्यापन एवं विकास की दृष्टि से देश में उच्च स्थान दिलाया है।

यह और भी हर्ष का विषय है कि माननीय श्री राजीव गाँधी द्वारा नई शिक्षा प्रणाली सम्बन्धित पत्र का संसद् में विचार-विमर्श होने से पूर्व राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन इस सम्मेलन के अवसर पर शिक्षा प्रणाली के निर्धारण में संस्कृत विद्वान, साहित्यकार, काव्यकार, संस्कृतानुरागी जननायक, विधायक तथा सांसद बड़ी संख्या में अपने विचार रखेंगे।

आशा है कि इस अवसर पर महत्वपूर्ण परिचर्चा होगी जो नई शिक्षा नीति निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी तथा संस्कृत को जन-भाषा बनाने में भी सहयोगी होगी।

मैं इस सम्मेलन के अभूतपूर्व सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

द्वारका प्रसाद गुप्ता

(द्वारका प्रसाद गुप्ता)

सत्यमेव जयते

कृषि मंत्री
भारत सरकार

नई दिल्ली-110001

संस्कृत के विकास के माध्यम से भारतीय भाषाएँ समृद्ध हों

हमारे देश के सांस्कृतिक उत्थान और समृद्धि में संस्कृत भाषा का एक प्रमुख स्थान रहा है। देश की मुख्य भाषाओं का उद्गम भी संस्कृत भाषा ही रही है जो देश को एकात्म करने में सहायक सिद्ध हुई है। आज यह और भी आवश्यक हो गया है कि संस्कृत का पुनरुत्थान और विकास हो और उसके माध्यम से न केवल भारतीय भाषाएँ समृद्ध हों अपितु देश की एकात्मता और अखंडता को भी पुष्ट किया जाए।

मुझे विश्वास है कि राजस्थान, संस्कृत साहित्य सम्मेलन की इस विशेष भूमिका को सुदृढ़ करने का प्रयास करता रहेगा।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(बूटा सिंह)

सत्यमेव जयते

संचार मंत्री

भारत

नई दिल्ली

भारत की संस्कृति का आधार संस्कृत

संस्कृत साहित्य भारत की संस्कृति का आधार है। दार्शनिक चिन्तन और सांस्कृतिक समन्वय की दृष्टि से संस्कृत का अध्ययन, अध्यापन महत्वपूर्ण है। मूर्धन्य विद्वानों का यह सम्मेलन इसलिए भी उपयोगी है कि हम नई शिक्षा नीति के निर्धारण के लिए प्रयत्नशील हैं। मेरा विश्वास है सम्मेलन जनोपयोगी सुझाव प्रस्तुत करेगा।

सम्मेलन की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।

रा० मिर्धा

(राम निवास मिर्धा)

कमलापति त्रिपाठी
संसद सदस्य
कार्यकारी अध्यक्ष
अ० भा० कां० क० (इ)

9, जनपथ, नई दिल्ली
14 मई, 1986

भारत के पवित्र जीवन की सजीव कहानी

राजस्थान का हमारे देश के इतिहास में अभूतपूर्व स्थान है। पराधीनता के अन्धकार में राजस्थान का इतिहास वह चमकती रेखा रही है जिसने सदा सारे देश को प्रेरणा प्रदान की है। राजस्थान प्रदेश हमारी संस्कृति, भारत के पवित्र जीवन और उसकी त्याग की कहानी की सजीव प्रतिमा रही है।

सम्मेलन की सफलता के सम्बन्ध में जो विवरण मुझे प्राप्त हुए हैं वे आपको बधाई का पात्र बनाते हैं।

कमलापति त्रिपाठी

सत्यमेव जयते

CHIEF MINISTER, HARYANA
CHANDIGARH

30 अप्रैल, 1986

देववाणी भारतीय भाषाओं की जननी

देववाणी संस्कृत भारतीय भाषाओं की जननी है। राष्ट्र-भाषा हिन्दी को समृद्ध-सुसज्जित करने का श्रेय मुख्यतः संस्कृत की विपुल शब्द सम्पदा को जाता है। वर्तमान पीढ़ी को भारत की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित करवाने में संस्कृत के ज्ञान एवं अध्ययन का विशिष्ट योगदान है। इसका प्रचुर शब्द भण्डार वर्तमान युग की ज्ञान-विज्ञान की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में पूर्णतः सक्षम है।

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन अपनी स्थापना के समय से ही संस्कृत भाषा तथा साहित्य का प्रचार-प्रसार करने के लिए रचनात्मक प्रयास करता रहा है। इसने प्रकाशन की अनेक उपयोगी योजनाएँ बनाकर तथा वार्षिक अधिवेशनों के माध्यम से संस्कृत शिक्षा के प्रोत्साहन एवं साहित्य-सृजन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्कृष्ट संस्कृत सेवियों का सम्मान, नई विधाओं की संस्कृत कृतियों का विमोचन, राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन आदि संस्कृत भाषा के प्रचार में विशेषतः सहायक होंगे। आशा है कि राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन भविष्य में भी संस्कृत-जगत् की सेवा में अग्रणी रहेगा।

भजन लाल

CHIEF MINISTER
RAJASTHAN

जयपुर
5 मई, 1986

देव-भाषा के उन्नयन से प्राचीन साहित्य एवं ज्ञान का पुनर्जीवन सम्भव

मेरी मान्यता है कि "संस्कृत" जिसे देव-भाषा कहा गया है, के उन्नयन से ही हम हमारे प्राचीन साहित्य एवं ज्ञान को पुनर्जीवित कर संजोए रख सकते हैं ।

आशा है इस सम्मेलन में संस्कृत-साहित्य और भाषा के अध्ययन के क्षेत्र में ठोस और रचनात्मक सुझाव प्राप्त हो सकेंगे ।

हरिदेव जोशी

(हरिदेव जोशी)

सत्यमेव जयते

शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री

जयपुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का 14वाँ महाधिवेशन मई माह में जयपुर में आयोजित किया जा रहा है।

देश की एकता, अखंडता, आध्यात्मिकता व सांस्कृतिक विरासत को संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन अध्यापन द्वारा समधिक सम्पुष्ट व उजागर करने हेतु प्रस्तुत महाधिवेशन कारगर उपाय खोजेगा, यह मुझे विश्वास है।

संस्कृत की प्राचीनता व सर्वांगपूर्णता सर्व विदित है। संस्कृत एक सुवर्णद्वीप है जिसमें अपरिमित रत्नकण समुपलब्ध है।

महाधिवेशन की सफलता की शुभकामनाओं के साथ।

(हीरालाल देवपुरा)

सत्यमेव जयते

M. Raghupathy
Minister of Education

VIDHANA SOUDHA,
BANGALORE-1

1st May, 1986

Sanskrit—the Common Man's Language

Among the Indian languages, Sanskrit has its own place of pride. Though Sanskrit, as a language, is at a distance from common man, still it is playing an important role in not only keeping the Indian culture in tact, but also in keeping the nation united. And I am sure that in years to come, Sanskrit will be the common man's language.

In the august gathering, where Sanskrit Scholars, Poets and other intellectuals will come together, there may be important, deliberations, which I wish, will be useful in building the nation and to keep the Indian culture in tact.

I wish the Sammelan all success.

M. Raghupathy

सत्यमेव जयते

सदस्य
राजस्थान विधान सभा

जयपुर
29 अप्रैल, 1986

उच्चस्तरीय शोध का आयोजन

सम्मेलन ने अपने जीवन काल में देववाणी की सेवा और उसके माध्यम से भारत की प्राचीन तथा शाश्वत् परम्परा को जन-जन में उजागर करने का जो सराहनीय कार्य किया है वह स्तुत्य है ।

सम्मेलन के होने वाले अधिवेशन में आज के संदर्भ में शिक्षा प्रणाली में प्रस्तावित परिवर्तन में संस्कृत भाषा को उचित स्थान दिलाने के सम्बन्ध में विद्वद्जनों के सामयिक विचारों का समन्वय और इस सम्बन्ध में उच्चस्तरीय शोध का आयोजन करने का जो विचार है, उसके लिये आपको बधाई ।

मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ ।

शिवचरण माथुर

सत्यमेव जयते

जयपुर
2 मई, 1986

राज्य मंत्री
ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज,
राजस्थान

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा

संस्कृत को विश्व की प्राचीनतम भाषा होने का गौरव प्राप्त है व यह आदिकाल से ही भारतीय संस्कृति से सतत् जुड़ी रही है। संस्कृत के विकास के उद्देश्य से राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के प्रयास सराहनीय हैं। मुझे विश्वास है प्रस्तावित चौदहवें अधिवेशन में सम्मेलन अपने उद्देश्य की पूर्ति में और अधिक अग्रसर होगा।

अधिवेशन की सफलता के लिये मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनायें।

महेन्द्रकुमार परमार

सत्यमेव जयते

जयपुर
1 मई, 1986

राज्य मंत्री
सहकारिता एवं आर्थिक व
सांख्यिकी विभाग, राजस्थान

संस्कृत राष्ट्र की प्राचीनतम तथा महत्वपूर्ण भाषा है। इसके प्रचार-प्रसार हेतु संस्थान द्वारा किये जा रहे विभिन्न प्रयास वस्तुतः प्रशंसनीय हैं। मैं आशा करता हूँ कि आपके सद्प्रयासों से संस्कृत भाषा का राज्य में ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर समुचित विकास होगा तथा अधिकाधिक लोगों की इस भाषा की ओर रुचि बढ़ेगी।

मैं सम्मेलन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

रामकिशन वर्मा

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य

सलेमाबाद, अजमेर
4 मई, 1986

शुभाशीर्वादाः

भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतस्य च अविनाभावसम्बन्धोऽस्तीति नाविदितं विदित-वेदितव्यानां विदुषां कृते ।

संस्कृतस्य गौरवं किं वर्णयामो यत्र—

वेदाः खेदनिवारका निगदिता यस्यां स्वयं विष्णुना
यस्यामादि-कविर्लिलेख सुभगं रामायणं पावनम् ।
यस्यां सत्यवती-सुतो रचितवान् रम्यं महाभारतं-
सेयं देवगिरा ह्यतीव मधुरा विभ्राजतां राजताम्
यस्यां ब्रह्मविचारणा मुनिवरैः सूक्ष्मातिसूक्ष्माकृता,
यस्यां श्रीमनुना स्मृति विरचिता वर्णाश्रमा वर्णिताः ।
यस्यां श्रीकपिलादयो व्यरचयन् सांख्यादिषड्दर्शनं
सेयं-संस्कृत भारती विजयतां विभ्राजतां राजताम् ।।

हे शारदा-समुपासकाः !

वयं श्रीसर्वेश्वर-प्रभुं प्रार्थयामहे यद् भारत-भारती-वैभवं वर्द्धयतां तत्रभवतां भवतां विद्वद्वरेण्यानां श्लाघनीय-प्रयत्नेन सम्पत्स्यमानं राजस्थान-संस्कृतसाहित्य-सम्मेलनं राजस्थानस्य शोभां समधिकां वर्धयतु ।

एतादृशैः प्रयत्नैरस्मिन् प्रदेशे महाकवि-श्रीमाघ-सदृशा रससिद्धाः कवीश्वरास्तथा महामहिमश्रीमद्-अम्बिकादत्त-व्यास सदृशा राष्ट्रियकवयः पुनः समुत्पत्स्यन्ते इति अस्माकं दृढ़ो विश्वासः ।

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

संस्कृत : भारतीय भाषाओं की जननी और संस्कृति का मेरुदण्ड

माननीय श्री हरिदेव जोशी, मुख्य मंत्री, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित चौदहवें 'जयपुर महाधिवेशन' को सम्बोधित करते हुए। मंचस्थ हैं डॉ० आद्याचरण झा, पूर्व प्रतिकुलपति दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय; डॉ० पी० एल० भार्गव, कार्यकारी अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, माननीया श्रीमती कमला, राजस्व, उपनिवेशन पर्यटन, इन्दिरा गांधी नहर परियोजना, कला एवं संस्कृति मंत्री; राजस्थान तथा अध्यक्ष राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन; डॉ० मण्डन मिश्र, निदेशक, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, डॉ० बी० के० मोहन्ती, उपकुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी।

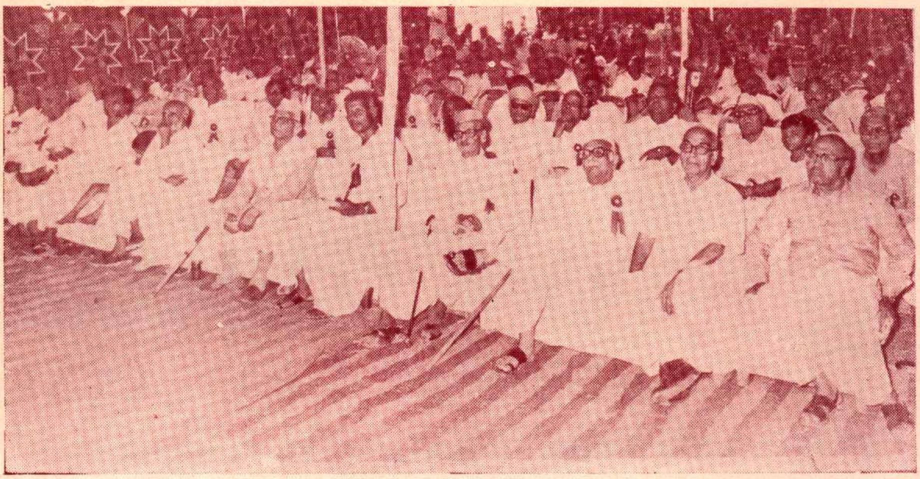

उद्घाटन समारोह में उपस्थित विद्वत्जनों के मध्य महामण्डलेश्वर महन्त मुरलीमनोहर शरण, रतनलाल दादा भाई, राजगुरु पं० विद्यानाथ ओझा, पं० देवीशंकर तिवाड़ी, पं० नरोत्तमलाल जोशी एवं गोपाललाल बहुरा

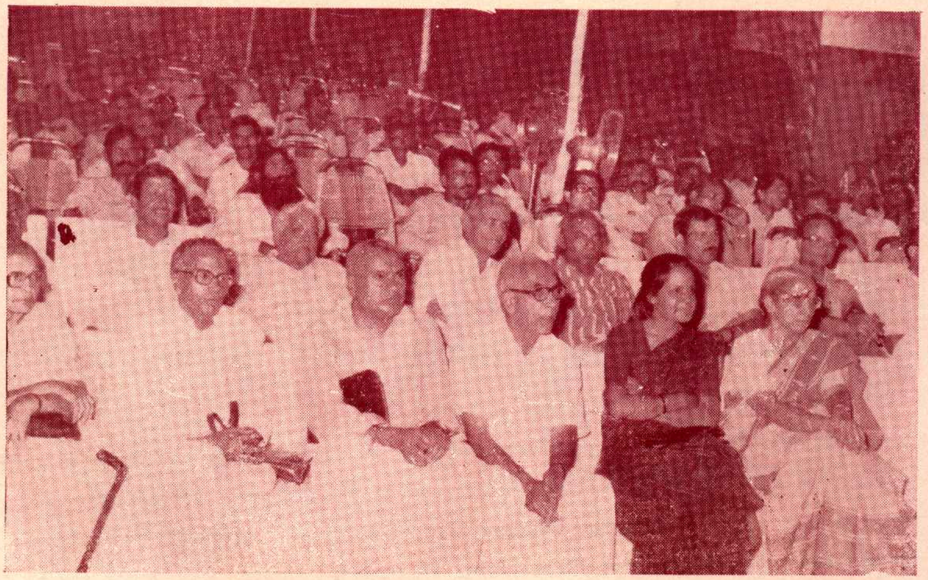

अ० भा० संस्कृत कवि सम्मेलन में रसास्वादन करते हुए माननीया श्रीमती कमला, पं० नरोत्तमलाल जोशी, पं० राधाकृष्ण शास्त्री एवं श्रीमती स्वर्णलता अग्रवाल

माननीया श्रीमती कमला, राजस्व, पर्यटन, इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना, कला एवं संस्कृतिमंत्री, राजस्थान तथा राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की अध्यक्ष 'जयपुर महाधिवेशन' में माननीय श्री हरिदेव जोशी, मुख्यमंत्री, राजस्थान एवं विद्वत्जनों का स्वागत करते हुए

'जयपुर महाधिवेशन' के स्वागतमंत्री श्रीराम गोटेवाला उद्घाटन के अवसर पर माननीय श्री हीरालाल देवपुरा, शिक्षामंत्री तथा विद्वानों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए

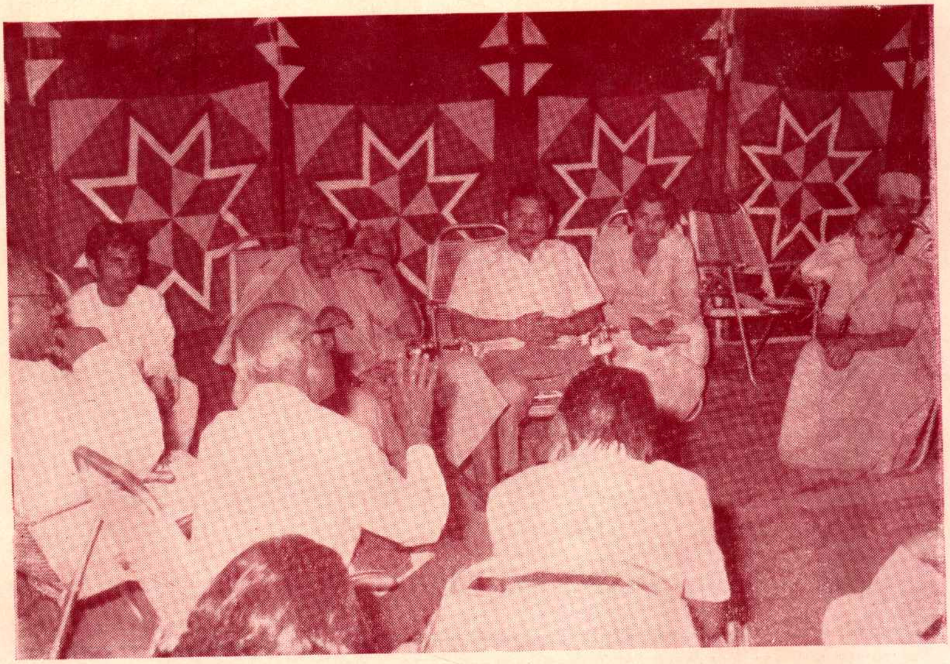

माननीया श्रीमती कमला द्वारा वेद-परिषद् में उद्बोधन, डॉ० रामनारायण चतुर्वेदी, सुरजनदास स्वामी तथा डॉ० सुधीर गुप्त सक्रिय भाग लेते हुए

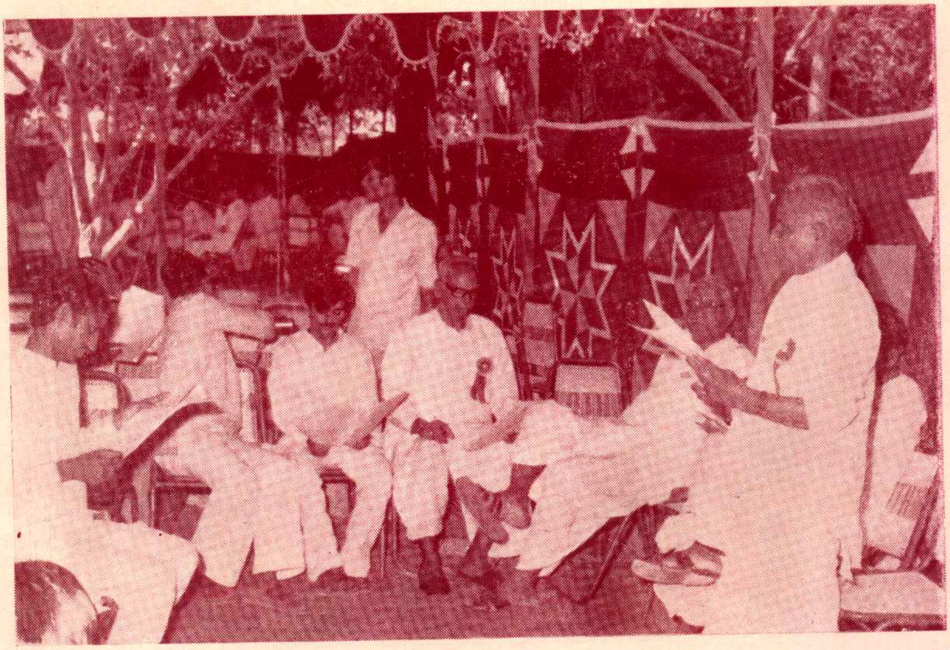

प्रो० रामपाल शर्मा ज्योतिष-परिषद् में पत्रवाचन करते हुए । रामचन्द्र जोशी एवं कृष्णगोपाल ब्रजेश एकाग्रचित से अनुश्रवण करते हुए

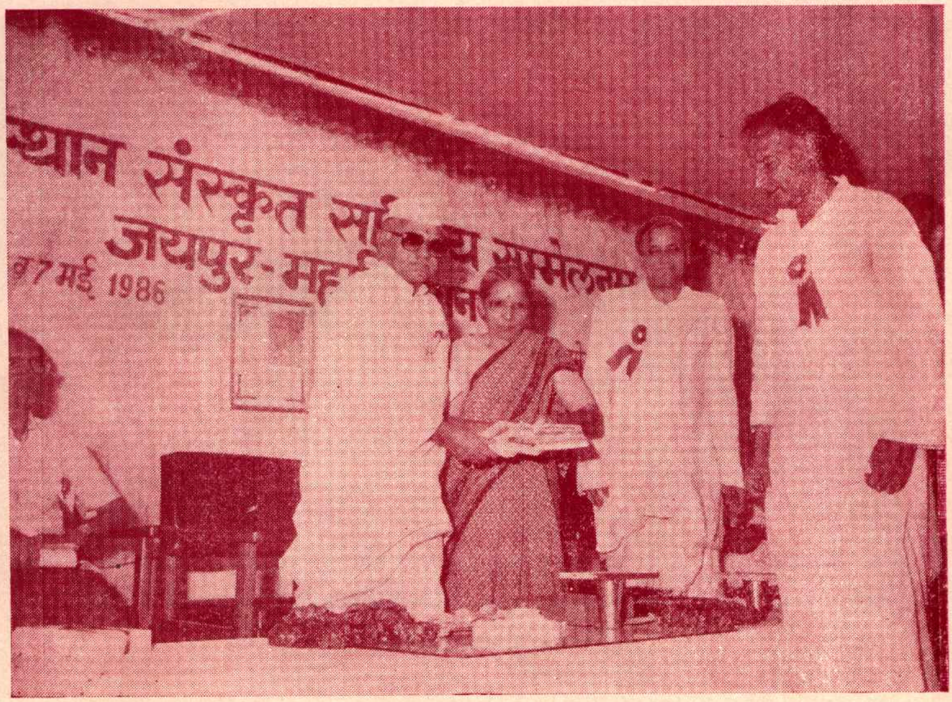

माननीय श्री हरिदेव जोशी, मुख्यमन्त्री, राजस्थान, संस्कृत की चार सद्यः प्रकाशित कृतियों का विमोचन करते हुए

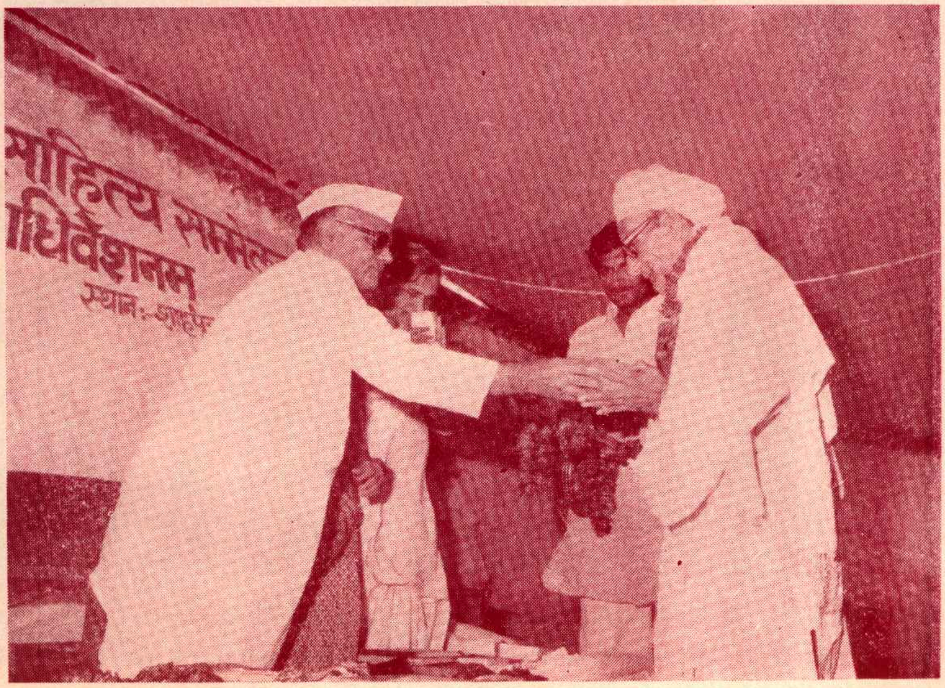

साहित्यशास्त्र के मूर्धन्य मनीषी पं० जगदीश शर्मा का अभिनन्दन करते हुए माननीय श्री हरिदेव जोशी मुख्यमंत्री, राजस्थान

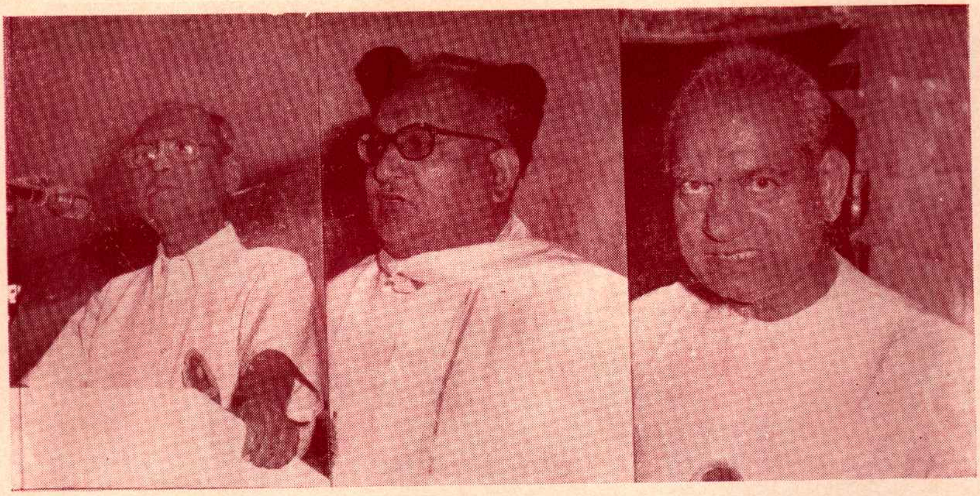

डॉ० पी० एल० भार्गव, कार्यवाहक अध्यक्ष, संस्कृत साहित्य सम्मेलन; डॉ० रामनारायण चतुर्वेदी, निदेशक संस्कृत शिक्षा; पंडित रामगोपाल शास्त्री–सम्मेलन में संस्कृत को मानवता एवं चारित्रिक उत्थान का माध्यम बताते हुए

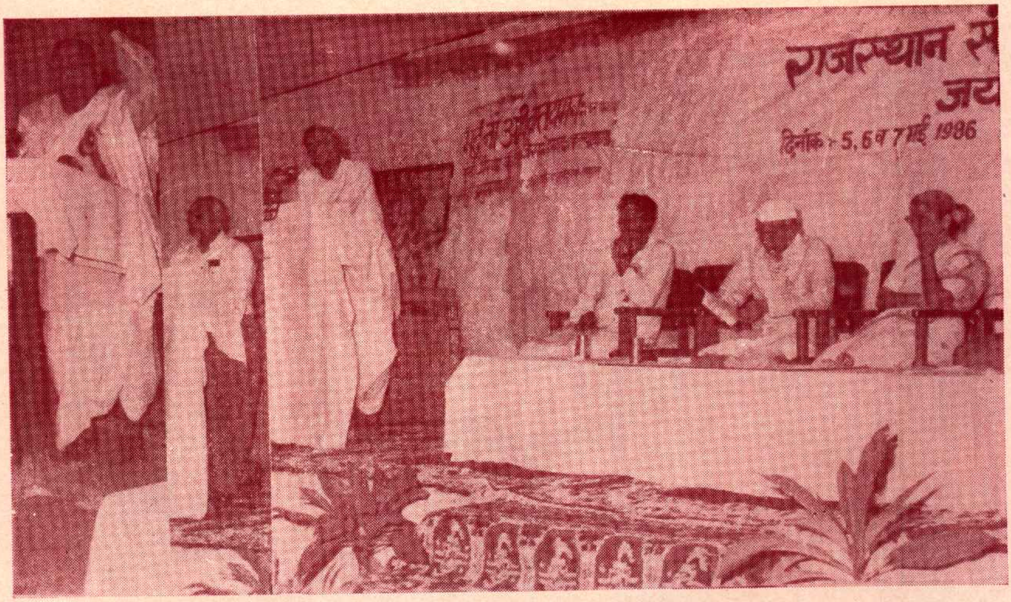

महाधिवेशन में संस्कृत शिक्षा परिषद् एवं समापन पर ओजस्वी विचार व्यक्त करते हुए डॉ० आद्याचरण झा, पूर्व प्रतिकुलपति दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, डॉ० रत्नप्रकाश अग्रवाल, कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, डॉ० मण्डन मिश्र, निदेशक, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान। मंचस्थ हैं मोतीलाल जोशी, माननीय श्री हीरालाल देवपुरा, माननीया श्रीमती कमला

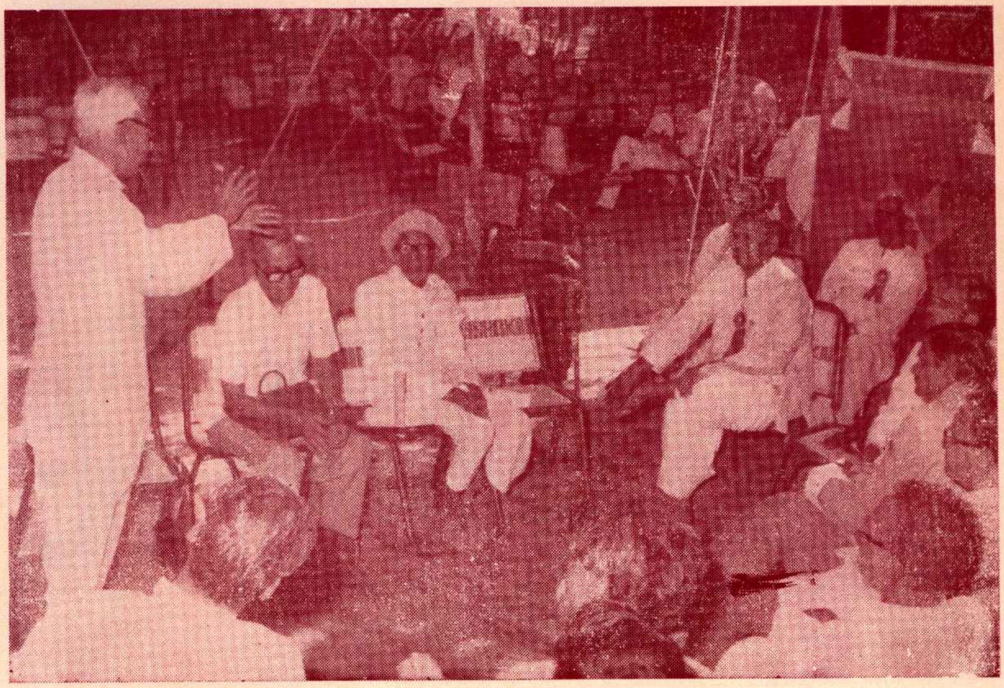

डॉ० शिवदत्त चतुर्वेदी साहित्य-परिषद् में आधुनिक संस्कृत साहित्य पर समीक्षा करते हुए । डॉ० ब्रह्मानन्द शर्मा एवं पं० जगदीश शर्मा चिन्तनरत

महामन्त्री, पं० मोतीलाल जोशी सम्मेलन में पारित प्रस्तावों की जानकारी देते हुए । मंचस्थ : डॉ० मण्डन मिश्र, माननीय श्री हीरालाल देवपुरा, माननीया श्रीमती कमला एवं डॉ० रत्नप्रकाश अग्रवाल

डॉ० एल० के० ओड़, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय डबोक, शब्दावली की एकरूपता पर बल देते हुए
मंचस्थ हैं डॉ० पी० एल० भार्गव, डॉ० बलदेव सिंह, विद्यावाचस्पति नन्दकुमार शास्त्री

प्रो० नरोत्तम चतुर्वेदी, महाराज संस्कृत कॉलेज जयपुर, साहित्य-परिषद् में
अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए

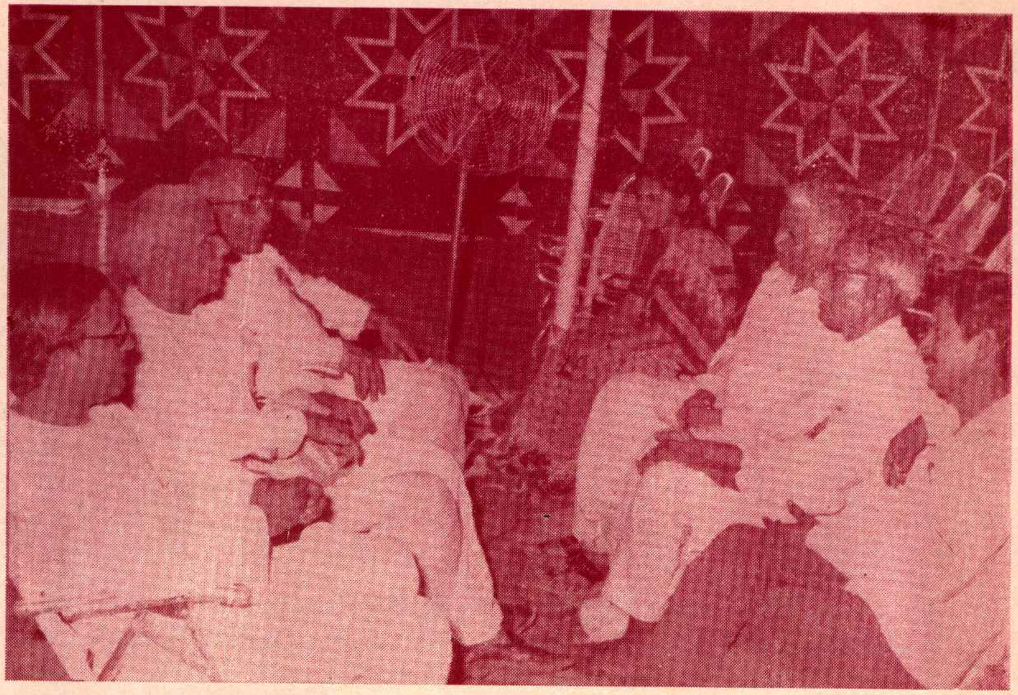

व्याकरण-परिषद् में प्रभावी विचार विनिमय करते हुए प्रो० राधेश्याम कलावटिया, पं. हर्षनाथ मिश्र, पं. विश्वनाथ मिश्र पं. रामसागर मिश्र, पं. कन्हैयालाल शर्मा एवं पं. अर्कनाथ चौधरी

मुख्यमंत्री के परामर्शदाता, राजेन्द्रशंकर भट्ट संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य पर प्रभावोत्पादक विश्लेषण करते हुए । मंचस्थ हैं विद्यावाचस्पति नन्दकुमार शास्त्री, गिरिराज शास्त्री, सम्पादक 'भारती', डॉ. कृष्णकान्त शुक्ल, डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, सम्पादक 'व्रजगन्धा', मथुरा

अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन : ओजस्वी एवं प्रभावोत्पादक

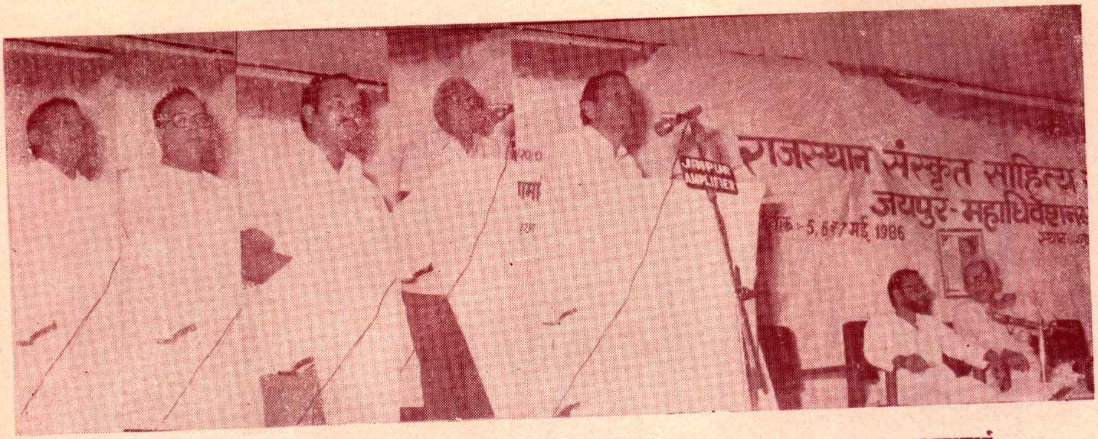

ओजस्वी काव्य पाठ करते हुये कविवर वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, मथुरा; कृष्णकान्त शुक्ल, लखनऊ; सुधाकराचार्य त्रिपाठी, मेरठ; शिवसागर त्रिपाठी, जयपुर एवं गंगाधर शास्त्री, उदयपुर। मंचस्थ : कवि सम्मेलन के संयोजक कलानाथ शास्त्री एवं अध्यक्षता करते हुये डॉ० शिवदत्त चतुर्वेदी, वाराणसी

प्रेरणास्पद काव्य पाठ करते हुए डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, बीकानेर

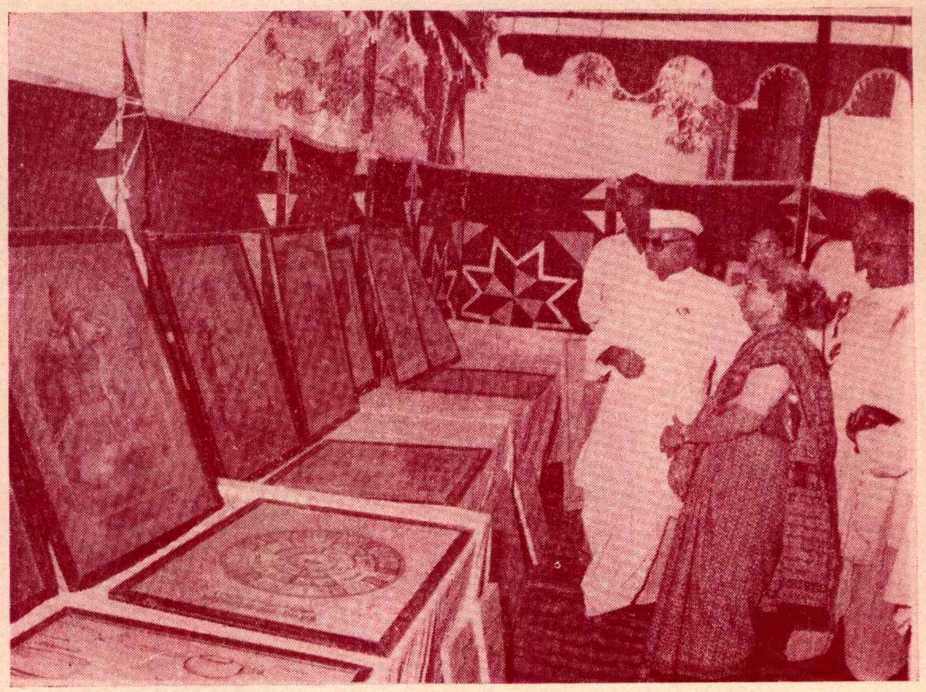

माननीय श्री हरिदेव जोशी, मुख्यमंत्री, राजस्थान को 'वैदिक प्रदर्शनी' का अवलोकन कराते हुए राजस्वमंत्री माननीया श्रीमती कमला

माननीय श्री हीरालाल देवपुरा, शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री, राजस्थान 'जयपुर महाधिवेशन' में समापन भाषण करते हुए

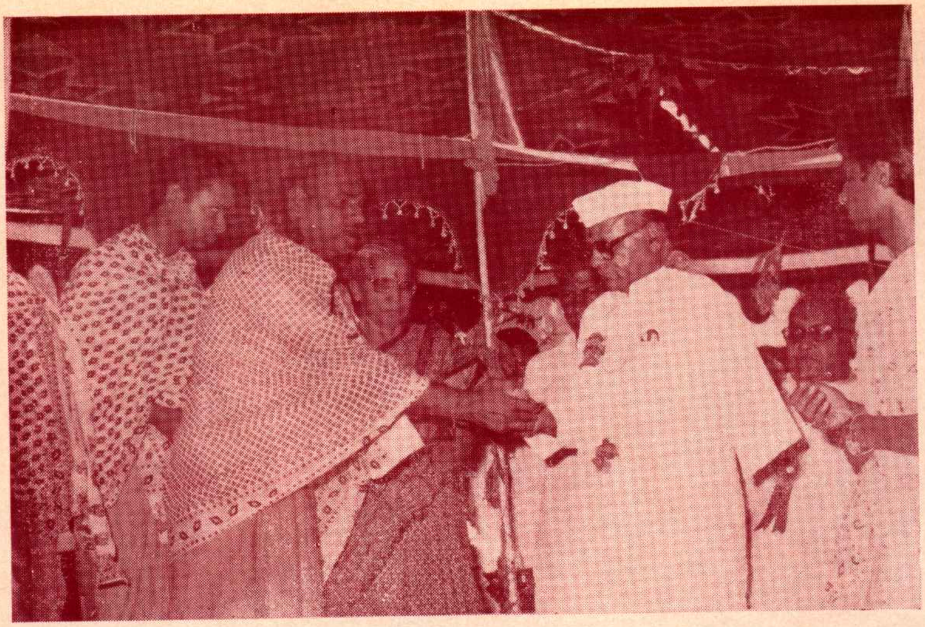

सम्मेलन का प्रारम्भ राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सद्भाव के लिए आयोजित यज्ञकर्म से हुआ। यज्ञ में द्वितीयाह्निक देवार्चन करते हुए मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी, यज्ञाचार्य पं॰ जगदीश शर्मा, राजस्वमंत्री श्रीमती कमला, संस्कृत शिक्षा निदेशक डॉ॰ रामनारायण चतुर्वेदी एवं महामंत्री श्री मोतीलाल जोशी।

सम्मेलन का समापन राष्ट्रीय एकतायज्ञ की पूर्णाहुति से हुआ। 'आषिका' ग्रहण करते हुए शिक्षामंत्री श्री हीरालाल देवपुरा, राजस्व मंत्री श्रीमती कमला, महामंत्री श्री मोतीलाल जोशी, यज्ञाचार्य पंडित जगदीश शर्मा, ऋत्विग् श्री जानकीवल्लभ शर्मा।

स्वाति

संस्कृत की समसामयिक प्रासंगिकता

संस्कृत की समसामयिक प्रासंगिकता

डॉ० एल० के० ओड़

लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
डबोक

भाषा के दो प्रमुख सामाजिक उद्देश्य होते हैं। प्रथम जन समुदाय के जीवन-व्यवहार हेतु सम्प्रेषण के उपकरण के रूप में प्रयुक्त होना तथा द्वितीय संस्कृति के संरक्षण, प्रसारण तथा उसे सतत् प्रवाही बनाए रखने की भूमिका अदा करना। उक्त प्रयोजनों की प्रकृति ज्यों ज्यों बदलती है, त्यों त्यों भाषा सम्प्रेषण के नए रूपों को जन्म देती है तथा उसके विन्यास में आवश्यक परिवर्तन लाती है। कभी कभी समायोजन की इस प्रक्रिया में अनेक भाषाएँ विलुप्त हो जाती हैं या नया रूप ग्रहण करती हैं अथवा नई भाषाओं का जन्म होता है। सामाजिक-प्रक्रिया का यह नियम है कि जो भी वस्तुएँ, संस्थाएँ अथवा उपकरण समाज के लिए अनुपयोगी हो जाते हैं अथवा सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति में अक्षम हो जाते हैं, वे स्वत: समय के प्रवाह में नि:शेष हो जाते हैं। यह नियम भाषाओं के सम्बन्ध में भी लागू होता है। विश्व में अनेक भाषाओं का जन्म हुआ; उनमें अनेक परिवर्तन आए; कुछ भाषाएं समय के प्रवाह में लुप्त हो गईं। आज उनका अस्तित्व इतिहास के पृष्ठों में रह गया है।

संस्कृत भाषा वैदिक काल में भी थी और आज भी उसका अस्तित्व कायम है। ऐसा लगता है कि संस्कृत में कुछ ऐसी प्राण शक्ति है, जो सहस्रों वर्षों से उसे जीवित रखे हुए है। संस्कृत भाषा में युगीन परिवर्तन के साथ साथ सम्प्रेषण क्रिया में आवश्यक समायोजन करने की अनन्त शक्ति विद्यमान है; तभी तो एक ओर वैदिक संस्कृति का सम्प्रेषण करने वाली भाषा दूसरी ओर अधुनातन वैज्ञानिक एवं तकनीकी-प्रधान संस्कृति को सम्प्रेषित करने की शक्ति भी रखती है। हमारी आधुनिक संस्कृत वैदिक संस्कृति से बहुत भिन्न है; उपनिषदों की भाषा से भी अलग है और पाणिनीय एवं पतञ्जलि द्वारा प्रतिष्ठापित संस्कृत से कहीं अधिक सम्पन्न तथा सम्प्रेषण–क्षमता में कहीं अधिक सशक्त है। प्रत्येक जीवन्त भाषा की यह पहिचान है कि उसका रूप स्थिर नहीं होता; सामाजिक परिवर्तन के साथ साथ उसमें युगीन परिवर्तन आते ही हैं और इसी से भाषा प्राणवान रहती है।

राष्ट्रीय एकता लाने में भाषाई एकता सहायक होती है। संस्कृत की युगीन प्रासंगिकता आज की विघटनकारी शक्तियों के साथ संघर्ष करने के लिए और भी महत्वपूर्ण बन गई है।

वैज्ञानिक, तकनीकी, आयुर्वैज्ञानिक तथा प्रबुद्ध व्यावसायिक शिक्षा का माध्यम हमारे देश में आज भी अंग्रेजी है। हिन्दी अथवा प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम के रूप में अपनाने के विरूद्ध सबसे प्रमुख दलील यह दी जाती है कि प्रादेशिक भाषाओं में पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली उपलब्ध नहीं है। पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की विपुल शक्ति संस्कृत में है। इसमें उपसर्ग, प्रत्यय, परसर्ग, समास, कृदन्त, तद्धित आदि की सहायता से एक शब्द से अनेक शब्द बनाए जा सकते हैं तथा सूक्ष्म भेद लिए हुए समान सम्प्रत्ययों का निर्माण भी आसानी से हो सकता है। भौतिक विज्ञान, समाज विज्ञान तथा शिल्पशास्त्र आदि से सम्बद्ध अनेक शब्द वेदों, ब्राह्मण-ग्रन्थों तथा प्राचीन शिल्पशास्त्र एवं विद्याओं में प्रचुर मात्रा में भरे पडे हैं। प्राचीन समय में वे चाहे भिन्न सन्दर्भ में प्रयुक्त हुए हों परन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उनकी व्याख्या करके वर्तमान अर्थ को प्रकट करने वाले पारिभाषिक शब्दों के रूप में उन्हें अपनाया जा सकता है। विमान, आकाशवाणी, अन्तरिक्ष आदि इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग इस दिशा में स्तुत्य प्रयास कहा जा सकता है।

कम्प्यूटर में प्रयुक्त मेट्रिक्स भी सूत्र विधि पर आश्रित होते हैं। आज ये सूत्र अंग्रेजी वर्णमाला, अन्तर्राष्ट्रीय संख्या तथा कुछ प्रतीकात्मक सङ्केतों की सहायता से निर्मित किए जाते हैं। संस्कृत परम्परा को अपनाकर अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न ज्ञानशाखाओं में सूत्र परम्परा विकसित की जा सकती है। नागरी लिपि में अभी यह मतैक्य नहीं हो पाया है कि वर्णाक्षर को जब प्रतीक रूप में प्रयुक्त करना हो तो स्वर-मात्रा संयुक्त होना चाहिए अथवा अकारान्त होना चाहिए अथवा अक्षर रूप में होना चाहिए। इस बारे में मतैक्य हो जाने पर वैज्ञानिक सूत्रों की रचना तथा उनकी प्रयुक्ति भी होने लगेगी।

विज्ञान तथ्यप्रधान तथा अर्थप्रधान होता है, भावना प्रधान नहीं अत: विज्ञान शिक्षण में भाषा का वैयाकरणिक रूप बहुत अहमियत नहीं रखता। विज्ञान की अपनी ही भाषा

होती है, जिसमें पारिभाषिक शब्द, प्रतीक, सङ्केत तथा सूत्र होते हैं। यदि उपर्युक्त तत्व सभी भारतीय भाषाओं में समान हो, तो बिना एक दूसरे की भाषा समझे भी सम्प्रेषण सम्भव हो सकता है। भारत की नई प्रबुद्ध पीढ़ी को पुनः एक सूत्र में बाँधने का यह कार्य संस्कृत को करना है। इसी में इसकी प्रासंगिकता निहित है।

आज देश में राष्ट्रीय एवं भाषाई एकता स्थापित करने में संस्कृत को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। ●

नटवरलाल जोशी

प्राचार्य ऋषिकुल विद्यापीठ
लक्ष्मणगढ़

इस गये गुजरे समय में भी आसेतु हिमाचल कामरूप से कच्छ तक हिन्दुओं के जन्म से लेकर अन्त्येष्टि एवं अन्त्येष्टि हो नहीं इससे ही कहाँ त्राण है, श्राद्ध पर्यन्त संस्कारों की भाषा संस्कृत है भले ही यह अशुद्ध बोली जाती हो, किन्तु संस्कृत में मंत्रोच्चार बिना हिन्दू जनमानस को संतोष कहाँ? इसे व्यंग रूप में ऐसे भी कहा जा सकता है कि संस्कृत मात्र इन संस्कारों की भाषा रह गई है, कहाँ रमी है वह जनता के जीवन में? इसे और भी स्पष्टरूप से यूं कहा जा सकता है कि जन्म से लेकर मरण तक प्रसङ्गों से जुडी हुई संस्कृत की प्रासंगिकता भी आज प्रश्न चिन्हों के घेरे में है। जिसका व्याकरण विश्व की निधि है पारिभाषिक शब्दावली के लिए जिसके पास अपूर्व शब्द भंडार है इस विश्व संस्कृति की शब्दावली पर प्रश्न चिन्ह है, वह इस तरह कि संस्कृत इस घोर अर्थ युग में कहा जाना चाहिए कि अर्थ पिशाच युग में आर्थिक-व्यवस्था का पक्का साधन न रहने से जीवन से कटती जा रही है इसकी सीमाएं सिमटती-२ इतनी संकुचित हो रही हैं कि यह भाषा मात्र शिक्षकों की वृत्ति मात्र देने वाली हो गई हैं ज्योतिष एवं आयुर्वेद का क्षेत्र भी है परन्तु अत्यन्त सीमित और अब तो संस्कृत शिक्षक भी जमाने के प्रहारों से आहत, आर्थिक रूप से प्रताडित, अतः अपमानित संस्कृत के पंडित भी अपने बच्चों को संस्कृत नहीं पढाना चाह रहे हैं।

भौतिकविज्ञान, रसायनविज्ञान, जीवविज्ञान वास्तुविज्ञान, गान्धर्वविज्ञान, खगोलविज्ञान, वृक्षविज्ञान, भूगर्भीय जन्मविज्ञान, धातु विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान ग्रहोपग्रह यात्रादि के अध्ययन एवं प्रयोगों के लिए भी साथ ही वैदिक गणित विज्ञान ज्योतिष-विज्ञान जैसी विश्व प्रशंसित भारतीय विधाओं के लिए भी संस्कृत-उन्नति के प्रसंग में बहुत कुछ किया जा सकता है, किया जाना चाहिए।

राष्ट्र की अखंडता एकता, नैतिक अभ्युत्थान एवं सर्वोपरि आध्यात्मिकता की प्रतिष्ठा के लिए, जो नई शिक्षा पद्धति के लक्ष्य हमारे प्रधान मंत्री जी ने निर्धारित किये हैं उनके लिए संस्कृत शिक्षा को आधार माना जा सकता है इनकी पूर्ति संस्कृत शिक्षा को आधार बना कर की जा सकती है संस्कृत राष्ट्र की एकता, अखंडता का आधार अब तक रही है और अब भी है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, संस्कृत के महत्व के विषय पर एक मत हैं बाधा केवल अंग्रेजी व अंग्रेजीयत की है। उसे उखाड़ फैंकना ही सबसे अधिक प्रासंगिक है यह साहस हमारे प्रधान मंत्री कर सकते हैं। संस्कृत की पुनः प्रतिष्ठा राष्ट्र के पुन निर्माण की सुदृढ़ आधार शिला होगी मात्र आजीविका के लिए संस्कृत शिक्षण पर जोर देने की आवश्यकता नहीं, अपितु सुसंस्कृत जीवन पद्धति के लिए संस्कृत की महत्ता निर्विवाद है। ●

श्रीमती कमला वशिष्ठ

प्राचार्य, रा. शि. प्र. विद्यापीठ
शाहपुरा बाग, जयपुर

समय-समय पर देववाणी ही क्या सीता माँ को भी अग्नि परीक्षा देनी पड़ी – शायद संस्कृत के सम्मुख आज ऐसी ही चुनौती उत्पन्न हो रही है।

हमारे मूल्य वह विश्वास या इच्छित दशाएँ हैं जिन्हें हम प्रशंसा की दृष्टि से देखते हैं, सम्मान करते हैं, स्वीकारते हैं, सृजित करना चाहते हैं, संरक्षित करना चाहते हैं, प्रतिष्ठित करना चाहते हैं और साझी अभिव्यक्ति प्रदान करना चाहते हैं।

भारत सरकार द्वारा प्रसारित शिक्षा के नीति-पत्र में मूल्यों के ह्रास की उत्पीड़ा गहराई से व्यक्त करते हुए लिखा है— "देश के सामने एक बहुत बड़ी विभीषिका है मूल्यों के ह्रास और सार्वजनिक जीवन के प्रदूषण की। मूल्यों का यह विघटन शिक्षण संस्थाओं में ही नहीं जीवन के हर क्षेत्र में परिलक्षित हो रहा है। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक व्यवहारों में यदि मूल्यों को ताक पर रख दिया गया तो हिंसा, शोषण और असुरक्षा सारी व्यवस्था को ही लील लेगा।"[1]

प्राचीन काल से ही पुरुषार्थ चतुष्टय के रूप में हमने क्रमशः काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष के मूल्य सोपान सर्व-स्वीकृत किये। मानव-मात्र को भौतिक एवं आध्यात्मिक गरिमा, उच्चता और उदात्तीकरण प्रदान करने वाले ये जीवन मूल्य समन्वित, संतुलित प्रेरक के रूप में संस्कृत साहित्य में सर्वत्र गुंजित है।[2] सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् जैसे शाश्वत् मूल्यों की समीक्षा भी संस्कृत की अनूठी देन है। अर्थात् संस्कृत हमारे जीवन मूल्यों की पावन अलख नंदा है।

कालांतर में मूल्य-सलिला भी मैली होती रही। कर्मकाण्ड, कूप मण्डूकता, अन्धानुकरण, कठोरता, स्वार्थपरता ने सनातन मूल्यों को दुरुह एवं अव्यवहारिक बना दिया। निष्काम कर्म भावना, सर्व-हित, सर्व-सुख की कामना, ब्रह्मचर्य मानव-प्रेम व सहिष्णुता, दया, त्याग, अहिंसा, अपरिग्रह, आत्मानुभूति जैसे दुर्लभ जीवन मूल्यों का संरक्षण और इनमें उत्पन्न विक्षेपों का उन्मूलन आवश्यक हो गया है। क्या इस संश्लेषण में संस्कृत सबसे सशक्त योगदान नहीं दे सकती ?

चिरन्तन जीवन-मूल्यों के साथ ही साथ तथा कथित आधुनिक जीवन मूल्यों का खनन भी संस्कृत की खान से सफलता पूर्वक किया जा सकता है। वेदों, उपनिषदों युक्त प्रस्थान-त्रयी संस्कृत साहित्य में तेजोमय राष्ट्र भारत की हृदय-मोहिनी संकल्पना साकार हुई है।[3] देश भर की नदियाँ, पहाड़, भूखण्ड, वनोपवन, नगर, ग्राम जन २ में इस भाषा ने ऐसे उतार दिया जैसे प्रारंभिक कक्षा के बालक के गले गिनती के अंक। इस देश की भूमि से मातृ-तुल्य स्नेह जगाने वाली वैदिक ऋचाएँ भला अन्य किस साहित्य में होंगी। इसी प्रकार राष्ट्रीयता के साथ २ स्वतन्त्रता, समानता भ्रातृत्व जैसे जन तांत्रिक[4] मूल्यों की प्रतिष्ठा में भी संस्कृत कम योगदान नहीं दे सकती।

संस्कृत राष्ट्रीय, प्रजातान्त्रिक, समाजवादी मूल्यों के साथ 2 वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करने में भी संजीवनी भूमिका निर्वाह कर सकती है। संस्कृत-साहित्य में प्रयुक्त नीरोग-जीवन की संकल्पना जीवन-विज्ञान पर आधारित है। तैत्तरीयोपनिषद् के आनन्दमय जीवन में विभिन्न कोषों के (5 कोष) के आधार पर आत्मानन्द प्राप्ति के आवरणों का निर्माणमार्ग दर्शाया है। आचार्य तुलसी के 'जीवन-विज्ञान' सम्बन्धी अनुप्रयोग संस्कृत की वैज्ञानिक उपादेयता सिद्ध करते हैं।[5] प्रेक्षा-ध्यान द्वारा नैतिक मूल्यों की स्थापना के विचार पर भी भावात्मक रूपरेखा तैय्यार की जा चुकी है।

'शतहस्त समाहर, सहस्र हस्त संकरी' की गूढोक्ति संस्कृत विद्वानों को आत्मसात् करनी होगी। सहस्र वर्षों से संस्कृत वाङ्मय में अर्जित ज्ञान को शत-सहस्र प्रयासों से उजागर कर पुनः प्रतिष्ठित करना होगा। संस्कृतज्ञों को मूल्यों की संस्कारिता से स्वयं को परिशोधित कर मूल्य-विहीन समाज में मूल्यबद्धता के नये उदाहरण प्रतिष्ठित करने होंगे। तभी वह भारत को भारतीयता का सच्चा स्वरूप पुनः प्रदान कर सकेंगे। समस्त राष्ट्र संस्कृत का सम्मान करता है। इस प्राचीन भाषा के माध्यम से प्रमाणित मूल्य जन-जन के मर्म में ईश-वचनों के रूप में शीघ्र सम्प्रेषित किये जा सकते हैं— यही वैदिक ऋषियों ने किया, यही शंकराचार्य और विवेकानन्द ने। संस्कृतज्ञों को भी एक बार इस संकल्प को दोहराना होगा। ●

---

1. मूल्य एवं आधुनिकता, शिक्षा की चुनौति, नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार 1985, पृ. 10.
2. मूल्यों की भारतीय संकल्पना, हरियन्ना, द क्वेस्ट आफ्टर परफेक्शन मैसूर काव्यालय 1952, पृ० 21-25.
3. यथा—उत्तरं यत् समुद्रेश्चैव दाक्षिणम्।
   वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति॥
4. यथा—यन्मसा ध्यायति, तद्वाचा वदति, यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति तदभिसम्पद्यते।" (श. ब्रा.)
   अन्योऽन्य माभिनवत वत्सं जातभिवघ्नया॥ (अ. वेद)
   यते महि स्वराज्ये (ऋग्वेद)
   सहना ववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवा वहै तेजस्वि नावधीत मस्तु माँ विद्विषा वहै। (वै. उप.)
5. युवाचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान (शिक्षा का नया आयाम) लाड़नू, तुलसी अध्यात्म नीड़म्, जैन विश्व भारती 1984, पृ. 2.

उमरावमल भांडावत

प्राध्यापक, रा० शि० प्र० विद्यापीठ
शाहपुरा बाग, जयपुर

आणविक विखंडन का ज्ञान विज्ञान विनाश की ओर अग्रसर है। रूसी नगर में चरनोबिल आणविक भट्टी का धू-धू कर जलना पिघलना और पश्चिमी यूरोप में रेडियो धर्मिता का प्रसार इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इसके विपरीत आयुर्वेद में खरल में आणवीकृत भस्मियों, औषधियों का प्रयोग जीवन देने के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। विनाश योजनाओं का ज्ञान जैसे उच्चाटन, जारण, मारण संस्कृत वाङ्मय की देन नहीं है।

गीतोपदेश, महाभारत में संजय उवाच पाशुपतास्त्रे, ब्रह्मास्त्र और नारायणस्त्र जैसे महा-घातक शस्त्रास्त्रों का वर्णन क्या उस युग में दूर-दर्शन एवं परमाण्विक प्रक्षेपास्त्रों की उपस्थिति का संकेत नहीं है? देवर्षि नारद अर्जुन को ऐसे ब्रह्मास्त्रों के लिए वर्जन-आदेश देते हुए कहते हैं :—

अरक्ष्यमाणान्येतानि त्रैलोक्येस्यापि पांडव।
भवंतिस्म विनाशाय भैवंभूयः वृथा क्वचित्॥

महाभारत निवातकवच युद्धपर्व (१७५-२२ पृ. १४४०)

कि इस विनाशक आयुध की मार से नाखून और बाल झड़ जाते हैं, चमड़ा पीला पड़ जाता है और शरीर कृश हो जाता है। समुचित रक्षा न होने पर ये दिव्यास्त्र तीनों लोकों के विनाश के कारण बन जावेंगे। अतः उनके प्रदर्शन का साहस कभी न करना।

आखिर कहाँ गये वे लोग? और उनके ब्रह्मास्त्र? उत्तर है—कहां गया हिटलर? उसी प्रकार हमारे पूर्वज ब्रह्मास्त्रों को नष्ट कर महान् हिमालय में गलने के लिए चले गये। आज हमें उनके इस ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है जो चरनोबिल की आणविक भट्टी पर काबू कर सके। यदि खोज की जाय तो संस्कृत वाङ्मय ही हमारी सहायता कर सकता है। विश्व को विनाश से बचा सकता है। आधुनिक आणविक शस्त्रागारों को नष्ट करने की युक्ति संस्कृत वाङ्मय ही बन सकता है जो आज के विश्व की सबसे अधिक पेचीदी समस्या है।

यह सर्व विदित है कि मोतीलाल नेहरू के कोई सन्तान नहीं थी और मदनमोहन मालवीय की सद्प्रेरणा, सद्सलाह से एक योगी ब्रह्मचारी ने अपने शरीर का बलिदान देकर सरूप-रानी के बन्ध्यत्व को नष्ट किया, जिससे भारत को एक 'जवाहर' प्राप्त हुआ।

आप सभी को मालूम है है Sky-lab अंतरिक्ष में स्थापित प्रयोगशाला का मलवा अमरीका की घोषणानुसार बंबई, कलकत्ता-सिंगापुर कर्क व विषुवत् रेखा के मध्य गिरने की आशंका थी। बंबई से कलकत्ता तक भारत में चिन्ता एवं भगदड़ व्याप्त हो गई थी उस समय जोधपुर निवासी त्यागी ने मंत्र शक्ति से मलवे को मकर रेखा की ओर मोड़ने की घोषणा की थी और यही हुआ। Sky-lab का मलवा मकररेखा के सहारे आस्ट्रेलिया के निर्जन मरुस्थल में गिरा और न केवल भारत वरन् समस्त विश्व भी जन-हानि से बच गया।

निष्कर्ष यही है कि संस्कृत वाङ्मय की महत्ता एवं देन किसी समय सीमा में वर्णन नहीं की जा सकती। ●

डॉ० जमनालाल बायनी

सहायक प्रोफेसर, राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
बीकानेर

संस्कृत को देववाणी कहा जाता है। वेदों की भाषा संस्कृत है, वेद ज्ञान के आदि स्रोत हैं भारतीय संस्कृति की आधारशीला ही वेद है। वेदों का ज्ञान भारतीय संस्कृति के परिचय में तभी सहायक हो सकता है जबकि उसके मूल को सही रूप में समझा जाय। इसके लिए संस्कृत के महत्व को स्वीकार करना ही होगा।

पंचतंत्र, गीता, रामायण सभी संस्कृत में है। संस्कृत को जाने बिना गीता के मर्म को मात्र अनुवाद से नहीं जाना जा सकता। गीता के माहात्म्य में कृष्ण के शब्दों को इस प्रकार उदधृत किया गया है :

"नाहं बसामि बैकुण्ठे, योगिनां हृदयैव च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद॥"

ईश्वर की सर्वव्यापकता, बैकुण्ठ का अस्तित्व, भक्तों के प्रकार तथा आराध्य तक उनकी पुकार – ये सब भेद – संस्कृत के ज्ञान के बिना ठीक वैसे ही ज्ञात हो सकते हैं जैसे कि ऊपरी आवरण से मूल का ज्ञान। अतः आज भी बदली हुई परिस्थितियों में संस्कृत के ज्ञान के महत्व को स्वीकार करना होगा। ●

डॉ० मण्डन मिश्र

निदेशक, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
देहली

स्वतन्त्रता के अनन्तर एक ओर केन्द्र और राज्य सरकारों के माध्यम से संस्कृत के विकास के अनेक प्रयत्न हुए हैं तो दूसरी ओर गत दशक में इसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में प्रश्नवाचक चिन्ह भी लगाए गए हैं। यद्यपि गत दो दशकों से चले जा रहे भाषा सम्बन्धी विशेषज्ञों ने कई बार यह निष्कर्ष भी प्रस्तुत किया है कि यदि १५ अगस्त, १९४७ को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू यह घोषणा कर देते कि संस्कृत इस देश की राष्ट्र-भाषा होगी तो शायद आज जो विवाद और समस्याएँ भाषा के नाम पर उपस्थित की जा रही हैं—ये पैदा नहीं होती। यह तथ्य प्रस्तुत करने का अभिप्राय यह है कि एक ओर संस्कृत के बारे में कुछ प्रश्न वाचक चिन्ह हैं तो दूसरी ओर उसकी उज्ज्वलता भी बहुत ही देदीप्यमान हैं।

भारत की सभी भाषाओं की जन्मदात्री के रूप में संस्कृत की महत्ता को सभी राज्य स्वीकार करते आए है। यदि सभी भारतीय भाषाओं से संस्कृत के अवदान को निकाल दिया जाए, तो वे एक प्रकार से निष्प्राण हो जायेंगी। यह सर्वसम्मत सत्य है कि संस्कृत वाङ्मय ने सभी भाषाओं को एक बहुत ही गम्भीर और शाश्वत भाव पक्ष प्रदान किया। यही वास्तव में भारतीय भाषाओं के साहित्य का आत्म तत्व है। इस सत्य से सभी शिक्षाशास्त्री सहमत हैं। सभी दक्षिण भारतीय और ईसाई, मुस्लिम शिक्षाशास्त्रियों ने भी एक मत से भारतीय भाषाओं के विकास और उनकी समृद्धि के लिए पाठ्यक्रम में कुछ प्रतिशत भाग संस्कृत के लिए सुरक्षित रखने का प्रस्ताव किया।

आज जितनी संस्कृत और उसके माध्यम से अभिव्यक्त सन्देशों की इस राष्ट्र के लिए आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नहीं थी। इसलिए मेरी दृष्टि में आज संस्कृत की सबसे अधिक प्रासंगिकता है। संस्कृत वाङ्मय का महत्व देश–कालातीत है, संस्कृत भारत की गरिमा की संस्थापक है। ज्ञान के क्षेत्र में इस देश को सारे संसार में जो महत्व मिला, संस्कृत ही उसका मूल आधार है। आज संस्कृत की मान्यता केवल हमारे राष्ट्र तक सीमित नहीं है—अपितु उसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है। गत २०० वर्षों में विदेशों में बहुत उच्च कोटि का शोध संस्कृत वाङ्मय में हुआ है। यहाँ तक कि वेदों का भी सर्वप्रथम प्रकाशन जर्मनी ने किया। गत १५ वर्षों में ५ विश्व संस्कृत सम्मेलनों का आयोजन हुआ–जिनमें तीन इटली, अमेरिका और फ्रांस में हुए और छठा सम्मेलन १९८७ में हालेण्ड में होने जा रहा है। इस प्रकार विदेशों के द्वारा संस्कृत सम्मेलनों का आयोजन और इन सम्मेलनों में बहुत बड़ी संख्या में विदेशी विद्वानों की उपस्थिति वर्तमान काल में भी मूर्त्त रूप में संस्कृत की विश्वजनीनता को सिद्ध करती है।

आज अखण्डता और एकता राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है। संस्कृत वाङ्मय इनका एकमात्र आश्रय है, यह कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। संसार में जिन संकीर्णताओं और रौद्र समस्याओं का भीषण नृत्य आज हो रहा है, उनका वास्तविक इलाज संस्कृत द्वारा प्रतिपादित तथ्यों का प्रचार ही है। संसार के आदि साहित्य के रूप में वेद को सभी समालोचकों ने स्वीकार किया है। हमारी परम्परा तो उसे अपौरुषेय अनादि मानती ही है लेकिन जो विद्वान् समय निर्धारण करते हैं, उनकी दृष्टि से भी छः हजार वर्ष पूर्व वेद का काल माना जाता है। इतने प्राचीनतम काल में जिन सिद्धान्तों की वेद के द्वारा प्रतिस्थापना की गई, वे इतने उन्नत और प्रगतिशील हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणा-पत्र भी इतनी ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकता। वेद ने एक ओर "यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म्" कह कर सारे संसार को एक घोंसला बताया है। यही भावना आगे चलकर "उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में सारे विश्व को एक कुटुम्ब मानने के रूप में विकसित हुई है। वेद में ऐसे सैकड़ों प्रसंग हैं जहां संसार को एक विश्व और मानव को विश्वमानव के रूप में वर्णित किया है। उत्तरवर्ती संस्कृत साहित्य इन्हीं धारणाओं का व्याख्यान है। इतने पूर्वकाल में ही हमारे परामर्श, हमारी बैठकों के निर्णय, चिन्तन और हृदयों में समानता की भावना की गई है। साथ-साथ चलने एक साथ बोलने और सौमनस्य रखने की घोषणा की गई हैं।

इतना ही नहीं सबको मित्रभाव से देखने के संकल्प वेद ने प्रदान किए।

इतनी उदात्त भावनाएं छः हजार वर्ष पूर्व व्यक्त की गई। यहाँ तक कि भाषा के सम्बन्ध में भी यह दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया हैं। हम सदा बहुभाषी रहे हैं, फिर भी एक रहे हैं। वेद ने हमारी इस बहुभाष-भाषिता को इन शब्दों में व्यक्त किया हैं—

वेद के राष्ट्रसूक्त में ही समस्त वर्णों के कल्याण यहाँ तक कि अत्यन्त वृष्टि, सशक्त बैल, दुधारू गाय और सर्वविध समृद्धि की कामना की गई।

हमारे वेद के स्वस्ति वाचन में सबके लिये शुभकामनाएं चाहीं गई हैं और शान्तिपाठ में पृथ्वी, आकाश, औषधियां, वनस्पतियां और समस्त प्रकृति में शान्ति की आकांक्षा की गई है। विश्व का कोई भी साहित्य वैचारिक धरातल की दृष्टि से भी इतना गहरा नहीं है।

यदि इन मूलस्थापनाओं का संस्कार हो तो अखण्डता की बात करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। जहाँ तक राष्ट्रीय एकता का प्रश्न है, संस्कृत उसका मूल स्रोत है। एक और यह स्रोत समस्त भाषाओं में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रवाहित होकर उनमें प्राणाधान करता है। दूसरी और इसके माध्यम से प्रचारित संस्कारों ने देश को आज तक एकता के सूत्रों में पिरोये रखा है। आज भी दक्षिण के आचार्य अपने शिष्यों को उनके जीवन की पूर्णता के लिये हरिद्वार, प्रयाग, काशी, पुरी, द्वारिका, बदरिकाश्रम, आदि की यात्रा का निर्देश देते हैं और उत्तर के गुरु रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, तिरूपति कांचीशृंगेरी की यात्रा को जीवन की पूर्णता के लिए अनिवार्य बताते हैं। केवल पंचांगों में एक स्थान पर पूर्ण कुम्भ लिखने मात्र से करोड़ों व्यक्ति यथा समय हरिद्वार, नासिक प्रयाग और उज्जैन में एकत्रित होते हैं। उनके संगम में प्रदेश या भाषा बाधक नहीं होते। हम स्थान या संकल्प के समय जब जल का प्रयोग करते हैं, तो उसमें—

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु और कावेरी का आवाहन करते हैं। हमारी अर्चना में भी केशर, कस्तूरी, लोंग, नारियल, इलायची आदि सामग्री हर दृष्टि के लिए अनिवार्य है। ये सामग्रियां देश के किसी एक भूभाग में नहीं होती किन्तु देश के अलग-अलग स्थानों में होती हैं। दक्षिण के एक कोने में स्थित रामेश्वरम् पर गंगोत्री का गंगाजल, चढ़ाना पुण्यदायी है और बदरीनाथ के अर्चक आज भी केरल के नम्बूदरीपाद वंश से आते हैं। भगवान् आदि शंकराचार्य ने केरल से चल कर इसी भाषा के माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता को अक्षुण्णता प्रदान की।

संस्कृत का कोई कवि या साहित्य किसी प्रदेश विशेष का नहीं है, उनमें से एक-एक के साहित्य से इस राष्ट्र की एकता और अखण्डता को संबल मिलता है। वे वास्तव में राष्ट्रकवि हैं। इसलिये आज की अखण्डता और एकता इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये जीते जागते माध्यम के रूप में संस्कृत और उसके द्वारा प्रतिपादित विचारों की प्रासंगिकता असंदिग्ध है। इसके अतिरिक्त हमारे वर्तमान प्रधान मंत्री राष्ट्र नायक श्रीराजीवगांधी वर्तमान, में दो और अनिवार्य आवश्यकताओं की ओर सारे राष्ट्र का ध्यान आकृष्ट करते हैं, उनमें एक हैं–वैज्ञानिक–प्रगति के विकास के साथ-अध्यात्म और नैतिक मूल्यों का अभ्युदय और इस राष्ट्र के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक उज्ज्वल भूतकाल के साथ शृंखला के रूप में वर्तमान और भविष्य को संयोजन करना है। संस्कृत साहित्य के अध्येता इस बात से सुपरिचित हैं कि उसके लेखकों ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों की साधना पर बल दिया, प्रचुर अर्थ उपार्जन और पूर्ण भोग की भी गणना इन पुरुषार्थों में की गई। इसी से यह प्रमाणित होता है कि लौकिक उपलब्धियों के क्षेत्र में भी हम उतने ही जागरुक थे। कामशास्त्र, वास्तु, शिल्प कला, चिकित्सा, गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, आदि कोई ऐसी विद्या नहीं है-जिसका इस भाषा में प्रचुर साहित्य उपलब्ध न हो। अन्तर केवल इतना ही है कि-इसमें अर्थ और काम को धर्म के नियन्त्रण में रखने की दीक्षा दी गई। इस दृष्टि से सबसे बड़ी आवश्यकता है उन भौतिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों पर अध्यात्म और नैतिक मूल्यों का नियन्त्रण हो और उनके निर्देश में यह सब विकास आगे बढ़े, हम उन्नत और विकासशील हों, 21वीं शताब्दी में अमेरिका जैसे सम्पन्न राष्ट्रों के समान समृद्ध हों, लेकिन इसके साथ-साथ हमारी यह आकांक्षा भी स्वाभाविक है कि हम मूल रूप से भारतीय बने रहें, हमारी सभ्यता और संस्कृति सुरक्षित रहे : इस दिशा में संस्कृत द्वारा प्रतिपादित मूल्य हमारे सबसे अधिक सहायक हो सकते हैं।

चौथी आवश्यकता हमारे इतिहास के साथ जुड़े रहने की है। इस बात को सारा संसार स्वीकार करता है कि इस राष्ट्र के स्वर्ण युग का संस्कृत के साथ अटूट सम्बन्ध है और वर्तमान और भविष्य को उस शृंखला के साथ जुड़े रखने में संस्कृत सबसे अधिक सहायक हो सकती है। ●

संस्कृतरचनासु नवबिम्बप्रयोगाः

नटवरलाल जोशी

लक्ष्मणगढ़

साहित्ये समाजरचनायाः प्रतिबिम्बो भवति। तस्याभिव्यक्तेः स्वरूपे युगानुसारं भावग्राहकानां बिंबानां प्रयोगो दृश्यत एव। सहजाभिव्यक्तिः भावानुसारं भाषायाः प्रयोगः, समुदात्त विषयमधिकृत्य ह्युदात्तरचनायाः विरचनं संस्कृतकवीनां वैशिष्ट्यं वर्त्तते। संस्कृतकाव्येषु कालधर्मानुसारं भावबोधः विषयानुसारं छन्दसां प्रयोगः भाषायाः प्राञ्जलता सर्वत्र दरीदृश्यते।

चित्रात्मकता भाषायाः विशेषो गुणः। अस्याः प्रयोगेण सहृदयानां हृत्सु भावग्राहित्वं सौकर्येण सहजतया जायते। बिम्बप्रतिबिम्बभावेन यच्चित्रं चित्रितं भवति तत्कवेः सामर्थ्यं बोधयति। साम्प्रतिकेऽस्मिन् युगे नवबिम्बानां प्रयोगणैव सरसरचनायाः प्रभावः समाकलितो भवति। संस्कृतकाव्येषु पारम्परिकबिम्बानां सहृदयहृदयानुरञ्जनाय प्रकृतेः मानवीकरणस्य प्रयोगः प्रत्यक्षः कालिदास-भवभूति-भास-बाणभट्टादीनां रचनासु लभ्यत एव। नवीनकाव्येष्वपि नवबिम्बानां चारूचित्रणं सर्वथा हृदयावर्जकं समङ्कितं प्राचुर्येण।

मूलशङ्करमणिलालयाज्ञिकप्रणीत**छत्रपतिसाम्राज्य**-नाटके चक्रवातः जनपदपुरे मार्गे बंभ्रमन्तेन लुण्टाकरूपेण चित्रितः। दृष्टव्योऽयं नवीनः प्रयोगः—

लुलितपथिकनेत्रं पूरयित्वा रजोभि,
वसनमपहरन्तो लुण्टका चक्रवाताः।
जनपदपुरमार्गे बभ्रमन्तो यथेच्छं,
वियदभिघनभीता उत्प्लवन्ते समन्तात्॥

डा० वे० राघवेन **अयोग योगः** इति नाम्नि कवितायां तरूणी नायिका श्वेतकपोतेन तुलिता—

भूषापणे कटकमादधती यदा त्वं
उत्सार्य चेलक मदर्शय एकपादम्
श्वेतं कपोतमिव चारू तदापतद् यद्
भग्नं वपुस्तदधुनापि ममोत्थितं न॥

भूरि वन्दे वसन्तम् कवितायां श्रीचिन्तामणि द्वारिकानाथदेशमुखेन निम्बचूततरूमूलनिषण्णः भारतस्य जनसाधारणः सरलातिसरलेन भाषासौष्ठवेन साक्षात् चित्रीकृत इवाभाति। नितरां सरलमपि काव्यबिम्बमिदं ह्यनुभूति प्राखर्येण सर्वोत्कर्षेण राजते—

भारतस्य नगरेषु संकुला
व्यापृता जनपदे च सस्यदे
तत्प्रजा विरमति क्षणमात्रं
निम्बचूततरूमूलनिषण्णा॥

अत्यन्त कामोन्तकः शीर्षक रचनायां "श्री बहादुर श्चन्द्र-चापोत्कटः कविः" कालं घुणेन तुलयति। रूपाढ़्यानां रूपं भुञ्जानः कालः काष्ठं भुञ्जानः घुण इव प्रतीयते। सर्वथा नवीनोऽयं बिम्बः सर्वथा प्रभावकारी च।

घुण इव काष्ठं शनकैरलक्ष्यमाणः सदास्ति भुञ्जानः।
रूपाढ़्यानां रूपं धूर्त्तानामग्रणी कालः॥

एवमेव कालः पश्यतोहररूपेण प्रदर्शितः कविना। पश्यतोहर शब्दस्य प्रयोगमात्रेण चमत्कारातिशयं व्यज्यते।

रूप यौवनकान्तीनां कालो वै पश्यतो हरः।
अस्य निग्राहको लोके न भूतो न भविष्यति॥

उर्दू कविमनुसृत्य **कज्जली** (गजल) कवितायां श्रीशिवप्रसादभारद्वाजः तमिस्रकेशपाशबिम्बेन नायिकायाः सौन्दर्यं व्यनक्ति—

"इदं नीलाम्बरं चित्रं तथा रत्नावली तारा,
सुसज्जा किं तदर्थेऽवेक्षसे यस्यागतं बाले!
किमर्थं कोपने मुक्तं तमिस्रं केशपशोऽयम्,
शठो यातोऽन्यतः किं वीक्षसे यस्यागतं बाले॥"

श्री दि० द० बहुलीकरमहाशयेन **'मुक्तकाञ्जलिः'** कवितायां इतस्ततः निर्वातित अन्धः कन्दुकोपमया सहृदयपाठकस्य नेत्रयोः समक्षे समस्तां कन्दुकक्रीडां प्रस्तौति—

पन्था नैव तवेष, गच्छपरतो, मार्गान्तिरं श्रीयताम्,
एवं क्षिप्त निर्वातितः प्रतिपथं सोऽन्धो यथा कन्दुकः।
अश्रौषीद्वचनं ननेति बहुशोऽयासीत्पुनश्चत्वरं
यात्रासीच्च पुरास्ति तत्र कतिधा गत्वाऽपि सर्वादिशः

डा० वे० राघवः "**कवि, ज्ञानी ऋषि**" "कवितायां मुक्ताः फलानि कीर्णानि यत्र लोकोवलोकते तत्रासौ वीक्षते सूत्रं सूत्रितां मालिकामपि,"

.........इत्यनुसारं बिम्बे प्रतिबिम्बं पश्यति सहृदयः।

श्रीशः फटके महानुभावस्य—**ऋतुकान्त गीते** नवबिम्ब चातुरी द्दष्टव्या—

तव पावननेत्रे निमीलितः क्षणशः
वदनकमले तव प्रसारिताः गगनगभीराः भावाः
तन्त्री वादयति कराङ्गुलिः, निनादयति मे मानसम्।
एतस्मिन् समये भावात्मकसाम्ये
प्रसरन्ति 'पूरिया'ऽऽलापाः
स्वराः वितन्वन्ति
एकाकारं लब्धारः
आलिङ्गनस्पर्शनैः कवलयन्तीव माम्
स्पर्शपल्लविते क्षणे तस्मिन्
भाव फुल्लितं भवति मे चेतः
हे नादवति!
तवालापोत्फुल्लायां लहर्याम्
मज्जाम्यहं मज्जाम्यहम्।"

अत्र पूर्ण चित्रमेव चित्रितं कविना।

श्री वेदव्रत आलोकः **'जानामि बाले'** कवितायां नायिकायाः फुल्लरूपं कूपं कथयित्वा तस्य रूपजलस्य गाम्भीर्यं माधुर्यं शीतलत्वं प्रकटयति—

ततः परं रूपिणि! दर्शनं ते कृत्वापि
तृप्तो न भृशं भवामि।
ते फुल्लरूपं समवाप्य कूपं
पीत्वापि तोयं तृषितो भवामि॥

तथा च—

क्षुब्धाम्बुराशौ तु विसृज्य नौकां
क्षिप्त्वा पुनः क्षेपणकं तदन्ते।
वाञ्छामि तोयप्लवनं च हित्वा
स्याज्जातु नौ नो जलधेस्तटान्ते॥

रचनायां कवेरन्तःकरणस्य क्षुब्धनीरधेश्चः बिम्बं सर्वथा पाठकं-ह्यतितरमावर्जयति।

'किमिदं तव कार्मणम्' कवितायां कविवरः डा० वे० राघवः –

किसलयानि मृदूनि मञ्जरीणा
मपि यष्टीरलिसंकुला नवीनाः।
दिवसैस्त्रिभिरेव शुष्कमुण्डाः
तव शाखा इह पत्रलाः समृद्धाः॥

तथा च—

किमिदं तव कार्मणं यदक्ष्णो
पुरतश्च्छोटिकयेव नूतनमूर्त्या
प्रतिनिर्मितवानसि त्वमेवं
किमिदं मर्म रस स्त्वयीह को वा?

चित्रमिदं सहकारवृक्षस्य समग्रं सौन्दर्यभावसौन्दर्येण पुष्णाति।

कामेन पुष्पशरप्रहारस्तु क्रियते-एव। अस्य वर्णनमपि कविभिः बहुधा कृतम्। किन्तु सौमित्रिसुन्दरीचरितम् काव्ये श्री भवानीदत्तशर्म्मणा उर्मिलायाः सौन्दर्यवर्णनप्रसङ्गे गुलिका-प्रहारस्य वर्णनमपि क्रियते। सर्वथा मौलिकोऽयं प्रयोगः।

किं वाऽवतर्त्तुं विहिते मनोज्ञे दधाति सोपानतती मनोजः।
बालां प्रहर्त्तुं गुलिका-स्मरेण संस्थापिताः किं नवतन्तुनद्धाः?

एकस्य सर्वथा नवीनबिम्बस्य प्रयोगोऽपि हृद्यतमः :—

"छाया सान्द्र तमास्ति यत्रसततं श्रान्ताः प्रमोदामहे,,
मत्वैवं न कदापि तिष्ठत नराः निर्भीततामाश्रिताः।
छायेयं न तरोरिहास्ति पतिता कस्यापि तापापहा,
विश्वग्रासपरायणस्य तु फणा सा कालसर्पस्य या॥

अत्र छाया विश्वग्रासपरायणस्य कालसर्पस्य फणा, इति बिम्बेन किं नोक्तं कविवर्येण श्री एम. एन. जोशिना स्वकीय **"कालः क्रीडति"** रचनायाम्।

मरूत्सन्देशः खण्डकाव्ये श्री पु० शरभत्चायः —

तत्रापश्यो दिवसपुरुषं यस्य पूर्वापराशा,
गण्डस्थाने नवनवविधौ यामिनी कामिनीयम्।
वारं वारं प्रणयविवशा चुम्बने चादधाना,
सन्ध्यारागं त्वधरमधुराऽऽसक्तताम्बूलरागम्॥

पूर्वापराशा—दिवस पुरुषस्य कपोलद्वयी इति नवीना कल्पना।

एवं क्रमेण संस्कृतकाव्येषु नवबिम्बानां ह्यतिशयरमणीयः, हृद्य अनवद्यः प्रयोगः नितरां काव्यसौन्दर्यवर्द्धकः सहृदयहृदयहारी च वर्त्तते।

रोगनिदाने ग्रहाणां प्रभावः

विजय कुमार शर्मा

ज्योतिष, प्राध्यापकः महाराज संस्कृत महाविद्यालयः जयपुरम्

संसारे जन्मवतां प्राणिनां सर्वमपि शुभाशुभं ग्रहयोगाधीनं वर्तते । 'योगाधीनं सुखं दुःखम्' इत्युक्त्या सुसिद्धमेव यत् जीवने मानवस्य समग्राणि कार्याणि ग्रहयोगवशादेव भवन्ति सुस्पष्टं वर्तते यत्—

"ग्रहाधीना योगाः सदसदभिधाना जनिमतां ।
ततो योगाधीनं फलमिति पुराणैः समुदितम् ।।"

(जा. ग्रं. पृ. 41)

ज्योतिषशास्त्रे द्वादशभावानां वर्णनं निम्नक्रमेण वर्तते राशयो द्वादश भवन्ति अतो भावानामपि द्वादशत्वम् । एषु प्रथमादि द्वादशभावानां पृथक् पृथक सज्ञा आकरेषु प्रसिद्धैव । यथा च– उक्तम्

"देहं द्रव्यपराक्रमौ सुखसुतौ शत्रुः कलत्रं मृतिः ।
भाग्यं राज्यपदं क्रमेण गदिता लाभव्ययौ लग्नतः ।।"

(जा.ग्रं. भावाध्याये)

रोगो दुःखमूलम्, अथवा रोगमूलं दुःखम् इत्युक्त्या सर्वप्रथमं रोगविषयमधिकृत्य तत्तद्स्थानं विवर्ण्यते – षष्ठो भावः रोगस्थानं भवति । जातकस्य कीदृशो रोगः, कस्मिन्नङ्गे कस्माद् कारणाद् च समुत्पत्स्यते कदा चास्योपशमनम् भविष्यतीति सर्वोऽपि निर्णयः षष्ठस्थानीय ग्रहस्थिति स्थानान्तरानुगुण्येन च परिज्ञायते । ज्योतिषशास्त्रे अस्माद् स्थानाद् फलप्रतिपत्तौ बहवः विषयाः विचार्यन्ते अस्माद् स्थानाद् रोगशत्रुकृतफल विचारोऽपि विचार्यते यतो हि रोगो मानवं शत्रुवद् बाधते अतो षष्ठस्थानादेव रोगोऽपि विचारणीयः ।

आकरेषु द्वादशराशीन् समधिकृत्य समग्रोऽपि कालः प्रवर्तते । अतः तत्त्वविद्भिः ज्योतिर्भिः अस्य कालचक्रस्य नराकृतिरूपेण कालपुरुषास्याङ्गपरिकल्पना कृता ।
यथाचोक्तम्

"कालाङ्गानि वराङ्गमाननमुरो हृत्क्रोडवासोभृतो ।
वस्तिर्व्यञ्जनमूरुजानुयुगले जङ्घे ततोऽङ्घ्रिद्वयम् ।।

(बृ.जा पृ 2)

अर्थात् अस्य कालपुरुषस्य मेषराशिः शिरः, वृषराशिश्च मुखम् मिथुनं वक्षः, कर्कराशिः हृदयम्, सिंह उदरम्, कन्याराशिः कटिप्रदेश, तुला नाभिप्रदेशः वृश्चिकराशिश्च लिङ्गम्, धनुराशिः ऊरु, मकरराशिः जानुयुगलं कुम्भराशिः जङ्घे द्वे मीनराशिश्च पादद्वयमिति ।

अधुना विचार्यते शरीरस्य विचाराश्रय्यङ्गे को राशिः कश्च राशीशः राशिस्वरूपं तदधीशस्वरूपं च किं तद् भावगतोऽन्य ग्रहः कीदृशः मित्रं शत्रुः समो वा तदनुसारमेव पुरुषस्य

सर्वाङ्गान्यधिकृत्य द्वादशभिर्भावैः सूक्ष्मो विचारः कर्तुं शक्यते इदमत्रावधेयम् राशिस्वरूपं तत् स्वभावः तद्स्थितिः योगकालः सर्वेऽपि शुभाशुभविचारे सूक्ष्मरूपेण परिचिन्तनीया भवन्ति ।

यतोहि मानवशरीरं त्रिदोषयुक्तं वर्तते । सर्वेषां दोषाणां समत्वे सुस्वास्थ्यम् भवति कफवातपित्तेष्वेकस्य वृद्धौ रोगः समुत्पद्यते इति रोगोत्पत्तौ चिकित्सासिद्धान्तः तथा च पाञ्च-भौतिकम् इदं शरीरं पञ्चभिर्भूतैर्निर्मितम् ।। अस्माकमाकरेषु रविचन्द्रादीनां नवग्रहाणां तत्त्वानि पृथक् पृथक् वर्णितानि । इमानि पञ्चतत्त्वानि निम्नलिखितानुसारं नवग्रहेषु निर्धारितानि सन्ति ।

तानि च यथा — सूर्ये–अग्नितत्वम्, चन्द्रमसि जलम्, भौमे अग्निः, बुधे भूमिः, गुरौ–खम् (आकाशतत्वम्) शुक्रे जलम्, राहुकेत्वोरपि वायुतत्त्वमेव प्रतिष्ठितमस्ति । अतः नवग्रहेषु तत्तद् तत्वानि विमृश्य रोगप्रवृतिमूलकं निदानं कर्तव्यम् ।

सूर्यप्रभावाद् रोगनिदानं यथा हि — तापज्वर–त्र्याहिक द्वायहिकप्रवृत्तिविषमज्वर – सन्तापनम्-अस्थि जन्यरोग विशेषः राजयक्ष्मा (क्षयरोगः) – अपस्मारः, हृद्रोगः, शिरःशूलपीड़ा-नेत्रव्याधिः, पित्तजनित दुःखम्, कुष्ठरोगादयः भवन्ति अतः एतेषां सर्वेषां रोगाणां निदानं च वाञ्छेयुः तदा भगवतः भास्करस्य समाराधनानुष्ठानादिकं समाचरणीयम् । तेन रोगमुक्तिः भवितुं शक्यते इति वृत्तानुसारं मयूरकविकृतं सूर्याराधनं कुष्ठ रोग निवारकं भवतीति जनश्रुतिः । एवमारोग्यं भास्करादिच्छेत् इति पुराण मूलकं आख्यानम् ।

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च........... ।"

समग्रं जगत् अग्निसोमात्मकम् इति श्रुति प्रमाणं प्राणिनां कृते चराचरजगति सर्वाणि तत्वानि जीवनोपयोग्यानि प्रमुखतः रविचन्द्राभ्यां प्रभावितानि नात्रसन्देहलेशोऽपि सूर्यान्तरमौषधीशचन्द्रः मनोधिष्ठातृत्वेन अस्माकं रोगनिदाने विचारणीयो विषयः चन्द्रमा कर्कस्याधिपतिः जलतत्वाधिष्ठाता क्षारभूमि निवासी जलचारी आल्हादको ग्रहः । स्त्रीस्वभावाभिभूता यथाः– "मनस्तुहिनगुः-वराहः ।"

अशुभश्चन्द्रः प्रायशः पाण्डुरोगं रक्तविकृतिं, कफजनित-ज्वरं जीवनोपयोगितत्वानि च विनाशयति, जलोदरं रात्र्यन्ध-रोगमुत्पादयति अथवा एतेषा रोगाणां विधायकश्चन्द्रः ।

अशुभकारको भौमः कुष्ठरोगम्, पित्तज्वरम् मज्जा-वृद्धिकृत् रोगं, उदरव्रणम्, वृषणवृद्धिम् अग्निशस्त्रलौष्ठ विद्युत्-ऊर्जा संसर्गजन्य रोगान् जनयति ।

बुधोऽपि प्रज्ञापराधान् चर्मरोगान् कण्ठनासिका दन्त-रोगान् जनयति ।

गुरुः विद्याबौद्धिकक्षतिं, नाभिप्रदेशीय रोगान् (वाक्-पतिर्नाभिमूले), उदर रोगान्, स्त्रीजन्यपारिवारिकाशान्ति मस्तिष्क-विकारान् च जनयति ।

एवं शुक्रोऽपि मलमूत्ररोगान्, जननेन्द्रियरागान् गलग्रन्थि-रोगान्, रजोवीर्यं दोषान् च जनयति ।

शनिकृतरोगेषु बस्तिप्रदेशीय–शल्यचिकित्सा–दन्तरोगान् जानु भङ्ग (यतोहि मकरकुम्भराशौ जानुप्रदेशे) पङ्गुताम् ग्रन्थिवायु रोगान् वातदोषांश्च जनयति ।

राहुकेतुभ्यां भौमशनिवत् विचारणीयम् ।

अत्र दुःस्थितौ राहुकेतू विषजन्तुभक्षणात्–विषप्रयोगात् मिथ्याभियोगाद् यवनात् शबरदस्युभिर्वा दुःखं जनयतः । कारागारे निवेशयति । भृत्य सेवकैः वञ्चनामुत्पादयति, नैरृत्य दिग्गमनप्रतिकूलं फलं प्रयच्छति ।

अतस्तावद् सूर्यादिग्रहाणां अशुभस्थान जनित दुष्टफल-निवारणार्थम् शुभफल प्राप्त्यर्थं च वैदिकप्रक्रियानुसारं पौराणिक-विधिना यन्त्रमन्त्रैर्वा जपदानाद्यनुष्ठानानि सेवितव्यानि नो इतराणि ।

सूर्यः पूर्वदिग् अधिष्ठातृदेवता शुक्रस्याग्नेयं, दक्षिणस्यां दिशि भौमः नैरृत्यां तमोग्रहौ, वरुण दिशिमन्दः, वायव्यां चन्द्रः, उत्तरस्यां दिशि बुधः, ऐशान्यां गुरुः ।

यथा चोक्तम —

"प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमः सौरेन्दुवित्सूरयः"

(बृ. जा. पृ. 28)

यस्य यस्य ग्रहस्य यानि यानि तत्वानि यानि यानि धातुपात्राणि वस्त्राणि च समाकलय्य नगराद् ग्रहदिशानुकूलं स्थानं विचिन्त्य

तत्तदधिष्ठातृदेवताराधन पुरस्सरम् अपेक्षित ग्रहस्य जपकरणात् रोगान् मुक्तिः तन्त्रेषु सूर्यादिग्रहाणां जपमालापदार्थ वैशिष्ट्यं प्रतिपादितं "देवो भूत्वा देवं यजेत्" इति शासनात् ग्रहानुकूलं वस्त्रासनादिकं तत्तद् पदार्थमालां गृहीत्वा जपकरणात् रोगान् मुक्तिः । कष्टान् मुक्तिः ।

कांश्चन विशिष्टरोगयोगान् पुरःस्थापयामि—

व्रणयोगाः

(i) भौमेन युक्तो मन्दस्त्रिकस्थो व्रणमुत्पादयति ।

(ii) भौमयुतो लग्नेशस्त्रिकगतो व्रणानुत्पादयति ।

यथोक्तं गणेश दैवज्ञेन —

"भूमिमार्तण्डपुत्री व्ययभवनगतौ शत्रुगौ वा व्रणी स्यादिति" भौमार्किभ्यां युतो गुरुः हृदये व्रणं करोतीति । एवं षष्ठेश युक्तः पापः पञ्चमस्थो भवति-पुत्रदेहे व्रणमुत्पादयति, चतुर्थभावगतो मातृदेहे, तृतीयस्थो लघुभ्रातृदेहे, लाभस्थोऽग्रजस्य च । अनेन प्रकारेण अष्टमस्थः पापः स्वदेहे गुह्यरोगान् व्रणान् भगंदरानुत्पादयति ।

पाराशरः

(i) षष्ठेशयुतो लग्नेशः षष्ठाष्टमगतोऽथवा देहे व्रणं जनयति ।

(ii) त्रिकस्थो भानुः षष्ठेश युक्तो शिरसि व्रणमुत्पादयति, चन्द्रेण मुखे, भौमेन कण्ठप्रदेशे, शनिना अधोभागे, गुरुणा नाभिमूले, शुक्रेण जननेन्द्रियेषु, राहुणा वृषणेषु व्रणम् उत्पाद्यते एकाधिक पापग्रह योगात् दुःसाध्या शल्यचिकित्सावहाः व्रणरोगाः भवन्ति ।

राशिस्थानाश्रित देहभागेषु व्रणविस्फोटक रोगं प्रकटयति पापग्रहः-यथा हि प्रथम राशि भावे शिरसि द्वितीय राशिभावे मुखे, तृतीय राशौ भावे च बाहौ कण्ठे, चतुर्थराशौ-भावे हृदय-वक्षःस्थले पञ्चम भाव-राशौ उदरे, नाभिप्रदेशादूर्ध्वम्, षष्ठ-भाव-राशौ नाभिप्रदेशादधः, सप्तम भावराशौ वस्तिप्रदेशे, अष्टम भावराशौ गुह्यरोगान्, नवम भावराशौ ऊरूप्रदेशे दशम-राशौ जानु-पीठ प्रदेशे, एकादश भावराशौ जंघायां द्वादश भावराशौ चाङ्घ्रिद्वयम् ।

ग्रहानुसारं व्रणोत्पादने कारण विशेषः

सूर्ये—काष्ठ चतुष्पदाक्रतो व्रणः ।

चन्द्रे—जलजन्तुभिः व्रणः ।

भौमे—अग्नि-ऊर्जा विद्युत्प्रभृतिभिः व्रणान् जनयति ।

बुधे—उच्चैः पतनात् वृक्षादथवा शिखरात् पतनात् वा ।

गुरौ—उदरशूलादथवा मंदाग्निवशात् ।

शुक्रे—भौतिक प्रपञ्चात् अथवा भोगवशात् ।

शनौ—वात - व्याधिचिकित्सानिमित्तविशेषादथवा कृषि - पशु संसर्गात् ।

कुष्ठरोगाणामुदाहरणानि :—

कुष्ठरोगकारको भानुः । चिकित्साशास्त्रे षट्त्रिंशद् (३६) परिमिताः कुष्ठरोगभेदाः वर्णिताः । तेषु कतिपयान् पुरःस्थापयामि विशेषतः सूर्य चन्द्र भौम मिश्रयोगात् रोगोऽयमुत्पद्यते ।

(i) कर्कमकरमीन राशि नवमांश गताः चन्द्रभौममन्दाः शुभैरवीक्षिताः रक्तकुष्ठरोगमुत्पादयन्ति ।

(ii) लग्नस्थितः पापग्रहः शुभग्रहसम्बन्धाभावात् कुष्ठरोगं तनोति ।

(iii) भौम राहुभ्यां युक्तश्चन्द्रः श्वेतकुष्ठं तनोति तथा सूर्यशनौ कृष्णकुष्ठम् ।

यथोक्तं जातके —

लग्नाधीशेन्दुपुत्रौ क्षितितनयनिशानायकौ क्वापि संस्थौ
युक्तौ स्वर्भानुना वा भवति हि मनुजः केतुना श्वेतकुष्ठो
आदित्यो भौमयुक्तस्तदनु शनियुतो रक्तकृष्णाख्य कुष्ठी
चन्द्रो मेषे वृषे वा कुज शनिसहितः श्वेतकुष्ठी सरोगो ।।

(जा. अ. योगाध्याये पृ. 44)

उन्मादबुद्धिरोग—

लग्नराशौ रवौ कलत्रे भूमिसुते जातस्योन्मादरोगं भवति। अत्र लग्न सप्तमस्थाभ्यां रवि भौमाभ्याम् अग्नि प्राचुर्य परवशात् शिरसि अत्युष्णता जन्य-उन्माद रोगः। एवं लग्ने शनौ कलत्रे कुजे त्रिकोणे वा उन्माद बुद्धि समुपैति जातकः।

यथोक्तम् वराहः—

लग्नेरवौ भूमिसुते कलत्रेसून्माद भाक् तत्र नरो हि जातः
उन्मादबुद्धि समुपैति लग्ने शनौ कलत्रे सकुजे त्रिकोणे।
(जा. पा. श्लो. 192)

अङ्गवैकल्यम्—

शनिःवायुतत्त्वात्मको ग्रहः। यदि सः विकृतो भवति तदा जातकः पक्षाघातरोगेण पीडितः सञ्जायते यतो हि पक्षाघाते कुपितो वायुः स्नायुजाल विकृतिं कृत्वा तस्यार्धाङ्गं मृत प्रायं करोति।

ये ये च वायु तत्त्वात्मकाः प्रधानाः ग्रहाः वर्तन्ते तेषां विरुद्धग्रह संयोगेन जातको विकलाङ्गो भवति। ते चामी योगाः लग्नस्थं शुक्रं यदि शनिः कयाऽपि दृष्टया पश्यन्ति तदा विकलाङ्गताः सम्भवन्ति।

शनि भौमज्ञाः गुरुयुताः कट्यां पीडां वैकल्यं वा जनयन्ति। शनि षष्ठेशौ रिःफगौ पापदृष्टौ सतो जंघायां वैकल्यं-पीडां पङ्गुत्वं वा जायते। "शनिना पङ्गुः"। नीचांशस्थस्य षष्ठेशो यदा शनि युतो भवति तदा चतुरशीति (84) वायु-रोगेष्वेकोऽवश्यं सञ्जायते।

रोगप्रशमनोपायाः

अस्माकमाकरग्रन्थेषु मानवहितैषिभिः महर्षिभिरनेकोः रोगोपशमनोपायाः वर्णिताः। कस्मिन् कस्मिन् ग्रहे, किं किं रत्नं किमौषधं सहायकं भवति तत्सर्वमपि संहितासु वर्णितमस्ति।

रत्नचिकित्सा—

सूर्यप्रीत्यर्थं माणिक्यम् चन्द्राशुभफल निवारणाय मुक्ताफलम् (वसरा मौक्तिकः इति प्रसिद्धम्) भौमारिष्ट निवृत्यर्थं विद्रुमम्, बुधप्रीतये गारुत्मकम्, गुरुप्रीत्यै पुष्पकं ("पुखराज" इति प्रसिद्धम् शुक्रारिष्ट शमनाय वज्रं (हीरकम्), शनि प्रीत्यै नीलम् राहुदोषोऽपशान्त्यै च गोमेदम्, केतौ कृते वैदूर्यमिति रत्नानि सन्ति। येषां विधिवत् सन्धारणेन तद्ग्रहदोषोपशमनात् रोगनिवृतिर्भवति अर्थात् रोगश्रयि ग्रहस्य प्रीत्या रोगविनाशः सञ्जायते।

सूर्यादिग्रहदोष शान्तये निम्नलिखितौषधयः प्रभवन्ति। सूर्यादिग्रहाणां प्रीत्यर्थम् इमाः औषधयः यदि विधिवत् धार्यन्ते तदा अवश्यं रोगविनाशो भवति। सूर्यस्य-शान्त्यर्थं बिल्वम्, चन्द्रस्य क्षीरिणी, भौमस्य नागजिह्वा, बुधस्य वृद्धदारः, गुरोः-भाँगी, शुक्रस्य सिंहपुच्छम्, शनेः बिच्छोलं, राहोः चन्दनं केतोश्चाश्वगन्धः फलदाः भवन्ति।

रोगशमन विचारे चन्द्रस्याऽपि विचारोऽवश्यं कार्यः यतो हि सर्वग्रहेषु पृथिव्यां निकटस्थश्चन्द्रएव। अतश्चन्द्राधिष्ठित राश्यनुसारमपि रोगस्य शमनं विचार्यम्।

प्राचीनग्रन्थेषु औषधिग्रहणवर्णने अनेक – योगाः एतादृशाः वर्णितास्तेभ्यः चन्द्रस्य माहात्म्यं स्वतः सिद्ध्यति ते चामी योगाः। यदि विरेचनौषधं जलराशिस्थे चन्द्रे सति गृह्यते तदा रोगिणो रोग निवृतिर्जायते।

कुत्सित रोग शोधनमपि एतादृशः एव कार्यकाले कार्यम्। स चन्द्रे लग्नेशे अनुदितभागे स्थिते सति औषधग्रहणं श्रेष्ठम्। शुक्लपक्षे वृषराशि गते पापदृष्टिरहिते उदितभागेऽपि चन्द्रमसि नेत्रशल्यचिकित्सा सफला भवति।

इत्थं यदि सूक्ष्मदशान्तर्दशा क्रमेण षष्ठभावं विचारयामः तदा रोगस्य निदानं चिकित्सापि ग्रहानुसारं निश्चेतुं शक्यते। ●

महाभाष्यं वा पठनीयम् महाराज्यं वा पालनीयम्

डॉ० हर्षनाथ मिश्रः

आचार्यः, शास्त्रचूड़ामणि योजना,
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठम्, नई दिल्ली

महतः स्नेहस्यैवेदमवदानं यदस्यामभिरूपभूयिष्ठायां विदुषां परिषदि विरलगुणेन तुच्छेनापि मया सम्मानितमाध्यक्ष्यास्पदमधिष्ठातुमवसरो लब्धः। इयमुपक्रतिकथाऽतिविितता बहुतिथं कालमपेक्षते। अतः इतो विरम्य सम्मेलनस्य मंत्रिणः श्रीमोतीलालजोशी महोदयान् प्रति अन्याँश्च सर्वान् प्रति कार्तज्ञ्यं भूयो भूयो विनिवेद्य प्रकृते विषये किञ्चिद् व्याहरामि—

"महाभाष्यं वा पठनीयं महाराज्यं वा पालनीयम्" अनुभववतां विदुषामियमुक्तिः प्रत्यक्षरं साभिप्राया। अत्र महाभाष्याध्ययनमहाराज्यपालनयोः साम्यं दर्शितम्। महतो राज्यस्य पालने सुराजाऽऽनन्दमनुभवति कुत्सितस्तु नृपस्तत्र क्लेशमेव प्राप्नोति यो राजा शास्त्राध्ययनप्राप्तप्रतिभाक्षालनः सद्गुरुसन्मन्त्रिसम्मतिगृहीतमार्गदर्शनो राज्यं पालयति, तस्य प्रजाः प्राप्तसुखसौविध्यास्तमभिनन्दन्ति, ततो विपरीतो लब्धनिन्दः स्वकर्तव्यच्युतः कलङ्कपङ्कनिमग्नोऽवसीदति। तथैव महाभाष्यं विहितगुरुकृताध्ययनस्वाध्यायंनानाविध रहस्यावदानेन पाठकं प्रतिभावन्तं सरसकाव्यमिव लोकोत्तराह्लादेन सुखयति, अकृतगुरुसेवः स्वल्पज्ञानदुमदः कुपाठकस्तु दुःखमेवात्राश्नुते वैयाकरणपाशः स प्रतिपदमवसीदति।

अत्र सूक्तौ महाभाष्यमहाराज्ययोर्यत् साम्यमुत्प्रेक्षितं तन्माघेन कविना जन्मनालंकृतराजस्थानेन स्वीये शिशुपालवधे प्रादर्शि। सर्वैरस्माभिः पद्यमिदं व्याकरणं राजनीतिं च पठद्भिः सर्वदा स्मर्यत एव—

अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्तिः सन्निबन्धना।
शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा॥

(शिशुपा व० 2/112)

उत्तमो महाराजो महद्राज्यं प्राज्यं शासत् नीतिशास्त्रीयसूत्र विरुद्धमेकं पदन्यासमपि न विदधाति, स सद्वृत्तीनां भृत्यादि वेतनजीविकादीनां व्यवस्थां करोति, योग्यतया कर्तव्यनिर्वाहकाणामनुर्जीविनां क्रियावसाने यथायथं पारितोषिकदानेन सन्तुष्टिं तथा सम्पादयति यथा अन्येऽपि कर्मकरा उत्साहिता भूत्वा स्वकर्तव्यं निर्वहेयुः, स सुराजा योग्यान् स्पशान् गूढचरान् नियोज्य तद्दृशा दृष्टसकलराज्यव्यवहारो दण्ड्यान् दण्डयन् सज्जनान् सम्वर्धयन् स्वराज्यं राजन्वत् करोति राजवत्त्वादपयशसो वारयति च तथैव यो वैयाकरणः सूत्राक्षरमतिक्रम्य पदं न न्यस्यति, वृत्तिग्रन्थानां प्राचीनानां काशिकाप्रभृतीनां चार्वाचीनानां सम्यग्ज्ञानेन सम्पन्नोऽस्ति, सन्निबन्धनेन भाष्यग्रन्थेन समृद्धः महाभाष्यपस्पशाह्निकपरिशीलनलब्ध पाटवः स एव शब्दानुशासनसमर्थो मन्यते। अत्र पस्पशापदं सर्वस्यापि महाभाष्यस्यालक्षणं प्रधानत्वादन्यत्राप्रतिपादितस्य प्रयोजनादिकस्य प्रतिपादनाच्च तस्योल्लेखः काकेभ्यो दधि रक्ष्यतामितिवत्।

बुद्धिशस्त्रः प्रकृत्यङ्गो घनसंवृतिकञ्चुकः।
चारेक्षणो दूतमुखः पुरुषः कोऽपि पार्थिवः।

(शिशु पा. व. 2/85)

स पुरुष एव प्रशस्यः पार्थिवः यो बुद्धिशस्त्रेण शस्त्रवान् प्रकृत्यङ्गेन दृढाङ्गः मन्त्रणाघनसंवृति कवचाच्छन्नशरीरः चारचक्षुषा विलोकितस्वपरराज्यमण्डलः तथा मेधाविवाक्पटु राष्ट्रभक्तदूतमुखो भवति। अन्यैरङ्गैर्दृढैरुपेतस्यापि मानवस्य नेत्रहीनस्य यथा प्रतिपदमवपातः संभाव्यते तथा सर्वगुणसम्पन्नस्यापि राज्ञो योग्य स्पशरहितस्य राज्यपालननिरतस्य कार्यविधौ प्रमाद आपतति अतएव भारविणाप्युक्तम्—

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥

(किरातार्जु० 1/4)

इत्थं स्पशानां कटुवचनमपि महाराजैः श्रोतव्यमित्युक्तं भवति। हितावहत्वात् परिणामसुखकरत्वाच्च। शिशुपालवधश्लोके पस्पशपदं समस्तस्य महाभाष्यस्योपलक्षणम्। महाभाष्यं हि नेत्रं वैयाकरणानाम्। याथातथ्येनार्थप्रकाशकत्वात्। तद्रहितानां तेषां पदे पदे स्खलनमवपतनं च संभाव्यते। वार्तिकसूत्रादिप्रत्याख्यानपरकं महाभाष्यवचनमप्रियमपि वैयाकरणैरङ्गीकर्तव्यमङ्गीक्रियते च।

अनेनापि महाराज्यपालनम् महाभाष्याध्ययनं च तुल्यमिति सिद्ध्यति। व्याकरणं शब्दानुशासनमिति पतञ्जलिना प्रख्यापितम्। शिष्टप्रयुक्ताः शब्दाः यथा सिद्ध्येयुस्तथैव सूत्रादीनि निर्मेयाणि यदि सूत्रप्रवृत्याऽनिष्टं रूपमापतति तर्हि प्रवृत्तिर्वारणीया। लक्ष्यानुगतं सूत्रमत्रास्ति अतएव व्याकरणं शब्दानुशासनमस्ति न तु शब्दशासनम् तच्छब्दान्वाख्यायकमस्ति नतु शब्दाख्यायकम्। अत एव स्थितस्य गतिरत्र चिन्त्यते। महाभाष्येऽत एवानेके योगविभागास्तथाकृता यथाऽव्याप्त्यतिव्याप्तिदोषा निराकृता अभूवन्। सह सुपेत्यत्र योगविभागं विना अनुव्यचलदित्यादौ समासो न स्यात् तं च विना विवक्षाधीनसन्धिस्वीकारात् सन्धिरहितस्यापि साधुता स्वीकृता स्यात् न च तथा शिष्टैः प्रयुज्यत इति योगविभाग आश्रितः। "पञ्चमी भयेन" इत्यत्र पञ्चमीति योगविभागाभावे अलोविधिरल्विधिः पदादादिः पदादिः भोगोपरतः ग्रामनिर्गत इत्यादि शिष्टप्रयोगाः न सिद्ध्यन्ति। इमे न सिद्ध्यन्ति चेदव्याप्तिदोषः। अतस्तत्परिहाराय योगविभाग आश्रयणीयः लक्ष्यमस्ति तत्साधकं लक्षणं नास्ति चेदयं वैयाकरण दृष्टिदोषो न तु प्रयोक्तुर्दोषः। प्रयोक्तॄणां प्राथमिकत्वात् तत्प्रयोगान्वाख्यायकं लक्षणं नास्ति चेत्तल्लक्षणदोषेण भवितव्यम्। सर्वत्रविभाषा गोः अवङ् स्फोटायनस्य इतिसूत्रिते गवाक्ष इतिवत् गोऽक्ष इत्यप्यापद्येत। न च 'गोऽक्ष' पदेन गवाक्षार्थः प्रतीयते देवदत्तस्थाने देवेन दत्त इति प्रयोगवत्। अतोऽत्र व्यवस्थित विभाषाऽऽश्रीयते।

भगवान् पतञ्जलिः वैयाकरणसूतसम्वादेन अजेर्व्यघञपोः 2.4.56 इति सूत्रोक्तेन प्राप्तिज्ञं निन्दति इष्टिज्ञं च प्रशंसति-घञपोः प्रतिषेधे क्यप, उपसंख्यानम् समजः समाज इत्यादाविव समजनं समज्या इहापि प्रतिषेधो यथा स्यात्। तर्त्तर्हि वक्तव्यं न वक्तव्यम् अप् इति न प्रत्ययग्रहणं किन्तु प्रत्याहारग्रहणम् अपः अकारेण क्यपः पकारेण च अप् इति प्रत्याहारो निष्पाद्यः। नन्वेवं क्तिनोऽपि तन्मध्यपतितत्वात संवीतिरित्यत्र 'वी' आदेशो न स्यादित्युक्त्वा उपायान्तरं दर्शयन् स पुनः कथयति-एवं तर्हि नार्थ उपसंख्यानेन नापि घञपोः प्रतिषेधेन। इदमस्ति चक्षिङः ख्याञ् वा लिटि इति। ततो वक्ष्यामि-अजेर्वी अजेर्वीभावो भवति वा। व्यवस्थित विभाषा 'वा' इति। व्यवस्थिता चासौ विभाषा व्यवस्थित विभाषा। लक्ष्यानुसारेण यो विधिरिष्टस्थले क्वापि विकल्पेन क्वापि च नित्यरूपेण प्रवर्तते क्वापि च न प्रवर्तते एतादृशो वैकल्पिकविधिर्व्यवस्थितविभाषाविधिर्भवति। तेनेह भविष्यति 'प्रवेता' 'प्रवेतुम्' 'प्रवीतो रथः', संवीतिः। इह च न भविष्यति समाजः, समजः, उदाजः, उदजः, समजनम् उदजनं, समज्या, पदाजिः। तत्रायमप्यर्थः- इदमपि सिद्धम् भवति प्राजिता इति। किं च भो इष्यत एतद्रूपम्? बाढमिष्यते। एवं हि कश्चिद् वैयाकरण आह कोऽस्य रथस्य प्रवेता इति। सूत आह-अहमायुष्मन्नस्य रथस्य प्राजिता इति। वैयाकरण आह-अपशब्द इति। सूत आह-प्राप्तिज्ञो देवानांप्रियः, नत्विष्टिज्ञः। प्रयोगदर्शनेन अजेर्व्यघञपोः इति सूत्रं विकल्पेन प्रवर्तते तेन प्रवेता प्राजिता इत्युभयं साधु इति सूताभिप्रायः। सूत्रे 'वा' शब्दाभावात् प्रवेता इत्येव साधु न तु प्राजिता इति प्राप्तिज्ञस्य वैयाकरणस्य तात्पर्यम्। प्राप्तिज्ञस्य स्वस्य देवानांप्रियत्वोक्त्या स्वस्य चेष्टिज्ञत्वाकथनेन क्रुद्धो वैयाकरण पुनराह- "अहो न खलु अनेन दुरुतेन बाध्यामहे इति। सूत आह-न खलु वेञः सूतः, सुवतेरेव सूतः। यदि सुवतेः कुत्सा प्रयोक्तव्या दुःसूतेनेति वक्तव्यम् न तु दुरुतेनेति। अत्र सौत्रीमेव प्राप्तिं जानान आचार्याणामिष्टिमजानन् वैयाकरणो देवानांप्रियः अर्थात् मूर्खः कथितः। वैयाकरणेन वेञ उत इति यद्रूपं साऽस्य सञ्ज्ञा। सूते पूजायां सु। शब्द इति मन्यमानेन तस्य दुष्टस्य कृते दुरुतशब्दः प्रयुज्यते। किन्तु तन्तुसन्तानक्रियस्य वेञः सारथ्यर्थे प्रयोगो न संघटते अतः षूप्रेरणे इत्यस्मात् बाहुलकात् कर्तरि अथवा गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवस जनरुहजीर्यतिभ्यश्च 3.4.72 इति सूत्रे चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थकत्वात् कर्तरि वर्तमानेक्तोऽत्र मन्तव्यः रथवाहकस्य सारथे रथे प्रेरणात् सूत इति सञ्ज्ञा संगच्छते। अनेन संवादेनेष्टिज्ञस्य व्याकरणे यथा समादरः सिद्ध्यति तथैव इष्टिज्ञो महाराजः प्रशस्यते न केवलं शास्त्रज्ञः। अतएव बलरामः कथयति—

> अन्यदुच्छृङ्खलं सत्त्वमन्यच्छास्त्रनियन्त्रितम्।
> सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः॥
> (शिशु. 2/62)

यद्यपि सिद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं नाचरणीयम्। इति सिद्धान्तः वैयाकरणैः पाल्यते अतएव रघुनाथशब्दे पूर्वपदात् संज्ञायामग इति शास्त्रसिद्धमपि णत्वं लौकिकप्रयोगविरुद्धं न क्रियते विश्राम शब्दे च शास्त्रासिद्धमपि उपधादीर्घः क्रियते इति। इत्थं यथा व्याकरणे शिष्टप्रयोगसिद्धिमुखेन लक्षण निर्मीयते प्रयोगसिद्ध्यनुरोधेन च लक्षण प्रवर्त्यते तथैव राजनीतौ अपि प्रजासुखसमृद्धिमुद्दिश्य नियमा निर्मीयन्ते प्रवर्त्यन्ते च।

अतोऽपि महाराज्यपालनप्रक्रिया व्याकरणाध्ययनप्रक्रिया च समाने। लक्ष्यमुपेक्ष्य ये प्रवर्तन्ते ते वैयाकरणा निन्द्याः प्रजाहितमुपेक्ष्य निरङ्कुशराजनियमेनप्रवर्तमाना भूपा इव। यथाकालं प्रयोगमागतानां शब्दानां साधनाय यथा व्याकरणे वार्तिकादि निर्माण प्रशस्यते तथा कालक्रमेण राजनीतावपि नियमसंशोधनपरिवर्धनादिकं प्रजेच्छानुसारेण क्रियमाणं स्तूयते। पतञ्जलिनाऽतएव बहवो वार्तिकोद्भावनाः स्वीकृताः स्वयं चोद्भाव्य बहूनि वचनानि निर्मितानि।

नन्वेवं 'न लक्षणेन पदकारा अनुवर्त्याः। पदकारैर्नाम लक्षणमनुवर्त्यम्। यथालक्षणं पदं कर्तव्यम् इति भाष्यवचनं विरुद्धं परस्परव्याहतञ्चेति चेन्न 'अनुवर्त्य' पदे णिजङ्गीकारात्। अतएव प्रयुक्तानां हीदमन्वाख्यानमिति महाभाष्यवचसि संकोचाश्रयणं मुधा न कर्तव्यं भवति। एवञ्च लक्षणाश्रितार्थानुवर्तनप्रेरणावन्तः पदप्रयोगकर्त्तारो न भवेयुः किन्तु शिष्टाभीष्टप्रयोगसिद्ध्यनुरूप प्रेरणामाश्रित्यपदकारापरपर्यायैर्वैयाकरणैर्लक्षणानि निर्मातव्यानीत्येवार्थस्तस्य महाभाष्यवचसः। एवञ्च पदानुसार्येव लक्षणमुपज्ञातव्यमिति सिद्धम्। पदपाठश्च गुरुशिष्टजनसम्प्रदायसिद्ध एव कर्तव्य इति महाभाष्यकृतां सिद्धान्तः[1]। अतएव पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्। इति 6-3-109 सूत्रे पतञ्जलिनोक्तम्-पृषोदरादीनीत्युच्यते कानि पृषोदरादीनि? पृषोदरप्रकाराणि आदिशब्दोऽत्र प्रकारार्थकः पृषोदरशब्द सदृशानीत्यर्थः व्यवस्थार्थकत्वे पृषोदरप्रभृतय इति तात्पर्यस्वीकारे यथोपदिष्टग्रहणमनर्थकं स्यादिति तत्र कैयटः।

कानि पृषोदरप्रकाराणि येषु लोपागमवर्णविकाराः श्रूयन्ते नचोच्यन्ते सूत्रैः। यथोपदिष्टानि इत्यत्र यथेति किमर्थम्? प्रकारवचने थाल् येन प्रकारेणोपदिष्टानि तेन साधूनि भवन्तीत्यर्थबोधकस्थाल् प्रत्यय इति कैयटः। किमिदमुपदिष्टानीति, उच्चारितानि कुत एतत् दिशि रुच्चारणक्रियः। उच्चार्य हि वर्णानाह उपदिष्टा इमे वर्णाः। अत्र उपदिष्टा इति उच्चारिता इत्यर्थका दृष्टा इति भावः। कैः पुनरुपदिष्टानि? शिष्टैः। के पुनः शिष्टाः। वैयाकरणाः कुत एतत् शास्त्र पूर्विका हि शिष्टिः। वैयाकरणाश्च शास्त्रज्ञाः। यदि हि शास्त्रपूर्विका शिष्टिः शिष्टिपूर्वकं च शास्त्रम्, तदितरेतराश्रयं भवति। इतरेतराश्रयाणि च कार्याणि न प्रकल्पन्ते। एवं तर्हि निवासतश्चाचारतश्च। स चाचार आर्यावर्त्त एव। कः पुनरार्यावर्तः। प्रागादर्शात्-प्रत्यक् कालकवनात्। दक्षिणेन हिमवन्तम् उत्तरेण पारियात्रम्। एतस्मिन् आर्यावर्त्ते आर्यनिवासे ये ब्राह्मणाः कुम्भीधान्या अलोलुपा अगृह्यमाणकारणाः किञ्चित्कस्याश्चिद् विद्यायाः पारङ्गतास्तत्र भवन्तः शिष्टाः। अत्र कैयटः-आदर्शादयः पर्वतविशेषाः। आदर्शः कुरुक्षेत्रेपर्वतः कालकवनम् प्रयागः। परियात्रो विन्ध्यः इति नागेश उद्योतकारः। इत्थमासमुद्राच्च पूर्वस्मादासमुद्राच्च पश्चिमात्। तयोरेवान्तरा गिर्योरार्यावर्तं प्रचक्षते इति मनूक्तलक्षणलक्षिते देशे ये कुम्भीधान्याः कुम्भ्यामेव येषां धान्य तादृशाः दम्भार्थमपि कुम्भीधान्यत्वं स्यादत आह अलोलुपाः अगृह्यमाणकारणाः दृष्टं कारणमन्तरेणैव सदाचारानुवर्तिनः रागादिवशाद् ये नान्यथावादिनः विनैवाभियोगेन तपः स्वाध्यायनिरताः निष्कारणधर्मबुद्ध्याधीतनिष्णातवाङ्मयाः शिक्षाः साधुत्व परिज्ञाने प्रमाणम्। इत्थं व्याकरणे अलोलुपा अर्थ संग्रहालोलुपाः सदाचारिणो ब्राह्मणा यान् शब्दान् प्रायुञ्जत तें साधवः तथा राजनीतावपि त्यागिनः आचारवन्तः सवभूतहितेरता ज्ञानचक्षुषा दृष्टयाथातथ्याः वशिष्ठचाणक्यादयः प्रमाणं साधुत्वासाधुत्वनिर्णये इति पतञ्जलिना उभयोः साम्यमङ्गीकृतम्।

पुनः पृच्छति भगवान् पतञ्जलिः—यदि शिष्टाः शब्देषु प्रमाणं किमष्टाध्याय्या क्रियते? उत्तरयति–शिष्टपरिज्ञानार्थाऽष्टाध्यायी। कथं पुनरष्टाध्याया शिष्टाः शक्या विज्ञातुम्? अष्टाध्यायीमधीयानोऽन्यंपश्यति अनधीयानं ये वाऽस्यां विहिताः शब्दास्तान् प्रयुञ्जानम्। स पश्यति नूनमस्य देवानुग्रहः स्वभावो वा, योऽयं नाष्टाध्यायीमधीते। ये चास्यां विहिताः शब्दास्तांश्च प्रयुङ्क्ते। नूनमयमन्यानपि जानातीति। एवमेषा शिष्टज्ञानार्थाऽष्टाध्यायी इति। अयंभावः अनधीताष्टाध्यायीकोऽप्ययं तस्यां विहितान् शब्दान् प्रयुङ्क्ते। अतोऽयंप्राप्तदेवानुग्रहः प्रकृत्या वा शिष्ट इति निर्णये जाते तत्प्रयुक्ता अन्येऽपि शब्दाः साधव इति निर्णयायाष्टाध्याय्या अध्ययनं सप्रयोजनम्। तपस्त्यागपूतेन राजनीतिशास्त्रानुक्तमपि यत्कथयति तदपि तदीय प्रजाहितकरत्वात्स्वीकरणीयं भवति। इत्यपि साम्यमनयो र्व्याकरण राजनीतिशास्त्रयोरस्त्येव।

सन्धिः विग्रहः यानम् आसनम् द्वैधीभावः समाश्रयः इति षड्गुणाः, प्रभुमन्त्रोत्साहाख्यास्तिस्रः शक्तयः, आभिस्तिसृभिः शक्तिभिः साध्याः सिद्धयोऽपि तिस्रः। वृद्धिक्षय स्थानानि छत्रिन्यायेन त्रय उदया उच्यन्ते महाराज्यपालकेन एतेषां समुपयोगः यथाशक्ति यथाराज्यहितं क्रियते। दुर्बलो राजा बलवता सह कयाचिद् व्यवस्थया ऐक्यं यत् करोति स एव सन्धिः समान शीलव्यसनेषु सन्धिर्भवति। दुर्बलः सुग्रीवो बलवता रामेण समानव्यसनेन सन्धिं विधाय वालिनं जिगाय। समानशीलयोर्दुर्योधनजयद्रथयोः श्रीकृष्णपाण्डवयोः सन्धिः प्रसिद्धएव। वाग्घरिरित्यत्र अल्पप्राणो गकारः महाप्राणेन कयाचिद्व्यवस्थया हकारं महाप्राणं स्ववर्गीय महाप्राणेन घकारे परिणमय्य सन्धिना सन्तोषमनुभवति तन्मयमित्यादौ मकारोऽनुनासिको दकारं दन्त्यानुनासिकीकरोति। एतादृशः सन्धिर्युद्धोत्तर-

1. शिवदत्त दाधीचस्य—महाभाष्यच्छायोपेत संस्कराभूमिकोद्धृतं वाक्यजातं द्रष्टव्यम् (पृ० 23)

कालकृतसन्धिरिव पक्षद्वयस्य किञ्चिद्धानदानाश्रित इवास्त्येव । इकः स्थाने यण्सन्धिस्त्वान्तरतम्याश्रितः समानशीलमित्रनृपसन्धिरिव वर्तते । अतएव पतञ्जलिः कथयति—समाजेषु समाशेषु समवायेषु चास्यतामित्युक्ते नैव कृशाः कृशैः सहासते, न पाण्डवः पाण्डुभिः, येषामेव किञ्चिदर्थकृतमान्तर्यं तैरेव सहासते । तथा गावो दिवसं चरितवत्यो यो यस्य प्रसवो भवति तेन सह शेरते । यान्येतानि गोयुक्तकानि संघुष्टकानि भवन्ति तान्यन्योन्यमपश्यन्ति शब्दं कुर्वन्ति । एवं तावच्चेतनावत्सु । अचेतनेष्वपि—लोष्टः क्षिप्तो बाहुवेगं गत्वा नैव तिर्यग् गच्छति, नोर्ध्वमारोहति, पृथिवीविकारः पृथिवीमेव गच्छत्यान्तर्यतः । तथा—या एता आन्तरिक्ष्यः सूक्ष्मा आपस्तासां विकारो धूम आकाशे निवाते नैव तिर्यग् गच्छति, नार्वागारोहति । अब्विकारोऽप एव गच्छत्यान्तर्यतः । तथा—ज्योतिषो विकारोऽर्चिराकाश देशे निवाते सुप्रज्वलितं नैव तिर्यग् गच्छति नार्वागारोहति ज्योतिषो विकारो ज्योतिरेव गच्छत्यान्तर्यतः । इत्थं स्वभावसिद्धत्वादेव इको गुण इत्युक्ते इकारस्य एकार, ओकारश्च उकारस्य स्थाने स्यादत आन्तर्यवचनं न कार्यम् (स्थानेऽन्तरतमः **1-1-50**) इति पतञ्जलिः । राजनीतौ अन्यान्तर्यरहितौ परस्परं सौहार्दं भजेते तथा व्याकरणेऽपि । तथाचोक्तं महाभाष्ये "संप्रयोगो वा नष्टाश्वदग्धरथवत्" । तद्यथा—तवाश्वो नष्टः ममापि रथो दग्धः उभौ संप्रयुज्यावहै इति । एवम् इहापि ऋकारस्य गुणवृद्धिविषयेऽपि तव अकारस्य गुणस्य आकारस्य च वृद्धेरन्तरतमा प्रकृतिर्नास्ति ममापि ऋकारस्य अन्तरतम आदेशो नास्ति अस्तु नौ संप्रयोगः । अतः फलितम् अनान्तर्यमेवैतयोरान्तर्यम् । तन इर्यति इत्यादौ ऋकारस्य गुणः अकारः मार्ग इत्यादौ च वृद्धिराकार इति । क्वापि सन्धिर्न क्रियते उभयोरपि वर्णयोरनुभूतस्वपर्याप्त सामर्थ्ययो राज्ञोरिव यथावदवस्थानमिव प्रकृतिभावस्वीकारात् । अतएव हरी एतौ पचेते एतौ अमी ईशा इत्यादौ उभयोः प्रबलम्मन्ययोः प्रकृतिभावः स्वीक्रियते । प्लुतोऽपि उच्चारणबलवत्तमो न परेण दुर्बलेन कृपया तस्य यथावज्जीवनेच्छुको न सन्दधाति अतएव आगच्छ कृष्ण अत्र गौश्चरति इत्यत्र प्रकृतिभाव एवेष्यते । यत्र च प्लुतोऽपि न तयोच्चारणोच्चैस्त्वमापद्यते तत्र सन्धिर्भवति अतएव पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुरिति प्रयोगः । ह्रस्वोत्तरवर्तिनिच्छकारे सति चकारागमोऽपि छकारप्रभावं महाप्राणात्मकं विलोक्याल्पप्राणोह्रस्वस्तद्वर्ग्यमल्पप्राणं मध्ये संनिवेशरूप एव । इत्थं यथा महाराजः स्वराज्यहितं स्वप्रतिष्ठासंरक्षणादिकं च विलोक्य सन्धिमसन्धिं वा स्वीकरोति तथैव व्याकरणसाम्राज्येऽपि अर्थप्रत्यायनौचित्यमुखः सन्धिनियमः क्वापि प्रवर्तते क्वापि च नेति वाग्व्यवहारविश्लेषणपाटवमेव तत्र यथा बीजम् तथा राजनीतावपि विवेक वैलक्षण्यमपेक्षते । अन्तरङ्गसन्धिः प्रथमं विधीयते बहिरङ्ग सन्धिश्च पश्चात् अतएव शिव आ इहि इत्यत्र धातूपसर्गसन्धिरन्तरङ्गो भवति प्रथमं पश्चाच्च सवर्णदीर्घाप्राप्त्या ओमाङोश्चेति पररूपेण शिवेहि इति रूपं जायतेऽभीष्टम् । एतच्च ओमाङोश्चेति ज्ञापनात् सम्भवति । अन्यथा प्रथमं सवर्णदीर्घे गुणे शिवेहि इति सिद्धे तत्रत्यमाङ्ग्रहणं व्यर्थं स्यात् । अतएवात्रासिद्धं बहिरङ्गमन्तरङ्गे इति न्यायो वैयाकरणैरङ्गीक्रियते राजनीतावपि अयमेव नियमः सर्वत्र प्रवर्तते । इत्थं सन्धौ उभे शास्त्रे समाने दृश्येते ।

विग्रहस्तत्र क्रियते यत्रैकार्थीभावाश्रितपदस्य विग्रहस्य च समानार्थकत्वम् यथा राजपुरुषः राज्ञः पुरुष इत्यादौ । यत्र च विग्रहेण एकार्था भावार्थो न निष्पद्यते तत्र विग्रहः परित्यज्यते । यथा कुम्भकारशब्दस्य योऽर्थः स'कुम्भस्य कार' इत्यनेना प्रत्ययात् परित्यज्यते । अतएवोच्यते वाक्येन संज्ञानवगमान्नित्य समासः । पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभाव इत्यादि लक्षणमपि द्विमुनि व्याकरणम् अतिमाल इत्यादौ व्यभिचरितत्वात्प्रायोवादपरकमङ्गीक्रियते । इत्थं यथा न दृढनियमः कोऽप्यत्र लक्ष्यानुसारि व्याख्यानमेव श्रेयो मन्यते तथा राजनीतावपि प्रजाहितानुसारि व्याख्यानमेवाङ्गीक्रियते । विग्रहे एकार्थीभावे च समानफलके एव विग्रहो विधीयते नान्यथा ।

समाश्रयो नाम रिपुणा पीड्यमानस्य बलवदाश्रयणम् । यथा भोयच्युत इत्यत्र बलवतौकारेण पीड्यमानो यकारः अच्युतस्यादचेन अकारेण संयुज्यात्मानं लघुप्रयत्नोच्चरितत्वं सम्पाद्य लोपान्निवारयति ।" भक्तियुक्ताय शं दद्याद् तुभ्यं देवः शिवः सदा, इत्यत्र प्राप्तस्ते इत्यादेश परं पादमाश्रित्य वार्यते तुभ्यमिति पदेन पादादौ स्वीयां स्थितिं घोषयता । विजिगीषोररिं प्रति यात्रा यानमुच्यते राजनीतौ । अत्रापि व्याकरणे निषेधापवादसूत्रे उत्सर्गसूत्रं जेतुं यातः । अतएव एभिरित्यत्र नेदमदसोरकोरिति विजिगीषुणाभियातत्वाद् अतो भिस ऐस् इति ऐसादेश न कर्तुं प्रभवति उप+एति इत्यादौ एत्येधत्यूठ्सु इति भवति एङि पररूपं च बाधितत्वान्न स्वशासनं प्रथयति ।

मिथः प्रतिबद्धशक्तयोः कालप्रतीक्षया तूष्णीमवस्थानमासनम् । कालज्ञो राजा समयं प्रतीक्षमाणस्तावदास्ते यावद्विग्रहयानादेरुचितः कालो नायाति । व्याकरणेऽपि तथा दृश्यते यथा अजागरीदित्यादौ ह्म्यन्तेति वृद्धिनिषेधो विशालं कालं प्रतीक्ष्योपलब्धोचितकालः प्रवर्तते-तथाहि अजागृ इस् त् इति स्थिते यण् प्राप्तः, तं सार्वधातुक गुणो बाधते तं सिचिवृद्धिः तां च जागर्तिगुणः जाग्रोऽविचिण्णल् ङित्सु इति बाधते अयं गुणोऽपि कालं प्रतीक्षमाणश्चिरं तूष्णीं तिष्ठति । तस्मिन् कृते अजागर् इस् त् इति स्थितौ वदव्रजहलन्तस्याच इति हलन्तलक्षणा वृद्धिः प्राप्ता नेटीतिप्रतिषिद्धा ततश्चातो हला-

देर्लघोरिति प्राप्तां वृद्धिं बाधित्वा अतोल्रान्तस्येति वृद्धिः प्राप्ता सा च ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्यदिताम् 7.2.5 इति निषिध्यते । अत्रत्यो बाध्यबाधकभावः अवसरज्ञराजपुरुषकृत इव तथा चमत्कारजनको भवति यथा केनापि पद्यनिबद्धीकृत लोभमसंवृण्वता इत्थमुच्यते -

गुणो वृद्धिर्गुणो वृद्धिः प्रतिषेधो विकल्पनम् ।
पुनर्वृद्धिर्निषेधोऽतो यण्पूर्वाः प्राप्तयो नव ।।

(सि. कौ. पृ. 461)

संहितत्वात्प्रबलशत्रुसमवाये उपजापाद्युपायेन वैमनस्योत्पादनं द्वैधीभावः । द्वैधीभावमिमं वर्णयन् भारविर्लिखति—

अपरागसमीरणेरितः क्रमशीर्णाकुलमूलसन्ततिः ।
सुकरस्तरुवत् सहिष्णुना रिपुरुन्मूलयितुं महानपि ।।

(किरा. 2/50)

व्याकरणेऽपि दृश्यते वक्ष्यमाणत्यत्र टित्त्वोगित्त्वोभयशक्ति-सम्पन्नस्य स्थानिवद्भाव सहकृतस्यङीब् विधायकस्य स्थानिवद् भावनिषेधोपजापेन प्राप्तिर्वार्यते अजादिपाठमाकृतिगणत्वा-दुपकल्प्य वा वार्यते इत्थं सन्ध्यादिपरिकल्पनविवेकसाम्यमु-भयत्र राजनीतौ व्याकरणे च विद्यमानं विलोक्य महाभाष्यं वा पठनीयं महाराज्यं वा पालनीयमिति कथनमक्षरशः सत्यं महाभाष्येणेव तादृशस्य विवेकस्योपलब्धेः ।

किञ्च राजनीतौ कस्यचिन्नियमस्य बहुजनोपकारकस्य बहुजनसुखकरस्य प्रयोगेणाल्पिष्ठा दोषा अपि आपतन्ति तथापि बहुजनहितावहत्वात्त स्वीक्रियन्ते दोषाणां निवारणाय च यत्ना विधीयन्ते अतएव कुल्यादिनिर्माणं नोपेक्ष्यते महाभाष्येऽपि 'सन्निपात' प्रातिपदिकग्रहणादिपरिभाषास्वीकारेण बहूना-मिष्टप्रयोगाणां सिद्धिमुत्प्रेक्ष्य ताः स्वीकरणीयाः प्रतिविधेयं च दोषेष्वित्युच्यते नहि मृगाः सन्तीति यवा नोप्यन्ते तेषां निवारणाय प्रयत्नो विधीयते इत्यादिना । महाराज्यं पालयता सुराज्ञा नियमोऽयं सर्वदाऽश्रीयते ।

'व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिर्नहि सन्देहादलक्षणम्' इति कथनं राजनीतौ व्याकरणे च सर्वतोभावेनोपादेयम् । अन्यथा संक्षिप्तस्यार्थगरीयसो राजनीतिवाक्यस्य व्याकरणसूत्रस्य च तात्पर्यनिर्णयोऽसंभव एव । व्याख्यानेनापि शास्त्रद्वयमिदं दुर्मेधसा नावगन्तुं शक्यते अतो महाराजेन शाब्दिकेन सुमेधसा भवितव्यम् । अतएव व्याकरणतत्त्वप्रतिपादकं स्वकाव्यमुद्दिश्य भट्टिर्लिखति—

व्याख्यागम्यमिदं काव्यमुत्सवः सुधियामलम् ।
हता दुर्मेधसश्चास्मिन् विद्वत्प्रियतया मया ।।

राजशास्त्रवचांसि क्वचित् स्पष्टानि क्वचिदस्फुटानि क्वचिन्मिथो विरुद्धानि च दृश्यन्ते । तत्र गुरुमुखेनैवोपादेयतानुपादेयता च निर्णेतुं शक्येते । अतएवोच्यते वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा । यत्र मिथो विरुद्धानि वचांसि भवन्ति तत्र तत्र प्रतिपाद्यार्थनिर्णयाय यथा तस्य भूरिपरिश्रमेण परिशीलनमपेक्ष्यते तथा महाभाष्येऽपि कोक्तिः सिद्धान्तिनः का चैकदेशिन इति ज्ञानं पातञ्जले महाभाष्ये कृतभूरिपरिश्रमेण नागेशसदृश-विदुषैव कर्तुं शक्यते । श्रूयते तेन महाभाष्यमष्टादशकृत्वो गुरुमुखादधीतमिति । अतएव स महाभाष्यसम्राडुच्यते सर्व-तन्त्रस्वतन्त्रोऽद्वितीयो वैयाकरणो मन्यते च ।

अन्ये व्याख्याग्रन्था भाष्यपदवाच्याः पातञ्जलं चेदं महाभाष्यम् । तत्र कारणं लिखति पुण्यराजः "कृतेऽथ पतञ्जलिना गुरुणा तीर्थदर्शिना । सर्वेषां न्यायबीजानां महाभाष्ये निबन्धने । अलब्धगाधे गाम्भीर्यादुत्तानः शब्दसौष्ठवात् । इति व्याख्यावसरे वाक्यपदीयटीकायां स्वकीयायाम्" तच्च भाष्यं न केवलं व्याकरणस्य निबन्धनं यावत् सर्वेषां न्यायबीजानां बोद्धव्यमित्यत एव सर्वन्यायबीजहेतुत्वादेव महच्छब्देन विशिष्य महाभाष्यमित्युच्यते लोके इति । अत्र सर्वे न्यायाः, लौकिकाचाराः, शास्त्रीयकर्तव्याकर्तव्यनिर्देशाः, वस्त्रनिर्माणप्रकाराः, कृषिविधिः, अदेवमातृकदेवमातृककृषिप्रकारः कर्षकलक्षणं कर्षकऋणविधिः, कृषिकर्मणि उपादेयानि साधनानि गवादीनामुपचारः क्षेत्रपरीक्षणरीतिः क्षेत्रमितिः धान्यमूल्यम् धान्य-संचयोपायः ग्रामनगरादिविभागः, मार्गप्रबन्धः, वैद्यकप्रबन्धः रोगप्रतिबन्धकदृष्टादृष्टोपायाः, जातिलक्षणं तद्भेदाः सामाजिकव्यवहारः विद्यार्थिशीलम्, राज्ञः कर्तव्यम् राजकरः प्रमाणपरिमाणभेदाः स्त्रीसम्माननम् इत्यादिकं सर्वं प्रतिपादित मेतं ग्रन्थमधीयद्भिर्विर्लोकं विलोकं ज्ञानकोशीक्रियन्ते स्वप्रतिपत्तयः । महाभाष्योदाहरणेषु विद्याः कलाः सर्वविधाचारा श्चोपलभ्यन्ते । अत्र व्याकरणस्य दार्शनिकपक्षः व्युत्पत्तिपक्षश्च सर्वतोभावेन प्रतिपादितौ स्त एव ।

इत्थं महाराज्यपालनं यथा सुखयति योग्य राजानं अयोग्य मसेवित शास्त्र-त्यागिमन्त्रिगुरुबहुज्ञं दुःखाकरोति तथैव महाभाष्यमिदमप्यज्ञमसेवित गुरुचरणमशरणीकृत परिश्रमं दुःखाकरोति सुमेधसंचानन्दयति अतः साधूच्यते—

महाभाष्य वा पठनीयं महाराज्यं वा पालनीयमिति ।।

☐

पाणिनेः शब्दार्थज्ञापनकौशलम्

पं० सूर्यनारायण शास्त्री

सेवानिवृत्तः प्राचार्यः, प्राच्य विद्यापीठम्
शाहपुरा बाग, जयपुरम्

अाश्रित्य तन्त्राणि महान्ति प्राचाम्,
विहाय तन्त्रान्तर संस्थदोषान ।
अकालकं शास्त्रमतीवरम्यम्,
येनर्षिणोक्तं तमिह प्रपद्ये ।।1।।
येनाष्टकं वै गृथितं स्वबुद्धया,
अध्यायपादैः सुविभक्तरूपम् ।
गूढार्थकैः सूत्रचतुः सहस्रैः
शालातुरीयं तमहं नमामि ।।2।।

भगवता पाणिनिना विरचितो ऽष्टाध्यायी, नामापूर्वो-ग्रन्थमर्णिः शाब्दिक मति निकषायमाणो राजते लोके, यमाश्रित्य शतशो ग्रन्था रचिताः प्राच्यै नव्यैश्च शाब्दिकैः विरच्यन्ते चाधुनिकैः। अत्र ग्रन्थरचनाकला निजपरांकाष्ठां प्राप्तेति दृश्यते । एतद्ग्रन्थरचनायामाचार्येणानेकसूक्ष्म विचित्रकौशलानां प्रयोगो विहितः। एतत्प्रशंसायामुक्तं स्वयं भाष्यकारेणापि– (3/1/19) एवमर्थं खल्वपिआचार्यश्चित्रयति क्वचिदर्थान् आदिशति क्वचिन्नेति । चित्रमतीत्यस्य अनेक मार्गमाश्रयतीत्यर्थकैयटेन विहितः ।

एतद् ग्रन्थ प्रणयने शाब्दिक लाघवस्य रीतिराचार्येणा-ऽङ्गीकृता । अत्यधिक शाब्दिक लाघवचेष्टयैव क्वचिद् २ शब्दार्थेऽस्पष्टता ऽसामञ्जस्यतादि दोषाः संभवन्ति, तन्निरा-करणाय पाणिनिना एतादृशकौशलान्याविष्कृतानियैः शब्दार्थ-ज्ञानेकाऽपि बाधानोपजायते । यत्र विवक्षितार्थबोधस्या-संभावना प्रतीयते तत्रापि यथार्थ शब्दबोधो जायते ।

व्याकरणशास्त्रेचैषां कौशलानामसाधारणो महिमा । तथा साहित्यरसिकानांकृते चैषां ज्ञानमपरिहार्यं वर्तते । निवन्धेऽस्मिन् पाणिनेः तेषामेवार्थनियामक कौशलानां-संक्षिप्तपरिचयः प्रस्तूयते ।

श्रीभर्तृहरिणावाक्यपदीये पद्य द्वयमर्थ नियामकतायामुक्तम्-

संयोगोविप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता ।
अर्थः प्रकरणं लिङ्गं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः ।।1।।
सामर्थ्यमौचितीदेशः कालोव्यक्तिः स्वरादयः ।
शब्दार्थस्याऽनवच्छेदे विशेषस्मृति हेतवः ।।2।। इति

1. तत्र संयोगस्य नियामकतोदाहरणम् 'अवाद्ग्रः (1/3/51) इतिसूत्रम् अत्राऽवोपसर्ग संयोगात्' गृ निगरणे इत्यस्यैव-धातोर्ग्रहणम न तु गृ उपदेशे, इत्यस्य ।
2. भुजोऽनवने 1/3/66 । इतिसूत्रेच विप्रयोगात् कौटिल्यार्थक भुजधातोर्ग्रहणं न भवति ।
3. विपराभ्यां जेः 1/3/19 । इतिसूत्रेच वि साहचर्यात् परा, इत्युपसर्गस्यैव ग्रहणं न तु विशेषणभूतपराशब्दस्य । साहचर्य बलेनाऽर्थज्ञापनं प्रायः सर्वत्राऽष्टाध्याय्यां दृश्यते यथा च भूवादयो धातवः 1/3/1 । इतिसूत्रे वा शब्दसाहचर्यात् असत्ववाचिनोभूशब्दस्य ग्रहणं भवति न तु भूमिवाचकस्य । तथैव 'कुगति प्रादयः 2/2/18 । इतिसूत्रे गत्यादि साहचर्येण कुत्सितार्थक कुशब्दस्य ग्रहणं भवति, न तु– भूमिवाचक कुशब्दस्य एवं साहचर्यबलेन शब्दार्थयोर्बहुविध नियमन-स्योदाहरणानिग्रन्थेऽत्र दृश्यन्ते ।

शब्दानां परस्पर साहचर्येणाऽपि पाणिनिनाऽनुक्तार्थानां ज्ञापनं विहितम् । यथा– पूर्वकालैक सर्वजरत्पुराणनव-केवलाः समानाधिकरणेन 2 / 1 / 49 अत्र नव शब्दो

नूतनार्थकः नव संख्यार्थश्च । कस्यात्र ग्रहणमिति प्रश्ने ? पुराण शब्देन सह पठितो नव शब्दः नवीनार्थ वाचक एव गृह्यते, न तु संख्या वाचकः । तथैव पणपादमाषशताद्यत् 5/1/34 । इतिसूत्रे पण-माष शब्दसाहचर्यात् पादशब्दः परिमाणविशेषवाचक एव गृह्यते, न तु चरणवाची ।

4. **बहुवचनप्रयोगस्वार्थ नियामकता:** – सूत्रकारेण बहुवचन बलेनाऽनेकत्र अभीष्टार्थं ज्ञापनं कृतम् । यथा– मद्रेभ्योऽञ् (4 2/109) । इतिसूत्रमस्योदाहरणम् । मद्रशब्दोभद्रपर्यायः, मद्रजनपदवाचीच । अत्र पाणिनिना बहुवचनस्य प्रयोगः जनपद वाचिनो ग्रहणार्थं कृतः, तेन भद्र पर्यायवाचिनो ग्रहणं न भवति ।

एवमेव स्वाङ्गेभ्यः प्रसृते 5।2।66 सूत्रेऽपि पाणिनेः स्वाङ्ग पदस्य बहुवचने प्रयोगो ज्ञापयति यन्नायं शब्दः केवलं 'स्वाङ्गवाची अपितु स्वाङ्गसमुदाय-वाच्यपि । तथैव पूर्वैः कृतमिनयौ च 4/4/133 । इतिसूत्रे पूर्वशब्दस्य बहुवचनं ज्ञापयति यदत्र पूर्व शब्दस्यार्थः पूर्व-पुरुष अस्ति । एवमनेकत्राऽष्टाध्याय्यांमर्थप्राधान्यबोधक बहुवचनस्य प्रयोगोविहित इति पूर्वोदाहरणैर्ज्ञायते ।

5. क्वचित् बहुवचननिर्देशेन पर्यायस्यापि ग्रहणं भवति । यथा– जेप्रोष्ठपदानां 7/3/18 । इतिसूत्रे प्रोष्ठपदानामिति बहुवचन निर्देशात् पर्यायोऽपि गृह्यते । भद्रपाद इति । क्वचिद् बहुवचनमविवक्षितमपिभवति । यथा– अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चियुषेतित्याजश्राताः श्रितमाशीराशीरार्ताः 6/1/36 । अत्र श्राता इति बहुवचनमविवक्षितम् । तेन-यदि श्रातो जुहोतन, इत्येकवचनस्योपसंग्रहः । एवं बहुवचनेन क्वचिच्छब्दस्य क्वचिदर्थस्य नियमनं भवति । सामान्यार्थक शब्देन विशेषार्थंग्रहणमपि बहुवचनेन ज्ञाप्यते । यथा– होत्राभ्यश्छन्दसि 5/1/135 । इति सूत्रे ऋत्विग्वाची होत्रा शब्दः बहुवचने प्रयुक्तः ऋत्विग्विशेषं ज्ञापयति ।

6. उत्तरसूत्रगतशब्दस्यार्थविशेषज्ञापने पूर्वसूत्रोक्तशब्दो-ऽपिसहायकोभवति । यथा– अभिजनश्च 4/3/90 । इति सूत्रेऽभिजनशब्देन पूर्वबान्धवाउच्यन्ते (प्रदीपः) "सोऽस्य-निवासः 4/3/89 । इति पूर्वं सूत्रगत निवास शब्द साहचर्येण पूर्वपुरुष वासभूमिरूपार्थ एव गृह्यते, न तु पूर्व बान्धवरूपः ।

7. **निपातन रीति** :– विशिष्टार्थ द्योतनाय निपातन सूत्राणां रचनाऽपि विहितास्ति । यत्र पाणिनिः किमपि पदं निपातनेन साधयति तत्र तत्पदं प्रायेण विशिष्टार्थं वाचकं भवति । यथोक्तं न्यासे-निपातनं रूढ्यर्थम् । निपातनस्यैत-त्प्रयोजनमप्यस्ति । यथा– भोज्यं भक्ष्ये 7/3/69 । इति-सूत्रे भोज्य शब्दो निपातितः अभ्यवहार्यरूपभक्ष्यार्थ एव प्रयुज्यते न तु पालनीय भक्ष्यार्थे । तथैव 'षष्टिकाः षष्टिरात्रेणपच्यन्ते 5/1/90 । इतिसूत्रेषष्टिका शब्दो निपातितः शालि विशेष एव प्रयुज्यते, न तु मुद्गेषु । यद्यपि तत्रापि षष्टिरात्रपाच्यत्वमस्ति । निपातन हेतुकार्थं नियमनस्यानेकान्युदाहरणानि पाणिनीय तन्त्रे मिलन्ति ।

8. **पूर्वोपात्तपदस्थापनम्** :– क्वचित् सूत्रकारेण विशिष्टार्थं ज्ञापनाय पूर्वसूत्रानुवृत्तपदस्य पुनः प्रयोगो विहितः । यथा– देवताद्वन्द्वे च 6/3/26 । इति सूत्रमस्य विशिष्टोदाहरणम् । अत्र पूर्वसूत्रात् (आनङ् ऋतो द्वन्द्वे 6/3025) द्वन्द्वे पदस्यानुवृत्तौ सत्यामपि पुनः द्वन्द्वे पद ग्रहणमेतज्ज्ञापयति यदत्र साधारणसाहचर्यं विहाय लोकवेदयोः प्रसिद्ध साहचर्यं मेव गृह्यते । मित्रावरुणौ, ब्रह्मप्रजापतीत्यादेरेव ग्रहणम् । शब्दलाघवेन सहार्थनियमनस्येदं कौशलं सूत्रकारस्य महतीं बुद्धिं परिचाययति ।

9. **विशिष्टशब्दसंयोजनमपि** :— क्वचित्सूत्रकारो विशिष्टार्थं ज्ञापनाय तच्छब्देनसह आख्यानामादि शब्दानां प्रयोगं विधत्ते । अयमधिक शब्द प्रयोग एव ज्ञापयति यदयं विशिष्टार्थे प्रयुक्तः व्यवहृतश्च । यथा– 'प्रकाशन स्थेया-ख्ययोश्च 1/3/23 । इतिसूत्रे स्थेयशब्द एव पर्याप्त आसीत् । तत्रापि सूत्रकारेणाऽऽख्याशब्दस्य प्रयोगः कृतः । काशिका-कारानुसारं' विवादपदनिर्णेतालोके स्थेय इति प्रसिद्धः तद्बोधार्थमेवात्राऽऽख्यापदग्रहणम् । एवमेव 'कर्मण्यग्न्या-ख्यायाम् 3/2/92 । इतिसूत्रोक्त आख्याशब्दो रुढ्यर्थकः, अग्न्याधारस्थलविशेषमाख्याति । तथैववैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः 6/3/7 । इतिसूत्रेऽपि वैयाकरणसंव्यवहार-सिद्धताऽऽख्या शब्देन ज्ञाप्यते ।

10. वचनशब्दप्रयोगोऽपि अर्थविशेषस्य ज्ञापकः । यथा– 'भाववचनाश्च 3/3/11 । इतिसूत्रे वचन ग्रहणेन लोक प्रसिद्धं वाचकमवगम्यते । एवमेव 'द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिसु 8 1/15 । इति सूत्रोक्त मर्यादा वचन शब्दोऽस्य नियमस्यैक मुदाहरणम् । अत्र जिनेन्द्रेणोक्तम् – वचन ग्रहणं शब्दोपात्तायां मर्यादायां यथा स्यात्, अर्थप्रकरणादिना गम्यमानायां मा भूत् (न्यास) इति वचनशब्दग्रहणेन ज्ञापितम् ।

11. एकस्मिन् प्रकरणे कस्यचित्पदस्यैकाधिकस्थलेषु पाठः तत्पदस्य विशेषार्थे शक्ति गमयति । यथा– विभाषा हविरपूपादिभ्यः 5/1/4 । इति सूत्रमस्योदाहरणम् । अत्र हविष्शब्दःहविर्विशेषस्यवाचकः, न तु हविः सामान्यस्य । अस्मिन्नेव प्रकरणे 'उगवादिभ्योयत् 5/1/2 । इतिसूत्रे गवादिगणे हविः शब्दस्य पाठात् स्वरूपग्रहणाच्च विभाषा हविरित्यत्र हविर्विशेष वाचि ग्रहणम् (प्रदीपः) ।

12. समासाऽभाव :—क्वचित् समासयोग्यस्थले समासाऽभावोऽपि विशेषार्थं गमयति । यथा– 'संख्यायागुणस्य निमाने मयट् 5/2/47 । इतिसूत्रमस्योदाहरणम् । अत्र लाघवाय गुणस्यनिमाने, इत्यस्यस्थाने' गुण निमाने, इति पाठोऽपि कर्तुं शक्यते स्म । परमत्र पाणिनिना समासयुक्त पाठमकृत्वा ज्ञापितं यदत्र गुणस्यैकत्वं विवक्षितमस्ति । द्वित्वादि संख्याविशिष्ट गुणे एतत्सूत्रस्य प्रयोगो न भवतीत्यर्थतेनेह न भवति–त्रयोयवानां भागा निमानमनयोरुदश्विद्भागयोरिति । वस्तुतोयत्र संख्या विवक्षिताऽस्ति तत्र संख्यारक्षार्थं समासो न विधीयते । दृष्ट्याऽनयाऽन्यत्रापि असमस्त स्थलेषु गूढार्थो ज्ञातुं शक्यते ।

13. पर्यायशब्दस्यैकत्र प्रयोगोऽपि क्वचित्पदस्य विशिष्टार्थज्ञापयति । यथा– 'मति बुद्धि पूजार्थेभ्यश्च 3/2/188 । इति सूत्रे मतिबुद्धिशब्दावेकार्थो, अतो व्याख्यातं कौमुद्याम्मतिरिहेच्छा, बुद्धेः पृथगुपादानात् । एवमेव 'ऋतुयज्ञेभ्यश्च 4/3/68 । इति सूत्रमप्यस्यापरमुदाहरणम् । अत्र ऋतुयज्ञशब्दयोः पर्यायवाचिनोर्ग्रहणं व्यर्थम् । परमत्रोमयग्रहणमर्थं विशेषद्योतनार्थमिति व्याख्यातम् । सोमसाध्ययागेषु एतौ प्रसिद्धौ, तत्रान्यतरोपादानेन सिद्धे, उभयोरुपादानसामर्थ्यात् असोमका अपीह गृह्यन्ते । अतः असोमकयज्ञस्यापि सूत्रे ग्रहणार्थं सोमसाध्य यागवाचिनोरुभयोर्ग्रहणम् ।

14. अधिक शब्द प्रयोगेणापि क्वचित् विशेषार्थो ज्ञाप्यते । यथा– 'दिक्शब्दा ग्राम जनपदाख्यान चानराटेषु 6।2।103 । इति सूत्रमस्योदाहरणम् । अत्र केवलदिक् कथनमेव पर्याप्तमासीत्, दिक् शब्द ग्रहणस्य किं प्रयोजनम् ? अत्र कालवाचिदिक् शब्दस्यापि ग्रहणार्थं शब्दपदस्य प्रयोगो विहितः । केवल दिग्वाचि शब्दस्य ग्रहणं मा भूत् । इदमेकमसामान्यं कौशलमाचार्यस्य अधिक शब्द प्रयोगेणाऽधिकार्थांवबोधनम् । शब्दाधिस्यादर्थाधिक्यमिति प्रसिद्धो नियमः । एकोऽयं नियमः प्रमाणयति यत् संस्कृतभाषायाः प्राचीन ग्रन्थानां यथार्थज्ञानाय भाषा प्रकृतेः कियद् व्यापकं परिज्ञानमपेक्षितमस्ति । अस्यान्यदुदाहरणम्— 'दिक् शब्देभ्यो सप्तमी पंचमी प्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्ताति 5/3/27 । इति सूत्रमपि । अत्र कैयट :—दिशां शब्दाः दिक् शब्दाः ये रूढ्या दिशो वाचकाः पूर्वादयस्ते गृह्यन्ते, न तु ऐन्द्रयादयोयौगिकाः (प्रदीपः) अत्र शब्द, शब्देनेदं विशिष्टं तथ्यं ज्ञाप्यते ।

15. इति शब्दस्य प्रयोग :—विवक्षानुसारि प्रयोगस्य साक्षाज्ज्ञापनाय सूत्रकारस्येयमति प्रियाशैलो । तद्धिते समासेचास्य कौशलस्यानेकान्युदाहरणानि सन्ति । यथा– 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् 5/3/94 । सूत्रेऽस्मिन्निति शब्दो ज्ञापयति यत् केवल साधारणास्तित्वमात्रं एव मतुप्प्रत्ययो न भवति, प्रत्युत भूमनिन्दा प्रशंसा नित्ययोगाद्यर्थेषु गम्यमानेस्वेव मतुप्प्रत्ययो भवति । इति शब्द बलेन पाणिनिनाऽत्र 'अस्तित्वस्य नियमनंविहितम । तथा– यवमात्रे सत्येव कश्चिद्यवमान् न कथ्यते, नापि च रूपेसत्येव कश्चिद् रूपवान् उच्यते । अपि तु यवाधिक्य स्वामित्व एव यवमान्–प्रशस्तरूप एव रूपवान् गदितुं शक्यते । यद्यपि नेदं साक्षादर्थ नियमनम्, अपितु विवक्षानियमनम्, तथापि विवक्षाया अप्यर्थविशेषत्वादुदाहृतम् । 'तदस्य तदस्मिन् स्यादिति 5 1/16 । सूत्रगत इति शब्दोऽपि विवक्षाज्ञापकः, इति शब्दो लौकिकीं विवक्षामनुसारयति । शिष्टप्रयोगगत विवक्षायाः प्रकृतिमवगत्यैवास्य सूत्रस्य प्रयोगः करणीय इत्यर्थः । एवमष्टाध्याय्या अनुशीलनेन पूर्वाचार्य प्रसिद्धाया एतादृश्यागूढरीतेः परिचयोलभ्यते, यस्या उपादेयताऽर्थज्ञानायाऽसाधारणीवर्तते । अनुसन्धाने कृतेऽन्यरीतीनामपिज्ञानं भवितुमर्हतीति दिक् ।।1।।

अखिल भारतीये संस्कृत कवि सम्मेलनः समस्यापूर्ति

सम्मेलन द्वारा अपने चतुर्दश महाधिवेशन के अवसर पर प्रथम दिन दिनांक 5 मई, 1986 को रात्रि 8 बजे अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन के अन्तर्गत 'समस्यापूर्ति' मूलक कविसम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें राजस्थान के अतिरिक्त राजस्थान से बाहर के ख्याति प्राप्त संस्कृत कवियों ने भाग लिया। कवियों की समस्यापूर्तियाँ अत्यन्त रोचक व अनूठे भावों से परिपूर्ण थीं।

इस आयोजन के श्री भवानी शंकर त्रिवेदी-दिल्ली अध्यक्ष रहे, श्रीकलानाथ शास्त्री, निदेशक भाषा विभाग राजस्थान ने इस कार्यक्रम का संयोजन किया। मुख्य-अतिथि–डॉ. वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी-मथुरा रहे। इसमें कवियों ने अपनी समस्या-पूर्तियां निम्नानुसार की :—

कमला

नरोभद्रं पश्येदवगुणनिधानोऽपि विकलः
अमन्दानन्दं वै भजति धनहीनोऽपि जरठः।
गुणी वाग्मी विद्वान् भवति भुवनेष्वेक विनयी
प्रसादाद्यस्या वै जगति जयतात् सा हि 'कमला'॥
अखण्डं पुण्यानां फलमिह तु भोक्त्री सुकृतिनी
'विराटक्षेत्रं' जेत्री सरसिजसुनेत्री कुशलिनी।
पृथुस्तोत्री श्रोत्री बहुलपदयोक्त्रीति मुदिनी
गुणानां संधात्री जनविनयपात्रं हि 'कमला'॥

—रतनलाल शर्मा मनोहरपुर, (जयपुर)

2

विराट्क्षेत्रे ह्यस्मिन् पुनरपि पुनर्या विजयिनी
निजैः सेवाकार्यैः जनगणमनःसुप्रणयिनी।
लसद्वेणीयुक्ता कलिमलविमुक्तास्यकमला
ददाना सद्भाग्यं भवतु भवतामाशु 'कमला'॥

—गुलाबचन्द्र 'पाटलेन्दु, नायन, (जयपुर)

3

शान्तात्मापि प्रचला
राजभवनसंस्थिता विमला।
राजस्वेन हि सबला
भाति सम्मेलने सैव 'कमला'॥
शान्ताकृतिश्च सकला
सुरभारतीसेवने वै विमला।
यजमानार्थैः प्रबला
मण्डपे भाति सैव 'कमला'॥
विदुषीं कमलां वन्दे संघाध्यक्षमहोदयाम्।
शिक्षामात्यं तथा हीरालाल-विज्ञं च सादरम्॥
आयाते जयपत्तने शुभदिने गीर्वाणवाणीमहे
मोतीलालमहोदयैर्विरचिते वेदादि सम्मेलने।
सेवाव्यस्तकलादिनाथविदुषां सद्दर्शनं सौख्यदं
मुख्यं जोशिमहोदयं च 'कमलां' वन्देऽत्र विद्वद्गणम्॥

—डॉ॰ वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, बृन्दावन

4

कमलं 'कमला' न स्यात्
कस्मै कस्य हेतवे।
केन कस्माच्च कस्मिंश्च
विमला निर्मलाऽमला॥

—डॉ॰ सुधाकराचार्यः, मेरठ

5

जयपुरवसतिविकसितविभवा
विहरत मुदिताः प्रहरणकलिकाः।
इह रससदनामभिनवमदनां
सुललितकवितां कलयति 'कमला'॥
सारस्वतं विलासं
सहते श्रीर्नेति दर्शनं वितथम्।
सारस्वतीं सपर्यां
यतोऽत्र कुरुते स्वयं 'कमला'॥

—उमाकान्त शुक्ल, मुजफ्फरनगर

6

संस्कृतं संस्कृतेर्मूल–
मिति सम्यग् विचार्य या ।
सक्ता तद्रक्षणे वृद्धौ
विजया 'कमला' जयेत् ॥
वहन्ती सर्वकारस्य
पदं राजस्वमन्त्रिणः ।
राजस्थान प्रदेशस्य
सैषा 'कमला' विराजते ॥
वदन्ती विदुषां गोष्ठ्यां
सत्यं प्रियहितं वचः ।
विमलाचरणैः स्वीयै–
विख्याता 'कमला' जयेत् ॥
दिशन्ती सुरभारत्या
मार्गमुन्नतिकारकम् ।
सम्मेलन शुभाऽध्यक्षा
'कमला' नो विराजताम् ॥
बाह्याभ्यन्तरयोः शुभ्रा
'कमला' विचलास्ति या ।
प्रबला कार्यसंसिद्धौ
'कमला' नो विराजताम् ॥
मञ्चसञ्चालने दक्षा
निपुणा भाषणेष्वपि ।
विदुषी मार्गदृष्ट्री च
'कमला' कमलायते ॥
कार्यसम्पादने व्यग्रा
जनस्य शासनस्य च ।
मृदुलैषा सभानेत्री
'कमला' नो विराजताम् ॥
संलग्ना संस्कृतोन्नत्यै
मनोवाक्कायकर्मभिः ।
प्रत्यक्षा भारती सैषा
श्रीमती 'कमला' जयेत् ॥
राजस्थाने च राष्ट्रे च
संस्कृतोन्नयने रता ।
प्रेरिका सत्प्रवृत्तीनां
राजतां कमला' चिरम् ॥
विद्वद्वरेण्यवृन्दानां
सम्मेलनमुपेयुषाम् ।
वचोभिराशिषामेभिः
संस्तुता 'कमला' जयेत् ॥

—डॉ० भवानीशङ्करत्रिवेदी, दिल्ली

नरैः सेव्या निः स्वैः परमपुरुषस्य प्रणयिनी
विशिष्टा मन्त्रित्वे सुरमधुरवाणी हितकरी ।
विभातात् 'राजीव' प्रकृतिसुरभिप्राप्तपदका
सुराज्य-स्वर्गश्रीसचिवपदभोक्त्रीह 'कमला' ॥

—मोहनलाल पाण्डेय, अजमेर

7

वदनसंजितवृत्तविधुर्वरा
स्मितमुखी मृदुला वरवर्णिनी ।
हरति कस्य[5] न हृत्कमलालया[2]
सकमला[3] 'कमला'[1] कमलाभया[4] ॥
वदनवर्णविवर्णितवारिजा
विमल[6]वृत्तविधुस्मितशालिनी ।

---

1. कमला लक्ष्मीः वरस्त्री च अध्यक्ष महोदया अपि च कमला । (लक्ष्मीपक्षे)
2. कमलालया कमले जले आलयः सदनं यस्याः सा कमलालया । अध्यक्षा विषये कमला लक्ष्मीः आलये गृहे यस्याः सा कमलालया । "कमला श्रीवरस्त्रियोः" मेदिनी । "कमलं सलिले ताम्रे जलजे क्लोम्नि भेषजे" मेदिनी ।
3. सकमला (लक्ष्मीः) कमलासनत्वात् करधृतकमलत्वाच्च सकमला (अध्यक्षाच) कमलया श्रिया सहिता सकमला धनवतीत्याशयः ।
4. कमलाभया कमलमिव ताम्रमिव या आभा सा कमलाभा तया कमलाभया रक्तवर्णकान्त्येत्यर्थः । अध्यक्षाविषये 'कमलाभया' पदं विशेषणात्मकमेकवचनपरं कमला वरस्त्रीव अथवा श्रीरिव अभया निर्भया निर्भीकेत्याशयः । अथवा कमलायाः लक्ष्म्याः आभा इव या आभा कमलाभा तयेत्यर्थः ।
5. कस्य हृत् हृदयं न हरति अपितु सर्वस्यैव हरति, लक्ष्मीः परन्तु कस्य ब्रह्माण एव हृदयं न हरति लोकमाता लक्ष्मीः विष्णुनाभिः कमलजन्मनो ब्रह्मणः पुत्रत्वान्न हरति । अध्यक्ष महोदयापि ब्रह्मणः पितामहत्वात्पौत्रीभूतेयं कमला युवतिरपि कथं तस्य हृदयं हरति ? अपितु न हरति ।
6. विमलवृत्तविधुस्मितशालिनी विमलः निर्मलः वृत्तः वर्तुलः स विमलवृत्तश्चासौ विधुः चन्द्रः तद्वत्स्मितेन हास्येन शालते या सा विमलवृत्तविधुस्मितशालिनी (लक्ष्मीः) । अध्यक्षा च बिमलं निर्मलं वृत्तं चरित्रं यस्याः सा विमलवृत्ता चासौ विधुरिवस्मितं तेन शालिनी । "वृत्तोऽधीतेऽप्यतीतेऽतिवर्तुलेऽपिवृते मृते । दृढे ऽन्यलिङ्गं वा क्लीबं छन्दश्चारित्र्यवृत्तिषु ।-' मेदिनी ।

विजयतां 'कमला[9]' कमलासमा[8]

ह्यजनता[7] जनतापहराशुभा ।।

अविरतं श्रम एव विशिष्यते

श्रमरता मनुजा मनुजा मताः ।

श्रमहिता महिता कमलामला[10]

श्रमपरं भजते 'कमला'लसा[11] ।।

पुरुषाः ! पुरुषार्थभरं कुरुत

पशवोऽपि वराः श्रमकर्मरताः ।

हरिसन्निभमप्यलसं पुरुषं

'**कमला**'[12] तु कदापि न कामयते ।।

यशसा गुणैश्च धवलो–

ऽस्त्यबलोऽभिजनधी बलोऽपि नाऽकुशलः[13] ।

हतविधिरिह स मतो

यं लोके न कामयते '**कमला**' ।।

प्रयत सदाहृतकमला

कमलास्यापि[15] प्रफुल्लसुमहास्या ।

गुणगणविमलाऽप्यबला

सबला पदेन राजते '**कमला**[14]' ।।

स्व श्रीन्यक्कृतकमला–

ऽमलकमलाङ्घ्री निजास्यजित कमला ।

[16]प्रकृतिवरा सुवरोरूरत्नं

विजयतामियं '**कमला**' ।।

साध्यन्तेऽर्थाः सकला[17]

सकला विकला यया विना पुरुषाः ।

[18]हितपुरुषोत्तमसुरुचिः

कस्मै न हि रोचते '**कमला**' ।।

करकमला मुखकमला

पदकमला मधुमधुरहृदयकमला

अब्धिकमलजनिकमला–

समा न किं रोचते 'कमला' ।।

— **सत्यनारायण शास्त्री, अजमेर**

---

7. अजनता (लक्ष्मीः) अजाय विष्णवे नता इत्यजनता । अध्यक्षा च अजः अजाख्यनृप इव नता जनैरित्यजनता । 'अजः छागे हरि-ब्रह्मविधु स्मरहरेनृपे' मेदिनी ।

8. कमलासमा कमला वरस्त्री तया समा सदृशी कमलासमा ।

अध्यक्षा च कमलया लक्ष्म्या समा सदृशी कमलासमा लक्ष्मीतुल्या ।

9. कमला लक्ष्मीः अध्यक्षा च कमला ।

10. कमलामला कमलमिव जलजमिव अमला स्वच्छा कमलामला-लक्ष्मीः । अथवा कमला वरस्त्रीव अमला निर्मलचरित्रा लक्ष्मीः अध्यक्षाकमला च । अथवा अमला सच्चरित्रा कमला अध्यक्षा लक्ष्मीः च ।

11. कमलालसा अलालसा अनिच्छावत्यपि कं भजते ? श्रमपरं जनं भजते इत्याशयः ।

12. कमला लक्ष्मीः वरस्त्री च अथवा अध्यक्षा कमला । हरिसन्निभं विष्णुसदृशं अलसं पुरुषं न कामयते अन्यत्र अध्यक्षा कमलाऽपि हरिसन्निभं सिंहं सदृशं बलवन्तमपि अलसं अकर्मण्यं अकुशलं जनं न कामयते, सर्वत्र कर्मठ जनः प्रशस्यते ।

13. अकुशलः कर्मण्यदक्षः ना मनुजः ।

14. कमला लक्ष्मीः अध्यक्षा च ।

15. कमलास्याऽपि कमले आस्या स्थितिर्यस्याः साकमलास्या कमला-सनस्था लक्ष्मीः । कमलाया लक्ष्म्या आस्यमिव आस्यं यस्याः सा कमलास्या अध्यक्षा । कमलमिव आस्यं मुखं यस्याः सा कमलास्या अध्यक्षाच । अबला सबला विरोधः । अबला नारीसत्यपि लक्ष्मीः अध्यक्षा च पदेन विष्णुपत्नीपदस्थित्या सबला बलवती । अध्यक्षा च मंत्रि पदस्थित्या सबला बलवती ।

16. प्रकृतिवरा प्रकृत्यावरा प्रकृतिवरा, प्रकृतिश्चासौ वरा प्रकृतिवरा प्रकृतिर्लक्ष्मीः । "गणेशजननी दुर्गा राधा लक्ष्मीः सरस्वती । सावित्री च सृष्टिविधौ प्रकृतिः पंचधामता ।। देवीभागवते ।। प्रकृतिः चासौवरा प्रकृतिवरा । प्रकृतिषु मंत्रिषु वरा प्रकृतिवरा, प्रकृतौ पौरवर्गेवरा प्रकृतिवरा अध्यक्षाकमला । प्रकृतिर्गुणसाम्ये स्यादमात्यादिस्वभावयोः । यौनोलिंगे पौरबर्गे । मेदिनी ।

17. सकलाः सर्वे सकलाः कलावन्तः कवयितार अपि विकला विन-ष्टकला दुःखिनः विक्लवाः ।

18. हितपुरुषोत्तमसुरुचिः लक्ष्मीस्तु हिता धृता । 'दधातेर्हि" निष्ठायां रूपं पुरुषोत्तमे विष्णौ सुरुचिः अभिष्वंगः अत्यन्तासक्तिः प्रेम संपर्कोवा । अध्यक्षा च हिता इव सुहृद इव ये पुरुषोत्तमा उत्तम-पुरुषास्तेषु सुरुचिः स्पृहा यस्याः सा हितपुरुषोत्तमसुरुचिः । "रुचिः स्त्री दीप्तौ शोभायामभिष्वंगाभिलाषयोः । मेदिनी ।

8

देवगिरः संवृद्धौ स्वसंस्कृतेरुन्नतौ कृता या सा ।
सम्प्रति संस्कृतसम्मेलनाध्यक्षत्वेन शोभते 'कमला' ।।

—कलानाथ शास्त्री, जयपुर

9

लक्ष्मीस्तु कमला प्रोक्ता
कमलासनशोभिनी ।
सैव हंसासना जाता
सम्मेलन - सरस्वती ।।
चार्वङ्गि चन्द्रगौरा
चञ्चला कालिमामवाप्येयम् ।
कमला करवञ्चकेषु
कृष्णा जाता कथमार्या ।।

—नटवरलाल जोशी, लक्ष्मणगढ़

10

भुवि कमलायाः सहायतया विद्वांसः उन्नतिं प्राप्नुवन्तीति प्रशंसां वैकुण्ठे श्रुत्वा खिन्ना लक्ष्मीः विचारयति–

क्षीरसमुद्रनिवासिनी या
कल्याणं विदधातु लोके सा 'कमला' ।
चरणशरणभयहारिणी दुःखदारिणी या
सुखराशिं सकलेभ्यः वितरतु सा 'कमला' ।
दारिद्र्यौघविनाशिनी शुभकारिणी या
अनुग्रहं प्रददातु साऽस्मभ्यं 'कमला' ।
सेव्या सुमतिविकाशिनी मतिमोहिनी या
रक्षतु भक्तजनान् हि लोके सा 'कमला' ।।
द्रोहो मे ख्यातो शारदया
तद्भक्तो रहितो मे दयया ।
कथमाप्ता मम नाम्ना विपुला
आश्रयतेति सुखिन्ना 'कमला' ।।

—रामकुमार दाधीच, जयपुर

टिप्पणीः=लक्ष्मीः/राजस्थान राजस्वमन्त्री कमला

11

घनं ध्वान्तं व्याप्तं परित इह दुर्दैवजनितं
वसन्त्येते घूकाः प्रतिविटपशाखासु सततम् ।
कथं वै दारिद्र्यं तदपि भुवनेऽत्राद्य वसति
विहायोलूकं किं भजति गरुडं साऽद्य 'कमला' ।
कृतो यैस्तातोऽस्या जलधिरुदरे क्रोधविवशैः
पदाघातैर्भर्ता वपुषि कुपितैश्चाप्यवमतः ।
प्रिया येषां नित्यं यदरिपदवी भागपि गिरा
मनस्तेषां चित्रं सदसि कुरुते साऽद्य 'कमला' ।।

—श्रीराम दवे, जोधपुर

12

मामन्तरा महत्वन्न
पुरुषस्य विपश्चितः ।
न किमपि शक्यते कर्तुं
नम्यते 'कमला' मया ।।
जगन्नाथोऽपि चैकाकी
यां विना न महीयते ।
जनश्रेयोविवृद्धयर्थं
सा 'कमला' ह्यत्र शोभताम् ।।
राजस्थानप्रदेशस्य
मन्त्रिपदमलङ्कृता ।
सम्मेलने प्रधानस्य
पदे शिक्षावती शुभा ।।
कमलेव महाभागा
नृपनीतिविशारदा ।
सुशोभिता प्रजाशर्म-
कर्त्रीयं 'कमला'ऽवतात् ।।
अज्ञानदारिद्र्यततीं प्रणाश्य
प्रकाश्य चित्तानि च मानवानाम् ।
सुखं समृद्धिं विदधातु नित्यं
माता समेषां 'कमला' धरित्र्याम् ।
त्वया मातः ! पूर्वं सुरमुनिनराणां शिवकृते
धृतं काले-काले बहुविध शरीरं जलधिजे ।
इदानीं लोभेर्ष्योत्कटकपटरक्षोभयजुषां
नराणां संरक्षां विहितुमुपयाताऽस्ति 'कमला' ।।

—वैद्य शङ्करलाल शर्मा, फतेहपुर

13

लब्ध्वा नैरुज्यसत्कान्ति
शारदाराधने रता ।
शिक्षोद्यानविभाभास्वत्
'कमला' कमलायताम् ।।

—राधाकृष्ण शास्त्री, जयपुर

14

कर्मैव नरजीवन सुभाग्यलिपिरपि जनस्य सुकर्मैव ।
समुपदिशतीह शिक्षा-कमलवननिवासिनी 'कमला' ।।
नवमौक्तिक भा नवहीरक भाः
स्वगुणैर्महिता चरितैर्विमला ।।
हरिरेतु न वैतु परं यदि सा
स्वयमेति तनोति मुदं कमला ।।

—गिरिजा प्रसाद 'गिरीश', जयपुर

15

भुवि धन्यतमा जयसिंहपुरी –
यमुरीकृतपाटलपुष्पविभा ।
हरिशासननीतिकलाकुशला
किल यत्र विभात्यमला कमला ।।
सरस्वत्या लक्ष्म्या सह सुविदितं वैरमवनौ
तथा किन्त्वस्माभिर्नहि समनुभूतं जयपुरे ।
यतो विद्यायागे प्रमुखयजमानत्वमभजद्
विधायास्यां गोष्ठ्यां विबुधवरिवस्यां हि कमला ।।

—डॉ० जगन्नारायण पाण्डेय, जयपुर

राज लीला

वासार्थं यत्र सौधं सुललितवनिता कामकेलिप्रपूर्त्यै
भोक्तुं भोज्यं गरिष्ठं विविधफलरसावारुणो यत्र पातुम् ।
यातायातप्रबन्धे द्रुततरगमनं हेलिकोप्ट्रादियानं
नेतॄणां तस्कराणामसितधनवतां राजभिद् राजलीला ।।

—मोहनलाल पाण्डेयः, अजमेर

2

बहुतरमपि यत्ने द्राक्कृते या न सिद्धि—
र्भवति लघुतया सा रातिचेत्कोऽपि वित्तम् ।
न खलु सपदि कार्यं ह्यन्यथा जायतेऽत्र
प्रसरति मम राष्ट्रे राजलीला विचित्रा ।।

—सत्यनारायणः, अजमेर

3

वृन्दादेव्याः परमविशदे प्रांगणे बाललीला
नित्यं चित्रा श्रुतिगणनुता यस्य साक्षी सुवेधाः
तस्माच्छ्रेष्ठा सकलवसुधा प्रांगणे जायमाना
पूर्णानन्दा मनुज नयना राजते राजलीला ।।

—डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, वृन्दावनम्

4

वचः प्रधाना करणाऽप्रधाना
स्वार्थे स्वकीये खलु सावधाना ।
आतङ्किता पञ्चनद प्रदेशे
प्रवर्तते सम्प्रति राजलीला ।।

—पं० गुलाबचन्द्रः

5

अनुकनखलमास्ते जाह्नवी स्वच्छतोया
न्वधि जयपुरमास्तां मञ्जुगीर्वाणवाणी ।
भुवि भवतु विभूत्यै लोकतन्त्राधिकारो ।
हृदि हृदि यदि लोके राजतां राजलीला ।।

—उमाकान्त शुक्लः, मुजफ्फरनगरम

कर्मणे

मनसि विचारय मित्र ! किं कर्तव्यं किं कृतम् ।
लब्धं किं मनुजत्वमयि ते ह्यस्मै कर्मणे ।।

रामकुमार दाधीचः, जयपुरम्

2

सर्वाण्यवद्यकर्माणि शोकमोहप्रदानि वै ।
तस्मै वयं नमस्कुर्मः स्तुत्याय कविकर्मणे ।।

—रतनलाल शर्मा, मनोहरपुरम्

3

प्राबल्यात् परकामिनी सुरमणं जायते नो नर्मणे
देशस्यास्य हितैषिणे नतिरियं वीराय सद्वर्मणे ।
भ्रष्टाचार निरोधनं हि भवताद् राष्ट्रे सदाशर्मणे
वर्धन्तां सकलाजनाः श्रमरताः श्रीभारते कर्मणे ।।
राजतामेकताभावना मानसे,
वर्ततां जन्मभूगौरवं श्रेयसे ।
भ्राजतां भारते भारती वैबुधी,
लीयतां मानसे स्रग्विणी मोहिनी ।
मोदतां सभ्यता मानदा मानवी
द्योततां विद्यया कर्मजा विद्युतिः ।
जायतां संस्कृतं संस्कृतिः शर्मणे
वर्धतां कर्मविद् कर्मणे ।।

—**मोहनलाल पाण्डेयः, अजमेरम्**

4

कश्चिद्विक्रमवाँस्तु कश्चिदबलः कश्चिद्विपश्चिद्वरः
कश्चित्केलिपटुस्तु कश्चिदपरो राज्ये सभासज्जनः ।
लोके कश्चिदकिंचनोऽपरजनः कश्चिद्धराधीश्वरो
येनैकेन कृता अमी नरवरास्तस्मै नमः कर्मणे ।।
कश्चिच्चौरो न्यायशीलश्च
कश्चित्कश्चिद्भिक्षुर्यक्षराडत्र कश्चित् ।
कश्चिद्दुष्टः सज्जनः कश्चिदत्र
हेतोर्यस्य स्यान्नमः कर्मणेऽस्मै ।।
अंगुष्ठमुद्रा मनुजाः कुबेराः भिक्षाशिनो वैश्रवणोपमा वै ।
बलीयसा येन कृता जगत्यां भूयान्नमः कर्मण एव तस्मै ।।
अज्ञास्तु तुरगारूढाः प्रज्ञा भिक्षुसमाः कृताः ।
येनकर्त्रे महच्चित्रं कर्मणेऽस्तु सदा नमः ।।
धनिनो भिक्षुका जाता भिक्षवस्तु धनाधिपाः ।
हेतुना यस्य लोकेऽस्मिन्कर्मणेऽस्तु सदा नमः ।।

—**सत्यनारायणः, अजयमेरुः**

5

येन श्रीगौराङ्गराज्यमभितः संस्थापितं भारते
येन प्रतिभासंयुतापि जनता लोके चिरं निन्दिता ।
येनार्यप्रतिभा स्वराज्य मिलने संप्रेरिता वै पुनः
स्वातन्त्रेणविभूषिताऽथ सुखदा तस्मै नमः कर्मणे ।।
बापूगांधीजवाहरोऽथ तिलकगंगाधरोगोखले
बाबूबोस सुभाषचन्दभक्तः ढिल्लोशहान्वाजकाः
पन्तश्रीगोविन्द घारनु तथा श्रीमहेन्द्रादयः
संपीडयापि चकार लोकसुखदान् तस्मै नमः कर्मणे ।

—**डा० कृष्णकान्त चतुर्वेदीः, वृन्दावनम्**

6

ब्रह्माविष्णुमहेश्वरानपि सदा सुव्याकुलान् कुर्वते
व्यर्थं भ्रामयते प्रकाण्डविदुषी हास्यास्पदान् तन्वते ।
द्रव्येशानपि भिक्षुकान् विदधते स्वाच्छन्दचमातन्वते
अज्ञाताऽखिलमर्मणेऽपि विबुधैस्तस्मै नमः कर्मणे ।

—**पं० गुलाबचन्द्रः**

7

धाता यत्पुरतो विभाति विवशो विष्णुर्न यस्मात्परो
नोदास्ते स शिवः कदापि वितते यच्छासने वाऽऽसने ।
यस्याज्ञाः परितो लसन्ति निखिले ब्रह्माण्डभाण्डेऽङ्किता
भ्रातः सर्वमयाय शान्तमनसा तस्मै नमः कर्मणे ।।

—**उमाकान्तशुक्लः, मुजफ्फरनगरम्**

लोकतन्त्राधिकारः

दनुजइवमनुष्यो मानवस्यैवभक्षी,
विदधति हृदि दुष्टातंकशंकां जनानाम् ।
वचसि वपुषि येषां भक्तिहीनः प्रचारः
भवति च न हि तेषां लोकतंत्राधिकारः ।।
प्रियगुणहितभावश्छद्महीनः पुमान्यः
सुखयति नरलोकं स्वस्य सेवाश्रमेण
अहरहरनवद्यं कर्मजातन्तु यस्य
वरयति जनभक्त लोकतन्त्राधिकारः ।।

—**रतनलाल शर्मा, मनोहरपुरम्**

2

यस्मिन् व्यक्तेर्महत्वं स्वमत वितराच्छासनं लोकनिघ्नं
यस्मिन् शिक्षा प्रलब्धिः शिशुयुवजरतां पाठशालाप्रसारात् ।
उद्योगानां विकासो रणविषमविधौ शान्तिमार्गोपदेशः ।
सोऽयं लोकोपकारी जगति विजयतां लोकतन्त्राधिकारः ।।

—**मोहनलाल पाण्डेयः, अजमेरम्**

3

अस्माभिभारतीयैर्धृतसुमतिबलैरैक्यभावप्रपन्नै
र्हित्वा नानाविवादानशिथिलकटिभिः सर्वदाजागरुकैः ।
निष्ठावद्भिः सुदक्षैरविहतमहसा संततं रक्षणीयः
सर्वेषां भारतानां मततितजननो लोकतन्त्राधिकारः ।।

—**सत्यनारायणः, अजयमेरुः**

4

जयतु जनकदम्बस्यात्र संघाधिकारः
जयतु दलितलोकोत्थापने सद्विचारः ।
जयतु यवनहिन्दुर्भ्रातृभावप्रचारः
जयतु जयतु लोके लोकतन्त्राधिकारः ॥
जयतु भरतदेशे संस्कृतस्यप्रचारः
जयतु ललितलोकाराधनायप्रकारः ।
जयतु मनुजलोके सौख्यशान्तेर्विहारः
जयतु जयतु लोके लोकतन्त्राधिकारः ॥
जयतु बुधवराणां वाग्विलासप्रकाशः
जयतु जयपुरेऽस्मिन् सत्कवीनां विकासः ।
जयतु सुरगिराया वर्धने सर्वकारः
जयतु जयतु लोके लोकतन्त्राधिकारः ॥
जयतु जयविलासे काव्यपाठप्रहासः
जयतु सकलविद्यापूजकानां प्रभासः ।
जयतु कविकुलानां कीर्तिकर्मप्रकारः
जयतु जयतु लोके लोकतन्त्राधिकारः ॥
विलसति मतदानं यत्रलब्धप्रभारः
प्रभवति महिलानां सर्वकर्माधिकारः ।
विहरति जनतायाः सेवकः सर्वकारः
जयतु जयतु लोके लोकतंत्राधिकारः ॥

—डॉ० कृष्णकान्त चतुर्वेदः, वृन्दावनम्

5

रक्ष्यं स्वं स्वं चरित्रं यदि भुवि मनुजैः गौरवं काम्यते चेत्
चेदिच्छा वा स्वकोयं भवतु सुखमयं भारतं वाप्यखण्डम् ।
भोः भोः मनितप्रवृद्धाः वचनमभिनवं श्रूयतां वै तदा मे
हस्ते वै संस्कृतस्य प्रभवतु नितरां लोकतन्त्राधिकारः ॥

—पं० गुलाबचन्द्रः

6

सर्वः वस्त्रं तथान्नं च सर्वः सौख्यमवाप्नुयात् ।
लोकतन्त्राधिकारोऽयं सर्वः दैन्यं निराशयेत् ॥

—नटवर जोशी

7

भाषाभेदं जनयति जने प्रान्तपक्षाभिमानं
जात्युद्वेगं क्वचिदयमहो धर्मजन्यं विवादम् ।
राष्ट्रे भक्ति भजति न जनः स्वाधिकारे प्रमत्तः
कोऽयं जातः कलहजनको लोकतन्त्राधिकारः ॥

—श्रीरामदवे, जोधपुरम्

8

अशनवसनचिन्ता केवलं दृश्यतेऽद्य,
कथमिव परिचर्चाज्ञानविज्ञानयोस्तु ।
विगतकुशल लोको व्याप्तपर्याप्तशोको,
जनमतहृतसारः लोकतन्त्राधिकारः ॥
विभवमदविघूर्णाः द्वेषदुर्नीतिपूर्णाः ।
विगतमतिविवेका शासका वा प्रजा वा ।
दिश नय शुभमार्गं तत्कृते त्वं कवीन्द्र !
किमुत नहि तवायं 'लोकतन्त्राधिकारः' ॥

—पं० राधाकृष्ण शास्त्री

भाविनी शताब्दी

प्रतिगृहं तडिद्योगाद् दूरदर्शनयन्त्रस्य प्रबन्धात् ।
कृत्रिम शिरसोभावाद् भविता यस्यां कार्यपूतिः ॥
प्रसिद्धसौरतेजसा यस्यामन्नपाकादि व्यवस्था
भवितेन्दुलोकवासो धनवतां सा भाविशताब्दी ॥

—मोहनलाल पाण्डेयः, अजमेरम्

2

उद्जनपरमाणूद्भवहेतिभिराकुलिते विशालतमविश्वे ।
राष्ट्रे भाविशताब्दी भद्रतरा भवतु भूतये भवताम् ॥
अहिंसया खलु भारतैः स्वस्वातन्त्र्यमपूरि ।
भाविशताब्दी वः सदा वितरतु भद्रं भूरि ॥
विकसद्भूरिसमृद्धिमद्भुविभारतं चकास्तु ।
भाविशताब्दी वो बुधाः नव्य भावुकंरातु ।

—सत्यनारायणः, अजयमेरुः

3

अन्तरिक्षवशकरणी अटलांटिकभूमिवासिनी चेयं
यंत्रयुगीनाक्रान्तिः स्वायाति भाविनी शताब्दी ॥

—डा० कृष्णकान्त चतुर्वेदः, वृन्दावनम् ।

4

सज्जाः भवन्तु विद्वत्तल्लजाः
विहाय तन्द्रां परित्यज्य निद्राम ।
पुस्तकानि लिखन्तु नव्य विषयेषु
वेदेषु पुराणेषु दर्शनेषु
बोधः शोधश्च कर्तव्यः
संस्कृत समुन्नयनी, आगच्छतीयं भाविनी शताब्दी ॥
देशेषु विदेशेषु यास्यामः,
भारतीयां विधां प्रचारयिष्यामः,
पुनरपि जगद्गुरवो भविष्यामः
नेतृत्वञ्चानिवार्यमार्याणाम्
तत्र भवतां भवतां कृते
विनैतन्नास्ति प्रत्याशा सत्कृतेः ॥
संस्कृत समुन्नयनी, आगच्छतीयं भाविनी शताब्दी ॥

—पं. गुलाबचन्द्रः

5

कीदशी कीदशी कीदशी कीदशी
भाविनी शताब्दी सखे ! ब्रूयताम् । कीदशी....
न दैन्यं न दुःखं न विद्या विहीनाः
नरा यत्र सर्वे न रुग्णाः न दीनाः
ज्ञान प्रभा पूर्णदीप्ताः बलिष्ठाः
सखे ! भाविनी स्यात् शताब्दी समेषाम् ।

—नटवरलाल जोशी

6

आयुधभेषितविश्वविहारा
कम्प्युटर प्रतिपालन-रागा ।
मानव मानस शान्ति विसूचिः
संभविता ननु भाविशताब्दी ॥

—श्रीराम दवे, जोधपुरम्

कस्य नाभ्यर्थनीयाः

रम्यं हर्म्यं प्रमुक्तं सुखमयि सकलं पुत्रदारोद्गतं यैः
बन्धुत्वं यैश्च हीनं स्वजननवसुधागौरवोत्कर्षहेतोः ।
त्यक्ताः प्राणाः प्रिया यैः समरमुविमदा धैर्यमालम्ब्य चित्ते
पूज्यास्ते देशभक्ताः परहितरसिकाः कस्य नाभ्यर्थनीयाः ॥

—मोहनलाल पाण्डेयः, अजमेरम्

2

अह कामये मुख्यमन्त्रित्वमेव
स्वराष्ट्रे विभो ! साम्प्रतं स्वप्रयासैः
अमात्यो भवेयं नवाऽहं भवेयं
मनः कामना कस्य नाऽभ्यर्थनीया ॥

सत्यनारायणः. अजयमेरु

3

छन्दोऽङ्घ्रिः स्वप्रचारा नवरससरसा रीति शाटी दधाना-
लंकार ग्रीवयुक्ता कटिगुणरसना रासयन्ती रसात्मा ।
लीला संचार चूडाऽक्षरपदवदना माधुरीरूपधारा
व्यङ्ग्यप्रासादखेलाऽपरमिव कमला कस्य नाऽभ्यर्थनीया ॥

डा. वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदः, वृन्दावनम्

4

कामोल्लास प्रसक्ताः प्रचुरगतियुतैः दीपिता भ्रूविलासैः
अत्यन्तोन्मादयुक्तै रमितरसभरैः स्नापिता मन्दहासैः ।
प्रेमालापप्रसङ्गे कुलकलशयुगलान्त मध्यप्रदेशाः
कान्ते ते ते विलासाः रतिरसविदुषां कस्य नाऽभ्यर्थनीयाः ॥

—पं० गुलाबचन्द्रः

5

ये राष्ट्र द्रोहाय कृत प्रयत्नाः
भाषानु प्रान्तैरथवाऽन्य भेदैः ।
ते नाभ्यर्थनीयाः ननु दण्डनीयाः
ते मारणीया गुलिकाभिरायैः ॥

—नटवर जोशी

6

द्वारे यस्या वसति सततं मारुति र्बद्धपाणिः
नित्यं सिद्धा सरस रसना ह्यन्नपूर्णा च दासी ।
प्राप्यादेशं धनपतिरयं द्रव्यवृष्टिं विधत्ते,
देवैर्वन्द्या सुखद भूतिका कस्य नाभ्यर्थनीया ॥
शिक्षोपाधि प्रचुरविरहेऽप्याप्त वागीश संज्ञा
तन्त्रेनॄणां गणपति कृपा प्राप्त पुण्याभिषेका
स्वल्प प्राणाऽप्यति चिरतरं वंश संपद् विधात्री
स्वेष्टा पूर्त्यै सचिव पदवी कस्यनाभ्यर्थनीया ॥

—श्रीराम दवे, जोधपुरम्

7

पटुकुटिलकटाक्षश्रीजुषां कामिनीना-
मविरलमधुधारामाधुरी वीक्षितानाम् ।
अथ कविपरिपाटीवक्रिमप्रोज्ज्वला वाक्
श्रवणचुलुकपेया कस्य नाभ्यर्थनीया ।।

—उमाकान्तशुक्लः, मुजफ्फरनगरम्

8

विद्या ज्ञानप्रदाने निखिलमपि धनं निर्धनेभ्यश्च दाने
शौर्यं साफल्यमेति प्रतिपदमनिशं रक्षणे दुर्बलानाम् ।
येषां यत्नात् स्वतन्त्रं पुनरपि भुवने भारतं भात्यखण्डं
ब्रह्माण्डे ते महान्तः सुविमलचरिताः कस्य नाभ्यर्थनीयाः ।।

—डा० जगन्नारायण पाण्डेयः, जयपुरम्

सम्मेलनम्

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलनस्य जयपुराधिवेशनस्य विलक्षणताः—

कमला[1] ह्यत्र समागताऽस्ति विदुषां कर्तुं हृदा स्वागतम्
सत्यप्यत्र नरोत्तमे[2] कथमयं पुरुषेषु चान्योत्तमः ।[3]
याताऽहो पुनरुक्तताऽति गुणतां दृष्ट्वाऽत्र द्वौ शंकरौ[4]
धन्या संस्कृत वाक् तथा जयपुरे तस्याश्च सम्मेलनम् ।।

—रामकुमारदाधीचः, जयपुरम्

1. कमला (लक्ष्मीः) विद्वद्द्वेषिणीति रूढिः, परमत्र कमला राजस्थान राजस्वमन्त्री विदुषां स्वागतमाचरति । 2. नरोत्तमः=नरोत्तमलाल जोशी । 3. पुरुषेषु-चान्योत्तमः=डा० पुरुषोत्तमलाल भार्गवः । 4. द्वौ शंकरौ=देवीशंकर (तिवाड़ी) उमेशः (शास्त्री) चेति ।

2

राजस्थानगृहाङ्गणे सुचरितं प्रासारि येनाद्भुतम् ।
वर्चस्वेन धरातलं विहितवत्चञ्चत्चमत्कारितम् ।
इत्थंभूतमहे तु संस्कृतिसरित्वाहेरतं सन्मतम् ।
ख्यातिं यातु निरन्तरं सुरगिरां साहित्यसम्मेलनम् ।।
नीतीनां नयने प्रचारप्रसरे शिक्षा सु दीक्षासु च ।
संकल्पा नहि जातु यस्य वितथा अल्पा अनल्पाश्च ये ।
चित्ते वाचि धृतं तदेव हि कृतं नान्यत्प्रियं यस्य वै ।
ईदृक् सत्यहिते रतं सुरगिरां साहित्यसम्मेलनम् ।।

—रतनलालशर्मा, मनोहरपुरम्

3

यस्मिन् भान्ति समस्तशास्त्रनिपुणा एकत्रिताः पण्डिताः ।
नेतारः कविकर्मपाठरसिकाः शास्त्रार्थतत्त्वप्रियाः ।
भद्रं तज्जयपत्तने विजयतां प्राज्ञैः समायोजितम् ।
राजस्थानविभूषणं सुरवचः साहित्यसम्मेलनम् ।।

—मोहनलाल पाण्डेयः, अजमेरम्

4

श्रोतृचेतोमहानन्दकृन्निःसर-
त्काव्यसिन्धोः[1] सुधासारयाधारया ।[2]
जीवतादारवीन्दु स्वकीर्त्या चिरं,
संस्कृतस्याऽत्र साहित्यसम्मेलनम् ।।

—सत्यनारायण शास्त्री, अजयमेरुः

1. काव्यसिन्धोः काव्यसरितः "सिधुर्वमथुदेशाब्धिवदे ना सरिति स्त्रियाम्" मेदिनी । 2. सुधासारया सुधायाः अमृतस्य आसारः प्रसरणं यस्यां सा तया सुधासारया अथवा सुधायाः सारः यस्यां सा तया सुधासारया "सारो बले स्थिरांशे च" मेदिनी ।

5

राजस्थानमहोत्सवेष्वनुपमं विद्वत्कुलानन्ददं
श्रीराजीवमहोदयैरपि मुदा पत्रात् समभ्यर्चितम् ।
यंत्रे टी० वि० चतुर्दिनाङ्क मइके रात्रौ च यद्घोषितम्
विद्वत्काव्यकलाधरैश्च खचितं तद्विज्ञसम्मेलनम् ।।

—डा० वासुदेवकृष्णचतुर्वेदः, वृन्दावनम्

6

नानाशास्त्रविचारकार्यचतुरं विज्ञानसंशोभितम्
श्रीमद्दिव्यसरस्वतीविलसितं संयोजितं सूरिभिः ।
सज्जाकौशलशिल्पकीलितकलं विद्युत्त्विषां मेलनम्,
भूयात् भूतिकरं च संस्कृतविदां साहित्यसम्मेलनम् ।।

—पं० गुलाबचन्द्रः, जयपुरम्

7

वेद-साहित्य-शब्दागमादेर्विदां
चिन्तनं शास्त्रवाचां समुद्वेलनम् ।
होमधूमैः सहालोकितं रात्रिभि-
र्देववाण्याः कवीनां च सम्मेलनम् ।।
नव्यशिक्षासरण्यां कथं संस्कृतं
स्थानमाप्नोत्वितीहाभृतांखेलनम् ।
दृष्टमस्मिन् सदस्युत्तमं वासरै-
र्देववाणीविदामद्यसम्मेलनम् ।।

—कलानाथशास्त्री, जयपुरम्

8

संमेलनं स्यात् कमला-बलानां
गीर्वाणवाणी-विदुषां सतां च ।
न राजलीला-कृत-वाङ्निरोधः
सा माधुरी राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—श्री रामगोपाल शास्त्री, जयपुरम्

9

संस्कृतिः शाश्वती संस्कृतं संश्रिता
लालितुं पालितुं तां क्षमः केवलम् ।।
ज्ञानविज्ञानविद्योतितान्तः परं
ज्योतिमत्संस्कृतं दिव्य-सम्मेलनम् ।।

—गिरिजासप्रादगिरीशः जयपुरम्

10

दृष्टो विग्रहवारणाय विहिते सम्मेलने विग्रहो
दृष्टं चामृतसंगमेऽपि गरलं व्याजेनसंयोजिते ।
लब्धं व्याजतले सदैवतिमिरं ज्योत्स्नाशयालम्बिते,
व्याजव्याधिविमुक्तमस्तु विदुषामेतद्धि सम्मेलनम् ।।

—श्रीरामदवे, जोधपुरम्

11

सौभाग्याज्जगदीशशङ्करकलानाथर्षिगंगाधर—
श्रीनारायणविष्णुकान्तनलिनिगोपालमुख्यैरिदम् ।
रामानन्दशिवेन्द्ररुद्रगिरिजाराजेन्द्रकृष्णादिभिः—
संमान्यैः कविभिर्विभाति नितरां साहित्यसम्मेलनम् ।।
मुक्तामण्डलमण्डनेन महितं श्रीमण्डनेनावृतं
शाहोद्यानभुवि श्रुतिस्मृतिजुषां मन्त्रैरलं पावितम् ।
श्रीहीराहरिदेवजोशिकमलामुख्यैर्नुतं मन्त्रिभिः
सिक्तं काव्यरसेन चात्र विदुषामाभाति सम्मेलनम् ।।

—डा० जगन्नारायणपाण्डेयः जयपुरम्

मन्त्रिणः

अमराणां हि या वाणी मर्त्यवाणी भवेत्पुनः ।
तदर्थं हार्दिकीं चेष्टां कुर्वन्तु भुवि मन्त्रिणः ।।

—रामकुमारादधीचः, जयपुरम्

2

दीनानां प्रहितैषिणः सुमनसो धीराः महासङ्कटे
राष्ट्रोत्थानपरायणाः नयविदो गम्भीरभावोज्ज्वलाः ।
धन्याः भारतभूविकासकुशलाः वीराः महात्यागिनः
मान्याः श्रीलजवाहरप्रभृतयो नम्याः महामन्त्रिणः ।।

— मोहनलालपाण्डेयः, अजयमेरुः

3

कार्यालये कर्मकरा, अनादेशकरा यदा ।
देशे तदा कथं शं स्यात् किं करिष्यन्ति मन्त्रिणः ।।

—सत्यनारायणशास्त्री, अजयमेरुः

दीयन्तां मतदानमत्र विबुधाः, पादार्चने लग्नकान्
लोकानामुपकारकांश्च कुशलान् सेवापरान् बान्धवान्
नित्यं मण्डलसेवकानहरहः प्रत्यक्षकल्पद्रुमान्
इत्येवं जनतासुसेवनपरा राजन्त्यहो मन्त्रिणः ।।

— डा० वासुदेवकृष्णचतुर्वेदः, वृन्दावनम्

4

अश्रीकाऽतुलचाटुकर्मनिरतः पाकः करोत्यप्रियम्,
सीमान्ते कुरुते परं प्रतिदिनं सेनासु संघर्षणम् ।
शिक्खान् शिक्षयते सदा प्रकुरुतेऽप्यातङ्कितं भारतम्
कार्याकार्यविधौ विचारकुशलाः पश्यन्त्विमान् मन्त्रिणः ।।

—पं० गुलाबचन्द्र, 'पाटलेन्दु'

5

सम्मानं परितो धृताञ्जलिपुरैः प्राप्तं धनाढ्यैर्गतम्,
मृद्वीयं सुखदा प्रिया कुरसिका स्वप्ने स्थिता साम्प्रतम् ।
आत्मीयैश्चिरमत्सरैः हृत्तपणैः मौनं मतैर्वंचिताः,
खिद्यन्ते नु पराजिताः निजजनैर्निवचिने मंत्रिणः ।।
रम्यास्ते पवनानुकूलितगृहाः सन्मण्डनैर्मंडिता
आतिथ्यं सरसं नवोदितमरुद्वेगं प्रियं वाहनम् ।
यात्रा वायुरथेन कार्यमिषतो देशेविदेशे च सा,
यातं तत्सकलं पराजयवतामित्याकुलाः मन्त्रिणः ।।
पूर्वं या महिषीवदास गृहिणी जाता पुनर्मूषिका
ताते शासति पुत्रकादिविद्दशो लिह्यन्ति रथ्यारजः ।
सामन्तीं प्रभुतां गतोऽयमधुना श्यालः शृगालायते,
पीडचन्ते हि पराजिताः स्मृतिसुखैः प्राग्वैभवैर्मन्त्रिणः ।।
पणे शूराः कणे दीनाः कम्बुपिंडाः सिताम्बरा
पूजिताः न प्रयच्छन्ति नैते शंखास्तु मन्त्रिणः ।।
कासारतरमासीनाः श्वेतकंचुकधारिणः
मीनध्यानपरा ये च बका नैते तु मन्त्रिणः ।।
स्थिता सिंहासने दृप्ता, मत्तमातंगमर्दकाः
हता निर्वाचने दीना, जम्बूका इव मन्त्रिणः ।।
स्मरन्तो दिवसान् या तान्, मानमुद्रासमन्वितान्,
केदारकर्दमक्लिन्ना, परास्ता पूर्वमन्त्रिणः ।।

- श्रीरामदवे, जोधपुरम्

गीर्वाणवाणी

या भारतेऽस्मिन् विविधस्वरूपा, गिरां प्रसिद्धा खलु जन्मदात्री ।
धात्रीव ताः सम्परिपोषयन्ती, गीर्वाणवाणी समुपासनीया ।।
एकात्मकं राष्ट्रमिदं पुराणं, भाषाविभेदेन विभिन्नकल्पम् ।
ययैकता तस्य समाहृताऽसौ, गीर्वाणवाणी समुपासनीया ।।
प्रदेशभाषापरिपोषणार्थं, सत्संस्कृतेः सम्परिरक्षणार्थम् ।
राष्ट्रप्रतिष्ठाप्रविवर्धनार्थं, गीर्वाणवाणी समुपासनीया ।।

—श्रीधरभास्करवर्णेकर

2

साहित्यसौहित्यतरङ्गिणीव, सद्भावरम्या वरर्वाणनीव ।
विद्वत्सुमुक्ताऽऽभरणाञ्चितेव गीर्वाणवाणी सततं प्रणम्या ।।
मनोज्ञभावा सुभगस्वराञ्चिता सुवर्णविन्यासशुभैः पदैरिता ।
सचेतसाञ्चित्तगता रसान्विता गीर्वाणवाणी रमणीव रम्या ।।
कारुण्यवात्सल्यमयेऽतिरम्ये सुकाश्यपान्तः करणप्रयागे ।
लोकोपदेशामृतसेकदिव्या शकुन्तला यत्र पवित्रकीर्तिः ।।
प्रासूतपुत्रं परमं पवित्रं सिंहातिशक्ति भरतेतिसंज्ञम् ।
ख्यातं रतं भाः सु च भारतन्तत् गीर्वाणवाणी जयतात् सदैव ।।
सीतारामस्यो विभातिमुकुरो दाम्पत्यकान्तियुतः
वात्सल्याम्बुधिमेष यत्र भरतश्चन्द्रोऽपि सम्पूरयन् ।
सद्भक्त्याद्दढमूलितो हनुमता दास्यध्वजो रोपितः ।
मैत्रीदीपशिखा शुभाप्रभुपदस्नेहा ससुग्रीवका ।।
श्रीमत्कृष्णमुखारविन्दभणितिर्गीता महाभारते ।
कर्मण्येव निजाधिकार इति भोः शिक्षां ददाना सदा ।
इत्थं विश्वजनीनभावभरिता पाश्चात्त्यहृद्बर्हिणः
नित्यं नर्तयतीह या विजयताम् गीर्वाणवाणी सदा ।।
यातो दीपशिखां यदीयसुषमापूरः शुभस्नेहवान्
यद्भावा हि सदर्थगौरवमये तल्पे सुखं शेरते ।
यत्काञ्चीगुण शब्दरत्ननिचितो घण्टां शुभांवादयेत्
सेयं देवगृहस्थलीव जयताद् गीर्वाणवाणी सदा ।

—लक्ष्मीनारायणग्रासोपा, जोधपुर

3

रक्षाऽस्मद्गौरवस्य गुणगणकलिनी भासिनी भारतस्य,
सन्दर्भः सत्कृतीनां नवमधुफलिनी पालिनी संस्कृतीनाम् ।
नानाग्रन्थोच्चगुम्फैः कविवररचितैः शालिनी भूतलेऽस्मिन्,
शीघ्रं वै राष्ट्रवाणी कवि भुवि सुतरामस्तु गीर्वाणवाणी ।।

—पं० गुलाबचन्द्रः, जयपुरम्

4

नरगिरां जननी कल्याणी । जयति जय गीर्वाणवाणी ।
सेविता दिव्यसुफलदात्री । जीवने सुपथो निर्मात्री ।
यया सृष्टा संस्कृतिसरणिः । ज्ञानवह्नेस्तु कृते अरणिः ।
निजनिजचेतसि चाद्य हे, विबुधजनाः ! कलयन्तु ।
सर्वैः सेव्यां भारते संस्कृतमेव विदन्तु ।
अविद्याहन्त्री शर्वाणी । जयति जय गीर्वाणवाणी ।।

--रामकुमारदाधीचः, जयपुरम्

5

यस्यां वेदोपदेशः सकलहितकरो याति बोधप्रदीपः,
यस्याञ्चारित्र्यशिक्षा बहुविनययुता सर्वराष्ट्रप्रधाना ।
ऐक्यं पुंसामजस्रं प्रमुदति सकलान् देशरक्षां विधातुं,
भाषाणां यास्ति माता जगति विजयतां सा हि गीर्वाणवाणी

—मोहनलाल पाण्डेयः, अजमेरम्

6

अनुपममतिहृद्यं, कालिदासस्य काव्यम्,
ललितपदसुगुच्छं, दण्डिनो गद्यकाव्यम् ।
अति विलसति यस्यां, भारवेरर्थवाणी,
जयतु जयतु सैषा, वन्द्यगीर्वाणवाणी ।। 1 ।।
ऋषिमुनिजनसिद्धाः, सुस्तना यत्र वेदाः,
कलिमलतरिभूतं, यत्पयोज्ञानराशिः ।
नियमितगतिबद्धा, यन्मुखं शब्दविद्या,
जयतु जयतु माता धेनु गीर्वाणवाणी ।। 2 ।।
निखिलविदितशास्त्रं साक्षिभूतं प्रमाणम्,
वितरति जनसौख्यं ह्यायुषो ज्योतिषश्च ।
प्रचरतु समलोके पुण्यपीयूषवाणी,
जयतु जयतु देशे वन्द्यगीर्वाणवाणी ।। 3 ।।
चरकमुनिवरोक्तं शास्त्रमत्र प्रमाणम्
जगति यशसि चन्द्रौ, सुश्रुतं वाग्भटञ्च ।
नरपतिनयशिक्षा, यत्र चाणक्यवाणी,
जयतु जयतु सैषा वन्द्यगीर्वाणवाणी ।। 4 ।।
निखिलजनकुटुम्बं मन्त्रमुद्घोषयन्ती,
अपि च सह भुनक्तूद्घोषमुद्घोषयन्ती ।
सपदि तिमिरहन्त्री व्यासपीयूषवाणी,
जयतु जयतु राष्ट्रे पुण्यगीर्वाणवाणी ।। 5 ।।
कपिलमुनिकणादौ, गौतमश्चार्यभट्टः,
विदितवरदपुत्रः पाणिनिश्शब्दशास्त्री ।
सुविदितमति यस्याः नाम विश्वश्रुतानाम्
जयतु जयतु सैषा पुण्यगीर्वाणवाणी ।। 6 ।।

—रामस्वरूपद्योतोलिया, बिलौंची

7

समुच्छ्रयन्ती गगने पताकां ज्ञानस्य धर्म्याभ्युदयप्रदात्रीम् ।
निःस्यन्दयित्री कवितामृतस्य गीर्वाणवाणी जयताज्जगत्याम् ।।

—सत्यनारायणः, अजयमेरुः

8

कालुष्यं विदधन्ती जीवत्यवमानितां ग्लानां वाणी ।
लोकैर्वन्द्या जयतात् विश्वे श्रीगीर्वाणवाणी ।।

—डा० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदः, वृन्दावनम्

मन्दाः वेदाः विबुधवदने शास्त्रचर्चापि दीना.
नैवाधीते जडमतिजनः शब्दशास्त्रं विशालम् ।
लब्धोपाधिश्चरति विबुधो वृत्तये पत्रपाविर्
भृत्याभिक्षु रुदति विबुधं वीक्ष्य गीर्वाणवाणी ।।

—श्रीरामदवे, जोधपुरम्

9

माधुर्यं व्यञ्जयन्ती सपदि निखिलमालिन्यमुन्मूलयन्ती,
तृप्तिं सम्पादयन्ती तृषितमतिमतां ज्ञानमुद्भासयन्ती ।
तत्वं वाण्याः परायाः स्फुटललितपदैः सन्दिशन्ती निकामं,
श्रेयो मार्गं दिशन्ती जयति भुवि चिराद् दिव्यगीर्वाणवाणी ।।

—डा० जगन्नारायण पाण्डेयः, जयपुरम्

10

वर्गाणां वै समधिगमने हेतुभूता चतुर्णाम् ।
काव्यश्रेष्ठैः सहृदयमनोहारिणी या मनोज्ञैः ।।
लब्ध्वा यस्यामपि सुवसति शारदा सारदाऽभूत् ।
धन्यैवैका जयति भुवने सा हि 'गीर्वाणवाणी' ।।
बाणोच्छिष्टं जगदिदमिति द्योतयन्ती जनोक्तिम् ।
हृद्यैर्गद्यैर्गुणगणयुतै र्भावुकावर्जिका या ।
बाणायन्ते रुचिररचनां चातुरीबद्धशब्दाः .
धन्या श्लाघ्या कविकुलवरैः साहि 'गीर्वाणवाणी ।।

—पं० राधाकृष्ण शास्त्री, जयपुरम्

बोधैः प्रपूर्णा सरसा मनोज्ञा,
शुद्धा समृद्धा च परिष्कृतेयम् ।
विशुद्धविज्ञाननिधानयुक्ता,
गीवार्णवाणी मधुरा सुधन्या ।। 1 ।।
प्राञ्जल्यपूर्णा परिपक्वबोधा,
शोधैस्समापूरितशब्ददेहा ।
बुधैस्स्तुतेयं खलु जाह्नवीव,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 2 ।।
वैचित्र्यभावातिपवित्रभाषा,
भूषातिहर्षात्मकतां बिभर्ति ।
वेदैः पुराणैः परितः प्रपन्ना,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 3 ।।
वाल्मीकिरामायणरत्नशीला,
लालित्यलीलालसिता सदैव ।
श्रीरामवार्तापरिभूषितेयम्,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 4 ।।
व्यासस्य हासेन विभाति शुभ्रा,
लालित्यपूर्णा कविदण्डिना च ।
श्रीकालिदासोपमयातिरम्या,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 5 ।।
गम्भीरशब्दार्थविधायकोऽभूत्,
श्रीभारविः काव्यकलाकलानिधिः ।
तद्भान्विता सम्प्रति भाति भारती,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 6 ।।
वेदार्थपाथोनिधिमन्थनोत्थं,
गीतामृतं लोकहितङ्करं तत् ।
गूढार्थशक्त्या गरिमाम्बुराशिः,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 7 ।।
गद्यात्मके काव्यकलाप्रकारे,
बाणस्य वाणी प्रथिताऽत्रलोके ।
कादम्बरी भावविभावसिक्ता,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 8 ।।
सदैव चैषा परिशीलनीया,
भूत्यात्मशक्त्या परिसेवनीया ।
धन्या सुमान्यामृतवर्षिणीयम्,
गीर्वाणवाणी मधुरा सुधन्या ।। 9 ।।

— डॉ० नन्दकिशोरगौतमः, जोधपुरम्

राष्ट्रहिताय भूयात्

जाताः वयं भारतभूमिभागे
नानासरिन्निर्झरनिर्मलाम्बुः ।
पञ्चाम्बुदेशे प्रवहन्ति नद्यः,
तासां जलं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।
विन्ध्याचलो देवगिरिर्सुमेरुः,
दिव्यौषधिर्युक्तनगाधिराजः ।
रत्नान्यमूल्यानि च धारयन्ति,
द्रव्यं हि तद्राष्ट्रहिताय भूयात् ।।
विद्वज्जनाः वेदविशारदाश्च,
साहित्यसंगीतकलानिधानाः ।
यच्छन्तु सर्वे स्वकलां जनेभ्यः,
ज्ञानञ्च तद्राष्ट्रहिताय भूयात् ।।
निष्पक्षधर्मे खलु भारतेऽस्मिन्,
सर्वे जनाः भारतभूमिपुत्राः ।
न कोऽपि सिक्खो न च मुस्लिमोऽस्ति,
एषां बलं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।
भाषासु मुख्या मधुरा च वाणी,
गीर्वाणगीः लौकिकवैदिकी च ।
साहित्यसर्वोत्तमसंयुता या
भाषा हि सा राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—सत्यनारायणशास्त्री, सीकरम्

2

विद्योतमाना श्रुतिमन्त्रदीप्त्या
विराजमानाऽखिलशास्त्रशक्त्या ।
गीर्वाणवाणी समुपास्यमाना
निश्चप्रचं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।
स्वधर्मकर्मैकपरायणानां
विद्याकलोपासनसुव्रतानाम् ।
स्वराष्ट्रसेवार्पितजीवनानाँ
सम्मेलनं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—श्रीधरभास्करवर्णेकरः

3

संस्कृतज्ञाः सुधियोऽत्रकर्मणः समुत्सहन्ते जनसेवनाय ।
आयोजितं जयपुरपुण्यभूमौ सम्मेलनं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—राजकुमारदाधीचः, जयपुरम्

4

उद्योगवृद्धिः समता समाना, निष्पक्षमैत्री परराष्ट्रबद्धा ।
शान्ति प्रशिष्टिः समुदारभावः, सर्वञ्च नो राष्ट्रहितायभूयात् ।।

—मोहनलालपाण्डेयः, अजमेरम्

5

विहाय सर्वान्मितभेदवादां-
स्तथा प्रयासोऽखिलभारतीयैः ।
सदाविधेयोऽस्ति सुरक्षितायै-
ऽप्यखण्डता राष्ट्रहिताय भूयात् ।।
सम्यङ् निरीक्ष्यैव नियोजिताया
न्याय्याऽपरा श्लाघ्यतमाऽतिनव्या ।
प्रशासकाः ! सम्प्रति भारतेऽस्मिन्
सा योजना राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—सत्यनारायणः, अजयमेरुः

6

ध्यानं भवेद्देशपरायणानां
ज्ञानं भवेत् भारतसंस्कृतेश्च ।
दानं भवेत् दीनजनेषु नूनं
मानं सदा राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—डा० वासुदेवकृष्णचतुर्वेदः, वृन्दावनम्

7

समाप्तसर्वं प्रतिपक्षनक्रं सुसंस्कृतं सद्विदुषामवत्रम् ।
राजीवगान्धीनृपनीतिचक्रं प्रवर्तितं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—पं० गुलाबचन्द्रः, जयपुरम्

8

मतिर्नवोन्मेषवती बुधानां
क्रतिः क्रियाकौशलतत्पराणाम् ।
भूतिर्जनानां हितसाधकानां
गतिः सतां राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—श्रीरामदवे, जोधपुरम्

9

मतिर्विदां कार्यगतिश्च यूनां
वैज्ञानिकानां प्रगतिर्नवीना ।
कवित्वशक्तिश्च कवीश्वराणां
निरन्तरं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—डा० जगन्नारायणपाण्डेयः, जयपुरम्

10

साहित्यसौरभ्यसमादृतानां
सद्भावसौन्दर्यसुभावितानाम् ।
वैदुष्यप्रागल्भ्यप्रभान्वितानां–
सम्मेलनं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—नटवरशास्त्री, लक्ष्मणगढम्

11

मनोः प्रसूतेरदिते सुताना–
माचारशास्त्रे च कृतश्रमाणाम् ।
गीर्वाणवाणीसमुपासकानां
सम्मेलनं राष्ट्रहिताय भूयात् ।।

—उमाकान्तशुक्लः मुजफ्फरनगरम्

राजताम्

गीर्वाणवाणी राजताम् ।
नादविन्दुसमुद्भवेयं परावागनपायिनी ।
सूक्ष्मरूपधरा नित्या सर्वपालनहारिणी ।
अनादिनिधना शक्तिः कारणं जगतः स्थितौ ।
ऋचां यजुषां साम्नाञ्च मूलभूता स्वामिनी ।।
गीर्वाणवाणी राजताम् ।
प्रणवः सर्ववेदेषु सारभूताधीश्वरी ।
सर्वमंगलसंयुक्ता श्वेतपद्मविहारिणी ।।
कमलकोमलकान्तवर्णा ज्ञानपादपरोहिणी ।
माननीया भक्तविदुषां अक्षवीणाधारिणी ।
गीर्वाणवाणी राजताम् ।
भाष्यमाणा या हि भाषा सर्वतः परिवर्तते ।
देववाणीमूलरूपा सा तथैव विराजते ।
कालिदासभासवाणहर्ष काव्यमृणालिनी ।
संस्कृतं हि विराजतेऽद्य भारते भुवि भारती ।
गीर्वाणवाणी राजताम् ।
मानवश्च मनोरपत्यं तेऽपि भारतभूमिजाताः ।
सत्यशीलाहिं सतायाः शिक्षकाः स्युरिति कामये ।
संस्कृते संस्कारकर्त्री भारते भुव्येकदेशे ।
विविधजातिसुधर्मयुक्ता शृङ्खलैकविधायिनी ।
गीर्वाणवाणी राजताम् ।

—कन्हैयालाल शर्मा, जयपुरम्

2

सुखं सुशान्तिः समतादयो गुणाः
स्थिताश्च यस्यां जगतां हि संस्कृतिः
शिष्टाः जनाः सन्ति यया तु भाषया
गिराऽमराणां भुवि सा विराजताम् ।।
अहिंसकस्य मे मनस्यचौर्यमस्तु सन्ततम् ।
कलङ्कपङ्कशून्यता विभातु कायिकी सदा ।।
अरत्नरत्नराशिषूपयातु साम्यभावना ।
जितेन्द्रियत्वमस्तु वा ऋतन्तु वाचि राजताम् ।।
जन्माङ्गे यस्य लग्नेशो लाभकेन्द्रत्रिकोणगः ।
शुभेक्षितोऽथ संयुक्तः सोऽधिगच्छति राजताम् ।।
भाग्याधिपस्तु लाभेस्याल्लाभेशो भाग्यसंस्थितः ।
कर्मस्थो यस्य छायाजो नूनं प्राप्नोति राजताम् ।।

—रतनलालशर्मा, मनोहरपुरम्

5

राष्ट्राणां समितौ प्रशान्तिपदवीप्रस्थापनाघोषकः
निर्भीको युवकः सुनीतिनिपुणो देशे विदेशे महान् ।
देशोद्धारपरायणस्वजननीसंयोजनापोषकः
राजीवः सचिवाग्रगण्ययुवको मन्त्री चिरं राजताम् ॥

—मोहनलालपाण्डेयः, अजयमेरुः

6

नानादिग्भ्य उपागतैर्बुधवरैः साहित्यसेवापरै—
र्नानाकाव्यविधासु गीतिषु चिकीर्षद्वस्तुकाव्यं नवम् ।
मञ्चाद्रौ निजकाव्यपाठनिरतैः काव्यामृतं संस्रवद्
वर्षद्भिर्जलदायमानकविभिः सम्मेलनं राजताम् ॥

सत्यनारायणःशास्त्री, अजयमेरुः

7

संस्कृतं राजतां संस्कृतिः राजतां
संस्कृता राजतां संस्कृता राजताम् ।
भारतं राजतां भारती राजतां
भारतो राजतां भारता राजताम् ॥

—डॉ० सुधाकराचार्यः मेरठ

8

शिरःसु सर्वभाषाणां भावाभिव्यक्तिसक्षमम् ।
ज्ञानविज्ञानसम्पन्नं संस्कृतं वै विराजताम् ।
नवाकाशे सुराष्ट्राणां योजनोदिततारके
कलालापकलायुक्तः संस्कृतेन्दुश्च राजतास् ।

—पं० गुलाबचन्द्रः, जयपुरम्

9

भावुकैर्भाविता मञ्जुला माधुरी
भावगांभीर्यगाढा सुरम्या रसै
श्चिन्तकै श्चिन्तिता वन्दिता साधकैः
पूजिता सूरिभिः भारती राजताम् ॥
कृष्णरामादिभिः कालिदासादिभिः
सेविता ह्यर्चिता भूषिता वर्धिता
संस्कृतिः संस्कृता भारती भासताम्
शोभतां वर्द्धतामेधतां राजतां ॥

—नटवरजोशी लक्ष्मणगढ़

10

वेदविद्याविकासाय सच्चेष्टतां
शास्त्रचर्चाप्रसंगेषु संधीयताम् ।
भातृभावं च सर्वत्र संघुष्यतां
संस्कृतं सर्वलोकेषु संराजताम् ॥

भारतीसंस्कृतेर्घोषमाचर्यतां
सत्कवीनां गिरोनित्यमासेव्यताम् ।
राष्ट्रभक्तेः स्वरा नित्यमाधार्यतां
संस्कृतं सर्वलोकेषु संराजताम् ।
वैरभावंपरित्यज्य आगम्यतां
भारतीया वयं नैव विस्मार्यताम्
भेदभावात्मिकावृत्तिरावर्ज्यतां
संस्कृतं सर्वलोकेषु संराजताम् ॥

विश्ववन्द्या गिरो नित्यमासेव्यताम्
राजनीतावपि ध्यानमाचर्यताम् ।
सद्गुरूणां पदाजेषु धीर्भ्राजताम्
संस्कृतं सर्वलोकेषु संराजताम् ॥

देशसेवापरावृत्तिमाधार्यतां
मानवानां विकासाय संयुज्यताम् ।
देशभक्तांश्च चित्रे सदा स्मर्यतां
संस्कृतं सर्वकालेऽपि संराजताम् ॥

धर्मराजो दधीचिश्च रामः शिविः
रन्तिदेवो हरिश्चन्द्रकर्णादयः ॥

वृत्तमेषां स्वदेशे सदा भ्राजतां
संस्कृतं सर्वकालेऽपि संराजताम् ॥
श्रीवशिष्ठो मुनिर्याज्ञवल्क्यो भृगुः
देवलो धौम्यदक्षो मुनिर्जैमिनिः ।
व्यासदेवादिदानं च सम्पूज्यतां
संस्कृतं सर्वकालेऽपि संराजताम् ॥

उत्तरो मध्यदेशोऽथकर्णाटकः
बंगदेशो विहारोऽथ पञ्चायकम् ।
कैरलस्तामिलश्चान्ध्रराजद्वयः
केन्द्रनीतिः सदैतेषु संराजताम् ॥
बापुगांधीमहात्मा हृदि चिन्त्यताम्
नेहरुर्जवाहरश्चाभिसम्पूज्यताम् ।
इन्दिरा स्वर्गतापि सदा स्मर्यताम्,
नीतिरेषा सदा चात्र संराजताम् ॥

—डॉ० कृष्णकान्तचतुर्वेदः, वृन्दावनम्

11

अविद्याब्धिनिमग्नानां तारणे हेतुतां गताः ।
नौकेव संस्कृताभाषा लोकेऽस्मिन् विराजताम् ।।

—रामकुमारदाधीचः, जयपुरम्

12

राजतां राजतां संस्कृतं राजताम्
देवाङ्गनानां दिविस्थितानां लीलास्थलं राजताम् ।।
यस्य माधुरी पेया कमलासनमागेया,
कविवरैश्च काव्यमग्नैः लोकतन्त्राधिकारलग्नैः
रक्ष्या सदा वर्तताम्, राजतां राजताम् ।।
यद्गीर्वाणवाणी यत्रैव वेदवाणी
यस्य विलासः कालिदासः यस्य च हासः सुकविभासः
तस्य रजो वर्धताम् राजतां राजताम् ।।
राष्ट्रहिताय भूयात्, विश्वहिताय भूयात्
राष्ट्रभाषा विश्वभाषा संस्कृतमेतत्लोकभाषा
भूयो भुवि भूयताम् – राजताम् ।।
वाल्मीकिव्यासमाघकालिदासैः
भारविभट्टिबाणभट्टकविविभूतिर्भवभूतिभासैः
तस्य यशो नीयताम्, राजतां राजताम् ।।

—डॉ० सुभाषवेदालङ्कारः, जयपुरम्

13

यस्याः गौरवमयी गाथा भासतेऽद्यापि भारते ।
राजस्थानधरित्रीयं सर्वदेवात्र "राजताम्" ।।1।।
बालुकानिचयैः शुष्कां सिञ्चन्ती वारिणा धराम् ।
इन्दिराख्या महाकुल्या राजस्थानेऽत्र राजताम् ।।2।।
महनीययशाः श्रीमान् नृपनीत्यां विचक्षणः ।
मुख्यमन्त्री महाभागो राजस्थानस्य"राजताम्" ।।3।।
हीरकः द्युतिमान् धीरो मतिमान्नयकोविदः ।
देवपुराभिधः श्रीमान् हीरालालोऽत्र 'राजताम्' ।।4।।
आर्यावर्तस्यमेधावीप्रधानमन्त्रिणःपदम् ।
अलङ्कुर्वन् समुत्साही राजीवो भुवि 'राजताम्' ।।5।।
हिमगिरिः प्रहरीव यदुत्तरे, यमजलेशदिशोः नदतोऽम्बुधी ।
मघवतो दिशि कामधराऽमलाजगति भारतमय हि राजताम् ।6।

—शंकरलालशास्त्री, फतेहपुरम्

14

प्रवर्धतां देवगवी महीतले
प्रमोदतां विज्ञकुलं निरन्तरम् ।
मनोरमाऽस्मासु रमा सरस्वती
निसर्गकल्याणवती च 'राजताम्' ।।

—डा० जगन्नारायणपाण्डेयः, जयपुरम्

15

लालितोऽहं यया निर्भरं पालितो
यत्पयोभिश्च तृप्ता मदीया तनुः ।
आहिमाद्रेरियं सागरान्तं तता
शाश्वती मे धरा राजतां 'राजताम्' ।।1।।
या न सृष्टा मया या न सृष्टा त्वया
केवलं जीवितुं चाऽत्र सृष्टाः वयम् ।।
खण्डयिष्यन्ति ये वा धरां मामकीं
मत्कृपाणस्तदुत्पाटने "राजताम्" ।।2।।

—गिरिजाप्रसाद'गिरीशः' जयपुरम्

16

यस्याः स्निग्धरसालसालबकुलाशोकालिमुख्यानुगै–
र्निर्भृत्पुण्यपरागकीर्तिनिवहा सम्पूरिताशामुखा ।
रक्तायोगिपलाशिकिंशुकसुमैः (पटैः) जाते वसन्तोत्सवे ।
रोलम्बा ब्रुवते सुवन्दिन इव राजस्थलो 'राजताम्'।।

—पं० राधाकृष्ण शास्त्री, जयपुरम्

अग्रेसरः केसरी

कुशलः कर्मणि कर्मयोगनिरतः साफल्यभाग् जायते
श्रीरायाति स्वयं गृहे सुकृतिनस्त्यक्त्वाऽलसं प्राणिनम् ।
उद्योगं कुरु मित्र विघ्नरहितं भविता ध्रुवं ते पथः
मार्गं तं हरिणास्त्यजन्ति यस्मिन्नग्रेसरः केसरी ।।

—रामकुमारदाधीचः, जयपुरम्

---

1. कामरूप आसाम । 2. दक्षिणपश्चिमदिशोः ।

2

अणुर्महत्कृशःस्थूलं वस्तुजातं तु भूतले
अस्ति मूल्यं हि सर्वेषाममूल्यः कविकेसरी ॥
दैत्यानां वृषपर्व वै दिविषदां विष्णु र्यथा रक्षकः
वापी कूपतडागमेघसरितां सिन्धुर्जलानां पतिः ॥
तारासंघमयंकविद्युदनले सूर्यो यथा भासकः ।
तद्बद्व्यस्तसमस्तजन्तुनिवहेष्वग्रेसरः केसरी ॥

—रतनलालशर्मा, मनोहरपुरम्

3

न्यायारण्यचरः कुतर्ककरिणः कुम्भस्थलोत्पाटकः
आतङ्काजिनयोनिनाशनिपुणः प्रद्विट्पशुत्रासकः ।
पञ्जाबासमदेशदुर्गमपथं शान्त्यङ्घ्रिभिः शोधयन्
राजीवः शुभभारते नयवतामग्रेसरः केसरी ॥

—मोहनलालपाण्डेयः, अजमेरम्

4

अन्ताराष्ट्रियराष्ट्रियारिनिवहेनाऽऽकान्त एषोऽधुना
यायादभ्युदयं कथं कथयतां ? सद्योऽद्य देशो हि नः ।
तावद्राष्ट्रहितं भविष्यति दृढं स्वप्नेऽपि नो कर्हिचित् ॥
यावद् बद्धकटिर्न कश्चन भवेदग्रेसरः केसरी
सुसम्यक् स्वराष्ट्रस्यवृद्धचै समृद्धचै,
प्रगत्यै विकासाय संरक्षणाय ।
मयैकोऽधुना वीरराजीव एव,
नरोऽग्रेसरः केसरीवाऽत्रदृष्टः ॥

—सत्यनारायणः अजयमेरुः

5

लोके सन्ति सहस्रशोऽतिकुशलाः सौख्यान्विताः मानवाः
दारागेहसुतादिभिश्च संहिता भोगेषु सक्ता अपि ।
शूरा नैव मुधैव जन्मभुवने तुच्छाः प्रकुर्वन्ति किं
एकः काननगः सदा विहरति प्राग्रेसरः केसरी ॥

—डा० कृष्णकान्त चतुर्वेदः वृन्दावनम्

6

लोकलीलालालननिपुणो ह्यभिनेता मञ्चने कौशलम् ।
शोकपीड़ालालननिपुणो ह्यथ नेताऽऽश्वासने पौरुषम् ॥
देववाणीभाषानिपुणो ह्यनुवादी सङ्ग्रहे पण्डितः ।
वेदवीणावादननिपुणोकटुवादीसेवनेवञ्चितः ॥
राजभाषाधारणनिपुणो ह्यधिकारी म्लिच्छने पाटवम् ।
राष्ट्रभाषानर्तननिपुणो ह्यधिनाटचं नाटने मार्दवम् ॥
मेघगर्जं गर्जननिपुणो ह्यनुवेलं वेपते सागरः ।
गोपगोपीडम्बननिपुणः प्रतिकूलं बिम्बने नागरः ॥
छागहेलानाटकनिपुणो मकराश्रुप्रसवे नायकः ।
हस्तिनिद्रारम्भणनिपुणो नयनोन्मीलालापमायिकः ॥
गृध्रदृष्टचा दर्शननिपुणो नवनेता वञ्चने केसरी ।
लोकवार्तापालननिपुणो जननेता ऽग्रेसरः केसरी ॥

—डा० सुधाकराचार्यः, मेरठ

7

यः प्रक्षेपपटुः कटुप्रतिभटप्रोद्दामदुःसम्पदाम्
यः स्वोद्देश्ययुते स्वराज्यरचने लग्नः परः प्रीतिमान् ।
यः कुत्राऽपि सुनिर्भयस्य जनता सन्मानितः सर्वदा
धन्यः सः प्रतिभाजुषां सुविदुषामग्रेसरः केसरी ॥

—पं० गुलाबचन्द्रः पाटलेन्दुः, जयपुरम्

8

ये राष्ट्रद्युतिध्वंसका ह्यनुदिनं क्रूरास्तथा दुर्जनाः
खालिस्तानहिताय यत्ननिपुणाः ये शत्रुणां बान्धवाः ।
ये सद्भावविमर्दका खलजनाः ये मातृभूवंचकाः
तेषां नाशनतत्परो विजयतामग्रेसरः केसरी ॥

—नटवरलालजोशी, लक्ष्मणगढ़

9

जम्बूकाः समरे दिशन्ति पदवीं सिंहासने संस्थिताः
नो भीतिर्हरिचर्मणां हि चरतां क्षेत्रे खराणामपि ।
वप्रक्रीडनचापलेन करिणां त्रातुं हतं भारतं
को भूयात् करिगण्डपाटनपटुर्ह्यग्रेसरः केसरी ।।

—श्रीरामदवे, जोधपुरम्

10

दंष्ट्रा दीपशिखोज्वलाः प्रकुपितज्वालाकुलाभाः सटा
उल्कारीतिविडम्बिपुच्छमुदितं विद्युत्पिशङ्गीच्छटा ।
प्रोद्यत्कान्तिकरालमक्षियुगलं चाङ्गारमाचुम्बति
शङ्के वह्निमयः प्रतापमहतामग्रेसरः केसरी ।।

—उमाकान्तशुक्लः, मुजफ्फरनगरम्

11

मान्यो मान्यतमो वदान्यचरितः सन्मार्गबद्धादर-
स्तन्त्रव्याकृतितर्कनीतिनिपुणो वेदान्तपारङ्गतः ।
द्राविडान्वयभूषणो यतिवरो जातोऽत्र वीरेश्वरः
शास्त्रारण्यविहारिणां मतिमतामग्रेसरः केसरी ।।

—डा० जगन्नारायणपाण्डेयः, जयपुरम्

12

किं सुतो मातृहस्तं निकृत्य क्षणाद्
रिक्थरूपेण लोके गृहीतुं क्षमः ।।
तत्कृते मातृ-भूमेः सुरक्षापरः
निर्निमेषः सतर्कोऽस्म्यहं 'केसरी' ।।

—गिरिजाप्रसाद'गिरीशः' जयपुरम्

विलासः

अहर्निशं चारित्रिकह्रासः ।
अण्वायुधनिर्माणविकासः ।
निजधर्मग्रन्थानां हासः ।
चित्ते सततं भोगविलासः ।।
दयसे कथं न देव !
त्वयि सत्यहं निराशः क्वगतः कृपाविलासः
प्रतिज्ञेयं त्वदीया दीनान् नहि जहासि
दुःखार्णवे निमग्नं न त्वं तथापि पासि
खिन्नस्तवैषदासः, क्वगतः कृपाविलासः ।
जानाम्यहं निषिद्धं बोधः परं स व्यर्थः
जानामि नीतिमार्गं गन्तुं न हा ! समर्थः
हा ! हन्त ! कर्मपाशः, क्वगतः कृपाविलासः ।।

—रामकुमारदाधीचः, जयपुरम्

2

कालिकललघुतानां पापपुञ्जैर्युतानाम्
हतविधिसहितानां कामवाताहतानाम् ।
विषमविषयतृष्णाऽऽवर्तगर्तान्तराणाम्
भवतिशरणमेकः कामिनीनां विलासः ।।
रहसिविहितवार्ता तापसंजातक्षोभः
गरलतरलश्वासै र्वह्निना हूयमानः ।
विशिखसमकटाक्षै दूंयमानो जनः स्यात्
सरसिजनयनानां हा विचित्रो विलासः ।।

—रतनलालशर्मा, मनोहरपुरम्

3

दोषज्ञानामशुद्धौ मणिनिचयवतां रत्नशोधे प्रकृष्टे,
भूपानां शत्रुपक्षे नयविनयजुषां न्यायशास्त्रप्रतर्के ।
नेतॄणां राज्यकार्येऽभिनयरुचिमतां दूरदर्शावलोके
लावण्ये सुन्दरीणां तरुणतनुमतां राजते दृग्विलासः ।।

—मोहनलालपाण्डेयः, अजयमेरुः

4

स्वान्तं माद्यन्नभिकसुजनस्याऽत्र वश्यत्वभाजः
शश्वन्नव्यप्रणयरचनापाटवाभ्यर्थितस्य ।
एषा चित्रा स्थितिरुदभवत्साम्प्रतं वनिकाशो
जीयान्निघ्नँश्चटुलचपलाभामिनीभ्रू विलासः ।।
तन्वन्मोदं रसिकहृदये राजमुद्भावयँश्च
भिन्दँस्तापं तमसि च विवृष्वन्प्रकाशं स्वभासा
ज्ञानं यच्छन्नखिलजगते धारयन्धामवामं
जीयाल्लोके सुकविकविताकामिनीवाग्विलासः ।

—सत्यनारायणः, अजयमेरुः

5

लोकेभवन्ति मनुजाः कुशवाश्च वित्ते
तेषामहोऽद्य सततं विदितः प्रहासः ।
मित्र ! क्षणं शृणु वचो रमणीयमेतत्
लोकेनिरापदमहो कवितावितासः ।।

—डॉ० वासुदेवकृष्णचतुर्वेदः, वृन्दावनम्

6

धनस्य मानस्य च यौवनस्य
रूपस्य गर्वस्य च सुन्दरीणाम् ।
व्यर्था इमे सर्वविधाः विलासाः
एको यदि स्यात् कवितावितासः ।।

—पं० गुलाबचन्द्रः, जयपुरम्

7

बुभुक्षाकुलानां पिपासार्दितानां
शिशूनां च यूनामहो रोदनं च ।
सुदुर्भिक्षपीड़ा असह्या च जाता
कथं रे ! कथं तेऽस्ति हर्म्ये विलासः ?।।
यदि नास्ति समाजस्य वेदनाया समाङ्कनम् ।
कवितायां कवेः तत्तु विलासो वचसां वृथा ।।

—नटवरजोशी, लक्ष्मणगढ

8

अयि पिक ! किमुदास्से मौनमालम्बसे किं ?
चलति मलयवाते कामिनीमानभङ्गे ।
शृणु मधुकरमालागीतसौरभ्यसारो
ललितमधुलतानां वर्धतेऽसौ विलासः ।।

—उमाकान्ताशुक्लः, मुजफ्फरनगरम्

माधुरी

वस्तुष्विह खाद्येषु माधुर्यं ते रोचते ।
श्रिता हि या वचनानि सैवमाधुरी माधुरी ।।

—रामकुमारदाधीचः, जयपुरम्

2

द्राक्षायामधुरत्वमेतदपरं भिन्नं सितायास्ततः
माधुर्यं पयसोऽतिभिन्नमपरं मिष्टान्नजातेस्ततः ।
वामाया अधरे परामधुरता भिन्ना सुधायास्ततः
विष्णोर्मे हृदये परैव रमतां श्रीमोहिनो माधुरी ।।

—मोहनलालपाण्डेयः, जययुरम्

3

मुखमरन्दरसश्रुतिकारिणी,
प्रियतमेऽमृतनिर्झरिणी वरा ।
अभिकमानसमोदविधायिनी
विजयतां हि तवाधरमाधुरी ।।

—सत्यनारायणः अजयमेरुः

4

केचिद्दाशरथेर्वदन्त्यनुदिनं सर्वोत्तमा माधुरी
केचिच्छ्रीजनकात्मजैव मधुरा नान्यापरामाधुरी ।
केचिच्छ्रीर्वसुदेवनन्दनसुतस्यैवास्ति सन्माधुरी ।
मच्चित्ते वसति प्रकाममतुला श्रीराधिकामाधुरी ।।

—डा० वासुदेवकृष्णचतुर्वेदः. वृन्दावनम्

5

कमले ! ऽन्यमुखाब्जानां महासंकोचकारिणि !

लोकोत्तरा तवास्येन्दौ दृश्यते रूप-माधुरी ।।

—गुलाबचन्द्रः 'पाटलेन्दुः'

6

घोषयोषाहृदां कृष्णतृष्णाजुषां

प्रेमपुष्टिप्रदा काऽपि जेजीयताम् ।

रासलास्योल्लसद्वेणुपाणेर्हरेः

माधुरी माधुरी माधुरी माधुरी ।।

सौरतश्रान्तकान्तोल्लसद्दोर्लता—

संश्रिताङ्ग्याः नताङ्ग्या अनङ्गोद्भवा ।

चन्द्रिकायां मिथः कापि जेजीयतां

माधुरी माधुरी माधुरी माधुरी ।।

सौरतान्ते निशान्ते पुनः कामिनं

कामायनं दृशा किञ्चिदुन्मीलया ।

वारयन्त्याः मिथः काऽपि जेजीयतां

माधुरी माधुरी माधुरी माधुरो ।।

—गो० हरिरायः 'महाकविः'

7

या कृष्णे मधुस्नेहनिर्भरभरी सा नागरी नागरी

येन कृत्स्नं व्याप्यते भवसुखं सा चातुरी चातुरी ।

या कृष्णार्चनचन्द्रिकामधुभवा सा माधवी माधवी

या कृष्णा मधुकृष्णचन्द्रमधुरा सा माधुरी माधुरी ।।

—नटवरजोशी, लक्ष्मणगढ़

8

आनीतश्चषकः करे जितमधुस्यन्दारविन्दप्रभे

तत्र प्रोच्छलदच्छसीधुललितामोदोद्गमः प्रोज्ज्वलः ।

तस्मिन् वीक्षितवैदुषीमदभरो बाले ! प्रगल्भायते

दिष्टचा प्रौढिशतीकरम्बिततनूः कादम्बरी माधुरी ।।

—उमाकान्तशुक्लः, मुजफ्फरनगरम्

9

नो वसन्ते न कान्ताधरे माधुरी

नाऽमृते नाऽपि चेन्दौ जगज्जित्वरी ।।

प्राणपुष्पैः स्वकैरञ्जलिं बध्नतो

भूमिपुत्रस्य सन्माधुरी 'माधुरी' ।

—गिरिजाप्रसाद 'गिरीशः' जयपुरम्

10

दृष्टिर्या विदुषां मनोविजयिनी सा जित्वरी जित्वरी ।

या ते चारुनितम्बमन्थरगतिः सा गत्वरी गत्वरी ।।

या सुस्मेरविलासकार्मणकरी सा चातुरी चातुरी ।

कान्ते ! त्वल्ललिताधरामृतभरी सा माधुरी 'माधुरी' ।।

पुत्रं या हनुमन्निभं प्रजनयेत् सा वानरी वानरी ।

या विद्याधनधर्मकीर्तिकलिता सा चातुरी चातुरी ।।

या सन्नीतिविवेकतो विजयिता सा जित्वरी जित्वरी ।

या नारायणनाममोदमधुरा सा माधुरी 'माधुरी' ।।

—राधाकृष्णशास्त्री, जयपुरम्

अखिलभारतीयसंस्कृतकविसम्मेलनम्

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सम्पन्न हुए चतुर्दश-महाधिवेशन के अवसर पर एक अखिल भारतीय संस्कृत कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें राजस्थान के अतिरिक्त सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बरहन, मथुरा, लखनऊ, मेरठ, बनारस आदि सुदूरस्थ स्थानों से आये हुए कवियों ने भी भाग लिया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता बनारस के डॉ० शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी ने तथा संयोजन श्री कलानाथ शास्त्री, जयपुर ने किया।

कवियों के पदलालित्यपूर्ण विभिन्न सुमधुर छन्दों में निबद्ध भावमयी रचनाओं ने श्रोताओं को भावविभोर किया। पठित सरस काव्य आपके रसास्वादन के लिए यहाँ प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

● उमाकान्त शुक्लः, मुजफ्फरनगरम्

मुक्तक-मालिनी

लिखति महिषनीलां विद्युदम्भोदमालां
भवति गमनवेला मानसं प्रत्युदग्रा।
इति रसिकविहङ्गा गीतिमन्त्यां रसार्द्रां
शृणुत जिगमिषोर्मे राजहंसस्य भव्याम् ॥ 1 ॥

यदि भवसि कदाचित् खेदरेखावरुद्धं
मम हृदय ! तदानीं भावसिन्धोः समुत्थम्।
कृतवचननिचोलं नर्तितार्थप्रसादं
विधुतविधुरभावं गीतसीधुं पिब त्वम् ॥ 2 ॥

निबिडविकटबन्धा कालरात्रिर्विशीर्णा
प्रकटितनवरागं जृम्भते सुप्रभातम्।
हस कमल ! तर त्वं हंस ! गुञ्ज द्विरेफ !
प्रमदवनविलासो वर्धतामेघतां श्रीः ॥ 3 ॥

मुखरयति बलाकां दुग्धधारां पयोदे
चपलयति च केकां केकिनि क्लिन्नचित्ते।
अयि किमिति मुधा त्वं पल्वल ! क्षीणकूलं
भवसि ननु भवित्री कापि ऋद्धिस्तवाढ्या ॥ 4 ॥

त्वयि खगकुलशोभा मानधुर्यस्त्वमेव
क्षणमहमिह मौनं चातक ! त्वां प्रयाचे।
वितरति तरलाभान् सम्प्रति स्वातिबिन्दून्
पनसपटलनीला कापि कादम्बिनी ते ॥ 5 ॥

विकसति कुसुमाग्रे पल्लवे सानुरागे
विलसति मधुभावे सषपे सौरभाढये।
परिचितमधुकोशाः सम्पराप्ता मिलिन्दा
भरत भरत मोदं बिन्दवो माकरन्दाः ॥ 6 ॥

इह वसति पुरा यो मानसे राजहंस–
स्त्यजति कमपि खेदात्तं प्रसिद्धं विवेकम्।
इति मुदितहृदस्ते केऽपि कारण्डवाद्याः
स्फुरितनिजशरीरास्तत्तटे सम्पतन्ति ॥ 7 ॥

तदवधि वनमेतद् गाहतां स्वागतं ते
विचर हरिण ! सम्यग् याप्यतां कोऽपि कालः।
यदवधि कुटिलोऽसावात्तचाप. कठोरो
मृगयुरशनिपातं बाणलीलां न कुर्यात् ॥ 8 ॥

अयि पिक ! किमुदास्से मौनमालम्बसे किं
चलति मलयवाते कामिनीमानभङ्गे।
शृणु मधुकरमालागीतसौरभ्यसारो
ललितमधुलतानां वर्धतेऽसौ विलास ॥ 9 ॥

वाणी-वन्दना

लसन्त्यन्या वाचो भुवि मधुरवर्णाः पुनरहो
न तास्त्वच्छायायाः कथमपि कलां बिभ्रति समाः ।
गिरां मातर्मातर्निखिलजगतामन्तरुदितं
तुषारप्रोद्भासं प्रसरति यशस्ते सुविपुलम् ।।1।।

त्वमेवाचारान्नो मुदितमनसा शिक्षयसि वै
सुरम्यं पन्थानं प्रथयसि जनानां प्रतिदिशम् ।
घनध्वान्तं छित्वा कलयसि कलानां कलकलां
निधानं सौख्यानां त्वमसि नहि संशीतिरधुना ।।2।।

नवीने निर्माणे प्रभवसि रसोद्रेकमहिते
समग्रं पासित्वं जगदिदमये सत्त्वकलिते ।
क्षणात् पापं हंसि प्रगुणगुणसार्थैकविभवे
त्रयाणां देवानां त्वमसि कमनीयैकरचना ।।3।।

कदाचिद् वेदानां गहनगरिमाणं गणयसे
कदाचित् काव्यानां कलितकलनामाकलयसि ।
कदाचिच्छास्त्राणां प्रसृतपरिपाटीं प्रथयसे
जनानामानन्दं जनयसि जगत्यामविरलम् ।।4।।

विपाकः पुण्यानामगणितगुणानां समुदयो
निधानं सौख्यानां शमनिचयकन्दाङ्कुरमही ।
त्वमेका कल्याणि प्रसिततरभावैः कृतधियां
समग्रं सौभाग्यं स्नपयसि जनानामयि शुभे ।।5।।

त्वया मेधा वन्द्या भजति च सुधा सौष्ठवपदं
त्वया प्रीतिः फुल्ला फलति फलिनामार्जवलता ।
त्वया सङ्गीतानां सुरसरसधाराः पुलकिता–
स्त्रिलोक्यां का वाणी भजति तव सौभाग्यविभवम् ।।6।।

न याचे त्वां मातर्द्रविणमनघं ध्वंसरहितं
न वा त्वां संयाचे यश इह मनागिन्दुधवलम् ।
मम त्वेषा याच्ञा यदयि निखिले भूमिवलये
प्रसादप्राचुर्यं वितर तरसा सम्प्रति मुदा ।।7।।

नमस्ते मेधायै सहृदयसुधायै मम नमो
नमस्ते सौम्यायै बहुलगुणगुर्व्यै मम नमः ।
नमस्ते श्रेयस्यै सकलजनसिद्धयै मम नमो
नमस्ते वाचे संस्कृतसमभिधायै मम नमः ।।8।।

● डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, मथुरा

आशंसनम्

1

मानुष जन्म यदा भवतात्
निवसामि तदा गोकुलवर ग्रामे
भवेयं पशुर्नहि मेऽस्तिवशो
विचरामि सुनन्दगवामनुवामे ।
प्रस्तरखण्डस्तु तस्याऽचलस्य
सुछत्रीकृतो हरिणाऽरि विरामे
सत्त्वेखगे निवसामि सदाऽहं
कालिन्दी कूले कदम्ब ललामे ।

2

योगिनीनां भोगिनीनां विकलवियोगिनीनां
जगति नो जागरूका जातयो भविष्यन्ति
भणति रत्नाकरो न सुखदा दिवसा चाद्य
तर्हि दुःख द्वन्द्व रात्रयोऽपि नाशमेष्यन्ति
हित्वा प्रेमज्ञानेन सुक्षेमस्योपदेशमते
भित्तिर्यदा नास्तिक्वपटलानि भविष्यन्ति
धातमेव भूयः स्यात् कृष्ण कृपयैव अहो
उद्धव ! चर्चायै चात्र वार्ताः शेषमेष्यन्ति ।।

भारतवन्दना

अस्ति चेदीश्वरः किं स्वरूपात्मकः
स्वर्गतो भूगतो वाऽथ सर्वत्रगः
इत्थमुत्कृष्टचिन्तापरैश्चर्चितं
भा रतं भारतं नौमि भूति प्रदम् ।।
यस्य वृन्दावनं कण्ठहार - प्रभं
शैलगोवर्धनो मौक्तिकं हारकम्
माथुरं मण्डलं वैजयन्ती निभं
भारतं भारतं नौमि भूतिप्रदम् ।।
यस्य भाभा ललाटस्थितं चन्दनं
तैलसंशोधकं यस्य सद् वन्दनम्
फुल्लपद्म प्रभैः सेतुभिः पूरितं
भा-रतं भारतं नौमि भूतिप्रदम् ।।

विकासवादोऽथ विनाशवादः

एकतो विकासराज्यमन्तिके,
हसति वै विनाशकोऽस्य मस्तके शान्तिरस्तु ३

विकास : 1

तैलमद्य लभ्यतेऽत्रवारिधौ-दूरदेशोदूरभाषसन्निधौ
चित्रमिदं चित्रमयं दर्शनं-चित्रेऽपि चारुचित्तगर्जनं
किमपि नास्ति जगति चाद्य दूरकेऽऽऽ, एकतो० ।।

विनाश : 2

तिष्ठ रे विकास! पश्य मे बलं, अग्निसात् क्रियते तत्केवलम्
दूरभाषकं हि मे सहायकं, क्षणेनैव वायुयान वृन्दकं
संकेत क्षणे याति दूरके—एकतो विकास० ।।

विकास :

रजतमयीचन्द्र भूमि कल्पना, प्रत्यक्षी क्रियते नैव जल्पना
मानवं विनापि वायुयानकं-वृष्टेरप्यभावेमेद्ययानकं
वीक्ष्यलगतिदैवमद्य दूरके—एकतो० ।।

विनाश :

चन्द्रलोक दूषणं हि भूषणं –वृष्टि वातवान्तकं हि पूषणं
अणुप्रसाद कर्मणापि यानकं-भीतिकरं चिन्तायुतं घातकं
भविता रे ! तिष्ठ यमस्यान्तिके—एकतो० ।।

विकास :

कूपतो जलस्य नि.सारणं–बालानां कष्टं निष्कारणम्
नैवयतो गेहे जलदर्शनं—विद्युताऽत्र तमसः प्रपलायनम्
पेषणीगता च पुरातत्त्वके—एकतो० ।।

विनाश :

विस्मृतारे ! कुतुब शिखरजाव्यथा-विद्युताद्दतायथानराःवृथा
यान्ति नराः प्रतिदिनं यमालये-वास्युः भूगर्भे वा यंत्रालये
स्वस्थता गता ननु विश्रामके—एकतो० ।।

विकास :

अद्भुतंहि पश्यचित्रदर्शनं - चित्रपटालये सिन्धुगर्जनं
हिमगिरेर्हि भव्यछटारक्षणं-क्षणमध्ये कुतुबताजदर्शनम्
विश्वभ्रमणमद्य बिना द्रव्यके—एकतो० ।।

विनाश :

चित्रपटालये कामवन्दनं—दृश्यते कुचादिकस्य मर्दनं
ब्रह्मचर्यं संस्कृतेश्च नाशनं—गर्भधारणं च तस्य पातनं
वीक्ष्य साधवोऽपि यान्तिगर्तके—एकतो० ।।

विकास :

यंत्र युगस्याद्यनवा निर्मिति-भित्ति बिना सेतूनां च संस्थितिः
टैंकराडारमयी संस्कृतिः—नाना सुविधामयी परिस्थितिः ।
निर्धनता याति द्रुतं दूरके—एकतो विकास राज्यमन्तिके
हसतिवैविनाशकोऽस्य मस्तके-
शान्तिरस्तु शान्तिरस्तु शान्तिरस्तु ।।

भारतम्

काश्मीरो भालदेशो मणिपुर मुकुटो राष्ट्र पंजाब बाहू
आसामो भू प्रदेशो हिमगिरि विदितो यस्य चूड़ा किरीटः
दिल्ली कर्णाटकाख्यौ नयन युगलकं मध्य देशोऽस्ति वक्षः
गोआ नीकोवराख्यौ चरण सरसिजे केरलो यद्विहारः
प्राणायस्योत्तराख्यो विमल नर नुतो राम कृष्ण प्रसादात्
सौराष्ट्रो नासिका वै तमिलमुहरियाणान्ध्रकाणोन्द्रियाणि
इत्थं राजाङ्ग रूपं जयति हि सततं भारतं राष्ट्रमग्रयम्

वृक्षारोपणम्

उदुम्बरमयः शिवः सुब्रह्मा वटवृक्षमयो
विष्णुमयः पिप्पलः सुशास्त्र तत्त्वं ज्ञायताम्
पाद्यधूपदीपकैश्चन्दन नैवेद्यादिभिः
पूजयित्वा वृक्षदेवं मनोऽभीष्टमाप्यताम्
गृहे गृहे चत्वरे सुहट्टे राजमार्गे तटे
उप्त्वा पादपं शुभं गोलोकपदं रक्षताम्
श्रुत्वा शास्त्रतत्त्वं नूनं कृत्वा वृक्षारोपणं च
सर्वं देवमयो वृक्षो दिवानिशं जप्यताम्

● डॉ० कृष्णकान्त शुक्लः, लखनऊ

मुक्ता-करिणकाः

वदनं प्रसादमधुरं, हृदयं तरलं, वचश्च रमणीयम् ।
सम्भाषणञ्च हृद्यं येषां तान्नित्यशो वन्दे ।। 1 ।।

धन्या भारतमाता यत्क्रोडे तद्धि निर्गुणं ब्रह्म ।
सगुणं रूपं बिभ्रत् खेलति बहुशो भृशं रम्यम् ।। 2 ।।

अधरीकृतमाध्वीका विशदा सुखदा प्रियंवदा रम्या ।
सरसानुग्रहकर्त्री कान्ता कविता चिरं जयति ।। 3 ।।

तदनु जयन्ति कवीनां दिव्या मधुराः सुधामुचो वाचः ।
यासां भङ्गिविशेषैः सहृदयलोका नु माद्यन्ति ।। 4 ।।

हृदयस्थानथ भावान् यः सविशेषं सुचित्रितान् कुरुते ।
वाग्देव्याः प्रियतनयः कविरिति प्रख्योचितो धीरः ।। 5 ।।

सा कविता सा वनिता या हृत्तन्त्रीं सुझङ्कृतां कुरुते ।
अन्या विडम्बनैव ययका भारायते लोकः ।। 6 ।।

प्रातःस्मरणीयोऽसौ प्राणपणेनापि योहि सेवेत ।
सुजलां सुफलां सुखदां जननीमथ जन्मभूमिञ्च ।। 7 ।।

परदोषे कृतलक्ष्या एके जीवन्ति हन्त कृतकृत्याः ।
निजदोषेषु सुविज्ञा विरला लोके जगद्वन्द्याः ।। 8 ।।

अति विषमं खलहृदयं को विज्ञातुं विशेषतः शक्तः ?
स्मृतिरपि यस्य सुतीक्ष्णा हृदयं गाढाहतं कुरुते।। 9 ।।

हालाहल ! महिमानं गुरुतरवेगं निजं कथं मनुषे ।
त्वदपेक्षयापि घोरा दुर्जनवाचो नु सर्पन्ति ।।10।।

सज्जन ! खलभुजगैस्त्वं दष्टः खिन्नोऽसि किं महासत्त्व !
चन्दनतरुरथ जातो भुजगवृतो किं न दृष्टान्तः ? ।।11।।

प्रासादानारुह्य हतका ये पातयन्ति निःश्रेणीम् ।
तेषां कौशलमेतदुपकर्ता यन्न लक्ष्येत ।।12।।

विषवमने किल दक्षं कुटिलगतिं भूरि वञ्चनाचतुरम् ।
गुप्तपदं सर्पन्तं खलं द्विजिह्वं मुहुर्वन्दे ।।13।।

अध्यवसरवादिस्त्वं परमकृतार्थोऽसि मे मतिर्भवति ।
शुष्कप्रायाः सर्वे हरितः संस्त्वं सदा भासि ।।14।।

अयि लालाटिकबन्धो ! लोकत्रितयं त्वया विना शस्त्रम् ।
विजितं हि हेलयैव तस्मादनिशं प्रणम्योऽसि ।।15।।

क्षुद्रजनैः क्रियमाणं बत ! सत्कर्मापि वाच्यतां याति ।
अल्पज्ञैर्व्याख्यातं सच्छास्त्राणां यथा मर्म्म ।।16।।

मलिनो मलिनं प्राप्य क्लिश्नात्यन्यान् सदैव निःशङ्कम् ।
तरुणीनयनासक्तं कज्जलमत्रास्ति दृष्टान्तः ।।17।।

कृष्णा वा शुक्ला वा प्रोन्नतिभाजो भवन्ति लोके वै ।
असिताः सिताश्च केशा मूर्धानमिहाधिरोहन्ति ।।18।।

कृष्णाशया हि प्राय उन्नतदेशानहो समायान्ति ।
तरुणीकुचाधिरूढौ श्यामलचिन्हौ नु दृष्टान्तौ ।।19।।

श्लाघ्यः स एव लोके विषं निपीयापि यः सुधां किरति ।
अपकारिष्वपि यस्य नैव विकारो दृशं व्रजति ।।20।।

सञ्जीवनीस्वरूपः सरसो ललितो गिरां सुनिष्यन्दः ।
भागीरथीप्रवाहः कवितापाकश्चिरं जयति ।।21।।

□

● डॉ० सुधाकराचार्यः त्रिपाठी, मेरठ

जयपुरीया

जयपुरीया सरिदहो कासाररूपं सन्दधाना ।
अलकनन्दा सरति मन्दं मन्दमुच्चैरुच्छलन्ती ।
अकलमन्दा चलति विन्दन् विन्दतीवाभाति तीरम् ।।1।।

कुटिलकेशी दिशति तारं तारतारं तर्जनीभिः ।
कलकपोला कलति गायं गायमुच्चैराकलन्ती ।।2।।

चलकपोला वलति कम्पं कम्पमुच्चैरुच्चरन्ती ।
चपलगात्री मुणति मौनं मौनमिङ्गत्यङ्गुलीभिः ।।3।।

चटुलनेत्रा दिशति हासं हासमच्छापाङ्गकोणैः ।
छलितभावा चरति देशं देशमुच्चैरुच्चरन्ती ।।4।।

जयपुरीया सरिदहो कासाररूपं सन्दधाना ।
पुलकहासा हसति मन्दं मन्दमुच्चैरुच्चलन्ती ।।5।।

मधुरवाचा हरति चित्तं चित्तमुल्लापैरनद्धम् ।
वलितगात्री स्मरति हेलं हेलमुल्लासैरमन्दम् ।।6।।

जयपुरीया सरिदहो कासाररूपं सन्दधाना ।।

राजते सुधाकरः

अलक्तकाङ्किते भवने
गुरुशुक्राङ्किते गगने ।
लवलीलालिते च वने
राजते सुधाकरः ।। 1 ।।

स्फुरति कविता मनसि
सवितुः पदचिह्नं सरसि ।
ताराणां ज्योतिर्नभसि
राजते सुधाकरः ।। 2 ।।

जलतललिता पदावली
लतापल्लवपुष्पावली ।
मङ्गलमयमालावलीमध्ये
राजते सुधाकरः ।। 3 ।।

लोकलीलाकुलमनसा
दिनचर्याव्याकुलेन, ते तरसा ।
पदाङ्किताासु पद्धतिषु प्रियं, किं नभसा,
राजते सुधाकरः ।। 4 ।।

□

● डॉ॰ जगन्नारायण पाण्डेयः, जयपुरम्

किम्

याति शान्तिं प्रदीपः प्रतीक्षारत
श्चेत्ततः स्नेहधाराप्रवाहेण किम् ।
अम्बुपूरो विनाश्यातिदूरं गत
श्चेत्ततः सेतुनिर्माणकार्येण किम् ।। 1 ।।
ईतिभिः पीडिता निर्धनाश्चेन्मृताः
शुष्कसंवेदनायाः प्रकाशेन किम् ।
चेत् प्रतीक्षालये यौवनं निर्गतं
भव्यपाणिग्रहस्य प्रयासेन किम् ।। 2 ।।

अन्योक्तयः

रे ! रे ! कोकिल ! काकलीं मधुमये काले मुदा श्रावयन्,
सर्वेषां गृहमेधिनां प्रणयिनां स्वान्तं समाकर्षसि ।
निर्दोष फलपुष्पशाकमशनं वासश्च वृक्षेषु ते
काका हन्त तथापि मन्दमतयो निष्कारणं वैरिणः ।।1।।

लोकानन्दन ! चन्दन ! प्रियसखे ! दिव्यौषध ! प्राणिनां
रम्येणामितसौरभेण सततं शैत्येन शान्तिप्रद ।
धर्माचार्यवरैः प्रशस्तनिटिले त्वं धार्यसे सादरं
सत्स्वेतेषु गुणेष्वपि प्रवहसि स्कन्धे भुजङ्गान् कथम् ।।2।।

रम्यं स्वादु फलं रसाल ! रूचिरा पत्रावली श्यामला
लोला मञ्जुलमञ्जरी मधुकरैः संसेव्यते सस्पृहम् ।
शाखास्ते समिधः परं फलगतं बीजं कठोरं कटु
स्निग्धच्छाय ! सखे ! मुखे मधुरता स्वान्ते विषं किं तव ।।3।।

भ्रातर्हंस ! खगावतंस ! मधुरे त्वं मानसे सर्वदा
सानन्दं रमसे जनैश्च विदितः सारस्वतं वाहनम् ।
नीरक्षीरविवेचने निपुणता नैसर्गिकी तेऽवनौ
सर्वं साधु तथापि हन्ति मृगयुस्त्वां निष्कृपो बालिशः ।।4।।

हंहो भेक ! विवेकहीन ! सततं पङ्कं वृथा सेवसे
त्यक्त्वा सौरभमण्डितं सुललितं पद्मं जनैः शंसितम् ।
दोषज्ञा मधुपा गुणग्रहचणा नीत्वा सुधामाधुरीं
तस्मादेव मुदा स्वनन्ति भुवि नो त्वं लज्जसेऽद्यापि किम् ।।5।।

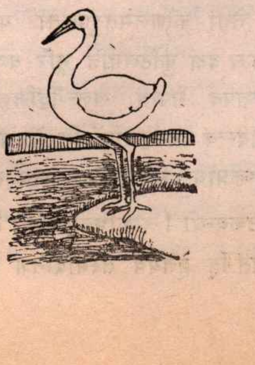

● पं० राधाकृष्ण शास्त्री, जयपुरम्

राजतां भारते संस्कृतं जीवनम्

यत्र मोहान्धकार प्रणाशे क्षमः ।
ज्ञानविज्ञानराशिः श्रुतीनांगणः ।।
भासते योऽनिशं जीविनां जीवनम् ।
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।1।।

यत्र वाल्मीकिना वर्णितं पावनं ।
क्रौञ्चकारूण्यजं चादिकाव्यं शुभम् ।।
तच्चरामायणादर्शकं जीवनम् ।
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।2।।

उत्तरे रामचारित्र्य कारूण्यकम् ।
यत्रशोकोऽपि शोकंविधत्तेऽद्भुतम् ।।
प्रस्तरोऽप्यत्ररोदिति हा जीवनम् ।
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।3।।

रम्यशाकुन्तलं कालिदासो मुदाऽऽ–
दर्शतां योषितां यत्र गायत्यहो ।।
भासते भास भासा जगज्जीवनम् ।
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।4।।

न्यायशास्त्रं नवं कौटिलीयो नयः,
शास्त्रमष्टाङ्गयुक्तं चिकित्सापरम् ।
यच्चधन्वन्तरीयंधनं विश्रुतम्,
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।5।।

शब्दशास्त्रंश्रुतं पाणिनीयंपरम् ।
भाष्यपातञ्जलं भाष्यते पावनम् ।।
दीप्यते यत्र नानाविधंदर्शनम् ।
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।6।।

याज्ञवल्क्योमनुर्व्यासशातातपौ
गौतमोऽत्रिर्वसिष्ठो मुनीनां गणः ।
ब्रह्मविद्यामयं भ्राजतां जीवनम्,
राजतां भारते सस्कृतं जीवनम् ।।7।।

धर्मशास्त्रैः सुकर्तव्यमादिश्यते,
सत्पुराणैर्विकासक्रमोदृश्यते ।
ज्योतिषं यत्त्रिकालाभिधानं परं,
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।8।।

याम्यतो ह्युत्तरं प्राच्यत. पश्चिमं,
सर्वकृत्येषु वैश्रूयते संस्कृतम् ।
पठ्यतां लिख्यतां कथ्यतां संस्कृतम्,
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।9।।

जन्मकालेऽप्यहो संस्कृतं पृच्छयते,
संस्कृतेनैव चान्ते गतिर्लभ्यते ।
भण्यते हा ! कथं भो ! मृतं संस्कृतम्,
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।10।।

कर्मनिष्काम भावेन कार्यं सदा,
नाप्यकर्मण्यता यत्र वा शस्यते ।
साऽत्रगीता जनानांभवेज्जीवनम्,
राजतां भारते संस्कृतं जीवनम् ।।10।।

□

● नटवरलाल जोशी, लक्ष्मणगढ़

अकथ्या कथेयम्

समेषां हृदि नव्य कादम्बरी भो !
न तस्याः कथा ह्येक जन्मावधिका
सदा राजते भव्य गीताञ्जलिका
कुटीरे कुटीरे न किन्त्वस्ति गीता
क्षणं जीवनं ! जीवनं तु युगानां ?
ममाप्यस्ति तेप्यस्ति कस्याऽपि नेदं ?
अकथ्या ....

सदा यात्यरण्यं युगेभ्योऽपिरामः
गतो द्वारवत्यां न चायाति कृष्णः
सदा नेत्रयोः ह्यश्रुमाला प्रसङ्गः
सदैव प्रियः मान भंगे सतृष्णः
कदा पारमायाति सीता दुःखानां
न त्वं न चाऽहं न ह्येषः कदापि ?
अकथ्या....................

प्रियेण सदा वञ्चिता कण्वपुत्री
कदा मानसीं शोक वह्निं जहाति ?
कदा पार्वतीकाम दाहेन पुण्या
भृशं वेदनां न जहाति ? विभाति ?
इयम् – अश्रुगंगैव हृद्युत्सः सुखानाम्
मयि च त्वयि च प्रकाशं च तस्मिन् —
अकथ्या ....

● रामगोपाल शास्त्री, जयपुर

भारत–वसुधा

सस्वरं गायन्तः सलयं च नृत्यन्तो बालका भारत-राष्ट्रस्य गौरवेण सह तर्कसंग्रहनिर्दिष्टेषुकतिपय द्रव्याण्यपि सारल्येनावगच्छेयुरितिबुद्धया विहितेयमक्षरयोजना ।

वसुधा मरकत - मणिरिव हरिता ।
हरति मनो मे सस्यैर्भरिता ।।
अत्र पूर्वजैस्तप आचरितम् ।
निगमागम वचनै रनुसरितम् ।।1।।

भूमिरियं वीराणां प्रथिता ।
कर्म भूमिरिति वेदैःकथिता ।।
रामकृष्ण प्रमुखा अवताराः ।
इहैव जाता हृत - भू - भाराः ।।2।।

मानव-संस्कृतिरितःप्रजाता ।
अत्र शिक्षिता विश्वबन्धुता ।।
ज्ञानंविज्ञानं श्रुतिदिष्टम् ।
सर्वेभ्योऽमर्त्यैरूपदिष्टम् ।।3।।

अनया लब्धं विश्वगुरुत्वम् ।
अत्र श्रद्धां मनसि कुरुत्वम् ।।
शिक्षेरन् सर्वे स्वचरित्रम् ।
अत्रत्याद् विप्रात् सुपवित्रम् ।।4।।

राग-द्वेष-विहीनैर्जुष्टः ।
धर्मोमुनिभिर्मनुना घुष्टः ।।
दानवताया अत्र विनाशः ।
दुराचारिणां नास्त्यवकाशः ।।5।।

सकला वसुधा निज-परिवारः ।
भवति भारतीयस्य विचारः ।।
विततमत्र भौतिकविज्ञानम्
मूलेऽस्यासीदात्मिक ज्ञानम् ।।6।।

भूर्वायुर्जलमग्निर्गगनम् ।
कालादीनामपि न स्थगनम् ।।
सर्वेषामप्येषां सृष्टिः ।
सर्वेश्वर-कृताऽत्र का पृष्टिः ।।7।।

यद्यपि द्रव्यत्वेन न भेदः ।
धर्मत्वेन तु मिथोऽस्ति भेदः ।।
गन्धवत्वमवनौ, ना ऽन्यत्र ।
नभः शब्दगुणकत्वं यत्र ।।8।।

धर्मोऽपां शीतस्पर्शत्वम् ।
अग्नेरस्त्युष्ण-स्पर्शत्वम् ।।
वायौ रूप-विहीनः स्पर्शः ।
एवं भेदः सतां विमर्शः ।।9।।

भेदो द्रव्याणां जीवातुः ।
अयमुत्पन्नः प्रथमं मातुः ।।
अभेदेन सह भेदः जातः ।
उभयंमूलं सृष्टेर्भ्रातः ।।10।।

भेदमयास्य न जीवति कश्चित् ।
भेदाभेदौवेति विपश्चित् ।।
साधारण-धर्मे न हि भेदः ।
वैशिष्ट्ये तु जायते भेदः ।।11।।

एवं भेद सहिष्णुर भेदः ।
समन्वेति न हि कश्चित् खेदः ।।
मानवताऽस्ति स्नेह-बन्धनम् ।
निज-निज धर्मे कर्म-बन्धनम् ।।12।।

निज-निज कर्मभिरीश-तोषणम् ।
भवति तदैतद् राष्ट्र-पोषणम् ।।
अयमानन्दोऽस्यां वसुधायाम् ।
भवति यथाऽऽस्वादोऽस्ति सुधायाम् ।।13।।

जयति जयति गोपालपालिता ।
जयति सदासुर वृन्द लालिता ।।
जयति सदा सत्सेव्या वसुधा ।
जयति कर्म भू भारत वसुधा ।।14।।

● गिरिजाप्रसाद "गिरीशः", जयपुरम्

कामः

विष्णुः किं ? कितवः, शिवः ? स्मररिपु, ब्रह्मा ? मुखैर्दुःखितः
किं रामः ? स वनेचरो, नयधरः कृष्णः ? सतृष्णस्तु सः ।
इन्द्रः किं ? प्रथिता हि लोचन-कथा, धर्मो नु ? सोऽयं वृषः
सेव्यः केवलमर्थशिञ्जितवपुः "कामः" सुकान्ताश्रयः ।।

गुरुपूजा

आसवः किमु विद्यानां ? गुटिका बुद्धि-शातनी ?
नो चेद् ? गुरुः कथं पूज्यः परीक्षा-जर्जरे युगे ।।

अतिथिः

सर्वैः कृत्रिम-वीक्षणैरिव पर-क्रीतैः सुहासैस्तथा
चेतोबेल्लदभाव-भाव-भरितैर्वाक्यैश्चयः सत्कृतः ।
आयातो व्यय-भार एव विहसन्नभ्यागतस्तोरणम्
हा ! दुर्दैव ! कदाऽपयास्यति गृहान्नीचग्रहो मित्रगः ।।

नेतृ-पत्नी-व्यथा

उद्वाहस्तु वृथैव मे कृत इति प्रेम्णस्तु वार्तैव का ?
कान्तो भ्रान्त इव भ्रमत्यहरहः सार्धं वयस्यैः स्वकैः ।
दिव्यं बन्धगतं तथातिविरसं नाकर्षकं जीवनम्
नेता मेऽस्ति पतिः, शृणोति न सदा 'किं वच्मि चातः परम्'।।

धर्मपत्नी

धर्मपत्नी तु लोके परा - शृङ्खला
यत्नतः पालिता भण्ण् भण्णायते ।
कर्मपत्नी "स्मृति" स्तर्पयन्ती मन-
श्चेतनाऽचेतनत्वे मुदाऽऽलिङ्गते ।।

किन्नु धर्मस्य पत्नी नु धर्माय वा
धर्मपत्नीत्यभिख्या न सन्तोषदा ।
प्रयसी शब्द-गर्भे न दुर्विग्रहः
स्नेहदा भूयसे श्रेयसे प्रेयसी ।।

धर्मपत्न्यास्तु धर्मो बहिर्निर्गतो
निर्भया सा गृहे मे सपत्नायते ।
केवलं पाति सा भोजन - स्वापनै-
रावयोः कः पति ? नैव विज्ञायते ।।

□

राष्ट्रैक्यम्

मानवै राष्ट्रमेतन् महन्निर्मितम्,
मानवं धर्म राष्ट्रस्य मूलं मतम् ।
मानवोऽतः प्रकुर्यात्सदा तद्धितम्
राष्ट्रियं यद्धितं मानवं तन्मतम् ।।

"जीवेम शतं शरदाम्" गज्जल-गीतिः

एका भारत माता, सर्वे च वयं तनया,
अस्या हितमिच्छन्तो, जीवेम शतं शरदाम् ।।

1

चन्दन-कल्पा धूलिः सर्वैस्तिलकी -क्रियते
तद्रत्न-समा बालाः सर्वत्र सुशोभन्ते ।
सद्यशो जोहराणाम्, गायेम शतं शरदाम्
भारत-हितमिच्छन्तो जीवेम शतं शरदाम् ।।

2

गृहमत्र तपः पूतं, सत्कर्म परं यजनम्,
सहयोगो भ्रातृत्वं, सूते नव-संसारम् ।
श्रीराम-भरत-चरितं, शृणुयाम शतं शरदाम्
भारत-हितमिच्छन्तो जीवेम शतं शरदाम् ।।

3

सूर्यश्चन्द्रोवह्निर्वायुः सलिलं गगनम्
सर्वा दैवी-सम्पत् तनुते भुवि मनुज-हितम् ।
कथमिति? वैदिक-तत्त्वं जानीमः शतं शरदाम्
भारत-हितमिच्छन्तो जीवेम शतं शरदाम् ।।

4

यद्यज्जीवन-तत्त्वं, राष्ट्रैक्यं चैश्वर्यम्
तत् तत् संस्कृत-निहितं, संस्कृतमिह पीयूषम् ।
पायं पायं मुदिता, हृष्येम शतं शरदाम्
भारत-हितमिच्छन्तो जीवेम शतं शरदाम् ।।

परिषद्-पराग

संस्कृत शिक्षा-परिषद्

संस्कृत शिक्षा परिषद् के मूल बिन्दुओं को स्पष्ट करते हुए माननीया श्रीमती कमला ने कहा कि साँस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के रूप में नई शिक्षा नीति में संस्कृत की अपरिहार्यता स्वत: स्थापित हो गई है। संस्कृत वाङ्मय ने जीवन का समग्र चिन्तन एवं दर्शन दिया है जो संस्कारों के रूप में, संस्कृति एवं समाज में व्याप्त है। आपने संस्कृत के मर्म को शोध की व्यावहारिक कसौटी पर कस कर 21वीं शती में सम्मानपूर्वक प्रवेश करने में दिशा निर्देशक रूप देने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ० आद्याचरण झा, पूर्व प्रतिकुलपति कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, ने मंगलाचरण के साथ शास्त्रीय संस्कृत अध्ययन-अध्यापन की विलुप्त होती परम्परा को पुनर्जीवित करने पर बल दिया। संस्कृत के ह्रास को राष्ट्र का दुर्भाग्य मानते हुए उन्होंने याद दिलाया कि उपनिवेशी यन्त्रणाओं से संत्रस्त भारत को संस्कृत ने ही एकता के सूत्र में बाँधे रखा। संस्कृत जगत् में व्याप्त होती हीन-भावनाओं को उन्मूलित करने हेतु शिक्षा-नीति में संस्कृत का विशिष्ट स्थान अवश्यमेव हो।

डॉ० सुधीर कुमार गुप्त भूतपूर्व प्रवाचक संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय ने संस्कृत शोध सम्बन्धी विषय पर दिशा निर्देश प्रस्तुत करते हुए आचार्य स्तर पर शोध परम्परा का विकास करने, शोध का समाजोपयोगी एवं व्यावहारिक कार्य-कारण से जोड़ने एवं वैज्ञानिक रूप से प्रयोगबद्ध करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ० बलदेव सिंह, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय ने नवीन शिक्षा नीति के दस्तावेज में संस्कृत के स्थान के स्पष्ट उल्लेख की अनिवार्यता पर बल दिया।

डॉ० विश्वनाथ मिश्र प्राचार्य, राजकीय आचार्य संस्कृत कॉलेज, बीकानेर ने भाषा की अपेक्षा विषय की प्रतिपाद्यता को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कलि-काल की निन्दा के स्थान पर संस्कृतज्ञों से युगीन विषयों का प्रतिपादन संस्कृत के आधार पर करना आवश्यक माना।

मेवाड़ मण्डलेश्वर महन्त मुरलीमनोहरशरण ने पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होती हुई भारतीय संस्कृति को उभारने और संस्कृत सम्पोषित भारतीय संस्कृति को जीवन्त करने हेतु शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर संस्कृत अध्ययन-अध्यापन को अनिवार्य माना। आपने एन. सी. आर. टी. व एस. आई. ई. आर. टी. जैसी संस्थाओं को भी इस पुनीत कार्य में सहयोग देने का आह्वान किया।

पं० शिवदत्त चतुर्वेदी, संस्कृत विभागाध्यक्ष बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने संस्कृतज्ञों से राज्याश्रय की अपील के साथ चरित्र उन्नयन के प्रयासों को महत्ता देना भी आवश्यक माना। आपने शुष्क वैदिक शोधों के स्थान पर समाज परक शोध कार्य करने पर बल दिया।

डॉ. एल. के. ओड आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक ने सृजनात्मक शोध की दिशा में लघु संस्कृत कार्यक्रम-मजूँषाएँ (किट्स) तैयार कर संस्कृत शिक्षा को नवीन तकनीक से जोड़ने का सुझाव दिया।

विद्या - वारिधि नन्द कुमार शास्त्री ने योग क्षेत्र की भावना से संस्कृत में प्रयोग करने का सुझाव दिया।

डॉ० सुभाष तनेजा प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय ने भी मन्त्रों की सार्थकता को प्रयोग द्वारा सिद्ध करने पर बल देते हुए समग्र देश में एक से संस्कृत पाठ्यक्रम की अनिवार्यता को आवश्यक माना।

डॉ० मण्डन मिश्र निदेशक, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि शिक्षा नीति के कलेवर में राष्ट्रीय एकता, अखंडता, आध्यात्म से नियंत्रित विज्ञान, मानव मूल्य की पुनर्स्थापना एवं नवीन भारत की प्राचीन ऐतिहासिक आधार शिला पर विकास के संकल्पों के साथ ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संस्कृत जुड़ गई है— इसी सूत्र के द्वारा राज्यीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत शिक्षा के विकास के स्तर और प्रखरता से उभारे जा सकते है। आपने समन्वित

शोध कार्य की आवश्यकता पर देश के सभी प्राच्य संस्कृत संकायों तथा संस्थानों में पाठ्यक्रमों की एकरूपता तथा संस्कृताध्यापकों के वेतनमानों की एकरूपता पर बल दिया। परिषद्-सत्र का समापन डॉ० पी० एल० भार्गव पूर्व संस्कृतविभागाध्यक्ष, राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। परिषद् में प्रतिपादित प्रमुख विचार बिन्दु निम्न रहे :—

1. नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रत्येक स्तर पर संस्कृत शिक्षा का समावेश अवश्यमेव किया जाए।

2. विलुप्त होती शास्त्रीय संस्कृत शिक्षा की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए त्वरित उपाय किये जाएँ।

3. राष्ट्र/राज्य-स्तर पर संस्कृत विद्वानों एवं एन. सी. ई. आर. टी. और एस. आई. ई. आर. टी. के सहयोग से संस्कृत के जीवनोपयोगी पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाय।

4. संस्कृत शोध संस्थान को मूर्तरूप तुरन्त प्रदत्त किया जाय।

5. संस्कृत शोधकार्य 'संस्कृत मंत्रविद्या' एवं 'आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग सिद्धता' के समन्वय पर आधारित हो।

6. संस्कृत शोध-कृत्य समाजोपयोगी एवं व्यावहारिक होने के साथ-साथ सृजनात्मक एवं मौलिक प्रवृत्तियुक्त हो।

7. वैज्ञानिक प्रयोगार्थ प्रयोगशालाओं में वैदिक ऋचाओं के विद्वान् एवं आधुनिक विद्वान् समन्वित रूप से प्रयोग व कार्य करें।

8. संस्कृत शोध निष्कर्ष, नवीन शैक्षिक तकनीकियों जन-संचार माध्यमों विशेषतः दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं समाचार-पत्रों के साथ-साथ संक्षिप्त पाठ मंजूषाओं (एज्यूकेशनल किट्स) आदि में संजोकर जन-जन तक पहुँचाएँ जावें।

9. देश की प्राच्य पद्धति के समस्त संस्कृत शिक्षा पाठ्यक्रमों में एकरूपता स्थापित होनी चाहिए।

10. देश के समस्त प्राच्य पद्धति के संस्कृताध्यापकों के वेतनमानों के ढाँचों में एकरूपता स्थापित होनी चाहिये।

परिषद् का संयोजन किया भाषा विभाग, राजस्थान के निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री ने।

युगीन प्रासंगिकता-परिषद्

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन जयपुर के चौदहवें अधिवेशन पर आयोजित संस्कृत की युगीन प्रासंगिकता परिषद् के उद्घाटक डॉ० बलदेव सिंह, प्राचार्य, संस्कृत-विभाग, हिमाचल विश्वविद्यालय, ने अपने भाषण में बताया कि भौतिकता से आक्रान्त अर्थ प्रधान युग में प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता को प्रासंगिकता की तुला पर ही तौला जाता है। संस्कृत की प्रासंगिकता को हमें दो दृष्टियों से देखना होगा। प्रथम दृष्टि में विशिष्ट विद्वानों के लिए संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन की आवश्यकता पहिले भी थी, आज भी है, और आगे भी रहेगी। भारतीय सभ्यता और संस्कृति का वास्तविक ज्ञान संस्कृत के माध्यम से ही हो सकता है। द्वितीय दृष्टि से देश की एकसूत्रता, विचारों की एकता के लिए संस्कृत की आवश्यकता है।

प्रमुख वक्ता डॉ० प्रभुनारायण सहृदय नाट्याचार्य ने इस अवसर पर कहा कि मुगलों के आक्रमण, मैकाले की दूषित शिक्षा-नीति, वर्त्तमान सरकार की परानुकरण की प्रवृत्ति तथा अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण संस्कृत की उपेक्षा होती रही है, जबकि संस्कृत भारत की आत्मा की भाषा है।

डॉ० एल० के० ओड आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, डबोक ने पारिभाषिक शब्दावली की दृष्टि से एवं सूत्र पद्धति से यह सुझाव दिया कि शब्दों में एकरूपता लाई जाये। नये शब्दों की अपेक्षा पुराने पारिभाषिक शब्दों का उपयोग किया जावे तो संस्कृत की प्रासंगिकता आज भी रहेगी।

डॉ० गंगाधर भट्ट सहआचार्य, संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, भवानी शंकर त्रिवेदी, संयोजक आर्य भारती दिल्ली, प्राचार्य नटवरलाल जोशी, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम आचार्य संस्कृत महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़, प्राचार्य श्रीमती कमला वशिष्ठ, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ जयपुर व डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल, पूर्व प्राचार्य सावित्री गर्ल्स कालेज बीकानेर ने भी संस्कृत की युगीन प्रांसिगिकता के लिए प्रतिवादित किया कि मानव जीवन के मर्म हमारे व्रत, पर्व, त्यौहार, संस्कार, दिनचर्या, आचरण सामुदायिक सद्भाव राष्ट्रीय एकता आदि कई सन्दर्भ है जो संस्कृत की शाश्वत प्रासंगिकता को अभिप्रमाणित करते हैं। विचार विमर्श के बाद उक्त विचार बिन्दुओं के प्रसंग में यह परिषद् निम्नांकित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत करती हैं। परिषद का संयोजन विद्यावाचस्पति श्री नन्दकुमार शास्त्री पूर्व प्राचार्य ऋषिकुल विद्यापीठ लक्ष्मणगढ़ द्वारा किया गया। परिषद् में पारित प्रस्ताव है— संस्कृत की युगीन प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाना भारत की अस्थिरता पर भी प्रहार है। मानव मात्र के भौतिक एवं आध्यात्मिक गरिमामय जीवन मूल्यों को समन्वित करने वाली संस्कृत युगीन

प्रासंगिकताओं की कसौटी पर खरी उतरती है। अतः हम केन्द्रीय सरकारों एवं राज्य सरकारों से अनुरोध करते हैं कि वे संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन की पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान करें तथा भारतीय जनता भी इसमें सहयोग दे। कम्प्यूटर युग में विश्लेषण के द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि संस्कृत वैज्ञानिक भाषा है। अतः इसका मूल्यांकन गणनात्मक नहीं गुणात्मक दृष्टि से हो और संस्कृत को लोकप्रिय बनाने हेतु आजीविका के साधन समुपलब्ध कराये जावें।

वेद-परिषद्

डॉ० रामनारायण चतुर्वेदी संस्कृत शिक्षा निदेशक, राजस्थान ने परिषद् का उद्‌घाटन किया एवं डॉ० सुधीर कुमार गुप्त पूर्व प्रवाचक, राजस्थान विश्वविद्यालय ने अध्यक्षता की।

उद्‌घाटन भाषण में वेद के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए श्री चतुर्वेदी ने बताया कि वेदाध्ययन से शिष्यों में नैतिक भावना स्वतः ही स्फुटित होती है। विद्याध्ययन काल में प्रतिष्ठित भावना सारे जीवन भर साथ रहती है। वेदों पर प्रतिपादित शिक्षा के अर्थ से स्वतः ही उत्तरोत्तर नैतिकता, औदार्य और चरित्र दृढ़ होते हैं।"

डॉ० सुधाकराचार्य त्रिपाठी प्रवाचक, संस्कृत विभाग, मेरठ विश्वविद्यालय ने प्रतिपादित किया कि मन्त्रों के सस्वर पाठादि प्रकृति एवं विकृति पाठों का विनियोग पूवर्क अध्ययन कराना चाहिए। इस अध्ययन से गणितशास्त्र के अनेक रहस्यों का उद्‌बोध होता है। उन्होंने अपने मत को पुरुषसूक्त के प्रथम मन्त्र को गणित परक व्याख्या द्वारा स्पष्ट किया।

श्री आनन्द पुरोहित, प्राध्यापक, ऋग्वेद महाराज संस्कृत महाविद्यालय जयपुर ने परम्परागत वैदिक अध्ययनाध्यापन का समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत किया। श्री पुरोहित ने सुझाव दिये कि अध्ययन के सभी स्तरों पर प्रवेशिका से आचार्य पर्यन्त योग्य एवं अधिकारी अध्यापकों द्वारा अध्यापन की व्यवस्था, छात्रों को यथेष्ट छात्रवृत्ति तथा अनुसन्धानों युक्त विशाल वैदिक पुस्तकालय की स्थापना होनी चाहिए।

प्रो० अनन्तराम शर्मा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर ने "सर्ववेदात् प्रसिद्धयति" पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए दो तीन बातें सविशेष प्रतिवादित की— अविद्याशब्द सर्वत्र अज्ञान का वाचक नहीं है, पुराण और इतिहास विद्यायें वेद में ही अन्वेष्टव्य है, (त्रेताया बहुता सन्तनानि) में त्रेता का अर्थ अग्नि है, ऋक् से मूर्त्त रूप का, साम से तेजो रूप का, तथा यजु से गति रूप का बोध होता है।

पं० भालचन्द्र नागर, हिन्दी विभागाध्यक्ष, राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ़ ने अथर्ववेद की परम्परागत अध्यापन प्रणाली पर सुझाव दिया कि इसके अध्ययनाध्यापन की सुव्यवस्था होनी चाहिये।

परिचर्चा संयोजक, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद मिश्र वेद विभागाध्यक्ष, महाराज संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर ने वेदार्थ विद्या पर बोलते हुए सायण भाष्य के अनेक अर्थों के उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए प्रतिपादित किया कि उपलब्ध वेदार्थों व वेदार्थ पद्धतियों की पुनर्मीमांसा आवश्यक है, तभी वेदार्थ का सम्यक् बोध हमें होगा।

डॉ० सुधीर कुमार गुप्त ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि चारों वेद संहिताओं और उनके साहित्य में भेद रखना आवश्यक है।

"अनन्ता वैवेदाः" का भाव वेदों के अर्थों की अनन्तता से है। मन्त्रों के व्याख्यान उनके पदों को एकाक्षरात्मक मान कर करने चाहिए। निर्वचन पद्धति में "शाकपूणि" आदि की पद्धति के अवलम्बन से अनेक नये विचार प्राप्त होते हैं। मन्त्रों और उनके पदों के अनेक अर्थ होते हैं, इसलिए किसी एक अर्थ से प्रतिबद्ध होना विचारणीय है।

मन्त्रों से सम्बद्ध ऋषि-देवता-छन्द तीनों मन्त्रों के अर्थों की बताने वाली परिभाषाएँ हैं। मन्त्रों पर स्वरांकन भी प्रथम वेद व्याख्यान था। इतिहास और आख्यान का अर्थ विशेष रूप से वर्णन की प्रणाली है। पुराण शब्द मन्त्रों में निहित सृष्टि विद्या का द्योतक है।

डॉ० गुप्त ने कहा कि यज्ञ, देव और पशु शब्दो का व्यापक अर्थ है। अश्वमेधादि यज्ञों का लक्ष्य अपना विकास करके लोक का उपकार करना है। वैदिक विज्ञान के विषय में उन्होंने कहा कि इस विधान की सृष्टि प्रक्रिया, बुद्धि, ग्राह्यता और प्रयोग आदि के आधार पर समीक्षा एवं प्रामाणिकता के प्रतिवादन की आवश्यकता है।

परिषद् द्वारा कतिपय सुझाव दिये जो इस प्रकार हैं:—

- वेद मन्त्रों के विनियोगों की समीक्षा कर उनका मूल्यांकन करना चाहिये।
- 10+2 के स्तर तक कुछ चुने हुए वेदमन्त्रों का बोध कराना चाहिए, यदि बोध न कराया जा सके तो कण्ठस्थ तो अवश्य करा देना चाहिये।

● प्राथमिक कक्षाओं में नर्सरी आदि के समान कुछ वेदमन्त्रों को कण्ठस्थ कराना चाहिए ।

● विश्वविद्यालय के स्तर पर जिस-जिस विषय के छात्र पढ़े, उस-उस विषय से सम्बद्ध वेदमन्त्रों का सुज्ञान कराना अनिवार्य होना चाहिए । संस्कृत और दर्शन के छात्रों को कुछ ऐसे मन्त्रों का बोध कराया जाये जो अतीन्द्रिय विज्ञान से सम्बद्ध हो ।

● वेद मन्त्रों के कुछ ऐसे चयन और अनुवाद करने चाहिए जो सामान्य लोक भाषा में हो, एक ओर विभिन्न स्तरों में पाठ्यक्रमों में स्थान प्राप्त कर सके तो दूसरी ओर लोक जीवन को अनुभूति और प्रेरणा दे सकें ।

● वेद में अनुसन्धान की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि वेदमन्त्रों आदि के अर्थों से जो वैज्ञानिक व अति विज्ञान परक तथा अन्य विधज्ञान प्राप्त हो, उसका क्रियात्मक प्रयोग तथा कार्य कारण सम्बन्ध स्थापित करके उपयोगिता और प्रामाणिकता का प्रतिवादन किया जा सके ।

● परम्परागत प्रणाली पर वेद पाठ की संरक्षा करने वाले विद्वानों की सुरक्षा की जानी चाहिए ।

● व्यवस्था हेतु कुछ समितियों का गठन होना चाहिये जो व्यवस्था व सुझाव की उत्तरदायी हो ।

● वैदिक कर्मकाण्ड के अध्ययन व अध्यापन की समुचित प्रयोगात्मक व्यवस्था होनी चाहिये ।

● प्राचीन पद्धति से वेदाध्ययन करने वाले मन्त्रों के अर्थों तथा तत्तद् वेद से सम्बन्धित ब्राह्मणादि साहित्य का बोध भी कराना अनिवार्य होना चाहिये ।

● चारों वेदों के अध्ययनाध्यापन की विश्वविद्यालयीय स्तर तथा विद्यालयीय स्तर पर समुचित व्यवस्था होनी चाहिए ।

व्याकरणशास्त्र परिषद्

श्री विश्वनाथ मिश्र प्राचार्य, राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, बीकानेर ने अपने उद्घाटन भाषण में व्याकरण की सार्वदेशिक और सार्वकालिक उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्याकरण के दैनन्दिन गिरते हुए स्तर पर चिन्ता व्यक्त की । उन्होंने अपने भाषण में व्याकरण की रक्षा एवं उसके विशिष्ट ज्ञान के लिए अनेक उपायों का दिग्दर्शन कराया ।

अध्यक्ष श्री हर्षनाथ मिश्र, आचार्य– शास्त्र चूड़ामणि, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महाभाष्य के अध्ययन की तुलना महाराज्यके पालन से बड़े ही मौलिक एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत की । महाभाष्य का अध्ययन व्याकरण शास्त्र की गरिमा का एक मानदण्ड है । इसमें व्याकरण के सारतत्व विधिवत् अर्न्तनिहित हैं । इसमें व्याकरण-शास्त्र की मौलिक मान्यतायें जैसे— शब्द का स्वरूप, शब्दार्थ सम्बन्ध की नित्यता आदि विशिष्ट विषयों का बहुत गम्भीर विवेचन किया गया है । अतः इसका अध्ययन नितान्त उपादेय है ।

डॉ० गंगाधर भट्ट प्राध्यापक संस्कृत, राजस्थान विश्वविद्यालय ने अपने शोध पत्र में महर्षि पाणिनि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला । डॉ० कन्हैया लाल शर्मा, प्राचार्य, प्राच्य विद्यापीठ, जयपुर ने अपने शोधपत्र में महाभाष्यकार पतञ्जलि के जीवन तथा पाणिनीय अष्टाध्यायी के व्याख्यान पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया । श्री रतन लाल शास्त्री, व्याख्याता, राजकीय धूलेश्वर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर ने अपने शोध-पत्र में महाभाष्य के पठन तथा महाराज्य के पालन का तुलनात्मक चित्रण किया । पं० सूर्य नारायण शर्मा, पूर्व प्राचार्य, प्राच्य विद्यापीठ जयपुर ने अपने शोध-पत्र में पाणिनि की सूक्ष्मेक्षिका का विश्लेषण व सोदाहरण दिग्दर्शन कराया ।

परिषद् ने व्याकरण के विशिष्ट ज्ञान तथा विकास के लिए प्रस्ताव पारित किए—

● संस्कृत व्याकरण के अध्येताओं के लिए विद्वानों की संगोष्ठियाँ आयोजित की जाय, जिनमें विशिष्ट विद्वानों द्वारा व्याकरण शास्त्रीय तत्त्वों का विवेचन व विश्लेषण कराया जावे ।

● व्याकरण शिक्षक के चयन के लिए प्राचीनकालिक योग्यता परीक्षा का आयोजन किया जाय यथा 'श्रूयते पाटलिपुत्रे शास्त्रकार परीक्षा' ।

● राज्यशासन के द्वारा व्याकरण अध्येताओं के लिए छात्रवृत्ति की अनिवार्य व्यवस्था की जाये ।

● परम्परा पद्धति से संस्कृत का अध्ययन करने वालों के लिए व्याकरण का अध्ययन अनिवार्य किया जाये ।

- व्याकरण की प्रौढ़ि एवं संरक्षण के लिए शासन के द्वारा प्रतिवर्ष मण्डलीय स्तर तथा प्रादेशिक स्तर पर शास्त्रार्थ प्रतियोगिता का आयोजन किया जाये ।

- शास्त्रीय परिषदों की कार्य योजना की निरन्तरता के सन्दर्भ में सम्मेलन की अध्यक्ष महोदया द्वारा घोषित परिषदों के स्थायी गठन की नीति के अनुसार "व्याकरण-परिषद् को स्थायित्व देने के लिए समिति का गठन किया जाय ।

- व्याकरण शास्त्र के दुर्लभग्रन्थ यथा "सटीकोपेत लघुशब्देन्दु-शेखर" जैसे ग्रन्थों तथा नवीन एवं उपयोगी शोधग्रन्थों का प्रकाशन एवं मुद्रण कराया जाये ।

परिषद् के प्रारम्भ में संयोजक श्री राधेश्याम कला-वटिया, व्याकरण विभागाध्यक्ष, महाराज संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर ने व्याकरण शास्त्र की विशेषताओं को बताते हुए विषय का प्रवर्तन किया ।

साहित्य परिषद्

दिनांक 5-5-86 को परिषद् के प्रथम उपवेशन को श्री नरोत्तममल लाल जोशी ने सम्बोधित किया । अध्यक्षता वनस्थली विद्यापीठ के मानद आचार्य श्री जगदीश शर्मा ने की । परिषद् का उद्घाटन डॉ० ब्रह्मानन्द शर्मा ने किया ।

श्री नटवरलाल जोशी, प्राचार्य, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम लक्ष्मणगढ़ ने संस्कृत रचनाओं में नवबिम्ब प्रयोग के सम्बन्ध में अपना पत्र पढ़ा । श्री जोशी ने अपने पत्र में विभिन्न उदाहरण देकर संस्कृत रचनाओं में भी बिम्ब प्रयोग की आवश्यकता का प्रतिपादन किया । श्री जोशी का मानना था कि यद्यपि संस्कृत रचनाओं में बिम्ब प्रयोग प्रारम्भ से ही किया जाता रहा है किन्तु युगानुसारी नवीन बिम्बों का प्रयोग किया जाना आव-श्यक है ।

श्री मोहनलाल पाण्डेय, प्राचार्य, राजकीय शास्त्री संस्कृत कालेज, अजमेर ने "काव्यात्मविमर्श" विषय पर पत्र का वाचन किया । श्री पाण्डेय ने विभिन्न सम्प्रदायों का विस्तार से विवेचन करते हुए रस को काव्य की आत्मा स्वीकार करने हेतु बल दिया ।

श्री राजकुमार दाधीच, प्राध्यापक दादू संस्कृत कॉलेज, जयपुर "बिम्बात्मकम् काव्यम्" शीर्षक से पत्र वाचन प्रारम्भ किया । श्री दाधीच ने अपने पत्र में बिम्ब के विभिन्न तत्त्वों का विश्लेषण करते हुए बिम्बात्मक वाक्य को काव्य मानने का नवीन विचार प्रस्तुत किया । यद्यपि कुछ संभागियों का मानना था कि बिम्ब प्रयोग कोई नवीन विधा नहीं है, अपितु प्राचीन समासोक्ति, अप्रस्तुत प्रशंसा आदि विधाओं में ही इसका समावेश है ।

डॉ० नन्द किशोर गौतम प्राचार्य, राजकीय दरबार शास्त्री, संस्कृत कॉलेज, जोधपुर ने अपने पत्र में रसध्वनि को वाक्य की आत्मा माना ।

डॉ० ब्रह्मानन्द ने सत्य ही काव्य की आत्मा है । इस नवीन मान्यता को प्रतिष्ठापित किया । संस्कृत काव्य में 'लोकोदय' विषय तथा परम्परावादिता को त्यागकर नवीन युग के अनुरूप संस्कृत साहित्य में नवीन विद्वानों की मान्यता को समादृत किये जाने पर बल दिया ।

कलानाथ शास्त्री, निदेशक भाषा विभाग द्वारा पाश्चात्य विद्वानों के काव्यात्म सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डाला गया ।

अन्त में अपने अध्यक्षीय भाषण में पं० श्री जगदीश शर्मा मानद आचार्य, वनस्थली विद्यापीठ ने कहा कि लोक कल्याण की भावना निर्मित साहित्य ही वास्तव में साहित्य है । साहित्य ही सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय का जीवानुभूत है । साहित्य के बिना सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय आत्मा रहित शव संज्ञक शरीर के समान है ।

ज्योतिष परिषद्

ज्योतिष परिषद् का उद्घाटन पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के भौतिक विज्ञान के विवेचक पं० श्री शक्तिधर शर्मा ने किया तथा सायनमान वर्षमान की उपपत्ति साधन गणितोप-पत्ति पूर्वक धूमकेतु के विषय में विस्तृत जानकारी दी । इसके बाद पं० रामचन्द्र जोशी, लक्ष्मणगढ़, राजेन्द्र शर्मा, कीर्तिनिधि आत्रेय, रमेश जोशी, भास्कराचार्य, दामोदर प्रसाद गौतम, विजयकुमार शर्मा आदि महानुभावों ने ग्रहों का रोग निदान में महत्व, धूमकेतु का प्रभाव, इन्द्र, यम, वरुण ग्रहों की गति व स्थिति के प्रभाव विषयों पर पत्रवाचन किया । जातक सूत्र एवं नाडीग्रन्थानुसार प्रस्तुत विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला । दूसरे उपवेशन में पं० कृष्ण गोपाल ब्रजेश ने रोग की उत्पत्ति में ग्रहों की भूमिका विषय पर पत्रवाचन किया, परिषद् के संयोजक श्री शिवचरण शास्त्री ने 'वैदिक नक्षत्रों के अनुसार जातक फल निरूपणं' विषय पर विस्तार से चर्चा की । परिषद्

में धूमकेतु से सम्बन्धित तथा रोगों के प्रभाव से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों का पं० शक्तिधर तथा पं० श्रीरामचन्द्र जोशी द्वारा समाधान किया गया। अन्य भी अनेक विद्वानों ने परिषद् में भाग लेते हुए विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से गणित विषयों का पर्यालोचन किया।

महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर के ज्योतिष विभागाध्यक्ष एवं इस परिषद् के अध्यक्ष श्री रामपाल शर्मा द्वारा पत्र-वाचन के लिए निर्धारित चारों विषयों पर पर्यालोचनात्मक अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया गया।

इस परिषद् ने अपने सम्पूर्ण निष्कर्षों के आधार पर प्रस्ताव पारित किये कि—

- जयपुर के ज्योतिष यन्त्रालय को आधुनिक नवीन उपकरणों से सुसज्जित किया जावे, जिससे ग्रहों की गति का सूक्ष्माति-सूक्ष्मज्ञान प्राप्त कर पंचाँग निर्माण किया जा सके। यथा उन्नतांशं, भित्ति, पलभाचक्र, सम्राट्, राशिवलय आदि यन्त्र।
- फलित ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोग विज्ञान व आजीविका निर्माण में ग्रहों के प्रभाव विषय को लेकर विचार-विमर्श किया जावे।
- परिवार कल्याण आदि राष्ट्रीय समस्याओं के लिए योगों का जनता के समक्ष प्रचार करना चाहिये।
- राजस्थान संस्कृत शिक्षा विभाग के अधीन समस्त शिक्षण संस्थाओं एव महाविद्यालयों में ज्योतिष के वरिष्ठ अध्यापक एवं प्राध्यापकों की नियुक्ति की जावे।

दर्शन-परिषद्

इस परिषद् का उद्घाटन प्रो० दयाकृष्ण शर्मा पूर्व प्रति कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। श्री खड्गनाथ मिश्र, पूर्व प्राचार्य, महाराज संस्कृत कॉलेज जयपुर ने परिषद् की अध्यक्षता की तथा डॉ० दयानन्द भार्गव, संस्कृत विभागाध्यक्ष जोधपुर विश्वविद्यालय प्रमुख वक्ता रहे। विचार-विमर्श के बाद निम्न निष्कर्ष निकाले गये—

- राजस्थान विश्वविद्यालयीय संस्कृत परीक्षाओं की नियमावली में मीमांसा-सांख्ययोग-वेदान्त आदि विषयों का समावेश तो है पर उनकी अध्ययनाध्यापन की पूर्ण व्यवस्था नहीं है। अतः सरकार या अनुदानित संस्थाओं में एक या एकाधिक में दर्शन शाखा के अध्ययन की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये। जहाँ महाराज संस्कृत कालेज जयपुर में न्याय शास्त्र के दो तथा दर्शन का एक प्राध्यापक था वहाँ आज मात्र दर्शन का एक व्याख्याता है। इसके अलावा कहीं भी दर्शन के शिक्षक नहीं हैं।
- राजस्थान के प्रमुख नगरों में प्रतिवर्ष 5-6 दर्शन शास्त्र की संगोष्ठियाँ होनी चाहिये जिससे कि वहाँ के विद्वान्, अध्येता तथा आम जनता दार्शनिक तत्त्वों से लाभान्वित हो सके।
- कणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम् इति सिद्धान्त के अनुसार न्याय शास्त्र का ज्ञान सभी संस्कृतज्ञों को होना चाहिये। इस ज्ञान के अभाव में व्याकरणादि शास्त्रों में गति नहीं हो सकती। अतः प्रत्येक महाविद्यालय में न्याय शास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता है।
- विश्वविद्यालय स्तर पर भी सामान्य संस्कृत में न्याय शास्त्र का अध्ययन होना चाहिये। संयोजन श्री गोविन्द नारायण शर्मा नैयायिक, भूतपूर्व प्राचार्य महाराज संस्कृत कॉलेज ने किया।

शास्त्रार्थ-परिषद्

इस परिषद् में व्याकरण शास्त्र के "अर्थवद् धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' सूत्र विषय पर शास्त्रार्थ परिचर्चा का आयोजन किया गया।

इस परिचर्चा में कन्हैयालाल शर्मा, प्राचार्य, प्राच्य विद्यापीठ, शाहपुरा बाग, जयपुर और ज्ञानदत्त पाण्डेय, प्राध्यापक, ऋषिकुल विद्यापीठ, लक्ष्मणगढ़ ने भाग लिया। परिचर्चा के आधार पर दोनों ही विद्वानों को समान घोषित किया गया।

श्री खड्गनाथ मिश्र, पूर्व प्राचार्य, महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर, श्री हर्षनाथ मिश्र, आचार्य, शास्त्र - चूड़ामणि, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, देहली तथा गगाधर भट्ट, आचार्य संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा शास्त्रार्थ में मध्यस्थता की गयी।

शलाका-परीक्षा

इस परीक्षा का आयोजन व्याकरण तथा साहित्य विषय पर किया गया। परीक्षा सम्बन्धित विषय के नियत ग्रंथों पर आधारित थी।

व्याकरण विषय की शलाका परीक्षा के लिए संभागियों के समक्ष 'लघुसिद्धान्त कौमुदी' के 5-5 स्थलों से मूल पाठ हेतु सूत्र प्रस्तुत किये गये किन्तु संभागी प्रस्तुत सूत्रों को पूर्ण करने में सफलता अर्जित नहीं कर पाये। इस परीक्षा में मुरारीलाल राव तथा रामकरण यादव, मनोहरपुर दो संभागियों ने भाग लिया।

साहित्य विषय की शलाका परीक्षा के लिए बाबूलाल शर्मा, विराटनगर, महेन्द्र जोशी, भगवानाराम, शोभाराम, अशोक कुमार– लक्ष्मणगढ और मालीराम– मनोहरपुर व 6 शिक्षक एवं छात्र संभागी प्रविष्ट हुवे। इस परीक्षा के लिए साहित्यदर्पण, काव्यप्रकाश, ध्वन्यालोक और चन्द्रालोक साहित्य विषय के नियत ग्रन्थ निर्धारित किये गये थे।

बाबूलाल शर्मा एवं महेन्द्र जोशी को साहित्यदर्पण, काव्यप्रकाश तथा ध्वन्यालोक ग्रन्थों से पाँच-पाँच स्थल मूल पाठ से कंठाग्र सुनाने हेतु प्रस्तुत किये गये थे किन्तु दोनों ही संभागी आंशिक रूप से उत्तरित हो सके। इसी प्रकार चन्द्रालोक ग्रन्थ से समस्त संभागियों को मूल के 5-5 स्थल मौखिक सुनाने हेतु प्रस्तुत किये गये थे। अधिकाश संभागी मूल पाठ को आंशिक रूप से ही पूर्त्त कर पाये। केवल भगवानाराम ऐसे संभागी अवश्य रहे जिन्होंने पाँच में से तीन मूल पाठ के स्थलों को कण्ठाग्र सुनाने में सफलता प्राप्त की। परिणामतः 'भगवानाराम– लक्ष्मणगढ़ को सफल घोषित किया गया।

शलाका परीक्षा में व्याकरण एवं साहित्य विषय के निर्णायक क्रमशः श्री बजरंगदास स्वामी प्राचार्य दादू संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर, राधश्याम कलावटिया, महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर एवं प्रो० प्यारे मोहन शर्मा, प्रो० नरोत्तम चतुर्वेदी व मोहनलाल पाण्डय प्राचार्य, राजकीय सस्कृत महाविद्यालय, अजमेर रहे। सफल शलाका परीक्षार्थियों को 'विद्यामार्तण्ड पं० श्री घनश्यामचन्द्र शास्त्री– लक्ष्मणगढ़ स्वर्णपदक' से शिक्षामन्त्री– श्री हीरालाल देवपुरा ने सम्मानित किया।

संस्कृतपत्रकार-परिषद्

अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकार परिषद् का उपवेशन सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, मथुरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के महामन्त्री श्री मोतीलाल जोशी ने प्रस्तावित भूमिका निर्वाह करते हुए अधिवेशन प्रारम्भ किया और बताया कि सम्मेलन ने पत्रकारिता परिषद् का समारम्भ कर एक स्वस्थ परम्परा संस्थापित की है। इस आशा और अपेक्षा के साथ कि इस सन्दर्भ में समागत सुझावों का निष्कर्ष प्राप्त होने पर इस दिशा में हम और भी अधिक अग्रसर होंगे।

परिषद् का उद्घाटन डॉ० कृष्णकान्त शुक्ल, संस्कृत विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय ने किया। विद्यावाचस्पति श्री नन्दकुमार शास्त्री के संयोजक वक्तव्य के बाद डॉ० शुक्ल ने अपने उद्घाटन भाषण में मार्गदर्शन किया कि संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में नवीन विषयों का समावेश होना चाहिये। उन्हें विद्वानों का मार्गदर्शन मिलना चाहिये व केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा विज्ञापन आदि का सहयोग भी अपेक्षित है। पत्रकारिता जनतंत्र के युग में एक सशक्त माध्यम है। जन जागृति का प्रेरक है। अतः पत्रकारों को संगठित होकर तथा अन्य भाषाओं के शब्दों को अंगीकृत करते हुए आगे बढ़ना चाहिये। इसके बाद भारती के प्रबन्ध सम्पादक श्री गिरिराज शर्मा ने जयपुर क्षेत्र के पत्रों का उल्लेख करते हुए "भारती" की स्थिति का विश्लेषण किया तथा कहा कि राजनीति से मुक्त होकर संस्कृत एवं संस्कृति के प्रति समर्पित होकर पत्रकारिता के मिशन को आगे बढ़ाना चाहिए।

श्री शिवदत्त चतुर्वेदी, वाराणसी ने अपने 'पत्रकारिता काचित्' शीर्षक कविता के माध्यम से अपने उद्गार व्यक्त किये। डॉ० पुरुषोत्तमलाल भार्गव पूव अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय (कार्यकारी सभापति सम्मेलन) ने एक जिज्ञासा व्यक्त की कि व्याकरण की दृष्टि से पत्रकारिता शब्द ठीक है या पत्रकारिता शब्द का समाधान अपेक्षित है।

डॉ० स्वर्णलता अग्रलाल, पूर्व प्राचार्य सावित्री गर्ल्स कालेज, बीकानेर ने सुझाव दिया है कि जयपुर से संस्कृत में दैनिक पत्र का प्रकाश होना चाहिये इसी क्रम में डॉ० शिव सागर त्रिपाठी, राजस्थान विश्वविद्यालय, अम्बिकादत्त गोस्वामी, बीकानेर ने क्रमशः सुझाव दिये कि संस्कृत पत्रों के प्रति छात्रों की रूचि जागृत की जाय, पाठक तैयार किये जाय एवं संवाददाता नियुक्त किये जाय।

डॉ० भवानी शंकर त्रिवेदी देहली ने "उदन्त मार्त्तण्ड" का उल्लेख करते हुए बताया कि भारतीय विद्वान् पशु चिकित्सकों के लिए "शालिहोत्र" शब्द का प्रयोग करते हैं। अन्य भाषाओं में भी यह शब्द प्रचलित है जो जनजीवन के साथ जुड़ें होंने का प्रतीक है।

प्रमुख अतिथि राजेन्द्रशंकर भट्ट, पूर्व निदेशक, जन सम्पर्क विभाग, राजस्थान ने अपने वक्तव्य में संस्कृत में निकलने वाले पत्रों की स्थिति का उल्लेख करते हुए कहा कि इस भाषा में निकलने वाले दो दैनिक, सात साप्ताहिक एवं चौबीस के करीब मासिक पत्र निकलते हैं। संस्कृत पत्रों के ग्राहकों की संख्या करीब 7000 है। देश के तेरह प्रान्तों से केवल इस भाषा में पत्र निकलते हैं। मेरी मान्यता है कि संस्कृत के पत्र अन्तर्देशीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को पा सकते हैं यदि दो चुनौतियाँ संस्कृत के विद्वान् स्वीकार करें—प्रथम यह है कि संस्कृत में जो ज्ञान-विज्ञान है उसे आधुनिक भाषा में व्यक्त किया जाये-दूसरी अंग्रेजी की कुटिलता के कारण जो हीनता की भावना आ गई है, उसे समाप्त किया जाय। राजनीति को "वारांगना" बताते हुए आपने कहा कि हम उससे दूर रहें और जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, उसे अपनी साधना के बल पर संजोकर रखें। उन्होंने बताया कि संस्कृत के बिना ज्ञान अधूरा है। पत्रकारिता संस्कृत प्रसार का सशक्त माध्यम है। उसे पुष्ट किया जाना चाहिये तथा निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं की समयबद्ध समीक्षा होनी चाहिये।

डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों का उल्लेख के साथ उनके निराकरण की ओर ध्यान आकर्षित किया। श्री चतुर्वेदी ने पत्रों की निरन्तरता बनी रहने के लिये एक रक्षा पंक्ति खड़ी की जाने की आवश्यकता बताई।

विद्यावाचस्पति नन्दकुमार शास्त्री ने पत्रकार परिषद् का संयोजन किया।

वैदिक यज्ञ एवं प्रदर्शनी

भारतीय संस्कृति और संस्कृत वाङ्मय में किसी भी मंगल कार्य के शुभारम्भ हेतु मंगलाचरण का शास्त्रीय विधान मिलता है। मानव अपने लक्ष्य, इष्ट काम समृद्धि के लिये देवों का अर्चन-स्तवन यज्ञादि कर्मों के माध्यम से सम्पूरित करता आया है।

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश महाधिवेशन के समय भी वैदिक यज्ञ और प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वैदिक यज्ञ के लिए शाहपुरा बाग में भव्य एवं स्थायी यज्ञ-मण्डप का निर्माण कराया गया जिसमें यजमान के रूप में राजस्वमन्त्री श्रीमती कमला ने यज्ञारम्भ पूजा की। यह मण्डप अध्येताओं और यजनकर्मियों के लिए भविष्य में भी उपयोग आता रहेगा। वैदिक सूक्तों की मधुर-स्वरलहरीपूर्ण यज्ञाहुतियों ने हजारों नरनारियों की प्राचीन आश्रम प्रणाली के दर्शन कराये।

यज्ञ स्थल पर वैदिक एवं ज्योतिष उपकरणों और संस्कृत के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के चित्रों, सभापतियों के चित्र तथा संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। वैदिक यज्ञ पं० जगदीश शर्मा वेदाचार्य, महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुर के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ और माननीय शिक्षामन्त्री श्री हीरालाल देवपुरा के कर कमलों से यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

फलश्रुति

मार्ग व्यय में एकरूपता अनुचित

—डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी
प्रधान संपादक 'व्रजगंधा'
मथुरा

14वें अधिवेशन की विशेषता थी अधिकाधिक संस्कृत के विशिष्ट विद्वानों की उपस्थिति ।

परिषदें जो हुईं वे सार्थक हुईं, उनमें निष्कर्ष निकाले गये । वे संस्कृत के उन्नयन के लिए प्रेरक तत्व सिद्ध होंगे ।

पत्रकार गोष्ठी के सुझाव मात्र औपचारिक न होकर संस्कृत जगत् के उपकारक सिद्ध होंगे ।

इस सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती कमलाजी का सहयोग मात्र औपचारिक नहीं है, अनुकरणीय एवं आदर्शरूप में है-ऐसा अनुभव हुआ ।

मुख्यमन्त्री माननीय श्री हरिदेवजी जोशी का संस्कृत के प्रति प्रेम स्वतः प्रमाणित हुआ जो समय निकाल कर आये ही नहीं-संस्कृत जगत् के लिए पूर्ण-प्रयास से सहयोगी सिद्ध हो रहे हैं ।

शिक्षामन्त्री श्री हीरालाल देवपुरा का शिक्षा एवं संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग श्लाघनीय पाया ।

सम्मेलन ने भोजन व्यवस्था युगानुरूप की । 'स्वागतम्' में भी हर प्रकार से विद्वानों को स्वागत की व्यवस्था बड़ी लाभप्रद रही, यद्यपि शाहपुरा बाग में सामूहिक व्यवस्था थी ।

आवास की व्यवस्था अपने आप में चिरस्मरणीय रहेगी । आवास से अधिवेशनस्थल दूर होने के कारण थोड़ी असुविधा रही ।

मार्गव्यय पुनर्भरण में एकरूपता रखना उचित नहीं था । नियमतः किसी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, अध्यक्ष को आकस्मिक व्यय एवं प्रथम श्रेणी का मार्गव्यय देना सम्मानप्रद होता है ।

कवि सम्मेलन में इतनी समस्या रखकर उनकी पूर्ति के तारतम्य में कुछ सम्मानप्रद उपाधियाँ प्रदान की जातीं तो अच्छा होता ।

खुले अधिवेशन में काव्यपाठ स्तुत्य रहा । आकाशवाणी, दूरदर्शन के असहयोग खले ।

यह आयोजन अत्यन्त सफल एवं सबक देने वाला रहा, जिसमें श्री मोतीलालजी जोशी द्वारा किये गये अथक परिश्रम ने संस्कृत जगत् को गौरव प्रदान किया । ●

संस्कृत के प्रेम में पगे अधिकारी

—डॉ० कृष्णकान्त शुक्ल
संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

5, 6, 7 मई 1986 को राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का जयपुर में सम्पन्न हुआ चतुर्दशमहाधिवेशन वस्तुतः संस्मरणीय है । 'सम्मेलन' का अपना भव्य इतिहास है । उसकी परम्परा को आगे बढ़ाने की दिशा में यह अधिवेशन स्तुत्य प्रयास था ।

वैदिक-यज्ञ, विभिन्न शास्त्रीय परिषद्, विविध गोष्ठियाँ, शलाका परीक्षा, संस्कृत पत्रकार सम्मेलन, शास्त्रार्थचर्चा, कवि सम्मेलन तथा भव्य समापन समारोह कभी भी भुलाये नहीं जा सकते ।

सबसे बड़ी बात यह है कि राजस्थान के माननीय मुख्यमन्त्री, शिक्षामन्त्री, राजस्वमन्त्री, कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं बड़े से बड़े अधिकारी सभी संस्कृत के प्रेम में पगे थे, केवल मौखिक सहानुभूति ही नहीं जता रहे थे । सम्मेलन की अध्यक्ष राजस्वमन्त्री श्रीमती कमला की संस्कृत-निष्ठा तो देखते ही बनती थी । वे अपनी पदगत गरिमा से निरपेक्ष रह कर सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं के बीच में सामान्य रूप से कार्यरत थीं । राजस्थान में संस्कृत शिक्षा सचमुच सुनियोजित दृष्टिगोचर होती है ।

सम्मेलन के महामंत्री श्री मोतीलाल जोशी का अविरामगति से यन्त्रवत् कार्यसम्पादन, कर्मठता, संगठनपटुता और संकल्पशक्ति को देखकर मैं दंग रह गया। डॉ. मंडन मिश्र की सभी कार्यों में सक्रिय उपस्थिति, कविवर कलानाथ शास्त्री का कुशल कवि सम्मेलन संचालन और सभी कार्यकर्त्ताओं की अकृत्रिम स्वागतचातुरी, निःसन्देह सराहना की पात्र हैं। अतिथियों के स्वागत एवं आवास की व्यवस्था नितान्त भव्य थी।

राजस्थान के मन्त्रिगण भी वस्तुतः संस्कृतभक्त प्रतीत होते हैं। माननीय मुख्यमन्त्री जोशीजी, शिक्षामन्त्री देवपुराजी और राजस्वमंत्री श्रीमती कमलाजी जिस प्रकार बिना किसी अभिमान एवं प्रदर्शन के उत्सव में पधारीं-यह उनकी गरिमा तो है ही, साथ में श्री मोतीलाल जोशी की कार्यपटुता का भी प्रतीक है जिसके आकर्षण में बँधे हुए हजारों लोगों के साथ, अधिकारीगण भी खिचे चले आये।

ऐसे प्रेरक एवं भव्य आयोजन के लिए बधाई। आशा है – तपः पूत विद्वानों की साधना से और माननीय कमलाजी के निर्देशन में सम्मेलन अनुदिन उन्नति करेगा। ●

शुभाशंसा

—डॉ० पी. एल. भार्गव
पूर्व आचार्य, राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर

जिस मनोयोग, अध्यवसाय, उत्साह और परिश्रम से रातदिन काम करके राजस्थान संस्कृत साहित्य-सम्मेलन के चतुर्दशमहाधिवेशन को सफल बनाया गया है, उसके लिए मैं महामंत्री मोतीलाल जोशी को हार्दिक बधाई देता हूँ। भविष्य में भी महामंत्री इसी प्रकार संस्कृत की सेवा करते रहें यह मेरी कामना है। ●

संस्मरण सौरभम्

—भवानीशंकर त्रिवेदी
आर्य भारती
जी-18, दिलशाद कॉलोनी, दिल्ली

प्रणम्य शंकर सोममाशुतोषमभीष्टदम्।
पीयते संस्कृतज्ञानां सम्मेलनस्मृतेः सुन्दरे जयपत्तने ॥1॥

सौधैश्चतुष्पथ, धान सुन्दरे जयपत्तने।
राजस्थानीयगीर्वाणीसम्मेलनोत्सवे ॥ 2 ॥

रम्ये शाहपुरोद्यानमध्यगे नूतभूपिते।
सम्मेलनस्य स्वस्यैव हृद्ये परिसरे शुभे ॥ 3 ॥

तोरणैश्च पताकाभिः स्रग्भिश्चेतोहरं शुभम्।
ध्वनिभिर्वेदमन्त्राणां समवेतस्वरोद्गतैः ॥ 4 ॥

पुनानं यज्ञसम्भूतैर्धूमैश्चापि समन्ततः।
शैशवेऽभ्यस्तविद्यैश्च शक्तियुक्तैश्च[1] यौवने ॥ 5 ॥

वाधक्य आत्मज्ञानाढ्यस्वाध्यायार्पितजीवनैः।
दर्शनादिषु निष्णातैर्वेदवेदाङ्गपारगैः ॥ 6 ॥

ज्योतिर्वित्तल्लजैः ख्यातैर्वैयाकरणपुंगवैः।
सुदर्शनैर्भव्यवेशैः कविभिः क्रान्तदर्शिभिः ॥ 7 ॥

साधुसंन्यासिभिश्चैव काषायाम्बरराजितैः।
विद्योत्तमपुरन्ध्रीभिश्चछात्रैश्च प्रतिभान्वितैः ॥ 8 ॥

मन्त्रिभिः सचिवैर्दक्षैरन्यैराज्यधिकारिभिः।
पत्रकारवरिष्ठैश्च श्रेष्ठैर्वार्ताहरैरपि ॥ 9 ॥

छविकारैस्तडिद्गत्या चलचित्राङ्कनोद्यतैः।
'स्वागतं' व्याहरद्भिश्च सम्मेलनमुपेयुषाम् ॥10॥

स्वकर्मनिरतैर्नम्रः सभासंयोजकैबुधैः।
स्वयंसेवकसंघैश्च नेतृभिरूपदेष्टुभिः ॥11॥

राजितं बिबुधैर्वन्द्यैः स्वस्थानेषु विराजितैः।
सहायकेन मे नित्यं सूनुना भारतेन्दुना ॥12॥

सह कैश्चिद् बुधैः प्रत्नैः सुहृद्भिश्च नवैर्नवैः।
सुधर्मोपमितं भव्यं सभामण्डपमाविशम् ॥13॥

पञ्चम्यां तारिकायां सोमे

होमाच्र्युज्ज्वलयज्ञवाटाभ्यर्णे नानानगरागतसुधिजन-समवायसंकुले सुरभिविसारिसुमनोनिर्मितसज्जास्रगाद्यलंकृते पावनैः प्रेरकैश्चानेकैर्वेदवाक्यैः विवर्धित गौरवे के प्रविशत्स्वेवास्मासु विशाले सम्मेलनपटमण्डपे वेदत्रयपाठात्मकेन[2] मंगला-

1. शक्तिर्निपुणता लोके शास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्। काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥
इति काव्यप्रकाशोक्तनवनवोन्मेशलिनी प्रतिभाशक्तिः ? कविता निर्माणस्य प्रथमो हेतुरेवोत्रोद्दिष्टः प्रामुख्येन।

2. तत्र सामगानं नाभूत्। मत्यै सामवेदपाठी कश्चिन्नोपलब्धः। काशिकल्पे जयपुरे यत्र वेदत्रयाध्ययनाध्यापने न केवलं वृद्धाः प्रौढ़ा एव वा कृतश्रमा दरीदृश्यन्ते युवनतोऽपि तत्र वैदग्ध्यमावप्नुवन्तीति तु महद्धर्षास्पम्। तत्र सामवेदस्य पठनपाठन गायनादिव्यवस्थापि विधेया इति मे मतिः।

चरणनारब्धः कार्यक्रमः । तदशं हृद्यं विस्पष्टं शुद्धं समवत-स्वरेणोद्गतं वेदमन्त्रपाठं श्रावं श्रावं सर्वेऽपि सामाजिका आनन्दसन्दोहमग्नाद्वामवँस्तस्मिन्नवसरे ।

ततश्च सम्मेलनमहामन्त्रिणा श्री मोतीलाल जोशी महोदयेन सम्मेलनस्य तद्दिवसीय कार्यक्रम उद्घोषितः। स्वागताध्यक्षया श्रीमत्या कमलामहाभागया च शिक्षामन्त्रिपद-मलंकुर्वाणा मुख्यतिथि श्रीहीरालालदेवपुरामहोदयश्च संस्कृतानुरागरञ्जितान् स्वीयहार्दानुद्गारानेभिव्यञ्जयितुं सम्प्रार्थितः ।

तेन च राजस्वमन्त्रिपदे प्रतिष्ठितया कमलामहाभागया सह राजस्थाने संस्कृतस्य प्रचारप्रसारपठनादिकेषुसर्वेषु कार्येषु तस्यापि सर्वविध सहयोगो सदैव सुलभो भविष्यति संस्कृतज्ञानां कृत इत्याश्वस्तम् । अपि च तेनोक्तं 'पुराहं राजस्वमन्त्रि-पदेऽतिष्ठम्, कमला महाभाग च शिक्षामंत्रिपदमलमकार्षीद-धुना सा राजस्वमन्त्री वर्ततेऽहञ्च शिक्षामन्त्रिपदमासीनः। परमनेन व्यत्ययेनावयोः संस्कृतानुरागे न कोऽपि विभेदो जायते, प्रत्येकस्यामवस्थायां परिवर्धत एवास्मदीयः संस्कृतप्रेमा इति ।

एवं प्रातः दशवादनतो मध्याह्नपर्यन्तं प्रारम्भिक मुद्-घाटनसत्रमिदं प्रावर्तत ।

ततश्च फलावनतसहकारपादपपुञ्जानामधस्तान्निर्मिते शुचौ मनोहारिणि वियद्वितानेभोजनस्थले राजस्थानीयं 'गोठ' इत्यस्यसुखमनुभवत्सु मिथ आलपत्सु सानन्दमापरितोषञ्च भुक्तवत्सु सर्वेषु अपराह्णे वादनद्वयावसरे वेदव्याकरणज्यौतिष-दर्शन साहित्यशिक्षापरिषदः प्रारभन्त । पूर्वं तावत्साहित्य-परिषदि भूपांसो विद्वांसः समुपातिष्ठन् ज्यौतिषपरिषदि च पञ्जाबी विश्वविद्यालयपटियालातः समागतेन श्रीमार्तण्ड-पञ्चाङ्गस्य ख्यातनाम्ना सम्पादकेन नवोद्गतं धूमकेतुमधि-कृत्य काश्चिन्नवनवा वैज्ञानिका सूचना प्रदीयन्ते स्म, अतस्त-त्रापि विज्ञजनसम्मर्दो जातः। परं व्याकरणपरिषदि (यत्राहमु-पातिष्ठम्) तु पञ्चषा एव जनास्त एव वक्तारस्त एव च श्रोतार आसन् । पश्चाच्च शनैः प्रभूततरा विद्वांसोऽस्यां व्याकरणपरिषदि समुपातिष्ठन्निति तु हर्षस्य विषयः ।

रात्रावष्टवादनवेलायां समस्यापूर्त्यात्मकं कविसम्मेलनं प्रारभत । आदावेव सर्वानुमत्या श्रीमता डॉ० मंडनमिश्र महोदयेन जनोऽयमध्यक्षपदमधिष्ठातमादिष्टः । श्रीभट्टकला-नाथशास्त्रिमहोदयश्चासीत्संयोजकः । कविसम्मेलनञ्चेदमर्ध-रात्रपर्यन्तं प्रचलितम् । परं तदात्वे 'स्वागत' मित्याख्यातिथि-निवासगमनाय यानानुपलब्ध्या मथुरातः समागतेन डॉ० वासुदेवकृष्णचतुर्वेदेन, मुजफ्फरनगरत आयातेन डॉ. उमाकान्त शुक्लेन वाराणसीतः समागतेन डॉ. शिवदत्तचतुर्वेदेनान्यैश्च पंचषैः कविपुंगवैः सहमयापि सा समस्ता रात्रिः सभा मण्डप एव मण्डप व्यत्यावायि ।

षष्टयां तारिकायाम्

प्रभाते एवं दशवादनावसरे राजस्थानस्य मुख्यमन्त्रि महोदयेन मान्येन श्रीहरिदेवजोशिमहाभागेन सम्मेलनमुद्बोध-याता संस्कृतं प्रति सुविख्यातः स्वीयो हार्दोऽनुरागो व्यक्तः । उक्तञ्च श्रीमती कमलामहाभागाऽधुनासंस्कृत-सम्मेलनस्याध्यक्ष-पदमलंकरोति, एषा, शिक्षामन्त्रि श्रीदेवपुराहञ्च सम्भूय तथा प्रयतिष्यामहे यथा राजस्थानसमग्रेऽपि च राष्ट्रे संस्कृतस्य प्रकर्ष उत्तरोत्तरं वृद्धिमुपेष्यतीति ।

मध्याह्नोतरं पूर्वदिवसदद्यापि विविधाः परिषदः स्वं स्वं नियोगमशून्यमकुर्वन् । रात्रौ च भव्यं कविसम्मेलन प्रारब्धम् । केषांचित्पूर्वनिर्दिष्टानामन्येषाञ्च सुकवीनां हृद्या अनव-धाःमृद्वीक मधुरा रसस्निग्धाश्च कविताः श्रावं श्रावं समग्रोऽपि सामाजिक संघश्चित्रोल्लिखित इवानवद्यामचतुष्ठयमैच्छच्च तत्काव्यपाठं श्रोतुं तत्रैवावस्थातुं समाग्रामपि रजतीम् ।

सप्तम्या तारिकायाम्

शिक्षामन्त्रि महाभागेन श्रीदेवपुरा महोदयेन समापन-समारोहे पुन समुपेत्य समाजिताः सर्वेऽपि सुरभारत्युपासनरता विद्वांसः । तदनन्तर 'सम्प्रति मथुरातः समागता विद्वद्वरेण्या डा० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदमहाभागा सम्मेलनस्यास्य दिवसत्रयस्य कटुमधुरमनुभवजातं श्रावयित्वानुगृह्णत्वस्मान्निति' महामन्त्रिणा प्रार्थितम् । इत्याकर्ण्य ध्वनिविस्तारकयन्त्रभिमुखस्वभागतएव चतुर्वेदमहाभागे समग्रमपि सभामण्डपं करतलध्वनिभिगुंजितम् । ततश्च—

प्रारभ्य सुरभारत्या मध्ये च राष्ट्रभाषया ।
काव्यात्मकेन गयेन श्लोकैर्वा भावव्यंजकैः ।।1।।

मृदुमृद्वीकमाधुर्य पूर्णया रसस्निग्धया ।
आमोदामृतवर्षिण्या गुरुगम्भीरया गिरा ।।2।।

चतुर्वेदमहाभागो विद्वत्सु वदतांवरः ।
सम्मेलने यथादृष्टमनुभूतं श्रुतञ्च यत् ।।3।।

दिवसत्रयवृत्तान्तं वक्तु समुपचक्रमे ।
मन्त्रमुग्धेव संञ्जातच्छ्रुत्वा हर्षिता सभा ।।4।।

अस्मिन्नेवावसरे चतुर्वेदमहाभागो रसखान कवेः 'मानसु हों तो वही रसखानि बसौं ब्रजगोकुल गांव के ग्वारन' इत्यादि प्रसिद्ध पदस्य स्वकृतं संस्कृतरूपान्तरमपि श्रावयित्वा सर्वान-द्वार्णवमस्नान करोतु । ततश्च सर्वैरपि विद्वद्वरेण्यैर्यज्ञस्य पूर्णा-

हूत्यवसरे स्वपोस्थित्या व्यक्तवा स्वीपया प्रगाढश्रद्धया सह सानन्दं सम्पन्नमिदं राजस्थान संस्कृतसम्मेलनस्य चतुर्दशं महाधिवेशनं सर्वैः सर्वदा स्मरणीयं स्यादितिनिश्च प्रचंवक्तु शक्यते ।

शुभैषणा

—पं० सत्यनारायण शास्त्री
अजमेर

श्रीलमौक्तिकलालनाम्ना, जयपुरेकविखेलनम्;
सुश्रिया सुधियाधिया, गीर्वाणगीः सम्मेलनम् ।
पुरुसाहसेन समापितं, निरूपप्लवत्वपुरः सरम्,
साधुवादैस्त्वाऽऽद्रिये, सम्मेलनस्यधुरन्धरम् ।।1।।

हरिदेव-हीरालाल-कमलाप्रभृतयो जननायकाः;
संगताः सम्मेलने सुरभारतीहितकारकाः ।
शोभने त्रिदिनात्मके, सम्मेलने कविहर्षदे;
विविधविषयज्ञाबुधाः, समुपागमन्ननरुन्तुदे ।।2।।

कविघनाघनसघनकाव्यरसामृतं निभृतं मुदा;
यत्र तत्कवयो निपीयाऽमोदिषत सुभृशं द्रुदा ।
दुर्दैवतोऽहं न्यवसमेकस्मिन्प्रथमदिवसे ततः;
कालाल्पताहेतोर्मुहुर्निजपत्तनं प्रत्यागतः ।।3।।

चिराय कामये विद्वन्साफल्यञ्चास्यसंततम् ।
सम्मेलनं दिदृक्षेऽहं, प्राक्युनस्त्वन्नियोगतः ।।4।।

त्वया कथञ्चिन्महता श्रमेण, साहित्यसम्मेलनमत्रभव्यम् ।
निष्प्रत्यवायं समपादि विद्वन्नेतत्तु ते श्लाध्यतमं सदास्यात् ।5।

अन्यत्सम्मेलनञ्चाऽपि, नवरसोरुसुसंगमम् ।
त्वत्सम्मेलयितुस्तूर्णं, कामये सूरितल्लजा ।।6।।

अलमतिवचसा सम्प्रति, स्वश्लाधानाऽतिशोभते लोले ।
तद्विरमामि विचक्षण, यन्मदनर्गलं क्षमेयास्त्वम् ।।7।।

साफल्याय साधुवादाः

—अनन्त शर्मा
सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय
ब्यावर

सम्मेलनस्यातीवसुन्दरंसाफल्याय साधुवादाः । कार्यान्तरविलम्बभीतो नाहं तत्र स्थातुं पारितवान् इति रात्रौ सार्धाष्टवादनकाले सम्मेलनसमाप्तौ प्रस्थितवान् ।

मनोभिलाषा

—वैद्य शङ्करलाल शर्मा
चमड़िया औषधालय
फतेहपुर

राजस्थान-संस्कृतसाहित्यसम्मेलनस्य चतुर्दश-महाधिवेशने सम्मिलितुं सौभाग्यं प्राप्तम्-एतदर्थं भवतामाभारं मन्ये । श्रीमतां निदेशे सम्मेलनमिदं सुरभारत्याः प्रचारे-प्रसारे च स्वीयं महत्वपूर्णं योगं वितरति । श्रीमतां प्रयासः प्रचुरस्तुत्यं वर्तते, नास्त्यत्र संदेहः ।

सम्मेलनमिदं ममोपरि भूयसीमनुकम्पां विधायमल्लिखितां "शशिप्रभा" नाम्नीं सुरसरस्वतीगद्यरचनांप्रकाशतवांस्तथा सम्मेलनस्यास्मिन्नेव महाधिवेशनेऽस्याः विमोचनमपि कारितम् । एतदर्थमयंजनः सम्मेलनस्य विशेषतया श्रीमतां महान्तमुपकारं मन्यते ।

राजस्थान संस्कृतसाहित्य-सम्मेलनमिदं प्रत्यहं समुन्नतिपदं प्राप्नुयादिति मदीयो मानसिकोऽभिलाष इति ।

सम्मेलनशुभाऽवसरे श्रीमद्भिः याः याः व्यवस्थाः सम्पादिताः तास्ताः सर्वा अपि स्तुत्या इति ।

वरिष्ठ विद्वानों की स्तुत्य चित्रदीर्घा

—कलानाथ शास्त्री
निदेशक भाषा विभाग, राजस्थान
जयपुर

यह अधिवेशन कुल मिलाकर बहुत सफल रहा । नगर से काफी दूर सम्मेलन स्थल होने पर भी प्रथम दिन बहुत अच्छी संख्या में नगर के सारे विद्वान् पहुँचे और बाद के दिनों में भी देश के प्रबुद्ध विद्वानों ने बराबर सान्निध्य प्रदान किया—यह क्या कम बात है ? पुरी के कुलपति, दरभंगा के आद्याचरण झा, काशी के विश्वनाथ भट्टाचार्य और शिवदत्तचतुर्वेदी, हिमाचल के संस्कृतविभागाध्यक्ष, दिल्ली के मण्डन मिश्र तथा देश के अनेक विद्वानों ने इसे गौरव प्रदान किया । कवि-सम्मेलन दो दिन चला और देश के चुने हुए कवियों की कविताएँ सुनने को मिलीं, यह भी विशेष उपलब्धि है ।

मुझे जो बात विशेष पसन्द आई – वह थी सम्मेलन से जुड़े अब तक के वरिष्ठ विद्वानों की चित्रदीर्घा । यह एक नई बात रही, जिसके लिए सम्मेलन बधाई का पात्र है । राज्य की वरिष्ठ मन्त्री श्रीमती कमला ने इतनी रुचि ली – यह भी एक उल्लेखनीय बात है । उनकी संस्कृत-सेवा और वाग्मिता, विवेक और लगन को देखते हुए सर्व सम्मति से उन्हें अध्यक्ष बनाया जाना तो इसका स्वाभाविक परिणाम ही था ।

शोभनं सम्मेलनम्

—रतनलाल शर्मा
प्राध्यापक, राजकीय धूलेश्वर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
मनोहरपुर

श्रीरामः शुभस्वागते हि निरतो, रामो निदेशेत्वलम् ।
विश्वाद्या जगदोश हर्षसकला, नाथत्रयी राजते ।।
हीरालाल हरी दिवाकरनिभौ, शिक्षामुखौ मन्त्रिणौ ।
मोतीमण्डन मिश्रितेऽत्र कमला, श्रीरस्ति सम्मेलने ।।1।।

"गणानां त्वा" गिरागुञ्जद्, यज्ञधूमायितं नभः ।
घण्टानाद-स्वरै र्व्याप्तं, मद्यापि दृश्यते जनैः ।।2।।

शारद जलदसमानै, र्धवल पट वितानैर्व्याप्तमेकत्र ।
ध्वनि विस्तारक यन्त्रा, ण्यासन्यत्र तत्र सर्वत्र ।।3।।

कक्षे कक्षे विदुषां, व्याकरणन्यायाद्याः संगोष्ठ्यः ।
शास्त्रार्था भाषणानि, आयोज्यन्ते स्म विद्वद्भिः ।।4।।

चतुरस्र मजस्रं चत्वरमस्य, गुञ्जित मासीत् शब्दशतस्य,
कलकलनिःसृत वारिणि स्नानं, तदनु यथेच्छं चायं पानम्,
उद्याने यातं प्रायातं, यान जनानां निबिडं व्रातम्,
पायस घृत साकल्य भोजनं, मृदुमोदक मिष्टान्न मोदनम्,
पूरी दूरीकृतेन्दुद्योतिताः, काचौरीश्चरु चारुलेपिताः,
शक्र दुर्लभं तक्ररायतं, सूपापूपमनूपमायतम्,
खश-उशीर चन्दन घनसारं, शुचि पानीयं हार तुषारम्,
भुक्त्वा पीत्वा हृष्ट पुमांसः, विचरन्ति बहवो विद्वांसः ।।5।।

निशि-आवास सुखेन वै, गत श्रमबुधान् विलोक्य ।
मोतीलालो हर्षयुतः, दिवसत्रयं संसेव्य ।।6।।

नाऽभूत्पूर्वं मयादृष्टं रत्नलालेन कर्हिचित् ।
साधुवाद शतां स्तस्माद्, योजकेभ्यो ददाम्यहम् ।।7।। ●

चर्चा का उच्चस्तर

—डॉ० स्वर्णलता अग्रवाल
बीकानेर

5 से 7 मई, 1986 को राजस्थान की राजधानी जयपुर में राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का 14वाँ त्रिदिवसीय महाधिवेशन अत्यन्त सुनियोजित एवं व्यवस्थित रूप में सम्पन्न हुआ। भीषण ग्रीष्मकाल में भी देश के विभिन्न भागों से संस्कृत के धुरंधर विद्वानों ने आकर भाग लिया यह संस्कृत और संस्कृति के प्रति भारतीय मनीषा के उत्कट प्रेम और निष्ठा का प्रतीक है एवं हम महासमिति के सदस्यों के लिए अतिगौरव का विषय है।

इस अधिवेशन की विभिन्न परिषदों में हुई अत्यन्त ज्ञानप्रद चर्चा एवं चिन्तकों व मनीषियों के प्रवचनों से यह तथ्य पाया कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम आदिभाषा और भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। विदेशी प्रशासन के आधिपत्य से उपेक्षित इस देववाणी को पुनः अपने प्राचीन गौरवमय पद पर प्रतिष्ठित करने से ही हमारी महिमामयी जनकल्याणकारी संस्कृति का पुनरुत्थान संभव है और तभी वर्तमान युग की भीषणताओं का अन्त होकर राष्ट्र में सुख शान्ति स्थापित हो सकती है।

चर्चा का स्तर उच्चकोटि का एवं हृदयग्राही था। संस्कृतवाङ्मय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार विनियम द्वारा उसमें निहित ज्ञान को आधुनिक परिस्थितियों में ढाल कर प्रयोगात्मक बनाने की दृष्टि से भी गोष्ठियाँ महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं—जिससे संस्कृत के ज्ञान को वर्तमान जीवन मूल्यों के साथ जोड़ा जा सके।

संस्कृत और संस्कृति की अनन्य उपासिका अध्यक्षा जी, महाधिवेशन के व्यवस्थापकगण विशेषकर वेद पारंगत विद्वान् संस्कृत-शिक्षानिदेशक और कर्त्तव्य निष्ठावान् महामंत्री महोदय इस सफल आयोजन के लिए बधाई के पात्र हैं।

कवि सम्मेलन में भी राजस्थान एवं अन्य राज्यों से आमंत्रित कवियों ने उच्चस्तरीय प्रतिभा का परिचय दिया। खेद का विषय यह था कि पूरे अधिवेशन में महिला प्रतिनिधियों की संख्या नगण्य रही इसका कारण यह तो नहीं माना जा सकता कि देश में संस्कृत की विदुषी बहिनों का अभाव है—संभवतः गार्हस्थ जीवन की परिस्थितियोंवश बहिनें ऐसे सुखद एवं ज्ञानप्रद अवसरों का लाभ नहीं उठा पातीं। मेरी मंगल कामना है कि आगामी महाधिवेशनों में इस दिशा में भी प्रयत्न किया जायेगा।

अधिवेशन में पारित प्रस्तावों की क्रियान्विति से संस्कृत विद्या का अधिकाधिक प्रचार प्रसार होगा और शीघ्र जन-मानस संस्कृतज्ञान से आलोकित होकर समाज के जीवन मूल्यों में परिवर्तन लाने में समर्थ होगा—जिससे वर्तमान में अधोगति की ओर जाते हुए राष्ट्रीय चरित्र को विकासोन्मुखी बनने में योग मिलेगा। ●

प्रत्यगंधा

—डॉ० जगन्नारायण पाण्डेय
आचार्य एवं साहित्य विभागाध्यक्ष
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर

विद्वद्रत्नधराया राजस्थान वसुन्धराया राजधानी राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलनेन संस्कृतस्य प्रचाराय प्रसाराय च दृढपरिकरा जयसिंहपुरी चिरात् प्रसिद्धं लघुकाशीत्यभिधानम् अद्यापि गर्वेणान्वर्थयति ।

राजस्वमन्त्रिपदे विराजमानायाः कमलालयायाः कमलायाः प्रेरणयाऽनुसन्धानदृष्ट्यापि सम्मेलनं किमपि विशिष्टतरं कार्यं सम्पादयिष्यतीति द्रढीयान् विश्वासः । एतदर्थं सर्वेऽपि सम्मेलनाधिकारिणो धन्यवादार्हाः ।

अथक परिश्रम

—डा० शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी
प्रवाचक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

जयपुर सम्मेलन की अभूतपूर्व सफलता और अथक परिश्रम के लिए श्री मोतीलाल जोशी संस्कृत जगत् की बधाइयों के पात्र हैं ।

उत्कृष्ट संचालन

—ज्वालाप्रसाद शर्मा
सदस्य, राजस्थान विधानसभा
जयपुर

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सफल व उत्कृष्ट संचालन के लिए मेरी हार्दिक बधाई ।

अभिनन्दनम्

—दिगम्बर झा
सम्मानित प्राध्यापक
कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय,
दरभंगा (बिहार)

संस्कृतभाषामुज्जीवयितुमभिवर्धयितुञ्चानुष्ठितं रा. सं.सा. सम्मेलनीयं चतुर्दश महाधिवेशनं सादरमभिनन्दनीयम् । प्रार्थये च सर्वविद्या निधानमीश्वरमीदृशानां सात्त्विकानां लेशतोऽप्यपरानरुन्तुदानां सुरसरस्वतीसंवर्धनजनितप्रभावभरेणविश्वशान्त्यौपयिकतां भजमानानां प्रयासानां साफल्यमान्तरिक्या श्रद्धया ।

प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन

—डॉ० भास्कराचार्य त्रिपाठी
सचिव, मध्यप्रदेश संस्कृत अकादमी
भोपाल

संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं उन्नयन की दिशा में राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का 14वां महाधिवेशन का कार्य प्रतिष्ठापूर्ण एवं भव्य आयोजन निःसंदेह स्तुत्य है ।

प्राप्तानेहः सूचितो वाक्समेतः
सोऽयं बन्धुर्यन्मह्नं नाभ्युपेतः ।
तत् संप्रीत्या मर्षयेत् पुण्यवाचां
श्री-संकेतः पाटलोऽसौ निकेतः ।।

—०—

अश्रुतपूर्व वक्तव्य

—पं० आद्याचरण झा
पूर्व प्रतिकुलपति, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय
दरभंगा

मुझे राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश-महाधिवेशन में शिक्षा परिषद् के उद्‌घाटन के लिए बुलाया गया। दिनांक 4-5-86 को अधिवेशन स्थल पर शाहपुरा बाग, आमेर रोड पहुँचने पर देखा कि विशाल पांडाल का निर्माण बड़े जोरों से होरहा है और विभिन्न कार्यकर्त्तागण अपने २ कार्य में व्यस्त हैं ।

लगभग 4 बजे सम्मेलन के महामंत्री श्री मोतीलाल जोशी, राजस्थान के राजस्वमंत्री तथा सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती कमला के साथ वहाँ पधारे । इससे पहले श्रीमती कमला से 1985 में अनेकानेक पत्राचार हुए थे, परन्तु उन्हें देखा नहीं था । मुझे उनसे परिचय कराया गया । मैं श्रीमती कमलाजी की सादगी और पाण्डाल में अपने हाथों से कुर्सी उठाने से लेकर सूचना पट्ट आदि के लगवाने के कार्य में व्यस्त देखकर दंग रह गया ।

कुछ देर बाद राजस्वमंत्री जी के आदेशानुसार हमें वहाँ से पर्यटन विभाग के विश्रामगृह में पहुँचाया गया । वहाँ एक डीलक्स कमरे में रहने की व्यवस्था की गई । लेकिन इसके बाद मेरी राजस्थान सरकार के अतिथिरूप में राजकीय अतिथि शाला में निवास-व्यवस्था की गई ।

दिनांक 5-5-86 को अधिवेशन स्थल सजे हुए एक नये नगर की तरह लग रहा था। श्रीमती कमला वहाँ उपस्थित थीं। वे पांडाल के गेट पर खड़ी होकर आगन्तुकों का स्वागत कर रही थीं। मैं पांडाल में अपने निर्धारित स्थान पर बैठा। पांडाल खचाखच भरा हुआ था। भारत के विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि पधारे हुए थे।

सम्मेलन की स्थायी अध्यक्ष श्रीमती कमला ने जो विस्तृत ऐतिहासिक, अभूतपूर्व और अश्रुतपूर्व वक्तव्य संस्कृत के प्रसंग में दिया—वह संपूर्ण सभास्थली को चौंका देने वाला था। उपस्थित विद्वज्जन भावना के प्रवाह में ऐसे बह गये कि जैसे अभिनय में दर्शकों को जब साधारणीकरण हो जाता है तो वे अपने आपको भूल जाते हैं। कमलाजी ने अपने भाषण में शब्द नित्यता को जिस अनोखे ढंग से प्रमाणित कर दिया वह बेमिसाल था। उन्होंने कहा कि "संस्कृत को यदि मात्र भाषा या बोली समझी जाती हैं तो इससे बढ़कर अज्ञानता की कोई दूसरी बात नहीं हो सकती—क्योंकि व्योम में, अन्तरिक्ष में और ब्रह्माण्ड में जो शब्द प्रतिध्वनित होते हैं वे संस्कृत हैं, वे ही जंगम जन्तुओं में, प्राणियों में और मनुष्य में वाणीदायिनी शक्ति हैं और समस्त ब्रह्माण्ड में वाक्शक्ति का संचालन है," इत्यादि।

कमलाजी की वे बातें जो वे कण्ठस्थ बोल रही थीं–मेरे कानों में, मेरे जीवन के अन्तिम क्षण तक झंकृत होती रहेंगी। यह सत्य है, तथ्य है और है बड़ा ही स्पष्ट विवरण।

मेरे विचार से उद्घाटन भाषण सारगर्भित होते हुए भी आकर्षक नहीं था।

इसके बाद भारत के राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री तथा गणमान्य प्रमुख व्यक्तियों के शुभकामनात्मक सन्देश पढ़कर सुनाये गये। इनमें प्रधानमंत्री श्रीराजीव गांधी का सन्देश उसी रूप में उनके चित्र के साथ मुद्रित कराकर संपूर्ण सभा में वितरित किया गया और हम लोगों को उसके साथ राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के पत्रों का फोटो स्टेट भी दिया गया। इन दोनों महानुभावों के सन्देश वस्तुतः औपचारिक संदेश नहीं थे बल्कि बड़े ही चिन्तनपूर्ण मन्तव्य थे।

द्वितीयउपवेशन का कार्यक्रम विभिन्न परिषदों के पृथक् पृथक उपवेशनों के रूप में प्रारंभ हुआ। इसमें वेद, व्याकरण, दर्शन, ज्यौतिष और साहित्य विषयों की परिषदें थी। प्रत्येक परिषद् के उद्घाटक और अध्यक्ष का विद्वत्तापूर्ण मुद्रितभाषण भी उनके मुख से सुना गया और उन्हें वितरित भी किया गया। व्याकरण परिषद् के अध्यक्ष और उद्घाटक श्रीहर्षनाथ और पं० विश्वनाथ मिश्र के मुद्रित भाषण व्याकरणशास्त्र की स्थायी सम्पत्ति के रूप में माने जायेंगे।

रात 7-30 बजे संस्कृत में समस्या पूर्तियों के कार्यक्रम में पचासों कवियों ने जमकर भाग लिया।

दि० 6-5-86 : प्रातः 9 बजे महाधिवेशन का मुख्य कार्यक्रम 'शिक्षा परिषद्' का आयोजन मुख्य पंडाल में प्रारंभ हुआ।

यहाँ चमत्कार की बात यह थी कि अपने घर से बहुत विलम्ब से भेजा गया मेरा उद्घाटन भाषण आकर्षकपुस्तिका-कार में मुद्रित हो चुका था। यह मुद्रित भाषण इस अवसर पर अत्यन्त भव्य और आकर्षक प्रकाशित स्मारिका में भी अविकल रूप में मुद्रित देखा गया। वस्तुतः यह यहाँ के व्यवस्थापकों का चमत्कार कहा जायेगा।

इस परिषद् का मुख्य विचार बिन्दु भारत सरकार की "नई शिक्षानीति में संस्कृत का स्थान" और त्रिभाषा योजना में संस्कृत का स्थान व योगदान था। ये ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय थे जिनपर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत के अवदान, योगदान एवं समावेश का गंभीर चिन्तन था। इस पर विभिन्न विद्वानों ने अपने 2 विचार व्यक्त किये। श्रीमती कमला ने नई शिक्षा नीति के मूलाधार नैतिक शिक्षा और भारतीयता की चर्चा को संस्कृत की मान्यता का सूचक माना-क्योंकि इनका मूलस्रोत संस्कृत ही है और संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति की चर्चा बेकार है।

श्री श्रीराम गोटेवाला ने अधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर शिक्षा नीति में संस्कृत के विकास के लिए स्वतंत्र रूप से उल्लेख का जो मुद्दा उठाया था वह तथ्यात्मक है—और संस्कृत सेवियों को सर्वथा भ्रम से दूर रहकर इसके लिए भारत सरकार एवं देशके माननीय प्रधानमंत्री जो नई शिक्षा नीति के जनक हैं उनका ध्यान आकर्षित :कर सांस्कृतिक मूल्य, देश की अखण्डता, सद्भाव, चरित्र निर्माण और नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में पारम्परिक व आधुनिक संस्कृत की विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर पर्याप्त एवं प्रचुर सुविधाओं के विस्तार की नीति स्पष्टतया घोषित करानी चाहिए।

इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जी जोशी ने कहा—"संस्कृत सेवको के चरणचिह्नों पर ही केवल नहीं चलूंगा बल्कि प्रत्येक ड़ग पर उनके छोड़े गये चरण चिह्नों की धूलि को मस्तक पर लगाते हुए मैं संस्कृत की सेवा के लिए अपने को समर्पित कर दूंगा।" यह सुनकर मंच पर व सभा-

मण्डप में बैठे हुए विद्वानों की आँखों से आनन्द की अश्रुधारा-प्रवाहित होने लगी, जिनमें मैं भी एक था।

मुख्यमंत्रीजी ने "राजस्थान संस्कृत शोधसंस्थान" की प्रस्तावित परियोजना को वहीं मौखिकरूप में स्वीकृति देदी—और कहा कि इसके लिए वित्त की कोई भी समस्या इसके मार्ग में बाधक नहीं होगी।

मैं अपने को गौरवान्वित मानता हुवा भी लज्जा से नतमस्तक हूँ निश्चय ही गहनश्रम और संकल्प से श्रीमती कमला ने संस्कृत शोध संस्थान का जो कलेवर तैयार कराया है-उसका मूर्तरूप विश्वगुरु भारत राष्ट्र के स्वर्णिम अतीत को वर्तमान के साथ जोड़ने का एक सुदृढ़ सेतु होगा।

इसी अवसर पर मुख्यमंत्रीजी ने संस्कृत की अभिनव कृतियों का विमोचन किया और राजस्थान के तीन प्रख्यात और उद्भटविद्वानों को सम्मानित किया—यह भी इस महाधिवेशन का महत्त्वपूर्ण पक्ष था।

सभी परिषदों की पृथक् 2 बैठकें गत दिन की तरह प्रारंभ हुई। बैठकों की पूरी कार्यवाही की समीक्षा की गई और उनके अध्यक्षों से इन गोष्ठियों के प्रतिवेदन प्राप्त किये।

सायंकाल शास्त्रार्थ प्रतियोगिता का कार्यक्रम अत्यन्त ही नगण्य रहा। मैं समझता हूँ कि आगे के अधिवेशन में इस कमी की पूर्ति उस तरह होगी—जैसे उत्कृष्ट संस्कृत कवि-सम्मेलन से हुई।

रात 8 बजे संस्कृत कविसम्मेलन प्रारंभ हुआ जो एक बजे रात तक चलता रहा। भावविभोर श्रोता उठने का नाम ही नहीं ले रहें थे। संस्कृत में अद्यतन विचारधारा की कविताओं को सुनकर यथार्थतः लोग अचम्भित हो गये। पंजाब के आंतकवादियों और उग्रवादियों की समस्या, कश्मीर की समस्या, पाकिस्तानी घुसपैठियों की समस्या को लेकर शाहबानों काण्ड तक की मधुरगूंज संस्कृत की प्राचीन और नवीन दोनों शैलियों में सुनी गई। इसके साथ संस्कृत में आधुनिक विभिन्न विधाओं में प्रणयगीत, सिनेमाधुन, कव्वाली आदि भी सुने गये।

दिनांक 7-5-1986 को शिक्षा परिषद् द्वारा की गई गंभीर चर्चाओं का आकलन हुआ। संस्कृत पत्रकार गोष्ठी हुई जिसमें समस्त भारत से निकलने वाली नियमित संस्कृत पत्रिकाओं के अधिकांश सम्पादकों ने भाग लिया।

समापन समारोह में शिक्षामंत्री माननीय श्रीदेवपुरा पधारे थे। महामंत्री श्री मोतीलाल जोशी द्वारा संकलित प्रस्तावों को महाधिवेशन में पारित किया गया। देवपुराजी ने अधिवेशन की ठोस कार्य प्रक्रिया से प्रभावित होकर सम्मेलन की प्रशंसा की और संस्कृत के लिए और सम्मेलन द्वारा लिए गये निर्णयों के लिए यथा संभव सब कुछ करने का वचन दिया।

बाहर से आगत विद्वानों की ओर से व्रजमण्डल मथुरा से आये हुए प्रख्यात मनीषी डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी ने अपना हास्यमिश्रित भाषण जब प्रारंभ किया तो सबके सब जहाँ हंसते हुए लोट-पोट हो रहे थे, वहीं उनकी विद्वता की दाद दे रहे थे। उनसे रसखान के ऐतिहासिक पद्यों का ठीक उसी छन्द में संस्कृत पद्यानुवाद सुनकर सभी बाग-बाग होगये।

अन्त में श्रीमती कमला ने सम्मेलन की ओर से सभी को कृतज्ञता एवं धन्यवाद ज्ञापन किया और कहा कि मैं आपकी यादों को संजोये रहूँगी और आप भी अपनी यहाँ की स्मृति को संजोये हुए अपने २ घर लौटेंगे और यहाँ की असुविधाओं को भूल जायेंगे। ●

दिठौना

श्रीकृष्ण शर्मा

अध्यक्ष, शब्दसंसार 'गीतांजलि,' 26 मंगल मार्ग, जयपुर

राजधानी में संस्कृत के ऐसे सर्वविध सफल एवं अनुपम आयोजन के लिये हार्दिक बधाई। प्रधानमंत्री माननीय श्री राजीव गाँधी द्वारा प्रवर्तित नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के प्रारम्भ में शिक्षा को मानवता और नैतिकता से सम्पन्न करने हेतु संस्कृत कर्मियों, मनीषी-विद्वानों का यह सम्मेलन आकाशदीप की भाँति सिद्ध होगा पर जब तक हम उत्तर भारतवासी स्वयं संस्कृत नहीं सीखते तथा दक्षिण भारत की कम से कम किसी एक भाषा को नहीं सीखते हमारी कामना मनोकामना ही बनी रहेगी। ●

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन

चतुर्दश जयपुर महाधिवेशन 5 से 7 मई, 1986

पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव : 1

राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान की स्थापना

संस्कृत शोध संस्थान की जो परियोजना राजस्थान के तत्कालीन शिक्षामन्त्री श्रीमती कमलाजी द्वारा तैयार कराकर राष्ट्र के शिक्षा एवं शोधविदों के समीक्षण के लिए भेजी गई है–वह निश्चय ही संस्कृत शिक्षा क्षेत्र की मूलभूत आवश्यकता है। इस मर्म को पहचानने एवं उसका समुचित समाधान एक ठोस कार्य योजना के रूप में प्रस्तुत करने हेतु संस्कृत जगत् उनका हृदय से आभार प्रकट करता है।

1956 में केन्द्रीय संस्कृत कमीशन जब राजस्थान के दौरे पर आया था तो उसने भी यहां की संस्कृत और वैदिक वाङ्मय की पृष्ठभूमि में राजस्थान को उच्च अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र के रूप में विकसित एवं प्रतिष्ठित करने का सरकार से अनुरोध किया था। संस्कृत के अन्तर्निहित ज्ञान विज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाने तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के संदर्भ में उनके उपयोग के लिए सुनियोजित पर्याप्त और प्रचुर अनुसंधान की असंदिग्ध आवश्यकता है।

अतः राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन भारत सरकार से तथा राजस्थान सरकार के माननीय मुख्यमंत्री एवं शिक्षामंत्री से अनुरोध करता है कि राज्य की सातवीं योजना में योजना के पुनरीक्षण के समय राजस्थान शोध संस्थान की स्थापना की संस्कृत शिक्षा निदेशालय द्वारा निर्मित परियोजना को मूर्त्तरूप देने के लिये आवश्यक वित्तीय प्रावधान कराया जाय। इस राष्ट्रीय कार्यक्रम को मूर्त्तरूप देने में गैर सरकारी क्षेत्र के वांछित योगदान हेतु सम्मेलन भी सरकार द्वारा निर्धारित दायित्व वहन करने हेतु अपने आपको प्रस्तुत करता है।

साथ ही यह महाधिवेशन राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान की परियोजना पर राष्ट्र से आमन्त्रित विचारों एवं सुझावों के अनुवीक्षण एवं योजना के प्रारूप में उनके यथोचित समावेश हेतु सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती कमलाजी को अधिकृत करता है। उनके द्वारा नियुक्त समिति द्वारा परिवर्धित एवं परिशोधित प्रारूप इस सदन द्वारा परवर्धित एवं परिशोधित प्रारूप माना जायेगा। ●

प्रस्ताव : 2

राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर में संस्कृत अध्ययन संकाय के शिक्षण विभाग की स्थापना

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न शिक्षण संकायों की परीक्षा एवं शिक्षण दोनों व्यवस्थायें संचालित की जाती हैं, अतः संस्कृत अध्ययन संकाय (ओरियन्टल) फैकल्टी के विषय समूहों का भी एक शिक्षण एवं अनुसंधान विभाग विश्वविद्यालय परिसर में संचालित करने हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय की सिण्डीकेट ने 1978-79 में निर्णय लेकर राजस्थान सरकार को प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति के लिये प्रस्ताव प्रस्तुत किया था– किन्तु अभी तक भी उसकी

स्वीकृति नहीं हो सकी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी इस मामले को किसी भी नये शिक्षण विभाग के संचालन व उसके विकास का पूरा का पूरा वित्तीय प्रभार तभी वहन करता है–जबकि एक बार सम्बन्धित राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय अपने स्तर पर उसकी स्थापना और संचालन कर दे, यह कह कर टाल रहा है। अतः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भारत सरकार एवं राज्य सरकार का राजस्थान विश्वविद्यालय के इस विचाराधीन प्रस्ताव की ओर ध्यानाकर्षण करते हुए राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन अनुरोध करता है कि राजस्थान विश्वविद्यालय को एतदर्थ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं राज्य सरकार द्वारा वांछित प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति शीघ्र प्रदान करायी जाय ताकि संस्कृत अध्ययन संकाय का शिक्षण विभाग भी अन्य संकायों के शिक्षण विभागों की तरह राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर में संचालित हो सके। राजस्थान विश्वविद्यालय से अनुरोध है कि वह भी इस मामले में अद्यतन पहल करे। ●

प्रस्ताव : 3

संस्कृत कॉलेजों के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानदण्ड निर्धारित कराने सम्बन्धी

राजस्थान विश्वविद्यालय व देश के अन्य विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध संस्कृत महाविद्यालयों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदान नहीं दिया जा रहा है और न उनको अनुदान के लिये 2 एफ. के अन्तर्गत वि.अ.आ. द्वारा पंजीकृत ही किया जा रहा है। इसके लिये सारे देश के संस्कृत कालेजों से छात्र संख्या एवं अध्यापक संख्या के आंकडे एकत्र कर तदनुसार मानदण्डों का सुझाव देने हेतु एक कमेटी वि. अ. आ. द्वारा करीब 5-6 वर्ष पूर्व बनाई गई थी।

इस कमेटी के गठन के बाद वि. अ. आ. द्वारा देश के संस्कृत कॉलेजों की छात्र व अध्यापक संख्या के आंकड़े एकत्रित करने का कार्य भी गत पाँच-छः वर्ष से चल रहा है। किन्तु अभी तक भी कोई पारिणामिक कार्यवाही वि. अ. आ. द्वारा की गई प्रतीत नहीं होती। अतः देश के अन्य संस्कृत कॉलेजों के साथ-साथ राजस्थान के संस्कृत कॉलेज भी जो छात्र संख्या, शिक्षक संख्या, भवन, पुस्तकालय आदि की दृष्टि से अन्य कई राज्यों के संस्कृत महाविद्यालयों के संतुलन में समृद्ध हैं, वि. अ. आ. से अनुदान के अभाव में भवन विस्तार, पुस्तकालय विकास, शिक्षक-भवन, खेल-मैदान, प्रयोगशाला, छात्र कल्याण, छात्रावास आदि विविध परियोजनाओं के लिये वि. अ. आ. के अनुदान से वंचित रह रहे हैं।

अतः राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के इस चतुर्दश महाधिवेशन का प्रस्ताव है कि भारत सरकार एवं राज्य सरकार शीघ्र वि. अ. आ. से उच्च स्तरीय मंत्रणा करके राजस्थान व देश के विकासमान संस्कृत कॉलेजों के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के लिये पृथक् मानदण्ड निर्धारित करावें, तथा संस्कृत कॉलेजों को अन्य कॉलेजों की तरह वि. अ. आ. से 2 एफ के अन्तर्गत अनुदान के लिये पंजीकरण हेतु सुविधा प्रदान करावे ताकि तदनुसार राजस्थान व देश के संस्कृत कॉलेज भी वि. अ. आ. से अनुदान ले लाभान्वित हो कर विकासोन्मुख हो सकें। ●

प्रस्ताव : 4

संस्कृत कॉलेजों व सामान्य कॉलेजों के वेतनमानों के एकीकरण हेतु

हिमाचल प्रदेश और बिहार सरकार द्वारा संस्कृत कॉलेजों के वि० अ० आ० वेतनमान स्वीकार किये जा चुके हैं और वहाँ सामान्य शिक्षा के समानान्तर संस्कृत कॉलेजों के स्टाफ को वेतनमान दिये जा रहे हैं। राजस्थान में संस्कृत

कॉलेजों के वेतनमानों में सामान्य शिक्षा के कॉलेजों के वेतनमानों के संतुलन में तथा विद्यमान वेतनमानों में ही असाधारण विसंगतियाँ हैं। जैसे—व्याख्याता का वेतनमान सामान्य महा विद्यालय के व्याख्याता के वेतनमान से एक स्टेज नीचे है, प्रोफेसर एवं प्रिंसिपल शास्त्री कॉलेज का वेतनमान चार स्टेज नीचे हैं, प्राचार्य आचार्य कॉलेज का वेतनमान दो स्टेज नीचे है। यही नहीं संस्कृत शिक्षा में ही स्कूल शिक्षा के प्रिंसिपल का वेतनमान कॉलेज शिक्षा के प्रिंसिपल एवं प्रोफेसर से उच्च है—जैसे— एस० टी० सी० प्रिंसिपल तथा प्रिंसिपल शास्त्री कालेज/प्रोफेसर पी० जी० हैड आदि।

अतः राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह महाधिवेशन भारत सरकार/राजस्थान सरकार से अनुरोध करता है कि महाविद्यालयी शिक्षा में सामान्य शिक्षा के वेतनमानों के समान ही संस्कृत महाविद्यालय के वेतनमान संस्थापित किये जावें, ताकि संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र से प्रतिभाओं का पलायन रुक सके, नयी प्रतिभायें निःसंकोच आ सकें तथा संस्कृतज्ञ हीन भावना से मुक्त हो सकें। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय (संस्कृत शिक्षा यूनिट) द्वारा इस असमानता के निराकरण के लिये आवश्यक वित्तीय सहायता भी राज्य सरकारों को प्रदान की जाती है—अतः उस योजना के अन्तर्गत भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय राजस्थान सरकार को संस्कृत शिक्षा के वेतनमानों का सामान्य शिक्षा के वेतनमानों की समतुल्यता के लिये वांछित वित्तीय सहायता प्रदान करे।

●

प्रस्ताव : 5

संस्कृत व सामान्य विद्यालयीय शिक्षा की वेतन विसंगतियों के निराकरण हेतु

संस्कृत विभागीय स्कूल शिक्षा में प्रधानाध्यापक प्रवेशिका व उपाध्याय इन दो पदों का वेतनमान सैकण्डरी एवं हायर सैकण्डरी के प्रधानाध्यापक से मात्र एक स्टेज नीचे है, जबकि सरकार द्वारा उपाध्याय प्रधानाध्यापक को 75/– रु० मासिक विशेष वेतन भी दिया जा रहा है। जिससे वेतनमान की समानता के सन्तुलन में राज्य सरकार को अधिक वार्षिक अर्थ प्रभार वहन करना होता है। इसी प्रकार सामान्य शिक्षा ब्रांच के तृतीय, द्वितीय एवं प्रथम श्रेणी शिक्षक को उच्च प्रशिक्षण योग्यता के आधार पर जो हायर स्टेज वेतन दिया हुआ है—वह सुविधा संस्कृत शिक्षा के लिये प्रदान की हुई नहीं है।

अतः राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के इस महाधिवेशन का प्रस्ताव है कि उपाध्याय विद्यालय प्रधान के पद के साथ विशेष वेतन के बजाय प्रवेशिका एवं उपाध्याय प्रधानाध्यापकों के वेतनमान सैकण्डरी एवं हायर सैकण्डरी प्रधानाध्यापकों के समतुल्य प्रतिस्थापित किये जावें तथा विद्यालयीय शिक्षा के स्तर पर जो-जो अधिक वेतन विसंगतियाँ चल रही हैं उनका निराकरण किया जावे ताकि संस्कृत शिक्षक मानसिक पीड़ा से मुक्त हो सकें।

सामान्य शिक्षा व संस्कृत शिक्षा के समान कार्य और प्रकृति वाले समान पदों के वेतनमानों में अन्तर का तुलनात्मक मानचित्र :

क्र. सं.	पदों का नाम	वेतन स्केल कॉलेज/ सामान्य शिक्षा	वेतन स्केल कॉलेज/ संस्कृत शिक्षा	पारस्परिक अन्तर का विवरण
(क)	**महाविद्यालय शिक्षा के स्तर पर**			
1.	निदेशक	31	25	6 स्टेज
2.	प्रिंसिपल पी. जी. कॉलेज/आचार्य कॉलेज	26	23	3 ,,
3.	पी. जी. हैड/प्रोफेसर	22	19	3 ,,
4.	प्रिंसिपल डिग्री कॉलेज/शास्त्री कॉलेज	22	18	4 ,,
5.	लेक्चरार पी. जी/आचार्य	21	18	3 ,,
6.	लेक्चरार डिग्री/शास्त्री	19	18	1 ,,

(ख) विद्यालयीय शिक्षा के स्तर पर			
1. प्रधानाध्यापक हायर सैकण्डरी/उपाध्याय विद्यालय	19	18	1 ,,
2. प्रधानाध्यापक सैकण्डरी/प्रवेशिका विद्यालय	18	17	1 ,,

(i) वेतनमानों में विद्यमान स्टेजों में भी कोई एक सिद्धान्त परिलक्षित नहीं होता। जैसे कि—यदि संस्कृत शिक्षा को सामान्य शिक्षा से कम रखना है तो वह भी हर पोस्ट के लिए एक सी होनी चाहिये, अर्थात् एक स्टेज नीचे, दो स्टेज नीचे या तीन स्टेज नीचे, किन्तु ऐसा भी नहीं है।

(ii) हमेशा कहा जाता है कि संस्कृत शिक्षा निदेशालय की स्थापना के समय वित्त विभाग ने संस्कृत शिक्षा के वेतन स्केल एक स्टेज नीचे रखने का निर्णय लिया था, किन्तु उसकी भी कार्यान्विति नहीं दीख पड़ती।

(iii) समान स्तर में पदों के समान वेतन स्केल वाली नीति भी प्रतीत नहीं होती।

(iv) जहाँ स्केल में विभेद होना चाहिये वहाँ नहीं है। जैसे—स्नातक एवं स्नातकोत्तर के लेक्चरार का एक ही स्केल रखा हुआ है।

(v) स्तर या संवर्ग की प्रवरता एवं अवरता के गुणावगुण का भी कोई आधार नहीं अपनाया गया है। डिग्री एवं पी. जी. हैड जैसे प्रवर पदों की वेतन स्केल 18 या 19 है। जबकि उनसे अवर पद संस्कृत एस. टी. सी. स्कूल के प्रधानाध्यापक की वेतन स्केल सं० 21 है, अर्थात उच्च है।

(vi) स्कूल ब्रांच में अन्य सब पद समान स्केल में हैं किन्तु प्र० अ० प्रवेशिका/उपाध्याय विद्यालय में एक स्टेज का विभेद है। ●

प्रस्ताव : 6

उपाध्याय/हायर सैकण्डरी शिक्षक का पदनाम व्याख्याता स्कूल शिक्षा करने हेतु

संस्कृत शिक्षा में उपाध्याय (हायर सेकण्डरी) शिक्षक का पदनाम वरिष्ठ अध्यापक है और सामान्य शिक्षा में हायर सेकण्डरी शिक्षक का पदनाम व्याख्याता-स्कूल शिक्षा किया जा चुका है। संस्कृत शिक्षा और सामान्य शिक्षा में इस पद का वेतनमान भी समान हो चुका है, अतः प्रस्ताव है कि पदनाम भी समान कराया जावे। ●

प्रस्ताव : 7

1-9-1981 से संशोधित वेतन वाले अधीनस्थ संस्कृत सेवा के पदों के संस्कृत शिक्षा सेवा में स्थानान्तरण

दिनांक 1-9-1981 से प्रधानाध्यापक प्रवेशिका विद्यालय तथा व्याख्याता संस्कृत कॉलेज शिक्षा के वेतनमानों में हुए संशोधन के फलस्वरूप अधीनस्थ सेवा की अनुसूची से इन दोनों पदों को राज्य सेवा की अनुसूची में स्थानान्तरित करने की पारिणामिक कार्यवाही अभी तक भी नहीं हुई है, जबकि इसमें कोई वित्तीय प्रभार भी सम्मिलित नहीं है।

अतः सम्मेलन का प्रस्ताव है कि यह संशोधन तत्काल प्रभाव से कराया जाय ताकि प्रवेशिका विद्यालय प्रधानों को उनके अधीनस्थ स्टाफ के संबंध में नियमानुसार कार्यालय अध्यक्ष के अधिकार भी प्राप्त हो सके। ●

प्रस्ताव : 8

संस्कृत निदेशालय के सुदृढ़ीकरण एवं विस्तार हेतु

छठी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक संस्कृत विद्यालयों के विस्तार के सन्तुलन में संस्कृत शिक्षा के शैक्षिक प्रशासन में समानान्तर विस्तार नहीं हुआ है। तथा न संस्कृत शिक्षा के शैक्षिक प्रशासन का कोई क्षेत्रवार सेटअप है। फलत: उच्च प्राथमिक व प्राथमिक संस्कृत विद्यालयों के स्टाफ की वेतन भुगतान व्यवस्था अन्य जिलों के संस्था प्रधानों को सौंपी हुई है। संस्था निरीक्षण एवं परिवीक्षण व्यवस्था भी स्टाफ के अभाव में दृढ़ता से नहीं हो पा रही है। एकमात्र संस्कृत निदेशालय का मुख्यालय जयपुर में है और यह भी शैक्षिक प्रशासन की दृष्टि से सर्वांगपूर्ण नहीं है, जैसे—संस्कृत निदेशालय में निदेशक का पद है उपनिदेशक का नहीं, उपनिरीक्षकों के 2 पद हैं किन्तु निरीक्षक का एक भी पद नहीं है। इसी प्रकार संस्था संख्यानुपात में न्यूनतम सहायक उपनिरीक्षकों एवं मंत्रालयिक कर्मचारियों के भी पद नहीं है। निदान छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कार्यदायित्व निदेशक को ही निर्वाहित करना होता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत चतुर्दश महाधिवेशन का प्रस्ताव है कि शिक्षासत्र 1986–87 में संस्कृत निदेशालय के लिए निम्न सुविधायें प्रदान करायी जाय:—

(1) मुख्यालय पर एक उपनिदेशक व एक निरीक्षक का पद स्थापित किया जाय।

(2) जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा तथा अजमेर डिवीजनल क्षेत्रों की सुविधा के लिये एक-एक क्षेत्रीय कार्यालय की रचना की जाय।

(3) शैक्षिक एवं प्रशासनिक कार्यों एवं दायित्वों का पदानुरूप वर्गीकरण किया जाय।

प्रस्ताव : 9

राज्य की सातवीं योजना में संस्कृत शिक्षा के लिए वांछित प्रावधान कराने में संस्कृत शिक्षा की योजना

राजस्थान राज्य की सातवीं योजना में संस्कृत शिक्षा की नई विकास योजनाओं के लिए प्रस्तावित धनराशि के सन्तुलन में 50 % से भी न्यून वित्तीय प्रावधान स्वीकार हुआ है। जबकि यह योजना संस्कृत शिक्षा के मूल आधारों को सुदृढ़ता देने के लिए वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक तरीकों पर संस्कृत दिवस 1983-84 के अवसर पर राज्य के मुख्यमन्त्री द्वारा दिये गये निर्देशों के अधीन समूचे राज्य के सभी भागों में संस्कृत शिक्षा की सुविधा जन आकांक्षाओं के अनुरूप निर्मित कराई गई थी जिसकी कार्यान्विति से 7 वीं योजना के अन्तिम चरण तक राजस्थान में संस्कृत शिक्षा की दृष्टि से वाञ्छित उपलब्धियों के पश्चात् भविष्य के लिए एक ठोस आधार बनाने की संकल्पना थी। किन्तु वांछित वित्तीय प्रावधान के अभाव में कोई भी नया कार्य नये विद्यालयों की स्थापना, नये विषय, शिक्षक पदों की कमी पूर्ति, क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना, प्रशासनिक / वीक्षक पदों की संरचना, शोधकार्य, संस्थाओं को अनुदान व क्रमोन्नति आदि होना संभव प्रतीत नहीं होता।

अत: सम्मेलन का प्रस्ताव है कि राज्य की सातवीं योजना के पुनरीक्षण के समय भारत सरकार के योजना आयोग व राजस्थान सरकार के आयोजना विभाग द्वारा संस्कृत शिक्षा की 7 वीं योजना के लिए यथा प्रस्तावित वित्तीय प्रावधान प्रदान कराया जाय। ताकि योजना के अन्त 1991 तक राजस्थान के प्रत्येक पंचायत समिति स्तर तक जनभावनाओं के अनुरूप नये संस्कृत विद्यालय, विद्यालयों की क्रमोन्नति, अनुदान, छात्र कल्याण कार्यक्रमों को मूर्तरूप उपलब्ध हो सके तथा संस्कृत शिक्षा के शैक्षिक व प्रशासनिक गुणात्मक विकास को एक ठोस आधार मिल सके।

प्रस्ताव : 10

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संस्कृत का समावेश

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित संस्कृत शिक्षा परिषद् प्रस्ताव करती है कि—"देश के सभी मनीषियों, राजनेताओं व शिक्षाशास्त्रियों की राय में स्वतन्त्रता के बाद नैतिक मूल्यों में ह्रास हुआ है। भारत सरकार द्वारा नवीन शिक्षा पद्धति तुरन्त लागू की जा रही है। संस्कृत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। राष्ट्र की अखंडता, एकता, नैतिक मूल्यों की स्थापना एवं आध्यात्मिकता की यह शिक्षा मूलाधार है। अतः नवीन शिक्षा पद्धति में संस्कृत विषय का समुचित समावेश आवश्यक है।

सम्मेलन भारत सरकार से माँग करता है कि प्राथमिक शिक्षा से माध्यमिक शिक्षा पर्यन्त संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। इससे राष्ट्र की अखण्डता एवं एकता को बल मिलेगा, नैतिक शिक्षा, अध्यात्म एवं प्राचीन आदर्शों से वर्तमान भारत को जोड़े रखने का माननीय प्रधानमन्त्री श्रीराजीव गाँधी का लक्ष्य पूरा होगा तथा सर्वोपरि राष्ट्र की अखण्डता एवं एकता के साथ-साथ समग्र देश में नवीन चेतना का प्रादुर्भाव व प्रसार होगा। ●

प्रस्ताव : 11

दूरदर्शन सेवाओं में संस्कृत कार्यक्रमों का समावेश

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन केन्द्रीय सरकार से माँग करता है कि दूरदर्शन के कार्यक्रमों में संस्कृत कार्यक्रमों के लिए अधिक समय निर्धारित किया जाना चाहिए। सामान्यतया प्रत्येक सप्ताह कम से कम एक घन्टे का कार्यक्रम संस्कृत कवियों की काव्य प्रस्तुति, संस्कृत नाटकों का प्रदर्शन, संस्कृत लघुवार्ता, प्रादेशिक संस्कृत सर्वेक्षण आदि के लिए निर्धारित किया जाना चाहिए। साथ ही प्रतिदिन 5 मिनट संस्कृत भाषा में भी समाचारों के प्रसारण की व्यवस्था होनी चाहिये। ●

प्रस्ताव : 12

सम्मेलन द्वारा नियमित पत्र का प्रकाशन

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन प्रस्ताव करता है कि संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन द्वारा मासिक या त्रैमासिक संस्कृत पत्र का प्रकाशन किया जाय। पूर्व में संस्कृत रत्नाकर के माध्यम से संस्कृत की सेवा में अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे प्रकाशन की नितान्त आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति इस प्रदेश के प्राचीनतम प्रतिनिधि संगठन के नाते प्रस्तुत संस्थान द्वारा की जानी चाहिए तथा इसके लिए आवश्यक अनुदान भारत सरकार एवं राज्य सरकार से अवाप्त किया जाना चाहिए। ●

प्रस्ताव : 13

शासन द्वारा दिए जाने वाले प्रशस्तिपत्रों की भाषा संस्कृत हो

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित संस्कृत शिक्षा परिषद् भारत सरकार एवं देश की राज्य सरकारों से यह अनुरोध करती है कि "संस्कृत भाषा हमारे राष्ट्र की और संस्कृति की आत्मा है तथा हमारी प्राचीनतम भाषा है । अतः शासन द्वारा दिए जाने वाले प्रशस्ति-पत्र संस्कृत भाषा में ही दिए जाने चाहिए तथा समस्त प्रशासकीय एवं वैदेशिक सेवाओं के लिए संस्कृत का साधारण ज्ञान अनिवार्य किया जाना चाहिए ।

प्रस्ताव : 14

संस्कृत पत्रकारिता के विकास एवं विस्तार हेतु

1. संस्कृत पत्रकारिता एक विशिष्ट विधा है। किन्तु यह सत्य है कि अपनी तीन दशक की जीवन यात्रा के बाद भी अब तक संस्कृत पत्रकारिता परिपुष्ट नहीं हो सकी है। पाठकों की न्यूनता इसका मुख्य कारण है।

पाठकों की न्यूनता के आधार हैं:—

(क) तथ्य और शैली की दृष्टि से संस्कृत समाचार-पत्रों का पाठकों को आकर्षित न कर पाना,

(ख) संस्कृत जगत् का सही चित्र पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में पूर्ण सक्षम न होना तथा

(ग) प्रकाशन में कलात्मक दृष्टिकोण का अभाव।

अत: राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के 14 वें महाधिवेशन पर आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकार परिषद् देश के सभी संस्कृत पत्रकारों से अनुरोध करती है कि संस्कृत में निहित ज्ञान-विज्ञान को सुरुचिपूर्ण और ग्राह्य सहज शैली में प्रस्तुत करने का प्रयास करें तथा वे समाज की आम समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील हों ।

2. राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकार परिषद् सर्वसम्मति से यह भी प्रस्ताव करती है कि—

(क) केन्द्रीय एवं प्रान्तीय राज्य सरकारें भारतीय संस्कृति के उदात्त जीवन-मूल्यों के प्रचार-प्रसार हेतु निकलने वाले संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के प्रोत्साहन हेतु विज्ञापन तथा छपाई योग्य कागज का कोटा अधिक निर्धारित करें,

(ख) संस्कृत शिक्षा एवं सामान्य शिक्षा के विद्यालयों में संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की खरीद को अनिवार्य करें,

(ग) पत्रकार सूची में संस्कृत पत्रकारों का समावेश कर उन्हें भी वे सभी सुविधाएँ प्रदान कराई जाय जो अन्य भाषाओं के पत्रकारों को दी जा रही हैं।

(3) यह परिषद् संस्कृतज्ञों एवं संस्कृत सेवी संगठनों से भी अनुरोध करती है कि वे संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या बढ़ाने में तथा अपने-अपने क्षेत्र से सम्बन्धित संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं को महत्त्वपूर्ण घटनाओं / समारोहों/ योजनाओं आदि के व्यापक संवाद भेजने में सक्रिय सहयोग प्रदान करें ।

(4) अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकार परिषद् राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन से अनुरोध करती है कि वह देश के विभिन्न भागों से निकलने वाले समस्त पत्र-पत्रिकाओं की भाषा, शैली एवं विषय वस्तु की समीक्षा हेतु एक सर्वेक्षण समिति गठित करे तथा समस्त पत्र-पत्रिकाओं का समीक्षात्मक विश्लेषण करवा कर उनके विकास के लिये उचित सुझाव दें, जिससे संस्कृत पत्रकारिता विकसित हो सके । साथ

ही संस्कृत पत्रकारिता की समृद्धि के लिए सम्मेलन द्वारा एक स्थायी अखिल भारतीय पत्रकार परिषद् का भी गठन किया जाय। जिससे संस्कृत पत्रकार को बल मिल सके और यह संगठन सरकार व समाज से संस्कृत पत्रकारिता के विकास के लिये आवश्यक सुविधाओं की प्राप्ति हेतु समर्थ आवाज उठा सके।

प्रस्ताव : 15

प्रधानाध्यापक सैकण्डरी स्कूल के पद पर शास्त्री/शिक्षाशास्त्री की नियुक्ति एवं पदोन्नति

राजस्थान शिक्षा सेवा नियम (आर. इ. एस. आर.) 1970 की अनुसूची में प्रधानाध्यापक सैकण्डरी पद पर सीधी भर्ती के लिये न्यूनतम योग्यता स्नातक उपाधि, साथ में शिक्षा में डिग्री या डिप्लोमा निर्धारित की हुई है। राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा प्रदान की जाने वाली "शास्त्री" उपाधि स्नातक डिग्री है तथा राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली "शिक्षाशास्त्री" उपाधि शिक्षा में डिग्री है–यह स्थिति राजस्थान विश्वविद्यालय एवं राज्य सरकार द्वारा पूर्णत: स्पष्ट की हुई है– किन्तु इसके बावजूद भी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय की शास्त्री एवं शिक्षाशास्त्री उपाधियों के बारे में यह पशोपेश की नीति अपनाई जा रही है कि शास्त्री केवल संस्कृत विषय स्नातक उपाधि है पूर्ण स्नातक नहीं और शिक्षाशास्त्री उपाधि केवल संस्कृत के लिये शिक्षा उपाधि है, पूर्ण शिक्षा उपाधि (बी. एड.) नहीं। इसके फलस्वरूप लोक सेवा आयोग द्वारा प्रधानाध्यापक सैकण्डरी पद के लिये चयनित शास्त्री/बी. ए. व शिक्षाशास्त्री योग्यताधारियों को प्रधानाध्यापक सेकण्डरी स्कूल के पद पर पदस्थापित नहीं किया गया है। और सेवारत ऐसे व्यक्तियों को पदोन्नति के अवसर से वंचित किया गया है। निदान ऐसे कुछ व्यथित शिक्षकों ने इस अन्याय के विरुद्ध ट्रिब्यूनल में अपील दायर की। ट्रिब्यूनल का निर्णय शिक्षकों के पक्ष में हुआ। इसके बावजूद भी उसकी पालना को लम्बित किया जा रहा है– दूसरी ओर सेवारत शिक्षाशास्त्री उपाधिधारी पदोन्नति से वंचित व्यक्तियों को पुन: बी. एड. प्रशिक्षण के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। क्योंकि उनके द्वारा गृहीत शिक्षाशास्त्री प्रशिक्षण को केवल संस्कृत के लिये बी. एड. मानकर उन्हें पदोन्नति से वंचित रख दिया गया है।

अत: राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन प्राथमिक माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय से शास्त्री या शिक्षाशास्त्री उपाधि प्राप्त शिक्षकों/प्रत्याशियों के साथ अपनाई जा रही इस भेद-भावपूर्ण नीति का घोर विरोध करता है और यह मानता है कि प्राथमिक माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की यह नीति संस्कृत प्रसार के लिये दमनकारी और बाधक नीति है। सम्मेलन राज्य सरकार से मांग करता है कि राज्यादेशों एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के निर्णयों के विरुद्ध निदेशालय स्तर पर लिये गये ऐसे मनमाने निर्णयों को तत्काल प्रभाव से निरस्त कराया जाये एवं शास्त्री व बी. एड. या बी. ए. व शिक्षाशास्त्री या शास्त्री या शिक्षाशास्त्री (राजस्थान विश्वविद्यालय) योग्यताधारी व्यक्तियों को लोक सेवा आयोग के चयनानुसार सीधी भर्ती से प्रधानाध्यापक सैकण्डरी विद्यालय पद पर पदस्थापित किया जावे, वांछित शिक्षकों को तत्काल पदोन्नति प्रदान की जावे तथा भविष्य में ऐसी पशोपेश की नीति न अपनाये जाने हेतु व्यापक स्पष्टीकरण प्रसारित कराया जावे और आवश्यक हो तो सेवा नियमों में संशोधन कराया जावे।

प्रस्ताव : 16

केन्द्र द्वारा संस्कृत विकास के लिये प्रवर्तित योजनाओं का लाभ राजस्थान के निदेशक संस्कृत शिक्षा के माध्यम से दिलाये जाने हेतु

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन प्रस्ताव करता है–

(1) भारत सरकार मानव संसाधन मंत्रालय (शिक्षा) से संस्कृत विद्वानों को जो वृत्तिका दी जाती है, उसकी

राशि इस भीषण मंहगाई के युग में अत्यन्त न्यून है। अतः इसमें वृद्धि की जाय तथा यह राशि हर माह भुगतान किये जाने की व्यवस्था की जाय।

(2) इसके अतिरिक्त देश की परम्परागत संस्कृत परीक्षाओं शास्त्री, आचार्य, शिक्षाशास्त्री, विद्यावारिधि एवं विद्यावाचस्पति के अध्येताओं को दी जाने वाली छात्रवृत्ति को योग्यता सूची, जिस प्रकार केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठवार बना कर भुगतान की जाती है तथा वांछित बजट प्रावधान पहले ही आवंटित कर दिया जाता है उसी प्रकार राजस्थान के राजकीय संस्कृत कालेजों को वांछित बजट प्रावधान आवंटित कर उनके संस्था प्रधानों के माध्यम से तथा गैर सरकारी संस्कृत कॉलेजों के लिये निदेशक संस्कृत शिक्षा राजस्थान को बजट आवंटित कर उनके माध्यम से स्वीकार करायी जावे ताकि राजस्थान के भी सभी प्रकार के पात्र विद्यार्थियों को इस अंश का व्यापक लाभ मिल सके।

(3) सम्मेलन भारत सरकार से यह भी अनुरोध करता है कि केन्द्र द्वारा प्रवर्तित प्रत्येक संस्कृत विकास योजना का राजस्थान के संस्कृत सेवी संगठनों को अधिकाधिक परिलाभ प्राप्त कराने के लिये निदेशक संस्कृत शिक्षा राजस्थान का उपयोग भारत सरकार का मानव संसाधन (शिक्षा) मंत्रालय एक विश्वस्त एजेन्सी के रूप में करे तथा एतदर्थ विद्यमान और भविष्य में निर्मित होने वाले केन्द्रीय संस्कृत मंडलों/समितियों में निदेशक संस्कृत शिक्षा राजस्थान को पदेन सदस्य नामित करने का सम्बन्धित नियमों में प्रावधान करे क्योंकि देश में स्वतंत्र संस्कृत निदेशालय संभवतः राजस्थान प्रान्त में ही गठित है अतः उसके माध्यम से राजस्थान के संस्कृत संसाधनों में केन्द्र प्रवर्तित यथेष्ट प्रायोजनायें यथाविधि कार्यान्वित की जा सकती है। ●

प्रस्ताव : 17

परम्परागत शास्त्रार्थ प्रणाली के संरक्षण एवं प्रोत्साहन हेतु

परम्परागत संस्कृत शिक्षा में शास्त्रार्थ प्रणाली अति प्राचीन पद्धति है। "शंकराचार्य और मण्डनमिश्र" का संस्कृत शास्त्रार्थ सुविदित है। वर्तमान में भी वाराणसी, दरभंगा, जयपुर, पूना आदि स्थान शास्त्रार्थ महारथी विद्वानों के लिये प्रख्यात है।

पारम्परिक संस्कृत शिक्षा में लिखित परीक्षा पद्धति के समावेश के बाद धीरे-धीरे शास्त्रार्थ प्रणाली क्षीण होती जा रही है और शास्त्रीय पठन-पाठन अब केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने मात्र तक परिसीमित रह गया है जो गम्भीर चिन्ता का विषय है।

सम्मेलन के जयपुर महाधिवेशन के आयोजन के पूर्ण पर्याप्त प्रचार प्रसार के बावजूद भी शास्त्रार्थ परिषद् में सम्भागी राजस्थान के विद्वानों की संख्या आधे दर्जन से अधिक नहीं रही और उनमें भी मात्र दो विद्वान ही विषय के विविध पक्षों पर आधारित परिष्कारों को समर्थ स्तर दे सके। अतः प्रौढ़ पाण्डित्य परम्परा के संरक्षण तथा विभिन्न शास्त्रों में अधिकृत विद्वानों के उत्पादन (प्रोडक्शन) की दृष्टि से यह आवश्यक है कि शास्त्रार्थ पद्धति को संरक्षित रखा जाय। इस क्रम में सम्मेलन के इस चतुर्दश महाधिवेशन का प्रस्ताव है कि सम्मेलन द्वारा आयोजित शास्त्रार्थ परिषद् में भाग लेकर सफल रहने वाले शास्त्र निष्णात सेवारत संस्कृत विद्वान को उसके अपने वेतनमान में विशेष योग्यता के फलस्वरूप एक विशेष वेतनवृद्धि स्वीकार की जावे जो उसे पूरे सेवा काल में इस निमित्त केवल एक बार ही देय हो। ●

प्रस्ताव : 18

शलाका परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों को शिक्षक सेवा में प्रवृत्ति अंक

परम्परागत संस्कृत शिक्षा प्रणाली से पढ़ने वाले छात्रों में लाक्षणिक एवं पारिभाषिक ग्रन्थों के कण्ठस्थीकरण, व्याख्यान एवं विश्लेषणात्मक विषयोपपादन पटुता का सामर्थ्य उत्पन्न करने की दृष्टि से शलाका परीक्षा की आयोजना एक

बहुत पुरानी एवं महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसमें अधिकाधिक छात्रों को प्रवृत्त करने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि इस परीक्षा की सफलता को छात्र के रोजगार के साथ जोड़ा जावे।

अतः इस महाधिवेशन का प्रस्ताव है कि शिक्षा विभाग द्वारा तृतीय व द्वितीय श्रेणी के शिक्षकों की भर्ती के लिए प्रतिवर्ष निर्मित की जाने वाली योग्यता सूची के मानदण्डों में शिक्षणेतर प्रवृत्तियों के लिए निर्धारित वेटेज के मानदण्ड शलाका परीक्षा को भी समाविष्ट किया जावे तथा इसमें सफल प्रत्याशियों को जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तरानुसार क्रमशः दो, तीन व पांच अंक प्रदान कराये जावें। ●

प्रस्ताव : 19

शिक्षा शास्त्री प्रशिक्षण में प्रवेश हेतु शास्त्री योग्यताधारी को प्राथमिकता

राजस्थान में संस्कृत विषय से हायर सैकण्डरी उत्तीर्ण या उपाध्याय परीक्षोत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए पूरे राज्य में केवल एक संस्कृत एस. टी. सी. विद्यालय महापुरा है तथा संस्कृत से बी. ए. या शास्त्री योग्यताधारी व्यक्तियों के लिए गैर सरकारी क्षेत्र में केवल दो प्रशिक्षण महाविद्यालय संचालित हैं।

अतः राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के इस महाधिवेशन का प्रस्ताव है कि कोटा, बीकानेर और जोधपुर क्षेत्र में एक-एक शिक्षा शास्त्री प्रशिक्षण केन्द्र तथा जोधपुर, उदयपुर, कोटा और बीकानेर क्षेत्र में एक-एक संस्कृत एस. टी. सी. विद्यालय सरकारी अथवा गैर सरकारी क्षेत्र में संचालित करने की अनुमति प्रदान की जावे ताकि संस्कृत योग्यताधारी अभ्यर्थियों के लिए प्रशिक्षण के यथोचित अवसर सुलभ हो सके।

जिस प्रकार संस्कृत एस. टी. सी. स्कूल में उपाध्याय या प्रवेशिका अभ्यर्थियों के न मिलने पर संस्कृत हायर सैकण्डरी या सैकण्डरी उत्तीर्ण अभ्यर्थी को प्रवेश दिया जाता है उसी प्रकार समस्त शास्त्री योग्यताधारी व्यक्तियों के प्रवेश हो चुकने के उपरान्त शेष स्थानों पर संस्कृत से बी. ए. उत्तीर्ण अभ्यर्थी को शिक्षाशास्त्री में प्रवेश दिये जाने की नीति निर्धारित कराने हेतु सम्मेलन सरकार से माँग करता है ताकि मुख्यतः जिन शास्त्री योग्यताधारी अभ्यर्थियों के लिये शिक्षाशास्त्री प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया है वे प्रथमतः उसका पूरा-पूरा लाभ उठा सकें। ●

प्रस्ताव : 20

केन्द्रीय संस्कृत छात्रवृत्ति की राशि की स्वीकृति एवं वितरण सम्बन्धित राज्य सरकारों के शिक्षा विभाग के माध्यम से कराया जाय

भारत सरकार का मानव संसाधन मंत्रालय (संस्कृत यूनिट) द्वारा परम्परागत शैली से संस्कृतपाठी छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्तियों के लिये पर्याप्त प्रावधान किया हुआ है। किन्तु इस छात्रवृत्ति का जितना परिलाभ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली द्वारा संचालित संस्कृत विद्यापीठों में पढ़ने वाले छात्रों को प्राप्त होता है उतना परिलाभ देश के अन्य संस्कृत कालेजों में अध्ययन करने वाले छात्रों को नहीं। अतः देश के हर भाग के परम्परागत शैली से संस्कृत परीक्षा के लिए तैयार होने वाले हर योग्य प्रत्याशी को बिहित मानदण्डों के तहत व्यापक परिलाभ मिल सके। एतदर्थ राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन प्रस्ताव करता है कि भारत सरकार का मानव संसाधन मंत्रालय राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा संचालित संस्कृत विद्यापीठों की तरह राज्य सरकारों के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित संस्कृत विद्यालय/महाविद्यालयों के लिये भी उक्त छात्रवृत्ति का लाभ सम्बन्धित राज्य सरकारों के शिक्षा विभाग के मध्यम से प्रदान करने की व्यवस्था करावें। ●

प्रस्ताव : 21

राजस्थान आयुर्वेद नर्सिग प्रशिक्षण में उपाध्याय को प्रवेशाधिकार

राजस्थान सरकार द्वारा संचालित राजकीय आयुर्वेद नर्सिंग प्रशिक्षण के त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम की प्रवेश योग्यता हायर सैकण्डरी (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर की कला अथवा विज्ञान) जीव विज्ञान सहित) है । उपाध्याय परीक्षा भी माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित होती है, जो पाठ्यक्रम, पाठ्ययोजना एवं परीक्षा वर्ष की दृष्टि से हायर सैकण्डरी कला के समतुल्य है तथा उपाध्याय पूर्व आयुर्वेद विज्ञान सहित परीक्षा हायर सैकण्डरी जीवविज्ञान सहित के समतुल्य है । इसीलिये राजस्थान विश्वविद्यालय की टी. डी. सी. में उपाध्याय परीक्षोत्तीर्ण का सीधा प्रवेश होता है । संस्कृत और आयुर्वेद का घनिष्ठ सम्बन्ध है । कतिपय वर्षों पूर्व तक उक्त नर्सिंग प्रशिक्षण में उपाध्याय परीक्षोत्तीर्ण को प्रवेशाधिकार प्रदान किया हुआ था । जो गत 5–6 वर्षों से बन्द कर दिया गया है ।

अतः राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन राज्य सरकार से अनुरोध करता है कि उक्त नर्सिग प्रशिक्षण की प्रवेश योग्यता केवल उपाध्याय तथा उपाध्याय पूर्व आयुर्वेद विज्ञान, जीव विज्ञान सहित । माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर निर्धारित की जावे । क्योंकि राज्य के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयोजित नर्स/-कम्पाउन्डर प्रशिक्षण सामान्य शिक्षा प्राप्त अभ्यर्थियों के लिए है और आयुर्वेद नर्सिग प्रशिक्षण संस्कृत योग्यताधारी व्यक्तियों के लिये एकमात्र व्यावसायिक क्षेत्र है ।

सम्मेलन राज्य सरकार से यह भी अनुरोध करता है कि यदि आयुर्वेद नर्सिंग प्रविक्षण में हायर सैकण्डरी कला व जीव विज्ञान या उपाध्याय व उपाध्याय पूर्व आयुर्वेद विज्ञान दोनों योग्यताधारी अभ्यर्थियों को प्रवेश सुविधा रखी जाती है तो चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के कम्पाउन्डर एवं नर्सिंग प्रशिक्षण में भी समतुल्य संस्कृत योग्यता का समावेश किया जावे । ताकि दोनों योग्यताधारियों को उक्त दोनों प्रशिक्षणों में समान अवसर प्राप्त हो सके ।

प्रस्ताव : 22

संस्कृत शिक्षा का विविध पाठ्यक्रमों में प्राविधान प्रासंगिक शोध

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा परिषद् भारत सरकार/राज्य सरकारों, देश के संस्कृत शोध संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के संस्कृत अनुसंधान केन्द्रों के लिये क्रमशः प्रस्ताव करती है कि:—

(क) **भारत सरकार [मानव संसाधन मंत्रालय-संस्कृत यूनिट] के लिए –**

1. नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रत्येक स्तर पर संस्कृत शिक्षा का समावेश अवश्य किया जाय ।
2. देश के प्राच्य पद्धति के समस्त संस्कृत शिक्षा पाठ्यक्रमों में एकरूपता स्थापित की जाय ।
3. देश के समस्त प्राच्य पद्धति के शिक्षकों के वेतनमानों तथा ढांचे में एकरूपता स्थापित की जाय ।
4 दस जमा दो की शिक्षा प्रणाली की कार्यान्विति संस्कृत विद्यालयीय पाठ्यक्रम में संस्कृत के विद्यमान पाठ्यभार को यथावत् रखते हुए ही की जाय ।

(ख) **भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिये—**

1. राष्ट्र, राज्य स्तर पर संस्कृत विद्वान् एवं एन. सी. ई. आर. टी. और एल. आई. आर. टी. के सहयोग से संस्कृत के जीवनोपयोगी पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाय ।

2. वैज्ञानिक प्रयोगार्थ प्रयोगशालाओं में वैदिक ऋचाओं के विद्वान् एवं आधुनिक विद्वान् समन्वित रूप से प्रयोग व कार्य करें।

(ग) **देश के शोध संस्थानों एवं विश्वविद्यालय के संस्कृत अनुसंधान केन्द्रों के लिए—**

1. शोधकार्य संस्कृत मंत्र विद्या एवं आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग सिद्धता के समन्वय पर आधारित हो, वह समाजोपयोगी एवं व्यावहारिक होने के साथ-साथ सृजनात्मक एवं मौलिक प्रवृत्तियुक्त हो, इसके लिए शोधकार्यों में पर्याप्त समन्वय एवं पूर्ण विचार की आवश्यकता है।

2. शोध निष्कर्ष नवीन शैक्षिक तकनीकियों जनसंचार माध्यमों विशेषतः दूरदर्शन, रेडियो एवं समाचारपत्रों के साथ-साथ संक्षिप्त पाठ मंजूषाओं (एज्यूकेशन किट्स) आदि में संजोकर जन-जन तक पहुँचायें।

(घ) **स्वयं सम्मेलन के लिये—**

1. विलुप्त होती शास्त्रीय संस्कृत शिक्षा की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए त्वरित उपायों की कार्ययोजना राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन द्वारा बनवायी जाय तथा उसे राज्य शासनों विश्वविद्यालयों और बोर्डों के सहयोग से लागू कराया जाय। ●

प्रस्ताव : 23

ज्योतिष शास्त्र का विकास एवं विस्तार

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के जयपुर महाधिवेशन पर आयोजित ज्योतिष शास्त्र परिषद् राजस्थान शासन तथा अशासकीय स्तरों पर क्रियान्विति के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करती है:—

(क) **राज्य सरकार के लिये—**

1. जयपुर के ज्योतिष यन्त्रालय को आधुनिकतमय नवीन उपकरणों से सुसज्जित किया जावे, जिससे ग्रहों की गति का सूक्ष्मातिसूक्ष्मज्ञान प्राप्त कर पंचांगनिर्माण किया जा सके। यथा उन्नतांश, भित्ति पलभाचक्र सम्राट्, राशिवलय आदि यन्त्र।
2. संस्कृत शिक्षण संस्थाओं में प्रतिवर्ष योजनाबद्ध रीति से ज्योतिष विषय संचालित कराया जाय।
3. ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र विभाग के समन्वय से महाराज संस्कृत कॉलेज जयपुर द्वारा अधिकृत पंचांग प्रकाशित कराये जाने हेतु आवश्यक धनराशि राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जाय।

(ख) **गैर सरकारी स्तरों के लिये—**

1. फलित ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोग विज्ञान में आजीविका निर्माण में ग्रहों के प्रभाव विषय को लेकर विचार विमर्श किया जाये।
2. परिवार कल्याण आदि राष्ट्रीय समस्याओं के लिए योगों का जनता के समक्ष प्रचार करना चाहिये। ●

प्रस्ताव : 24

दर्शनशास्त्र का विस्तार व विकास

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के जयपुर महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित दर्शन परिषद् राजस्थान सरकार/माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से अनुरोध करती है कि:--

(1) राजस्थान विश्वविद्यालयीय संस्कृत परीक्षाओं की नियमावली में न्याय मीमांसा-सांख्ययोग-वेदान्त आदि विषयों का समावेश तो है, परन्तु उनकी अध्ययनाध्यापन की पूर्ण व्यवस्था नहीं है। अत: सरकारी या अनुदानित संस्थाओं में एक या एकाधिक दर्शन शाखा के अध्ययन की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये। जहाँ महाराजा संस्कृत कॉलेज जयपुर में न्याय शास्त्र के दो तथा दर्शनशास्त्र का एक प्राध्यापक था, वहाँ आज मात्र दर्शन का एक व्याख्याता है। इसके अलावा कहीं भी राज्य में दर्शन के शिक्षक ही नहीं हैं।

(2) राजस्थान के प्रमुख नगरों में राज्य सरकार/माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राज्य के विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागों के माध्यम से प्रतिवर्ष 5-6 दर्शनशास्त्र की संगोष्ठियाँ आयोजित होनी चाहिये जिससे कि वहाँ के विद्वान्, अध्येता तथा आम जनता दर्शनिकतत्त्वों से लाभान्वित हो सके।

(3) "काणादं पाणिनीयं सर्वशास्त्रोपकारकम्" सिद्धान्त के अनुसार न्यायशास्त्र का ज्ञान सभी संस्कृतज्ञों को होना चाहिये। इस ज्ञान के अभाव में व्याकरणादि शास्त्रों में संस्कृत के छात्र की प्रखर गति नहीं हो सकती। अतः प्रत्येक संस्कृत महाविद्यालय में न्यायशास्त्र के अध्ययन की समुचित व्यवस्था की जाय तथा विद्यालय स्तर पर तर्कशास्त्र के सिद्धान्तों को पाठ्यक्रमानुसार न्यायशास्त्रीय शिक्षक से ही अध्यापित कराया जाय।

(4) विश्वविद्यालयस्तर पर त्रिवर्षीय शास्त्री पाठ्यक्रम के सामान्य संस्कृत विषय में न्यायशास्त्र का समावेश अध्ययनार्थ कराया जाय।

प्रस्ताव : 25

व्याकरणशास्त्रीय अध्ययन स्तर का समुन्नयन, विकास एवं विस्तार

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चर्तुदश महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित व्याकरण शास्त्रीय परिषद् राजस्थान सरकार/राजस्थान विश्वविद्यालय एवं राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन से अनुरोध करती है कि:—

(क) राज्य सरकार के लिये :—

(1) संस्कृत व्याकरण के अध्येताओं के लिये विद्वानों की संगोष्ठियाँ आयोजित की जाय, जिसमें विशिष्ट विद्वानों द्वारा व्याकरण शास्त्रीय तत्त्वों का विवेचन व विश्लेषण कराया जाय।

(2) राज्य शासन के द्वारा व्याकरण अध्येताओं के लिये छात्रवृत्ति की अनिवार्य व्यवस्था की जाय।

(3) व्याकरण को प्रौढ़ि एवं संरक्षा के लिए शासन के द्वारा प्रतिवर्ष मण्डलीय स्तर पर तथा प्रादेशिक स्तर पर शास्त्रार्थ प्रतियोगिता का आयोजन किया जाय।

(4) व्याकरणशास्त्र के षट्टीकोपेत लघुशब्देन्दुशेखर जैसे ग्रन्थों तथा नवीन एवं उपयोगी शोध ग्रन्थों का प्रकाशन एवं मुद्रण करवाया जाय।

(5) व्याकरण शिक्षक के चयन के लिये प्राचीनकालिक योग्यता परीक्षा का आयोजन किया जाय। यथा– "श्रयते पाटलीपुत्रे शास्त्रकार परीक्षा।"

(ख) भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के लिए—

(1) पातञ्जला 'महाभाष्यम्' को आधुनिक (पाश्चात्य) भाषा वैज्ञानिक (लिंग्विष्टिक) पद्धति से नवरूप में प्रस्तुत करने के लिये देश के चुने हुये (1) वैयाकरणों और (2) भाषा विज्ञानियों की देखरेख में भारत सरकार मानव संसाधन मन्त्रालय (संस्कृत विभाग) तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से पंडितों की एक मण्डली नियुक्त की जाय।

(ग) विश्वविद्यालय स्तर :

(1) पारम्परीण पद्धति से संस्कृत का अध्ययन करने वालों के लिये विश्वविद्यालयीय पाठ्यकम में व्याकरण का अध्ययन अनिवार्य किया जाय।

(घ) स्वयं सम्मेलन के लिए :

(1) सम्मेलन द्वारा राज्य में व्याकरणशास्त्र के विकास एवं विस्तार हेतु व्याकरण परिषद् के गठन को स्थायी रूप दिया जाय।

बालोपयोगी एवं लोक कल्याणकारी संस्कृत साहित्य के अभिनव सृजन को प्रोत्साहन

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित साहित्य परिषद् राजस्थान सरकार/साहित्यिक संस्थानों एवं साहित्यकारों से अनुरोध करती है कि:—

(क) राज्य सरकार के लिये :

(1) बालोपयोगी संस्कृत साहित्य के सृजन को प्रोत्साहित किया जाय। इस प्रकार के रचनाकारों को न्यूनतम 5000/- को धनराशि देकर प्रोत्साहित किया जावे।

(2) संस्कृत साहित्य के गूढ़ तत्वों को नवीन सरल एवं सरस रचनाओं के द्वारा जन-जन तक पहुँचाया जावे। सृजनकर्त्ता को कृति के मूल्यांकन के आधार पर 2000/- से 5000/- तक प्रोत्साहन राशि प्रदान की जावे।

(ख) गैर सरकारी साहित्यिक संस्थानों एवं साहित्यकारों के लिये :—

(1) संस्कृत वाङ्मय को गतिशील बनाने के लिये नवीन साहित्य सृजन को प्रोत्साहन किया जाना चाहिये।

(2) साहित्य में लोक-कल्याण की भावना ही प्रमुख होती है। अतः ऐसे नवीन साहित्य के सृजन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये जिसमें लोक कल्याण की भावना प्रखर रूप से मुखरित हो।

प्रस्ताव : 27

वेदों के पारंपरिक उच्चारण विधानों का संरक्षण एवं वैदिक वाङ्मय का प्रासंगिक अनुसंधान

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश महाधिवेशन के अवसर पर आयोजित वेद परिषद् वैदिक उच्चारण विधानों की सुरक्षा, वेदों के अध्ययन-अध्यापन की समुचित व्यवस्था तथा वैदिक अनुसंधान के क्रम में राज्य सरकार/बोर्ड विश्वविद्यालय एवं गैर सरकारी संस्थानों से अनुरोध करती है कि :—

(क) राज्य सरकार के लिये :—

(1) परम्परागत प्रणाली पर वेदपाठ की संरक्षा करने वाले विद्वानों की सुरक्षा की जानी चाहिए।

(2) परम्परागत वैदिक उच्चारण विधाओं को शुद्धता के साथ संरक्षित रखने के लिये जो कार्य योजना निदेशालय संस्कृत शिक्षा द्वारा दी हुई है तथा जिसके लिए सीमित वित्तीय प्रावधान की तथा आकाशवाणी के सहयोग की अपेक्षा की गई है, उसकी स्वीकृति राज्य सरकार द्वारा करायी जाय।

(3) सामवेद के अध्ययनाध्यापन की लुप्तप्राय स्थिति के त्वरित अपाकरण के लिए निदेशालय संस्कृत शिक्षा/राज्य सरकार द्वारा जो क्रम किसी उपयुक्त सामवेदी विद्वान् को नियमों में यथावश्यक परिवर्तन/संशोधन या शैथिल्य करके जयपुर महाराजा संस्कृत कॉलेज में नियुक्त किया जाना चाहिये।

(ख) बोर्ड/विश्वविद्यालय स्तर पर क्रियान्विति के लिये :—

(1) वेदमन्त्रों के विनियोगों की समीक्षा कर उनका मूल्यांकन कराया जाना चाहिये।

(2) 10+2 के स्तर तक कुछ चुने हुए वेदमन्त्रों का बोध या कण्ठस्थीकरण कराये जाने हेतु पाठ्यक्रम

में बोर्ड द्वारा यथोचित्त समावेश किया जाना चाहिये।

(3) विश्वविद्यालय के स्तर पर जिस-जिस विषय को छात्र पढ़ें, उस-उस विषय से सम्बद्ध वेदमन्त्रों का सुज्ञान कराना अनिवार्य होना चाहिए। संस्कृत और दर्शन के छात्रों को कुछ ऐसे मन्त्रों का बोध कराया जाय जो अतीन्द्रिय विज्ञान से सम्बद्ध हो।

(4) वेदमन्त्रों में कुछ ऐसे चयन और अनुवाद कराये जाने चाहिए जो सामान्य लोकभाषा में हो तथा एक ओर विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रमों में स्थान प्राप्त कर सके तो दूसरी ओर लोक जीवन को अनुभूति और प्रेरणा दे सके।

(5) वेद में अनुसन्धान की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिये कि वेदमन्त्रों आदि के अर्थों और उच्चारण से जो वैज्ञानिक अति विज्ञानपरक तथा अन्य विध ज्ञान प्राप्त हो, उसके क्रियात्मक प्रयोग से तथा कार्य-कारण सम्बन्ध स्थापन से उपयोगिता और प्रामाणिकता का प्रतिपादन किया जा सके।

(6) वैदिक कर्मकाण्ड के अध्ययन व अध्यापन की समुचित प्रयोगात्मक व्यवस्था होनी चाहिए।

(7) प्राचीन पद्धति से वेदाध्ययन करने वालों के लिए मन्त्र के अर्थों तथा तद्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मणादि साहित्य का बोध कराना भी अनिवार्य होना चाहिए।

(8) चारों वेदों के अध्ययनाध्यापन की विश्वविद्यालयीय स्तर तथा विद्यालयीय स्तर के शिक्षणालयों में समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। ●

प्रस्ताव : 28

संस्कृत शिक्षित के लिये विविध रोजगारों एवं व्यावसायिक प्रशिक्षणों के द्वार खोलने हेतु

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्दश महाधिवेशन में संस्कृत की युगीन प्रासंगिकता पर आयोजित अ.भा. संगोष्ठी का प्रस्ताव है कि–

संस्कृत की युगीन प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाना भारत की स्थिरता पर प्रहार है। मानवमात्र के भौतिक एवं आध्यात्मिक गरिमामय जीवन मूल्यों को समन्वित करनेवाली संस्कृत युगीन प्रासंगिकताओं की कसौटी पर खरी उतरती है। अतः हम केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकारों से अनुरोध करते हैं कि वे संस्कृत के अध्ययन, अध्यापन की पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान करें तथा भारतीय जनता भी इसमें सहयोग दें।

कम्प्यूटर युग में विश्लेषण के द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि संस्कृत वैज्ञानिक भाषा है। अतः इसका मूल्यांकन गणनात्मक नहीं गुणात्मक दृष्टि से हो और संस्कृत को लोकप्रिय बनाने हेतु रचनाधर्मियों को प्रोत्साहन तथा संस्कृतज्ञों के लिए प्रचुर आजीविका के साधन समुपलब्ध कराये जायें। सामान्य शिक्षा और संस्कृत शिक्षा पढ़े लिखे लोगों में असमानता रखने की जो भावना हमारे देश के विदेशी शासकों की देन है, उस का खात्मा हर स्तर पर किया जाय तथा संस्कृत शिक्षा प्राप्त के लिए हर रोजगार एवं हर व्यावसायिक प्रशिक्षण के द्वार खुले रखे जांय। भारत सरकार एवं देश की राज्य सरकारों द्वारा इसके लिए विशेष प्रकोष्ठ कायम किये जाने चाहिए। ●

प्रस्ताव : 29

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संस्कृत शिक्षा के लिए कार्यगोष्ठियाँ

संस्कृत शिक्षा विभाग के सेवारत शिक्षकों की योग्यता के गुणात्मक अभिनव एवं नई शैक्षिक प्रविधियों के संदर्भ में उनकी अद्यतनता हेतु राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह महाधिवेशन माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान से अनुरोध करता है कि वह अल्पकालिक कार्यगोष्ठियों की नियमित आयोजना करें। जैसे कि 1977-78 के वर्ष में संस्कृत शिक्षा के विषय में शिक्षकों के शैक्षिक हितो की पूर्ति हेतु विविध कार्यगोष्ठियाँ आयोजित की जाती थी तथा तदर्थ स्वतन्त्र प्रावधान भी बोर्ड बजट में पहले ही निर्धारित कर लिया गया था। उस प्रक्रिया को बोर्ड द्वारा निरन्तरता दी जानी चाहिये। ●

प्रस्ताव : 30

संस्कृत शोध संस्थान एवं उच्च अध्ययन केन्द्र परिसर के लिये भूखण्ड

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह चतुर्दश महाधिवेशन राजस्थान में शोध संस्थान की स्थापना के उद्देश्य से निर्मित एक व्यावहारिक सामयिक एवं ठोस आधार वाली परियोजना के लिये राज्य के शिक्षा विभाग का हार्दिक धन्यवाद करता है तथा यह मानता है कि वास्तव में देश की सभी प्रादेशिक सरकारों में राजस्थान शासन संस्कृत के विकास के लिये संस्कृत की अपेक्षाओं के अनुरूप नयी योजनाओं तथा नये कार्यक्रमों की क्रियान्विति के लिये दृढ संकल्प के साथ अग्रणी रहा है और इसकी अग्रेसरता अभी भी संस्थापित है।

शोध संस्थान की योजना को मूर्त्त रूप देने के उद्देश्य से जयपुर विकास प्राधिकरण को एक उपयुक्त भूखण्ड निःशुल्क आवंटित करने सम्बन्धी राज्य सरकार शिक्षा विभाग के प्रस्ताव का स्मरण कराते हुए सम्मेलन जयपुर विकास प्राधिकरण से अनुरोध करता है कि वह वांछित भूखण्ड सर्वोच्च प्राथमिकता से आवंटित करने की कृपा करें ताकि संस्कृत शिक्षा क्षेत्र की एक प्रखर कार्ययोजना को गतिशीलता मिल सके।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार द्वारा जयपुर विकास प्राधिकरण से ऐसे भूखण्ड की अपेक्षा की है-जो संस्कृत शिक्षा से सम्बन्धित राजस्थान सरकार की सभी इकाइयों (संस्कृत निदेशालय, महाराजा संस्कृत कॉलेज, संस्कृत अकादमी, संस्कृत सलाहकर मण्डल, शोध संस्थान, पुस्तकालय, संग्रहालय, प्रकाशनालय, ग्रन्थागार आदि) के एक जगह, एक स्वतंत्र परिसर की संरचना के लिये पर्याप्त एवं उपयुक्त हो। ●

प्रस्ताव : 31

एम. ए. (संस्कृत) तथा पारंपरिक संस्कृत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षण माध्यम संस्कृत

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह महाधिवेशन देश के उन विश्वविद्यालयों से जो संस्कृत विभाग रखते हैं, अनुरोध करता है कि जिस प्रकार एम. ए.-हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी की कक्षायें क्रमशः हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी के माध्यम से ही चलायी जाती हैं-उसी प्रकार एम. ए. संस्कृत की कक्षायें भी अनिवार्यतः संस्कृत माध्यम से ही चलायी जानी चाहिये।

सम्मेलन भारत सरकार के मानव संसाधन विकास

मंत्रालय के माध्यम से देश की सभी राज्य सरकारों के शिक्षा विभागों संस्कृत विश्वविद्यालयों, एवं संस्कृत से सम्बद्ध परीक्षण संस्थानों एवं शिक्षामंडलों से अनुरोध करता है कि वे उनके यहाँ से सम्बद्ध पारम्परिक संस्कृत विद्यालय/महाविद्यालयों में शास्त्री विषयों के अध्यापन का माध्यम संस्कृत ही निर्धारित करावें तथा जहाँ पहले से ही माध्यम संस्कृत निर्धारित किया हुआ है–वहाँ संस्कृत माध्यम से ही शिक्षण कराने को अनुपालना की छानबीन करावें । ●

प्रस्ताव : 32

सामान्य शिक्षा विषयक विद्यालयों में योग्यता प्राप्त संस्कृत शिक्षकों की व्यवस्था सम्बन्धी राज्यनिर्देशों की अनुपालना

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह 14वाँ महाधिवेशन 200 राजकीय प्राथमिक विद्यालय (शहरी एवं पंचायत क्षेत्र) जिनमें संस्कृत शिक्षण हेतु संस्कृत शिक्षक के 200 पद पृथक् से सरकार द्वारा दिए हुए हैं उन पदों पर संस्कृत शिक्षकों की नियुक्तियाँ पंचायत समितियों एवं जिला शिक्षाधिकारियों द्वारा नहीं की गई है, बल्कि अन्य विषयों के शिक्षक नियुक्त किये हुए हैं, इस सूचना पर चिन्ता व्यक्त करता है । इसके अतिरिक्त उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत अध्यापक का स्वतंत्र पद एवं उस पर संस्कृत शिक्षक ही अनिवार्यतः रखने हेतु राज्य सरकार द्वारा दिये गये स्थायी निर्देश सं० एफ-4-डी (22) शिक्षा/प्रकोष्ठ-2/66 दिनांकित 4 मार्च 67 एवं क्रमांक एफ-4ई (13) शिक्षा/प्रकोष्ठ-2/5/65 दिनांकित 12-11-1967 की पूर्णतः पालना नहीं होने पर खेद व्यक्त करता है तथा राज्य सरकार शिक्षा विभाग, प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा एवं ग्रामीण एवं पंचायती राज निदेशालय का ध्यान आकर्षित कर अनुरोध करता है कि तत्काल सम्बन्धितों को कड़ाई से पालना करने हेतु कहा जाय ताकि प्राथमिक, उच्च प्राथमिक/माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के स्तर पर सरकार द्वारा संस्कृत के सन्दर्भ में निर्धारित नीति-रीति की क्रियान्विति हो सके–और संस्कृत का शिक्षण उपेक्षित न रह सके । ●

प्रस्ताव : 33

निवर्तमान सम्मेलन–सभापति श्रद्धेय पं० लक्ष्मीलाल जोशी की सेवाओं की प्रशंसा

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन का यह 14 वाँ महाधिवेशन निवर्तमान सम्मेलन सभापति श्रद्धेय पं० लक्ष्मीलाल जोशी द्वारा राजस्थान में आधुनिक संस्कृत के क्षेत्र विस्तार तथा पारंपरिक संस्कृत शिक्षा के पुनः संघठन, सुरक्षा और विकासोन्मुखता के लिए की गई सेवाओं का अभिनन्दन करता है ।

इस अधिवेशन की मान्यता है कि राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन की सार्वजनिकता, कार्यप्रणाली, सामयिक कार्ययोजनाओं की विचारणा और प्रस्तुति तथा अपने उद्देश्यों एवं विधेयों के प्रति उत्कट सम्पर्ण भावना, राष्ट्रीय एवं राज्यीय अन्य संस्कृत संगठनों के लिये अनुकरणीय है । राजस्थान में एक ऐसा आदर्श और ठोस मंच खड़ा करने के लिये तथा उसमें राज और समाज के संगम से राजस्थान संस्कृत जगत् के लिए अवाप्त उपहारों के लिए पंडित लक्ष्मीलाल जोशी का नेतृत्व सदैव याद किया जाता रहेगा । यह सदन उनकी संस्कृत सेवाओं की प्रशंसा करता है तथा उनके नैरुज्य एवं दीर्घायुष्य की कामना करता है । ●

राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान

संस्कृत का महत्व

सनातन काल से ही संस्कृत भाषा का वैज्ञानिक एवं व्याकरण-अनुशासित स्वरूप चिरन्तनरूप में आज भी विद्यमान है। यह वह अमर भाषा है जिसमें निबद्ध भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान के ज्योतिपुञ्ज वेद, दर्शन, ज्योतिष व साहित्यादि शास्त्र हमारे सम्पूर्ण जीवन दर्शन, नैतिक मूल्य एवं भौतिक व आध्यात्मिक मान्यताओं के भव्य स्वरूप को उद्भाषित आलोकित व आध्यापित किये हुए हैं। संस्कृत ही हमारी राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक समुन्नयन तथा भावात्मक एकता का दृढ़ आधार है तथा आज भौतिक अशांति एवं उत्पीड़न से ग्रस्त-त्रस्त अखिल विश्व के लिये भी यह शांति समता एवं बन्धुता का सेतु निर्माण करने में सक्षम है।

संस्कृत राष्ट्रीय स्तर पर

संस्कृत के ऐसे वर्चस्व एवं महत्व के फलस्वरूप स्वाधीनता के बाद संस्कृत के प्रचार प्रसार तथा अध्ययन के प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहित किया गया। अनेक क्षेत्रों में केन्द्रीय संस्कृत-विद्यापीठों एवं पाठशालाओं की स्थापना, राज्यों में माध्यमिक शिक्षा में संस्कृत पाठचक्रम, विश्वविद्यालयों में संस्कृत-संकाय, पुरी, वाराणसी एवं दरभंगा में संस्कृत विश्वविद्यालय, पुणे (महाराष्ट्र), होशियारपुर (पंजाब), पटना (बिहार), इलाहाबाद (यू० पी०) आदि स्थानों पर शोध-केन्द्र तथा केन्द्र एवं विभिन्न राज्यों में संस्कृत परामर्श मंडलों की स्थापना द्वारा परम्परागत व आधुनिक प्रणाली से संस्कृत अध्ययन को नवीन दिशायें दी जाने लगी हैं।

राजस्थान में संस्कृत

उक्त परिप्रेक्ष्य में हमारा राज्य राजस्थान काफी अग्रणी है। यहां माध्यमिक शिक्षा स्तर पर संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में तथा उच्चतर माध्यमिक एवं विश्वविद्यालयीय शिक्षा में वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत अध्ययन की व्यवस्था की हुई है। राज्य में संस्कृत शिक्षा का पृथक् निदेशालय है जिसके अन्तर्गत प्रवेशिका उपाध्याय विद्यालयीय शिक्षा तथा शास्त्री आचार्य महाविद्यालयीय शिक्षा परम्परागत पद्धति से प्रचलित है। संस्कृत के प्रशिक्षण की सुविधा की हुई है तथा परीक्षाओं की संबद्धता माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान विश्वविद्यालय से की हुई है। विश्वविद्यालय में संस्कृत अध्ययन संकाय तथा शोध-कार्य की व्यवस्था है। संस्कृत अकादमी, प्राच्य विद्या मंडल भी सक्रिय हैं।

शोधकार्य की दयनीय दशा

संस्कृत वाङ्मय की श्री-वृद्धि एवं इसमें निहित अमूल्य रत्नों के शोध का कार्य पूर्व काल में गहन अध्ययन, गूढ़ ज्ञान वैदुष्यपूर्ण तथा उच्चस्तर का होता था, किन्तु शोध-उपाधियों के प्रलोभन तथा अतिशय प्रचलन के साथ अध्ययन अध्यापन तथा शोधक्षेत्र में विषय के प्रति रुचि, लगन एवं अनुशासन की गंभीरता उत्तरोत्तर क्षीण होती गई। विगत तीन चार दशक से तो संस्कृत स्नातकों की विषयगत ज्ञानार्जन व शोधवृत्ति मात्र पल्लवग्राही रह गई है, यह अत्यन्त चिन्तनीय बात है।

हमारे ऋषि-मुनियों एव शास्त्रकारों ने संस्कृत वाङ्मय के माध्यम से सम्पूर्ण मानवता के लिए दिव्य ज्ञान की संरचना की। यह ज्ञानभंडार इतना विशाल, गहन एवं गूढ़ता से परिपूर्ण है और इसका बहुत सारा क्षेत्र अभी सर्वथा अछूता है जिसका अन्वेषण कराया जाना मानवता की सबसे बड़ी सेवा तथा सभ्यता की रक्षा का कार्य होगा। केवल यह कहना कि "संस्कृत सब कुछ है" पर्याप्त नहीं, अपितु वह "सब कुछ" क्या है ? कैसे है ? कितना है ? और उसका "चरम" क्या है ? यह जानना एवं सबके समक्ष उद्घाटित किया जाना अति वांछनीय है।

अतएव संस्कृत वाङ्मय रूपी कल्पतरु व उसकी वेद, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन आदि विभिन्न शाखाओं में अन्तर्निहित गूढ़ ज्ञान के प्रति जिज्ञासा, वैदुष्य तथा शोधवृत्ति को जागरूक एवं सक्रिय करने हेतु एक ऐसा परिसर उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है, जहाँ संस्कृत के परम्परागत व नवागत मनीषी एवं स्नातक एकत्र होकर उस अगाध ज्ञान की साधना, तात्विक रहस्यों के अन्वेषण व शोध का कार्य कर सकें।

शोध संस्थान और राजस्थान

उक्त परिप्रेक्ष्य में आवश्यक साधन सुविधा उपकरण एवं अर्थ प्रावधान तथा समर्पित कार्यकर्त्ताओं की सुचारु व्यवस्था के साथ एक उच्चस्तरीय सर्वांगीण शोध संस्थान की स्थापना किया जाना निःसन्देह परमावश्यक है।

संस्कृत के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के सन्दर्भ में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि राजस्थान और विशेषतः जयपुर का शताब्दियों से वैदिक, दार्शनिक, ज्योतिर्विज्ञान, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है। महाकवि माघ, विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा, महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, साहित्यकार अम्बिकादत्त व्यास, वेद मनीषी पं० मोतीलाल शास्त्री आदि प्राचीन अर्वाचीन विद्वानों की जन्म एवं कर्मस्थली यही है। अनूप संस्कृत पुस्तकालय, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, मानवाश्रम, पूर्व राजाओं के पोथीखानों व संग्रहालयों में सहस्रों पाण्डुलिपियों व हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थों के वैभव से भूषित राजस्थान ही ऐसे उच्चस्तरीय शोध परिसर के लिये वस्तुतः उपयुक्त स्थान है। इस संदर्भ में हर्ष एवं उत्साहवर्धक बात यह है कि राजस्थान सरकार के वर्तमान शिक्षा मंत्री जी (मा० कमला जी) ने राज्य में ऐसे शोधसंस्थान की प्रायोजना को मूर्त्तरूप देने संकल्प लिया है।

प्रस्तुतः शोध-संस्थान एक उच्चस्तरीय संस्थान होगा, अतः इसकी सर्वांगीण परिपूर्णता वांछित है ताकि यह संस्कृत वाङ्मय में गहन व उच्चस्तरीय शोध एवं अनुसंधान के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सार्थकता प्रतिपादित कर सके। शोध की निरन्तरता हेतु संस्थान में शोधपूर्ण गूढ़ अध्ययन, भवन, साधन, समाधान, ग्रन्थागार, वादपरिषद्, संपादन-प्रकाशनादि पीठ, आवश्यक भवनों उपकरणों एवं अधिकारी एवं कर्मचारीगण आदि की आनुषंगिक समुचित व्यवस्था परमावश्यक होगी।

प्रस्तावित संस्थान का परिसर लगभग एक किलोमीटर लम्बे चौड़े क्षेत्र का होगा, जहाँ स्वस्थ, शांत एवं प्राकृतिक वातावरण में जीवनोपयोगी आवश्यक साधन-सुविधायें सहजतया उपलब्ध हों। यह पूर्णतया आवासीय संस्थान होगा। अतएव छात्रावासों शैक्षणिक, अशैक्षणिक अधिकारी एवं कर्मचारीगण के निवास तथा अतिथि गृह आदि की सम्यक् व्यवस्था वांछित होगी। इसके लिये लगभग बीस एकड़ भूमि का आवंटन कराना होगा जिसके लिये अनुमानित राशि 5 लाख रुपया वांछित होगी।

इस परिप्रेक्ष्य में संस्थान के अन्तर्गत प्राथमिकस्तर पर निम्नांकित पीठ स्थापित किये जावेंगे :

(क) शोध पीठ

संस्थान का मुख्य लक्ष्य ही संस्कृत वाङ्मय में अन्तर्निहित गूढ़ तत्वों का विवेचन कर अमूल्य निधि का अन्वेषण कराना है। अतएव शोध पीठ संस्थान का प्रमुख पीठ होगा। इस रूप में यह पीठ किंवा सम्पूर्ण संस्थान राज्य, राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत जगत् किंवा सम्पूर्ण मानवता तथा वाङ्मय के प्रति उत्तरदायी होगा।

उद्देश्य :

- विभिन्न शास्त्रों के तुलनात्मक अध्ययन मनन एवं निदिध्यासन को प्रोत्साहन देना।
- संस्कृत वाङ्मय में उत्कृष्ट शोध एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन देना तथा अन्तर्निहित विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान एवं गूढ़ रहस्यों को प्रकाश में लाना।
- संस्कृत को लोक कल्याणकारी स्वरूप में प्रतिष्ठापित करना।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत वाङ्मय के विशिष्ट शोधात्मक सन्दर्भ में स्वयं (शोध संस्थान) की सार्थकता प्रतिपादित करना।

क्षेत्र—उच्च स्तरीय अध्ययन के उपरान्त विभिन्न शास्त्रीय तत्वों के तुलनात्मक निष्कर्ष तथा गूढ़ रहस्यों को प्रकाश में लाने के लिए शोधपरक दो वर्ष का शोध कार्यक्रम "विद्यावारिधि" पीएच.डी. उपाधि हेतु चलाया जावेगा। इस संस्थान से अथवा किसी अन्य प्रतिष्ठान से विशिष्टाध्ययन कर विशेष योग्यता के साथ आचार्य उपाधि उत्तीर्ण किंवा शोधकार्य में रुचि रखने वाले स्नातक शोधपीठ में प्रवेश के पात्र माने जावेंगे। एतदर्थं शोधपीठ के अन्तर्गत प्रत्येक विषय/विभाग में विद्यावारिधि अधिकतम दस स्थान रखे जावेंगे। आवश्यकतानुसार दक्षता-जाँच के बाद प्रवेशाधिकार देय होगा।

"विद्यावारिधि" उपाधि के शोध कार्य के उपरान्त गूढ़ातिगूढ़ अनुसंधान कार्य हेतु "विद्यावाचस्पति" (डी.लिट्) उपाधि का एक कार्यक्रम तीन वर्ष का संचालित होगा। इसमें "विद्यावारिधि" उपाधि में वरीयता प्राप्त छात्र प्रवेश के पात्र होंगे तथा प्रत्येक विषय/विभाग में पाँच स्थान नियत रहेंगे।

छात्रवृत्ति—विद्यावारिधि के शोधार्थी को दो वर्ष तक 500 रुपये प्रति माह या विश्वविद्यालयों की दरों पर छात्रवृत्ति तथा "विद्यावाचस्पति" के अनुसंधाता छात्र को

तीन वर्ष तक 700 रुपये या विश्वविद्यालयीय दरों पर मासिक छात्रवृत्ति देय होगी । इस प्रकार विद्यावारिधि के छह विभागों के लिए कुल साठ तथा "विद्यावाचस्पति" के लिए तीस छात्र-वृत्तियों का प्रावधान करना होगा । एतदर्थ वर्तमान दरों के आधार निम्न प्रकार अर्थव्यवस्था वांछित होगी ।

"विद्यावारिधि" एक वर्ष का प्रभार	विद्या वाचस्पति एक वर्ष का प्रभार
60 × 500 × 12 = 3.60 लाख	30 × 700 × 12 = 2.52 लाख
3.60 + 2.52 = कुल 6.12 लाख	

विद्यावारिधि दो वर्ष का प्रभार	विद्यावाचस्पति तीन वर्ष का प्रभार
60 × 500 × 12 × 2 = 7.20 लाख रुपये	30 × 700 × 12 × 3 = 7.56 लाख रुपये
7.20 + 7.56 = कुल 14.76 लाख	

भवन—संस्थान के परिसर में पृथक् इकाई के रूप में शोधपीठ का प्रमुख भवन निर्मित कराया जायगा । इस भवन के अन्तर्गत प्रत्येक विभाग विषय (वेद, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र तथा साहित्य) के लिए एक एक निर्देशन कक्ष, साधना कक्ष तथा एक विमर्श कक्ष होगा । इसके अलावा शोधपीठ के निदेशक तथा उपनिदेशक के कार्यकक्ष व उनके सहायकों के कक्ष स्थापित होंगे । शोधपीठ के प्रथम भवन के अन्तर्गत दो छात्रावास भवनों का भी निर्माण कराना होगा । इनमें विद्यावारिधि के साठ शोधार्थी छात्रों के लिए स्नानागार व शौचालय सहित द्विआवासीय सुविधा के तीस कक्षों वाले एक छात्रावास की आवश्यकता संस्थान की प्रारंभिक प्रयोजना में ही होगी । जबकि विद्यावारिधि के दो वर्षीय शोध के उपरान्त विद्यावाचस्पति अनुसंधान कार्य प्रारम्भ होने पर उसके तीस छात्रों के लिये एक आवासीय सुविधा के तीस कक्षों वाले स्नानागार व शौचालय सहित दूसरे छात्रावास की आवश्यकता होगी । दोनों छात्रावासों के लिए अधीक्षक कक्ष एवं भोजनालय की सम्मिलित व्यवस्था होगी । अतएव प्रथम छात्रावास भवन, अधीक्षक-कक्ष तथा भोजनालय प्रथम चरण में तथा दूसरा छात्रावास भवन दो वर्ष के उपरान्त द्वितीय चरण में वांछित होगा ।

उपकरण—सभी कक्षों में आवश्यक फर्नीचर, उपकरण व निर्देशन सामग्री की व्यवस्था करना वांछनीय होगा ।

अधिकारी एवं कर्मचारीगण—शोधपीठ संस्थान का प्रमुख-पीठ व अन्यपीठ इसके आनुषगिक पीठ होंगे । अतएव इस पीठ में संस्थान प्रमुख के रूप में निदेशक का एक पद, उप निदेशक का एक पद तथा प्रत्येक विभाग/विषय के लिये विभागाध्यक्ष का एक एक पद वांछित होगा । इन पदों के कार्य, उत्तरदायित्व और औचित्य आदि का विवरण निम्न प्रकार है—

निदेशक—निदेशक पद, सम्पूर्ण संस्थान के प्रमुख का पद कहलायेगा । संस्थान की सम्पूर्ण शैक्षणिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था इस पद के अधीन होगी । समस्त पीठों एवं विभागों के विषयों के लिए बजट प्रावधान निर्धारित करना, नियन्त्रण करना उसका उपयोग एवं कार्य निष्पादन कराना तथा पारि-णामिक उपलब्धि के लिये इस पद का सजग एवं सक्रिय उत्तर-दायित्व होगा ।

विषय/विभागों में गहन अध्ययन, शोधानुसंधान परिषद्, प्रकाशन ग्रन्थागार आदि के सम्यक् संचालन, निर्देशन, व्यवस्थापन, आयोजन, प्रकाशन तथा प्रशासन आदि निदेशक के अन्तिम अधिकार क्षेत्र में होगा । यह पद कुलपति के समकक्षस्तर का होगा और इसके लिए राष्ट्रीयस्तर का ख्याति प्राप्त अनुभवी विशिष्ट विद्वान् एवं प्रशासक पात्र होगा । निदेशक को निःशुल्क साजसज्जित आवासीय भवन तथा जी० पी० एफ०, चिकित्सा एवं यातायात सुविधाओं के अतिरिक्त 3000 रुपये मासिक न्यूनतम वेतन देय होगा । इस पद की आवश्यकता संस्थान की प्रायोजना के प्रारम्भ में ही होगी ।

उपनिदेशक—आरम्भ में विद्यावारिधि शोधकार्य का श्रीगणेश होगा । इसके दो वर्ष उपरान्त विद्यावाचस्पति का विशेष अनुसंधान आरम्भ कराया जायेगा । अतएव निदेशक के कार्य-भार में वृद्धि हो जाने के फलस्वरूप संस्थान के समस्त शैक्षणिक कार्यकलापों में निदेशक के सहयोग हेतु एक उपनिदेशक पद की आवश्यता शैक्षणिक पीठों के सन्दर्भ में होगी । निदेशक पद के अनुरूप ही इस पद का महत्व योगदान, उत्तरदायित्व एवं पात्रता रखी जावेगी । यह पद प्रो० प्रतिउपकुलपति के समकक्ष स्तर का रहेगा तथा इसके लिये 2800 रुपये मासिक न्यूनतम वेतन, तथा निःशुल्क साजसज्जित आवास, जी० पी० एफ० चिकित्सा एवं यातायात सुविधा देय होंगी । इस पद का अर्थ प्रभार दो वर्ष बाद प्रारम्भ होगा ।

विभागाध्यक्ष—शोधपीठ के अन्तर्गत छः मुख्य विषय विभाग :–वेद, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र व साहित्य संचालित होंगे । प्रत्येक विभाग के लिये एक एक विभागाध्यक्ष

का पद होगा। विभागाध्यक्ष अध्ययन पीठ के आचार्यों से परामर्श कर एवं विषय को विभाग के शोधाचार्य एवं अनुसंधाता छात्रों के लिए विषय निर्वाचन एवं कार्य की रूपरेखा तैयार करायेगा, तदनन्तर निर्धारित शोध कार्य प्रारम्भ कराया जावेगा। जिसमें शोधार्थी को चिन्तन, साधन लेखन में निर्देशन हेतु विभागाध्यक्ष पूर्ण सजग व तत्पर रहेगा। विभागाध्यक्ष एवं विभाग के कार्य में अध्ययन ग्रन्थागार तथा वाक्पीठ का उपयोग करने एवं सहयोग के लिये भी सक्रिय तथा प्राधिकृत रहेंगे। यह प्रत्येक शोधार्थी के कार्य का प्रतिमाह मूल्यांकन करेंगे एवं प्रति तीसरे माह प्रगति-विवरण निदेशक कार्यालय को देंगे। विभागाध्यक्ष पद के लिये सम्बन्धित विषय का ख्याति प्राप्त विशिष्ट विद्वान् पात्र होगा तथा इसके लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत वेतन मान (1500–2500) तथा भत्ते 920 (अनुमानित मासिक राशि 2420 रु० एवं नियमानुसार जी० पी० एफ० चिकित्सा व आवासादि सुविधा देय होगी।

कार्यालय–निदेशक एवं उपनिदेशक के साथ प्रथम श्रेणी के एक-एक आशुलिपिक तथा कार्यालयों के लिए एक एक वरिष्ठ लिपिक तथा एक एक कनिष्ठ लिपिक (टंकक) एवं तीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी राज्य सरकार के विहित वेतनमान एवं अन्य मानदेय में नियुक्त किये जावेंगे। इसके अलावा छात्रावासों में पाचक के तीन पद तथा सहायक कर्मचारियों के 3 पद आवश्यक होंगे।

उपर्युक्त प्रकार से शोधपीठ की पूर्ण आयोजना में आनुमानित अर्थ प्रभार निम्न प्रकार होगा :

शोधपीठ	पहले वर्ष	दूसरे वर्ष	तीसरे वर्ष	चौथे वर्ष	पाँचवें वर्ष	कुल राशि (लाख में)
	1	2	3	4	5	6
भूमि एवं भवन निर्माण :						
[क] शोधपीठ का प्रमुख भवन–						
तीन एकड़ भूमि का मूल्य	5.0	—	—	—	—	5.0
निदेशन कक्ष-6, विमर्श–कक्ष–1, निदेशक कक्ष–1, अधीनस्थ कक्ष–1 सुविधायें सहित।	1.2	—	—	—	—	1.2
[ख] साधन कक्ष–6 विमर्श कक्ष–1, उपनिदेशक कक्ष–1, अधीनस्थ कक्ष–1 सुविधा सहित।	—	—	1.3	—	—	1.3
[ग] प्रथम छात्रावास	3.6	—	—	—	—	3.6
[घ] द्वितीय छात्रावास	--	—	2.4	—	—	2.4
[ङ] अधीक्षक कक्ष	0.2	—	—	—	—	0.2
[च] भोजनालय	0.5	—	--	—	—	0.5
उपस्कर एवं उपकरण :						
[छ] शोधपीठ के लिये	0.2	—	0.2	—	—	0.4
[ज] छात्रावास के लिये	0.2	--	0.1	—	—	0·3
छात्रवृत्ति :						
[झ] विद्यावारिधि शोध छात्रों को	3.6	3.6	3.6	3.6	3.6	18.0
[ञ] वाचस्पति अनुसन्धान छात्रों को	—	—	2.5	26.5	2.6	7.6
संवेतन :						
निदेशक	0.4	0.4	0.4	0.4	0.4	1.8
उप-निदेशक	—	—	0.3	0.3	0.4	1.0
विभागाध्यक्ष	1.7	1.8	1.9	2.0	2.2	9.6
आशु, वरिष्ठ व कनिष्ठ लिपिक	0.3	0.3	0·6	0.7	0.7	2.6
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी चालक एवं सहायक	0.4	0.4	0.6	0.7	0.7	2.7
योग	17.3	6.5	13.7	10.2	10.3	58.1

(ख) अध्ययन-पीठ

विभिन्न शास्त्रों के शोधपूर्ण गहन एवं उच्चस्तरीय अध्ययन के लिए इस पीठ की आवश्यकता है, ताकि शोध कार्य के लिए उपयुक्त पात्र छात्रों का स्रोत निरन्तर बना रहे एवं उच्चस्तरीय शोधकार्य की सम्भावनायें शाश्वत रह सकें। अतएव यह अध्ययनपीठ, शोधपीठ के प्रति तथा संस्कृत जगत् के प्रति उत्तरदायी होगा।

उद्देश्य

- वेद, व्याकरण, ज्योतिष, दर्शन, धर्म तथा साहित्यादि शास्त्रों के परम्परागत ठोस अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करना।

- संस्कृत वाङ्मय के शास्त्रीय तत्वों के गहन अध्ययन को प्रोत्साहित करना ।
- संस्कृत वाङ्मय की विभिन्न शाखाओं में पुरानी प्रौढ़ि के अनुरूप/विद्वान् तैयार करना ।
- पूर्वकाल की अन्तेवासी व्यवस्था तथा प्रकाश एवं विमर्श पद्धति को वर्तमान में पुनः स्थापित करना ।

क्षेत्र—उपर्युक्त उद्देश्यों के सन्दर्भ में शास्त्री/स्नातक स्तर के उपरान्त आचार्य (स्नातकोत्तर) स्तर का एक उच्च-स्तरीय अध्ययनपीठ वांछित है जिसमें निम्नांकित मुख्य विषय/विभाग होंगे—

वेदविभाग—ऋक्, यजुः, साम तथा अथर्ववेद के गहन अध्ययन का विभाग ।

दर्शनविभाग—दर्शन एवं न्याय क्षेत्र के गूढ़ अध्ययन का विभाग ।

व्याकरणविभाग—शब्द व्युत्पत्ति एवं भाषाशास्त्रीय विभाग ।

ज्योतिषविभाग—फलित एवं गणितीय ज्योतिर्विज्ञान विभाग ।

धर्मशास्त्र विभाग—धर्मशास्त्र एवं पुराणेतिहास विभाग ।

साहित्य विभाग—संस्कृत साहित्य शास्त्रीय विभाग ।

इन विभागों में अध्ययन पाठ्यक्रम दो वर्ष का होगा तथा प्रत्येक विभाग में प्रथम व द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम के लिए 10+10 कुल 20 स्थान होंगे । प्रवेश की पात्रता शास्त्री अथवा स्नातक (संस्कृत वैकल्पिक सहित) उपाधि होगी तथा सीमित स्थान एवं गहन अध्ययन की दृष्टि से जाँच परीक्षा एवं वरीयतानुसार प्रवेशाधिकार रखा जावेगा ।

छात्रवृत्ति—इस पीठ में प्रवेशोपरांत अध्येता छात्र से यह अपेक्षा की जावेगी कि इस संबंधित विषय में गहन अध्ययन ज्ञान संवर्धन, चिन्तन एवं मनन की दिशा में इस पीठ की प्रतिष्ठा बढ़ाये एवं शोध का अजस्र स्रोत प्रतिपादन करे। अतएव इस पीठ में अध्येता छात्र को दो वर्ष तक 300 रुपये मासिक छात्रवृत्ति का प्रावधान होगा, जो प्रथम वर्ष में सभी 60 छात्रों को तथा द्वितीय वर्ष में 120 छात्रों को देय होगी । इसके लिए निम्न प्रकार अर्थ प्रावधान वांछित होगा ।

(क) प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम के 60 छात्रों को पहले वर्ष 2.16 लाख रुपये ।

(ख) प्रथम व द्वितीय वर्ष पाठचक्रम के 120 छात्रों को दूसरे वर्ष 4.32 लाख रुपये ।

भवन—परिसर में इस पीठ का भवन एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में निर्मित कराया जावेगा । जिसमें उपर्युक्त 6 विभागों में प्रत्येक विभाग के लिए प्रथम व द्वितीय वर्ष हेतु दस छात्र व अध्यापक के स्थान वाला एक एक कक्षा कक्ष, प्रोफेसर तथा रीडर को एक एक कक्ष, शोधअध्यापक वर्ग तथा समस्त छात्रों का एक एक बड़ा कॉमन कक्ष या उपनिवेश कक्ष तथा वेद एवं ज्योतिष विषय के लिए एक एक प्रयोगशाला/यज्ञशाला कक्ष आवश्यक होगा ।

अध्ययन पीठ भवन के अन्तर्गत ही दो छात्रावास भवन भी क्रमशः प्रथम वर्षीय पाठचक्रम के साथ छात्रों के लिए एक तथा द्वितीय वर्ष पाठचक्रम के साथ छात्रों के लिए एक, जो कि आवासीय सुविधा वाले बीस बीस कक्षों तथा स्नानागार-शौचालय से युक्त वांछित होंगे । दोनों छात्रावासों के साथ एक एक छात्रावास अधीक्षक का कक्ष तथा भोजनालय का भी निर्माण कराया जायेगा ।

चूँकि पहले वर्ष प्रथम वर्ष का पाठचक्रम ही संचालित होगा । द्वितीय वर्ष का पाठचक्रम आगामी वर्ष चलेगा, अतः पीठ व छात्रावास भवन दो चरणों में पहले व दूसरे वर्ष निर्मित कराये जावेंगे ।

उपकरण—प्रत्येक कक्षा के लिए आवश्यक फर्नीचर, अध्यापन उपकरण तथा प्रायोगिक तथा सामग्री की व्यवस्था वांछित होगी ।

अधिकारी एवं कर्मचारीगण—प्रत्येक विभाग के लिए सम्बन्धित विषय में प्रोफेसर, रीडर तथा लेक्चरार के निम्न पदों की आवश्यकता होगी । इनमें रीडर के पद द्वितीय वर्ष पाठचक्रम के साथ दिये जावेंगे ।

क्र. सं.	विषय विभाग अध्ययन पीठ	पद नाम	पदों की संख्या	यू०जी०सी० वेतनमान एवं नियत भत्ते
1.	वेद	आचार्य (प्रोफेसर)	1	1500–2500
	(ऋग्., यजुः, साम., अथर्व.)	प्रवाचक (रीडर)	1	1200–1900
		प्राध्यापक (लेक्चरार)	4	700–1600
		यज्ञशाला प्रभारी	1	690–1420
2.	दर्शन एवं न्याय	आचार्य (प्रोफेसर)	1	1500–2500
		प्रवाचक (रीडर)	2	1200–1900
		प्राध्यापक (लेक्चरार)	2	700–1600

क्र.सं. विषय विभाग (अध्ययन पीठ)	पद नाम	पदों की संख्या	यू०जी०सी० वेतनमान एवं नियम भत्ते
3. ज्योतिष (गणित एवं फलित)	प्राचार्य (प्रोफेसर)	1	1500–2500
	प्रवाचक (रीडर)	1	1200–1900
	प्राध्यापक (लेक्चरार)	2	700–1600
	प्रयोगशाला प्रभारी	1	690–1420
4. धर्मशास्त्र एवं पुराणेतिहास	आचार्य (प्रोफेसर)	1	1500–2500
	प्रवाचक (रीडर)	1	1200–1900
	प्राध्यापक (लेक्चरार)	2	700–1600
5. व्याकरण	आचार्य (प्रोफेसर)	1	1500–2500
	प्रवाचक (रीडर)	1	1200–1900
	प्राध्यापक (लेक्चरार)	2	700–1600
6. साहित्यशास्त्र	आचार्य (प्रोफेसर)	1	1500–2500
	प्रवाचक (रीडर)	1	1200–1900
	प्राध्यापक (लेक्चरार)	2	700–1600

इसके अलावा पीठ के लिये लघु कार्यालय हेतु एक वरिष्ठ लिपिक, एक कनिष्ठ लिपिक टंकणकर्त्ता, तीन चतुर्थश्रेणी कर्मचारी तथा छात्रावासों में चार पाचक एवं चार सहायकों की आवश्यकता होगी ।

अध्ययन पीठ	पहले वर्ष	दूसरे वर्ष	तीसरे वर्ष	चौथा वर्ष	पांचवे वर्ष	कुल रु० लाख में
	1	2	3	4	5	6
1. भवन–						
[क] प्रथम वर्षीय पाठ्यक्रम के कक्ष 6, प्रोफेसरों हेतु कक्ष 6, बड़ा उपवेशन कक्ष 1, ज्योतिष एवं वेद प्रयोगशाला कक्षा-2 सुविधा सहित	2.0	—	—	—	—	2.0
[ख] द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम के कक्ष 6, रीडर कक्ष 6, बड़ा उपवेशन कक्ष-1 सुविधा सहित	—	1.6	—	—	—	1.6
[ग] प्रथम छात्रावास एवं अधीक्षक कक्ष	2.8	—	—	—	—	2.8
[घ] द्वितीय छात्रावास एवं अधीक्षक कक्ष	—	2.8	—	—	—	2.8
[ङ] भोजनालय	0.2	0.3	—	—	—	0.5
2. फर्नीचर एवं उपकरण–						
[च] अध्ययन पीठों के लिए	0.3	0.3	—	—	—	0.6
[छ] छात्रावासों के लिए	0.1	0.2	—	—	—	0.3
3. छात्रवृत्ति–						
[ज] प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम के लिए	2.1	—	—	—	—	2.1
[झ] द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम के लिए	—	4.4	4.4	4.4	4.4	17.5
4. वेतन–						
[ञ[प्रोफेसर 6 पद	1.8	1.8	1.9	2.0	2.1	9.6
[ट] रीडर 6 पद	—	1.5	1.6	1.7	1.9	6.7
[ठ] प्राध्यापक/प्रयोगशाला यज्ञशाला प्रभारी पद	3.3	3.4	3.7	3.8	4.0	18.2
[ड] वरिष्ठ एवं कनिष्ठ लिपिक	0.2	0.2	0.2	0.2	0.2	1.0
[ढ] चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी व सहायक	0.4	0.7	0.8	0.9	0.8	3.6
योग	13.3	17.2	12.5	12.9	13.5	69.6

(ग) ग्रन्थागार-पीठ

गहन अध्ययन एवं शोध कार्य में सहायता व उपयोगाथ विशाल ग्रन्थ भण्डार की उपलब्धता आवश्यक है । ग्रन्थागार में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ, पाण्डुलिपियाँ, शास्त्रीय ग्रन्थ एवं संदर्भ ग्रन्थों का चयन संकलन भी वांछित है, ताकि जहाँ तहाँ पड़ी निधि की रक्षा की जा सके एवं उसका सदुपयोग अध्ययन व शोध के क्षेत्र में किया जा सके । ग्रन्थागार पीठ अध्ययन पीठ के प्रति उत्तरदायी होगा ।

उद्देश्य—संस्कृत 'वाङ्मय के प्राचीनतम ग्रन्थों का संग्रह करना । प्राचीन पाण्डुलिपियों को प्राप्त कर उनकी रक्षा करना । अलभ्य ग्रन्थों तथा पाण्डुलिपियों के टेप तथा माइक्रो फिलमीकरण करना । प्राचीन एवं अर्वाचीन सन्दर्भ ग्रन्थों का संग्रह करना । वाङ्मय के उच्चस्तरीय अध्ययन में तुलनात्मक

ज्ञान वृद्धि तथा शोधकार्य में मौलिकता प्रतिपादन हेतु ग्रन्थागार का उपयोग करना। संस्कृत के पुराने व वर्तमान पत्र-पत्रिकाओं का संचय करना।

क्षेत्र—संस्कृत वाङ्मय के उच्चस्तरीय अध्ययन, गूढ़ ज्ञान तथा शोधकार्य के लिए प्राचीन, अर्वाचीन मूलपाठ एवं सन्दर्भ ग्रन्थों की नितान्त आवश्यकता होती है। प्राचीन ग्रन्थ एवं विभिन्न स्थानों पर अवस्थित पाण्डुलिपियाँ जीर्ण-शीर्ण व दुर्लभ होती जा रही हैं तथा इनका मुद्रण—पुनर्मुद्रण कठिन हो रहा है। उनकी यथा स्थिति ज्ञान रक्षा के लिये टेपिंग, माइक्रो फिल्मांकन, चित्रण आदि की आवश्यकता है। अतः संस्थान के अन्तर्गत एक ग्रन्थागार पीठ स्थापित किया जाना नितान्त आवश्यक एवं परमोपयोगी होगा, ताकि उस प्राचीन व अमूल्य निधि की रक्षा करते हुए उसका उपयोग अध्ययन व शोधकार्य हेतु किया जा सके। प्रारम्भ में बीस हजार ग्रन्थों का संकलन कर ग्रन्थागार स्थापित किया जावे, जिसका आवश्यकतानुसार उत्तरोत्तर विकास किया जावेगा। एतदर्थ पुस्तकों के लिये न्यूनतम 7.00 लाख रुपयों का प्रावधान किया जाना वांछित है।

भवन—परिसर में ग्रन्थागार पीठ का एक भवन निर्माण कराया जाना आवश्यक होगा, जिसमें मूल ग्रन्थों तथा सन्दर्भ ग्रन्थों के विशाल भण्डार को व्यवस्थित रखने के लिये दो बड़े कक्ष (हॉल) हों, हस्तलिखित ग्रन्थों तथा पाण्डुलिपियों के रख रखाव के पृथक् कक्ष हों तथा टेपिंग कार्य फिलमांकन एवं चित्रणादि के पृथक्-पृथक् कक्ष हों। वाचनालय का एक बड़ा कक्ष हो तथा पुस्तकालयाध्यक्ष, उप-पुस्तकालयाध्यक्ष एवं पुस्तकालय सहायक के कक्ष हों। ग्रन्थागार पीठ के भवन निर्माण पर अनुमानित व्यय राशि 2.50 लाख रुपये होगी।

उपकरण—ग्रन्थागार में ग्रन्थों के रख रखाव एवं अन्य उपयोगार्थ आवश्यक रेक्स, आलमारी, फ़र्नीचर तथा टेपिंग, रिकार्डिंग एवं माइक्रो फिल्मांकन, चित्रण आदि के उपकरण व सामग्री की व्यवस्था करना आवश्यक होगा। ग्रन्थों की उपलब्धि तथा पत्र-पत्रिकाओं की अवाप्ति का प्रावधान भी वांछनीय है। एतदर्थ अनुमानित व्यय प्रारम्भ में 3.00 लाख रुपये की आवश्यकता होगी।

स्टाफ़— इस पीठ के लिये वेतनमान (1000-1900) एवं नियमानुसार भत्तों पर पुस्तकालयाध्यक्ष का एक पद, वेतनमान (780–1460) एवं नियमानुसार भत्तों पर उप-पुस्तकालयाध्यक्ष का एक पद, वेतनमान (520–925) तथा नियमानुसार भत्तों पर सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष का एक पद तथा टेपिंग, माइक्रो फिल्मांकन आदि के लिये वेतनमान (520–925) एवं भत्तों पर एक तकनीकी सहायक के पदों की आवश्यकता होगी। इसके अलावा एक कनिष्ठ लिपिक एवं टंकण कर्त्ता तथा दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी एवं एक जिल्दसाज (बुक बाइण्डर) भी वांछित होगा।

उपर्युक्त प्रकार से ग्रन्थागार पीठ का कुल अनुमानित प्रभार निम्नलिखित प्रकार से वांछित होगा—

ग्रन्थागार पीठ	पहले वर्ष	दूसरे वर्ष	तीसरे वर्ष	चौथे वर्ष	पाँचवें वर्ष	कुल राशि लाखों में
(क) पीठ का भवननिर्माण	2.5	—	—	—	—	2.5
(ख) पुस्तक	2.0	2.0	1.0	1.0	1.0	7.0
(ग) फ़र्नीचर उपकरण आदि	1.0	0.5	0.5	0.5	0.5	3.0
(घ) संवेतन	0.7	0.7	0.8	0.8	0.9	4.1
	6.2	3.2	2.3	2.3	2.4	16.6

(घ) प्रकाशन–पीठ

संस्थान के कार्यकलापों, विषयगत विशिष्ट लेखों, शोध-पत्रों एवं अन्य उपलब्धियों के सम्पादन व प्रकाशन की तथा नियमित/साप्ताहिक अथवा मासिक पत्रिका के सम्पादन की भी नितान्त आवश्यकता है, तदर्थ प्रकाशन-पीठ भी संस्थापित करना वांछनीय है।

उद्देश्य—संस्कृत में लेखन, सम्पादन व प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहन देना। संस्कृत वाङ्मय के नैतिक तथा राष्ट्रीय महत्व के लघु आख्यानों व रूपकों तथा वर्तमान सन्दर्भ में जनोपयोगी प्रकाशन को प्रोत्साहन देना। संस्कृत की सरल व बालोपयोगी पत्रपत्रिकाओं के प्रकाशन को प्रोत्साहित करना। साहित्यिक पत्रिका तथा शोध पत्रों के सम्पादन-प्रकाशन की व्यवस्था करना। सामान्य संस्कृत शिक्षा के लिए समसामयिक पाठ्यसामग्री-सम्पादन तथा प्रकाशन की व्यवस्था करना।

क्षेत्र—विषयगत ज्ञान एवं विचारों के आदान-प्रदान के लिये भाषा के मुखोच्चारण के अलावा विशुद्ध एवं प्रवाहपूर्ण लेखन का भी अतिशय महत्व है। अतएव संस्थान के कार्यों एवं विभिन्न पीठों की उपलब्धियों, ज्ञान के आदान-प्रदान, नवीन निष्कर्षों तथा शोध पत्रों के लेखन सम्पादन तथा प्रकाशन की व्यवस्था संस्थान का एक व्यावहारिक अंग है। अतएव संस्थान में एक सम्पादन, प्रकाशन पीठ स्थापित किया जाना वांछित है। संस्कृत वाङ्मय की साहित्यिक व शोध सम्बन्धी विशिष्ट

सामग्री के सम्पादन व प्रकाशन के मुख्य कार्य के साथ-साथ संस्कृत को प्रासंगिक; सामान्य जनोपयोगी एवं रुचिकर बनाने की दृष्टि से नैतिक व राष्ट्रीय महत्व के सरल साहित्य व सामयिक पाठ्य सामग्री के प्रकाशन का भी इस संस्थान के अन्तर्गत यह पीठ अच्छा क्षेत्र सिद्ध होना चाहिये ।

भवन-परिसर में एक तरफ प्रकाशन पीठ का भवन एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में कराया जावेगा । इस भवन में लेखन कक्ष, सम्पादन कक्ष, प्रकाशन कक्ष, कम्पोजिंग कक्ष, मुद्रण-यन्त्र कक्ष, बाइण्डिग कक्ष एवं भण्डार कक्ष आवश्यक होंगे । साथ ही सम्पादन–प्रकाशन अधिकारी एवं सहायक अधिकारी के कार्यालय कक्ष भी वांछित हैं । इस पीठ के भवन निर्माण हेतु अनुमानित राशि 1.50 लाख की आवश्यकता होगी ।

उपकरण– प्रकाशन पीठ के लिए सम्पादन प्रकाशनादि कक्षों का फ़र्नीचर, मुद्रण-यन्त्र एवं कम्पोज़िग, बाइण्डिग की सामग्री (टाइप, कागज, स्टिचिंग आदि) की आवश्यकता होगी । इसके लिए अनुमानित राशि 2.75 लाख वांछित होगी ।

स्टाफ–उक्त पीठ के लिए वेतनमान (1000–1900) एवं नियत भत्तों पर एक सम्पादन-प्रकाशन अधिकारी, वेतनमान (780–1460) एवं भत्तों का एक उपसम्पादन-प्रकाशन अधिकारी, वेतनमान (740–1420) एवं भत्तों पर एक मुद्रण तकनीकी (मशीनमैन) वेतनमान (520–925) एवं भत्तों के दो कम्पोजिंग व प्रूफ तकनीकी तथा दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी नियोजित करने होंगे ।

उक्त प्रकार से प्रकाशन पीठ की स्थापना में कुल अनुमानित अर्थ प्रभार की निम्नांकित प्रकार से आवश्यकता होगी :—

प्रकाशन पीठ :

प्रकाशन पीठ	पहले वर्ष	दूसरे वर्ष	तीसरे वर्ष	चौथे वर्ष	पाँचवें वर्ष	कुल राशि
(क) पीठ का भवन निर्माण	1.5	--	—	—	—	1.5
(ख) उपकरण एवं फर्नीचर	1 5	0.5	0.2	0.2	0.2	2.7
(ग) संवेतन	0.7	0.7	0.8	0.8	0.9	4.1
योग	3.7	1.2	1.0	1.1	1.1	8.4

(ङ) वाक्-पीठ

संस्थान को संस्कृत वाङ्मय के ज्ञान एवं वैदुष्य से विभूषित आचार्यों, विद्वानों एवं काव्यकारों आदि का समागम-स्थल बनाया जाना चाहिये, ताकि एक मंच पर एकत्र होकर सामयिक चिन्तन, विचार विमर्श रूपी प्रकाश को दिशा मिलती रहे । इस सन्दर्भ में संगोष्ठी, सेमीनार, कार्यशाला आदि के आयोजनार्थ संस्थान में एक वाक्पीठ की स्थापना आवश्यक होगी । यह वाक्पीठ शोधपीठ के प्रति उत्तरदायी होगी ।

उद्देश्य—संस्कृत वाङ्मय के मौलिक स्वरूप की रक्षा एवम् उसका प्रचार करना । बृहद् परिषदें, साहित्यिक सांस्कृतिक सेमीनार, व्याख्यान मालायें, काव्य, संगोष्ठियों का आयोजन कर संस्कृत का लोकहित में जनोपयोगी प्रचार प्रसार करना । संस्कृत की पाठ्यसामग्री सम्बन्धी कार्यगोष्ठियों का आयोजन करना । वर्तमान पीढ़ी को शास्त्रीय विवेचना, परिभाषा, व्याख्यान, कवित्व, लेखन, सम्पादन तथा वैदुष्य की दिशा में प्रेरित करना । उद्भट विद्वानों, लेखकों एवं काव्यकारों एवम् आचार्यों को आमन्त्रित करना व समादर देना ।

क्षेत्र – संस्कृत वाङ्मय का मौलिक स्वरूप एवम् ज्ञान-भण्डार तिरोहित होता जा रहा है, उसकी रक्षा करने व उसे प्रकाश में लाने तथा गिरते हुए स्तर को समुन्नत करने की दिशा में काफी प्रयास करने होंगे । प्रस्तावित संस्थान में होने वाले कार्यकलापों के परस्पर तालमेल तथा राष्ट्र व विश्व में यत्रतत्र संस्कृत के क्षेत्र में प्रगति व शोध की जानकारी एवं विचार विमर्श तथा वैदुष्य के आदान-प्रदान का एक बड़ा क्षेत्र है, जो इस संस्थान के दायित्व में आता है । अतएव संस्थान में एक वाक्पीठ की स्थापना करना परमावश्यक होगा । वाक्पीठ के आयोजन एवं क्रियाकलाप से अध्ययनपीठ एवं शोधपीठ प्रेरित व लाभान्वित होंगे तथा ग्रन्थागारपीठ एवं प्रकाशनपीठ की भी वृद्धि होगी ।

भवन– परिसर में वाक्पीठ का एक स्वतन्त्र भवन निर्मित करना होगा, जिसमें लगभग 350 व्यक्तियों के बैठने व मंच व्यवस्था सहित एक विशाल हॉल परिषद् सेमीनार आदि के आयोजन हेतु तथा लगभग 100 व्यक्तियों के बैठने योग्य स्थान वाला एक बड़ा हॉल संगोष्ठी कार्यशाला आदि के आयोजन हेतु वाँछित है । इसके अलावा 6 सामान्य कक्ष एवम् अधिकारियों के दो कार्यालय कक्ष होंगे । इस पीठ के अन्तर्गत ही एक अतिथि गृह का निर्माण भी आवश्यक है, जिस में दो विशिष्ट अतिथि कक्ष तथा 12 सामान्य कक्ष हों । उक्त प्रकार से भवन निर्माण का कार्य तीन चरणों में (प्रथम चरण में सामान्य कक्ष व कार्यालय कक्ष, द्वितीय चरण में संगोष्ठी हाल तथा

अतिथि गृह तथा तृतीय चरण में विशाल हॉल) निर्मित कराया जाना चाहिये।

उपकरण– बड़े कक्षों (हॉल) में निर्धारित संख्या में व्यक्तियों के बैठने हेतु दरियाँ व फर्नीचर तथा गद्दों पर आवश्यक बिछायत व पर्दों की सामग्री, दो माइक सैट एवं एक टेपरिकार्ड तथा अन्य कक्षों के लिए फर्नीचर आदि की आवश्यकता होगी। आमंत्रित विद्वानों, कवियों, अन्वेषकों आदि के लिए आभार-सूचक मानदेय की व्यवस्था करनी होगी।

स्टाफ–– इस पीठ का कार्य संचालनार्थ निम्नांकित प्रकार से स्टाफ की व्यवस्था आवश्यक होगी।

वेतनमान (1000–1860) व भत्तों पर एक सेमीनार अधिकारी। वेतनमान (860–1750) एवं भत्तों पर एक कार्य-शाला अधिकारी तथा वेतनमान (740–1420) एवं भत्तों पर एक सहायक प्रभारी अधिकारी तथा एक वरिष्ठ एवं एक कनिष्ठ लिपिक, साथ में दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी।

उपर्युक्त प्रकार से वाक् पीठ की पूर्ण व्यवस्था पर अनुमानित। अर्थ प्रभार की स्थिति निम्नांकित प्रकार से होगी :—

वाक् पीठ	पहले वर्ष	दूसरे वर्ष	तीसरे वर्ष	चौथे वर्ष	पाँचवें वर्ष	कुल राशि
(क) भवन निर्माण	1.0	2.5	3.0	—	—	6.5
(ख) उपकरण व फर्नीचर	0.2	2.3	0.4	—	—	2.9
(ग) संवेतन	0.6	0.7	0.7	0.8	0.8	3.8
योग:–	1.8	5.5	4.1	0.8	0.8	11.2

(च) प्रशासनिक-पीठ

यह पीठ अध्ययन पीठ एवं शोधपीठ के प्रति उत्तरदायी होगा। सम्पूर्ण संस्थान के प्रशासनिक कार्य की व्यवस्था एवं विकास, आर्थिक प्रावधानों का संधारण एवं नियन्त्रण, प्रवेश-परीक्षा आदि की व्यवस्था के कार्यों हेतु एक प्रशासनिक पीठ की स्थापना की जावेगी। यह पीठ शोध संस्थान, राज्य एवं केन्द्र सरकार तथा संस्कृत जगत् के प्रति उत्तरदायी होगा।

प्रशासनिक पीठ के विशुद्ध उद्देश्य, क्षेत्र संरचना, व आयोजना के प्रकार निम्नांकित प्रकार से हैं—

उद्देश्य— संस्थान के समग्र ढाँचे की प्रशासनिक व्यवस्था करना। विभिन्न पीठों के कार्य संचालन की आयोजना एवं उनमें तालमेल बनाये रखना एवं क्रियान्विति करना। बजट प्रावधान एवं अनुदान आदि के विवरण तैयार करना, पारित कराना, आय-व्यय का नियन्त्रण तथा लेखे संधारण करना। छात्र प्रवेश एवं उनकी विभिन्नस्तरों की परीक्षा आयोजना की व्यवस्था तथा अभिलेख संधारण करना। विधिवत् कार्यालय संचालन करना। शोध के प्रचार-प्रसार के लिये प्रयासशील रहना।

क्षेत्र— संस्थान के समस्त कार्य कलापों के सन्दर्भ में राज्य सरकार, केन्द्र सरकार, विभिन्न विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, शिक्षा विभाग, संस्कृतसेवी विभिन्न ऐजेन्सियों संगठन, विद्वान्, एवं आचार्यगण आदि से पत्राचार, अर्थव्यवस्था, कार्य प्रणाली, प्रगति-परिणाम आदि विविध क्षेत्र में सम्पर्क सम्बन्ध एवं क्रियाशील रहना वांछित है। अतएव संस्थान के अन्तर्गत एक प्रशासनिक पीठ की नितान्त आवश्यकता होगी।

भवन—संस्थान के परिसर में ही प्रशासनिक पीठ का भवन एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में निर्मित कराया जावेगा। इसमें निदेशक (उपकुलपति), उपनिदेशक (प्रति कुलपति) पंजीयक तथा वित्त अधिकारी के प्रशासनिक कार्य कक्ष एवं अधीक्षक लेखाकार तथा मन्त्रालयी कर्मचारियों के कार्यालय कक्ष विभिन्न विषयों के पृथक्-पृथक् सेल होंगे। एक स्वागतकक्ष एक भण्डारकक्ष तथा एक कोष कक्ष भी वांछनीय है।

उपकरण—प्रत्येक कक्ष के लिए आवश्यक फर्नीचर, साज सज्जा व उपकरण सामग्री की व्यवस्था की जावेगी।

स्टाफ़—प्रशासन पीठ के लिए स्टाफ की निम्न प्रकार आवश्यकता होगी–

(1) निदेशक (एक पद)

शोधपीठ के निदेशक ही संस्थान के प्रमुख अधिकारी हैं। ये ही इन प्रशासन पीठ के निदेशक भी कहलायेंगे एवं प्रमुख प्रशासनाधिकारी रहेंगे। शोध पीठ व प्रशासनिक पीठ के लिये इस पद पर पृथक् २ नियोजन आवश्यक नहीं है।

(2) उपनिदेशक (एक पद)

उप निदेशक संस्थान में प्रशासन सम्बन्धी मुख्य अधिकारी होंगे। यह निदेशक के प्रति उत्तरदायी होंगे एवं उनके परामर्श एवं अनुमोदन से संस्थान का सम्पूर्ण प्रशासनिक दायित्व वहन करेंगे। यह पद (1750–2500) वेतनमान एवं देय भत्ते का होगा।

(3) पंजीयक (एक पद)

संस्था में छात्र प्रवेश, जाँच, परीक्षण, पंजीयन आदि का समग्र कार्य पंजीयक के अधीन होगा। पंजीयक संस्थान के निदेशक व उपनिदेशक के प्रति उत्तरदायी होंगे। यह पद (1000–1680) वेतनमान एवं देय भत्तों का होगा।

(4) वित्त अधिकारी (एक पद)

वित्त अधिकारी संस्थान की वित्तीय योजना, बजट संधारण, आय व्यय नियन्त्रण आदि समस्त वित्तीय दायित्वों को वहन करेंगे तथा निदेशक/उपनिदेशक एवं पंजीयक के प्रति उत्तरदायी होंगे। इस पद का वेतनमान (1000-1860) तथा देय भत्ते होंगे।

इस पीठ के कार्यालय हेतु अधीक्षक तथा लेखाकर के एक–एक पद, वरिष्ठ लिपिक के दो पद, कनिष्ठ लिपिक तीन पद, टंकण लिपिक के दो पद, तथा आशुलिपिक एक पद, एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के चार पद आवश्यक होंगे, साथ ही दो वाहन (एक कार व एक मेटाडोर) भी वांछित है।

उपर्युक्त प्रकार की व्यवस्था के किये वित्तीय प्रभार की अनुमानित राशि निम्नानुसार वांछित होगी।

प्रशासन पीठ	पहले वर्ष	दूसरे वर्ष	तीसरे वर्ष	चौथे वर्ष	पांचवें वर्ष	कुल राशि लाखरुपयों में
(क) भवन निर्माण	1.5	—	—	—	—	1.5
(ख) फर्नीचर साज सामान एवं उपकरण	0.5	0.2	0.1	0.1	0.1	1.0
(ग) संवेतन	1.8	1.9	2.0	2.1	2.2	10 0
(घ) वाहन (एक कार एक मेटाडोर)	0.8	—	1.6	—	—	2.4
योग:—	0.6	2.1	3.7	2.2	2.3	14.9

संस्थान के अन्तर्गत समस्त पीठों के भवन निर्माण कार्य हेतु पाँच वर्ष का व्यय विवरण—

भवन निर्माण	पहले वर्ष 1	दूसरे वर्ष 2	तीसरे वर्ष 3	चौथे वर्ष 4	पांचवें वर्ष 5	कुल राशि लाखरुपयों में 6
1. शोधपीठ :						
(क) तीन एकड़ भूमि का	5.0	—	—	—	—	5.0
(ख) मूल्य दस दस छात्रों के लिए निर्देशन कक्ष–६ विमर्श कक्ष–1, निदेशक कक्ष, कार्यालय कक्ष–1 सुविधायें।	1.2	—	—	—	—	1.0
(ग) पाँच पाँच छात्रों के लिए साधना कक्ष 6, विमर्श कक्ष–1, उप निदेशक कक्ष-1, कार्यालय कक्ष-1 सुविधायें।	—	—	1.3	—	—	1.3
(घ) प्रथम छात्रावास 60 छात्रों के लिए 2 आवासीय कक्ष-अधीक्षक कक्ष, भोजनालय स्नानागार, शौचालय।	3.6	—	—	—	—	3.6
(ङ) द्वितीय छात्रावास 30 छात्रों के लिए, 1 आवासीय कक्ष, अधीक्षक कक्ष, भोजनालय, स्नानागार, शौचालय।	0.7	—	—	—	—	3.1
योग—	10.5	—	—	—	—	14.2
2. अध्ययन पीठ :						
(क) दस दस छात्रों के लिए प्रथम वर्षीय पाठ्यक्रम कक्ष-6, प्रोफेसर्स कक्ष-6, उपवेशन कक्ष–1 प्रयोगशाला कक्ष-2, मय सुविधायें।	2.0	—	—	—	—	2.0
(ख) द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम कक्षा कक्ष-6, रीडर्स कक्ष—6, उपवेशन कक्ष-1 मय सुविधायें।	—	1.6	—	—	—	1.6

	1	2	3	4	5	6
(ग) प्रथम छात्रावास 60 छात्रों के लिए एवं अधीक्षक कक्ष	2.8	—	—	—	—	2.8
(घ) द्वितीय छात्रावास 60 छात्रों के लिए एवं अधीक्षक कक्ष	—	2.8	—	—	—	2.8
(ङ) भोजनालय	0.2	0.2	—	—	—	0.5
योग—	5.0	4.6	—	—	—	9.7
3. ग्रन्थागार–पीठ						
पुस्तकों के लिए हाल दो, पाण्डुलिपि व हस्तलिखित ग्रन्थ कक्ष, एक टेपिंग व माईक्रोफिल्म कक्ष, 1 पुस्तकालयाध्यक्ष, उप पुस्तकालयाध्यक्षादि के कार्यालय कक्ष ।	2.5	—	—	—	—	2 5
योग—	2.5	—	—	—	—	2.5
4. प्रकाशन–पीठ						
लेखन, सम्पादन, प्रकाशन के एक एक कक्ष, कम्पोंजिग व मुद्रण के एक एक कक्ष, बाईडिंग व भण्डार कक्ष, अधिकारियों व कार्यालयों के कक्ष ।	1.5	—	—	—	—	1.5
योग—	1.5	—	—	--	—	1.5
5. वाक्पीठ						
(क) सामान्य कक्ष व कार्यालय कक्ष	1.0	—	—	—	—	1.0
(ख) संगोष्ठीहाल, अतिथिगृह	—	2.5	—	—	—	2.5
(ग) सेमीनार हाल, मंच व्यवस्था ।	—	—	3.0	—	—	3.0
योग—	1.0	2.5	3.0	—	—	6.5
6. प्रशासन-पीठ						
निदेशक, उपनिदेशक पंजीयक, वित्त अधिकारी के कक्ष एवं इनके कार्यालय कक्ष मय सुविधायें ।	1.50	—	—	—	—	1.5
योग	1.50	—	—	—	—	1.5
भूमि एवं भवन निर्माण का कुल योगः—	22.5	7.1	6.7	—	—	35.9

संस्थान के अन्तर्गत समस्त पीठों के लिए फर्नीचर उपकरण एवं साज सामग्री हेतु पाँच वर्ष का व्यय विवरणः—

	पहले वर्ष	दूसरे वर्ष	तीसरे वर्ष	चौथे वर्ष	पाँचवें वर्ष	कुल राशि
1. शोधपीठ :						
(क) शोधपीठ भवन हेतु	0 2	—	0.1	—	—	0.3
(ख) छात्रावास भवन हेतु	0.1	—	0.1	—	—	0.3
	0.3	—	0.3	—	—	0.7
2. अध्ययनपीठ						
(क) अध्ययनपीठ भवन के लिए	0.3	0.3	—	—	—	0.6
(ख) छात्रावास भवन हेतु	0.1	0.1	—	—	—	0 3
	0.4	0.4	—	—	—	0.9
3 ग्रन्थागारपीठ :						
(क) पुस्तक-क्रय	2.0	2.0	1.0	1.0	1.0	7.0
(ख) फर्नीचर, आलमारी माइक, मशीन/टेप आदि	1.0	0.5	0.5	0.5	0.5	3 0
	3.0	2.5	1.5	1.5	1.5	10. 0

	1	2	3	4	5	6
4. प्रकाशनपीठ:						
(क) फर्नीचर, प्रिन्टिग मशीन, टाईप सामग्री	1.5	0.5	0.2	0.2	0.2	2.7
कुल योग	1 5	0.5	0.2	0.2	0.2	2.7
5. वाक्पीठ :						
(क) फर्नीचर, दरियाँ, मंच सामग्री, माइकसेट्स आदि ।	0.2	0.3	0.4	—	—	0.9
	0.2	0.3	0.4	—	—	0.9
6. प्रशासनपीठ						
(क) फर्नीचर, साजसामान, उपकरण, टंकण यंत्र	0.5	0.2	0.1	0.1	0.1	1.
(ख) कार एवं मेटाडोर	0.8	—	1.6	—	—	2.4
	1.3	0.2	1.7	0.1	0.1	3.4
समस्त पीठोंका कुलयोग	6.8	3.9	4.1	1.8	1.8	18.7

संस्थान के अन्तर्गत अध्ययन एवं शोध छात्रों को छात्रवृत्ति राशि का पंचवषर्यी व्यय विबरण—

	पहले वर्ष 1	दूसरे वर्ष 2	तोसरे वर्ष 3	चौथे वर्ष 4	पांचवें वर्ष 5	कुल राशि 6
1 शोधपीठ						
(क) विद्यावारिधि शोधार्थियों के लिए	3.6	3.6	3.6	3.6	3.6	18.0
(ख) वाचस्पति के शोधार्थियों के लिए	—	—	2.5	2.5	2.5	7.5
	3.6	3.6	6.1	6.1	6.1	25.5
2. अध्ययनपीठ						
(क) प्रथमवर्ष पाठ्यक्रम	2.1	—	—	—	—	2.1
(ख) प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम	—	4.3	4.3	4.3	4 3	17.5
	2.1	4.3	4.3	4.3	4.3	19.6
दोनों पीठों का कुल योग	5 7	7.9	10.5	10.5	10.5	25.6

संस्थान के अन्तर्गत समस्त पीठों के पदाधिकारियों/एवं कर्मचारियों के संवेतन आदि का पंचवर्षीय व्यय विवरण :-

1. शोधपीठ	2.7	2.9	3.8	4.0	4.1	17.7
2. अध्ययनपीठ	5.6	7.7	8.1	8.6	9.1	39.3
3. ग्रन्थागारपीठ	0.7	0.7	0.8	0.3	0.9	4.1
4. प्रकाशनपीठ	0.7	0.7	0.8	0.8	0.9	4.1
5. वाक्पीठ	0.6	0.7	0.7	0.8	0.8	3.8
6. प्रशासनपीठ.	1.8	1.9	2.0	2.1	2.2	10.0
समस्त पीठों का कुल योग–	11.4	14.8	16.4	17.3	18.2	79.2

शोध संस्थान का पीठवार पांच वर्ष का सम्पूर्ण व्यय विवरण :-

1. शोधपीठ	17.2	6.5	14.0	10.1	10.2	58.1
2. अध्ययनपीठ	13.3	17.2	12.5	12.9	13.5	69.5
3. ग्रन्थागारपीठ	6.2	3.2	2.3	2.3	2.4	16.6
4 प्रकाशनपीठ	3.7	1.2	1.0	1.1	1.1	8.4
5. वाक्पीठ	1.8	3.5	4.1	0.8	0.8	11.2
6 प्रशासनपीठ	4.6	2.1	3 7	2.2	2.3	14.9
कुल योग–	47.0	33.9	37.7	29.5	30 5	178.9

कमला

सत्यमेव जयते

राजस्व, उपनिवेशन, पर्यटन,
इन्दिरा गाँधी नहर, कला एवं
संस्कृति मंत्री–राजस्थान
जयपुर, 21, अप्रैल, 1986

संकल्प

मानव ने वाणी को भावनाओं की अभिव्यक्ति का व्यवस्थित, प्रभावी एवं सार्थक माध्यम बनाने का जो आदि वैज्ञानिक एवं तात्विक प्रयास किया, वह संस्कृत वाङ्मय ही है।

तप और साधना के द्वारा अपने रूप को ब्रह्मांड में आत्मसात् रखने वाले महर्षियों ने अपनी तत्वदर्शी प्रज्ञा द्वारा इस महान् सृष्टि, इसकी शक्तियों, कार्यकलापों की अनुभूतियों और जीवन दर्शन को संस्कृत भाषा में उपनिबद्ध किया है। यही कालान्तर में अनन्त-पार शास्त्र बनता चला गया, जो हमारी अमूल्य धरोहर है।

ब्रह्माण्ड के आदिनाद के असंख्य शाश्वत-स्वरों के साथ मानव के नैसर्गिक उद्गारों, संकेतों एवं उच्चारण-विधानों का अद्भुत एवं वैज्ञानिक समन्वय किये जाने के कारण संस्कृत वाङ्मय चिरंतन सत्य है और सर्वथा तात्विक विज्ञान है।

संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित सिद्धान्त प्राकृतिक क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं पर आधारित हैं, उनकी स्पष्ट परिभाषा है, अभिव्यक्ति की विशिष्ट पद्धति है और उनमें पूर्णतः वैज्ञानिक विश्लेषण है। आवश्यकता है—उसको आधुनिक भाषा एवं परिप्रेक्ष्य में प्रतिपादित करने की—जिससे हमारा मानव-स्रोत और राष्ट्र की जनशक्ति एक संपुष्ट एवं सनातन आधार पा सके और वह एक गतिशील, समर्पित, चरित्रवान इकाई बन सके। इसकी क्रियान्विति हेतु संस्कृत के निरन्तर अध्ययन, प्रकाशन एवं शोध की महती आवश्यकता है, जिससे समकालीन शिक्षा, जीवन-पद्धति एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय धारा में वह अपना उपादेयतापूर्ण महत्व बनाये रख सके।

संस्कृत वाङ्मय के अद्वितीय भण्डार में निरन्तर शोध द्वारा ही अज्ञात अमूल्य सामग्री का संरक्षण एवं प्रकाशन हो पायेगा, अन्यथा यह मात्र पुरातत्व की सामग्री बन कर रह जायेगा।

देश में भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान-होशियारपुर, एशियाटिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट पटना, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान दरभंगा, गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टीट्यूट-इलाहाबाद आदि में निरन्तर अनुसंधान द्वारा संस्कृत ग्रन्थों पर महत्वपूर्ण शोध कार्य प्रकाशित हुआ है और हो रहा है, जो राष्ट्र की अमूल्य निधि के रूप में विद्यमान है।

राजस्थान शताब्दियों से संस्कृत विद्या और वैदिक वाङ्मय का मुख्य केन्द्र रहा है। विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा, महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, मोतीलाल शास्त्री, पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, आशुकवि नित्यानन्द शास्त्री, पं० शिवदत्त दाधिमथ, के० माधवकृष्ण शर्मा आदि अनेकानेक विद्वानों द्वारा यहाँ अनुसंधान के क्षेत्र में बहुत बड़ी सेवा की जाती रही है। उनके वैदिक विज्ञान एवं तत्वशोध की पहुँच और व्याख्या ने सारे संसार को प्रभावित किया है।

जयपुर का पोथीखाना, बीकानेर की अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और जैसलमेर के ग्रन्थागार संस्कृत की दृष्टि से राष्ट्रीय गौरव रखते हैं। परम्परागत संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में यहाँ प्रचुर संख्या में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन होता आ रहा है, किन्तु जोधपुर, उदयपुर और राजस्थान विश्वविद्यालय में आधुनिक संस्कृत विभाग में पीएच. डी. या डी. लिट् के लिए और परम्परागत शिक्षा के क्षेत्र में आचार्य परीक्षा के बाद विद्या-विद्यावारिधि और विद्यावाचस्पति के लिए बहुत सीमित शोध-कार्य कराया जाता है। संस्कृत महाविद्यालयों में तथा अन्य संस्थानों द्वारा भी परम्परागत शोध के लिए कोई योजनाबद्ध कार्य नहीं हो रहा है।

इस अत्यन्त गम्भीर कमी को दूर करने के लिए तथा आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु मैंने अपने संस्कृत-शिक्षा-मन्त्रित्व के समय एक संकल्प लिया और पत्र लिखकर वाराणसी, दरभंगा व अन्यान्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से एवं संस्थाप्रधानों से जानकारी प्राप्त की। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महोदय, शिक्षामन्त्री जी एवं शिक्षा-विभाग के अधिकारियों को भी पत्र लिखे एवं राजस्थान के संस्कृत-शिक्षा के अधिकारियों को बनारस, लखनऊ व दरभंगा जाकर विचार-विमर्श कर एक योजना बनाने का निर्देश दिया। दरभंगा-संस्कृत-विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति श्री आद्याचरण झा ने इस कार्य में सक्रिय सहयोग दिया, अतः इस प्रसंग में उनका स्मरण करते हुए मुझे प्रसन्नता होती है।

इस सारी महत्वपूर्ण सामग्री के साथ संस्कृत के विद्वानों से चर्चा करके मैंने राजस्थान की सातवीं योजना के लिए राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान की एक परियोजना का कलेवर तैयार करवाया। राजस्थान शासन ने सिद्धान्ततः इस योजना को स्वीकार किया और कुछ सांकेतिक वित्तीय प्रावधान रखने की भी मंशा प्रकट की। इसके लिए आवश्यक भूखण्ड हेतु भी जयपुर विकास प्राधिकरण को कहा गया। यद्यपि वर्तमान में इस परियोजना के लिए वांछित वित्तीय प्रावधान प्रस्तावित नहीं हो सका है, किन्तु हमारा प्रयत्न हैं कि राज्य की सातवीं योजना की पुनः संवीक्षा के समय कुछ प्रावधान किया जा सके।

इस बीच देश के शोध-क्षेत्र के विद्वानों एवं शोध-संस्थानों के अभिमत एवं सुझावों के लिए इस योजना को **राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन** के सौजन्य से प्रसारित किया जा रहा है।

मैंने एक भावना के साथ इस कार्य को उठाया है और समयाभाव (सातवीं योजना तैयार हो रही थी) के कारण बहुत तत्परता से इसे तैयार किया गया है, अतः बहुत से उपयोगी प्रावधानों की इसमें कमी सम्भव है। व्यापक तौरपर विद्वज्जनों एवं शिक्षा शास्त्रियों से सम्पर्क का समय भी नहीं मिल पाया था, अतः वह सौभाग्य भी अब मिल सकेगा।

मैं आभार मानूँगी, यदि इस योजना पर शीघ्र ही आपके अभिमत तथा परिवर्तन, परिवर्द्धन एवं संशोधन के सुझाव हमें प्राप्त होंगे, ताकि यह योजना एक ठोस एवं व्यावहारिक आधार ले सके।

कमला
अध्यक्ष
राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन

●

जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी महाराज
कांची-कामकोटि पीठ
कांचीपुरम् (दक्षिण भारत)

"राजस्थानमण्डले ये वाऽऽसन् शास्त्रकाराः महाकवयश्च तेषां ग्रन्थानां काचन विस्तृता सूची प्रतिपादितविषयविशेष-विशदनपरा - तथा मुद्रितानां शास्त्रग्रन्थानां शास्त्रेष्वधि-कृतानां विदुषां साहाय्येन मुद्रापणम्, आधुनिकानां विदुषां पोषणपुरस्कारादयश्च कर्तव्यकोटौ प्रथमं पदमर्हन्तीति।"

●

केदारनाथ ओझा
निवृत्त व्याकरण विभागाध्यक्ष,
राजकीय संस्कृत कॉलेज, कलकत्ता (प० बं०)

श्रीमतां विलम्बेन प्राप्तं "राजस्थान शोध संस्थान परियोजना" नामकं लघु हिन्दी पुस्तकं सम्प्राप्य ततो भवतां महतीं सुरसरस्वतीसेवासमीहां विज्ञाय परं प्रसीदामि, श्रीमतो धन्यान् वदामि, समुद्योगसफलतायै श्री काशीविश्वनाथं प्रयतः प्रणमामि, सत्संकल्पाम् अमलां श्रीमती कमलां मन्त्रिणीं सुमनोभूषितान्च भावयामि इति।"

●

डॉ० डी. एन. सांघी
आचार्य एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष, कर्नाटक विश्वविद्यालय
धारवाड़ (कर्नाटक)

I am very happy to know that a Research Academy by name राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान is coming into existence. It is well said भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिश्च and it is also a fact that Sanskrit has not remained limited to only India. It has performed that miracle of spreading throughout the world by its own vigour and richness.

It is pity that after gaining political independence, we began to lag behind in cultural progress which paved way for all unbecoming and corrupt tendencies and now these tendencies are even threatening our political independence and social security. One of the reasons for this degeneration is the neglect of Sanskrit and the cultural values enshrined in it.

Hence, I congratulate all for planning to have Sanskrit Research Academy and I pray God to make it an ideal one to be followed by other states in India.

●

म० म० आचार्य नवलकिशोर काँकर

विद्यावाचस्पति, कविशिरोमणि, गद्य सम्राट्
जयपुर

"इदानीं मध्ये राजस्थानं भवत्प्रदिष्टरूपरेखासमुपेतस्य संस्कृतशोधसंस्थानस्याभावः सर्वथाऽनुपलं दुःखाकरोति चेतश्चेतस्विनाम्। किमन्यत्, नित्यमेव शिक्षाविदः शोध-चिन्तकाः विपदि पतिता इव अपमानं मन्यमानाः कुर्यादिकत्र सर्वविधग्रन्थबहुले शान्ते स्थाने स्थित्वा कार्यं कर्तुं संस्थान-मनुपलभ्येतस्ततो भ्रमन्तो दरीदृश्यन्ते।

यदा परियोजनानुसारं राजस्वमंत्रिपदमलंकुर्वत्या श्रीमत्याः कमलादेव्याः सत्संकल्पः क्रियाशीलतां लालम्भिष्यति तदा निश्चप्रचमहं भगवते विश्वसृजे मोदकार्पणं करिष्ये।"

●

डॉ० इकबाल नारायण

सचिव, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली

आपकी भेजी परियोजना को देखा। यह प्रसन्नता का विषय है कि संस्कृत के लिये देश में संस्कृत शोध संस्थान की परियोजना तैयार करली गई है। संस्कृत शिक्षा निदेशालय, जयपुर का यह प्रशंसनीय प्रयास है। संस्कृत देव-भाषा है और यह शाश्वत सत्य है कि संस्कृत के बिना ऋषि-मुनियों की यह पुण्य भारतभूमि गौरव के चरम शिखर पर कभी न होती। संस्कृत के अध्ययन और शोध से वैज्ञानिक विश्लेषण को प्रोत्साहन मिलेगा।

यहाँ यह कहना आवश्यक होगा कि—

(1) शोध संस्थान के शोध-पीठ के क्रिया-कलापों का और अधिक विस्तार से वर्णन करने की आवश्यकता है।

(2) शोधकर्त्ताओं/संस्थानों के लिये शोध-पीठ की योजनाएँ उदाहरणतः शोध अनुदान और शिक्षावृत्ति का प्रावधान भी होना चाहिए।

(3) स्टाफ में शोध सहायक का पद भी रखा जाना चाहिए।

(4) ग्रन्थागार पीठ में दिए गए स्टाफ के अतिरिक्त ग्रन्थागार अनुचर/चौकीदार भी आवश्यक है।

(5) सेवाओं में फोटो कॉपी सेवाओं का भी प्रावधान रखना चाहिए।

संस्थान की शीघ्र स्थापना के लिए हमारी शुभ कामनाएँ।

●

डॉ० पी. एल. भार्गव

पूर्व आचार्य, संस्कृतविभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय
तथा प्रो० धार्मिक अध्ययन मेकमास्टर यूनिवर्सिटी
हेमिल्टन ओन्टोरियो-कनाडा

संस्कृत के शाश्वत महत्व को देखते हुये यह योजना अत्यन्त उपयोगी और सामयिक है और राजस्थान के सभी संस्कृत प्रेमी इस योजना के लिए राजस्व मंत्री माननीया कमलाजी के आभारी हैं।

मैंने इस योजना को पूरे ध्यान से पढ़ा, जहाँ तक अध्ययन अनुसन्धान के विषयों का प्रश्न है, मेरी राय में शोध संस्थान में निम्नलिखित विषय होने चाहिये :—

(1) वेद, (2) दर्शन, (3) व्याकरण—शिक्षा, निरुक्त और आधुनिक भाषा शास्त्र (4) धर्मशास्त्र—कर्म-काण्ड सहित, (5) साहित्य, (6) पुराणेतिहास, (7) फलित ज्यौतिष (8) खगोलशास्त्र अथवा गणित ज्यौतिष और (9) गणित शास्त्र, पुराणेतिहास को धर्मशास्त्र से पृथक् रखना चाहिये। इसी प्रकार खगोलशास्त्र अथवा गणित ज्योतिष को फलित ज्योतिष से पृथक् रखना चाहिये।

हमारे यहाँ प्राचीनकाल में गणित की सभी शाखाओं—अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित त्रिकोणमिति आदि पर बहुत काम किया गया था, अतः प्राचीन भारतीय गणित का स्वतंत्र विषय के रूप में अध्ययन और अनुसन्धान नितान्त आवश्यक है।

●

पं० आद्याचरण झा

पूर्व प्रतिकुलपति, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत
विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार)

राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के जयपुर महाधिवेशन के अवसर पर राजस्थान शोध संस्थान की योजना पर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का जो दायित्व सम्मेलन की अध्यक्ष माननीया श्रीमती कमला के द्वारा संस्कृत शिक्षा परिषद् को सौंपा गया वह वास्तव में एक उच्च शैक्षिक तथा राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों का भाग है। उसे निर्वाहित करने में योजना का समग्र कलेजर तथा उसके संदर्भ में देश के विभिन्न भागों से प्राप्त विद्वानों एवं शोधविदों के संवीक्षात्मक अभिमत हमारे आधार रहे हैं।

राजस्थान शोध संस्थान की परियोजना के आमूलचूल अध्ययन और उसके सभी पक्षों पर पर्याप्त विचार-विमर्श के उपरान्त संस्कृत शिक्षा परिषद् का निष्कर्ष है कि—

"संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध रत्नोपम ग्रन्थों के शोधपूर्ण गहन अध्ययन एवं उसमें निहित गूढ़ ज्ञान की सहज प्रस्तुति के परिप्रेक्ष्य में राजस्थान में शोध संस्थान की स्थापना के लिये निर्मित यह योजना सर्वथा व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक है।

योजना का कलेवर बड़ ही श्रम, शिक्षाविदों के परामर्श एवं व्यापक सम्पक से तैयार हुआ है। यही कारण है कि, यही सर्वांगीण एवं प्रासंगिक बन पड़ा है।

इस योजना की क्रियान्विति भारत-राष्ट्र को भारतीय इतिहास, विचार परम्परा तथा संस्कृति के अनुपम मूल्यों के साथ जोड़े रखने का सशक्त माध्यम सिद्ध होगी।

हमारे देश की एकता और अखण्डता मूलतः हमारे सांस्कृतिक मूल्यों पर ही निर्भर है। संस्कृत और उसके विशाल वाङ्मय के अन्तर्निहित ज्ञान-विज्ञान और आकर्षणों के प्रकाशन से संस्कृत को अधिकाधिक अपनाने की भावना का समाज में आदर होगा–और जैसे-जैसे समाज संस्कृत को अपनायेगा, समाज की अपनी एकीकरण की शक्ति बलवती होगी जो प्रतिगामी और विघटनकारी प्रवृत्तियों के लिये सशक्त अंकुश होगी।

देश में राजस्थान प्रारम्भ से ही संस्कृत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य-योजनाओं के उद्भव और विकास की अग्रसरता के लिये प्रख्यात है। राजस्थान के विभिन्न भागों में संस्कृत के बहुमूल्य ग्रन्थरत्न और पाण्डुलिपियों की मणियाँ बिखरी पड़ी हैं। भूतपूर्व रजवाड़ों और राजमहल भी संस्कृत पाण्डुलिपियों के भण्डारण के लिये विख्यात हैं। यहाँ के वैदिक ज्ञान-विज्ञान की शोधपूर्ण साधना ने विश्व को चमत्कृत किया है। इस प्रकार संस्कृत की दृष्टि से गौरवशाली राजस्थान के लिये उच्च संस्कृत की दृष्टि से उच्च संस्कृत अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना का संकल्प मणिकांचन संयोग के सन्निभ है।

परिषद् का विश्वास है कि राजस्थान शासन और उसके संस्कृत जननायक राष्ट्र के मंगलमय भविष्य से सन्निहित इस चिरप्रतीक्षित राष्ट्रीय कार्यक्रम का अपने यहाँ श्रीगणेश करके अन्य राज्य सरकारों के लिये एक अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करेंगे।

हमारी राय में इस संस्थान की स्थापना राजस्थान म अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य की आधारशिला होगी।

राजस्थान सरकार के समक्ष इस शोध संस्थान की स्थापना के पक्ष में परिषद् यही तर्क प्रस्तुत कर सकती है कि—

संस्कृत भाषा देश की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक एकता की आधारशिला है। अतः वह सरकारी संरक्षण और समर्थन की अधिकारिणी है। हमारा विचार है कि भारतीय शिक्षा और भारतीय जनजीवन में संस्कृत को दृढ़ता के साथ संस्थित करने में यह शोध संस्थान एक ठोस आधार बनेगा।

सम्मेलन के इस जयपुर महाधिवेशन की आयोजना से प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है कि राजस्थान के राज और समाज का संस्कृत के प्रति अपार स्नेह है और इस महत्वपूर्ण संस्थान की स्थापना से राजस्थान अपना अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य संस्थापित कर सकेगा।

●

प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी
संकायप्रमुख, संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसंकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

राजस्थान में संस्कृत शोध संस्थान की स्थापना का विचार यदि कार्यान्वित होता है और संकल्पित संस्थान बन जाता है तो यह इस राष्ट्र की महती संपत्ति होगी।

राजस्थान पाण्डु ग्रन्थों के विपुल भण्डार के लिए मुख्य रूप से विख्यात है। यहाँ के पाण्डु ग्रन्थों के पुनर्लेखन, फ़ोटो प्रति का कार्य पूरा करने के लिए जहाँ तक मेरा अनुमान है मातृका विशेषज्ञ अनेक लिपियों के अभिज्ञ तथा सुन्दर लिखावट वाले 150 व्यक्तियों की सौ वर्ष तक आवश्यकता होगी।

विषयकोष, व्यक्तिकोष, वस्तुकोष आदि विविधकोषों का निर्माण कोषसामग्री का कम्प्यूटरीकरण, भाषा की अस्पष्टता या कठिनाई हटाकर मूल विषय को स्पष्ट करते हुए प्राचीन ग्रन्थों के नवीन रूप तैयार करना तथा एक ही ग्रन्थ पर एक साथ अनेक व्यक्तियों से कार्य करवाकर शलाका परीक्षा द्वारा शोध उपाधि प्रदान करने का योजना में विशेष प्रावधान अधिक लाभप्रद होगा। यह राष्ट्रहित का संकल्प है।

●

डॉ. प्रवीणचन्द्र जैन
निदेशक, उच्चस्तरीय अध्ययन-अनुसंधान-संस्थान
जयपुर

राजस्थान शोध संस्थान का प्रारूप वस्तुतः एक अभिनव एवं आवश्यक योजना है। राजस्थान के भण्डारों में भारतीय वाङ्मय की अपार राशि सुरक्षित है, जिस पर शोध कार्य अत्यन्त अपेक्षित है। राजस्थान सरकार द्वारा शोध संस्थान की स्थापना एक महत्वपूर्ण आयाम होगा।

●

डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल
श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी
जयपुर

"राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान की स्थापना निःसंदेह एक ऐसा कार्य है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाय, वही कम है। राजस्थान संस्कृत भाषा की पाण्डुलिपियों की दृष्टि से विशाल केन्द्र है, जहाँ विभिन्न ग्रन्थागारों एवं पोथीखानों में लाखों की संख्या में पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत है। राजस्थान के जैन ग्रंथागारों में एक लाख से भी अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह है। मैंने 5 भागों में जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथसूचियों का सम्पादन किया है। उसमें हजारों संस्कृत पाण्डुलिपियों का विस्तृत परिचय दिया गया है, जिन पर शोध होना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध संस्थान से अनेक दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाश में आयेंगे। संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र शोधसंस्थान की स्थापना चिर प्रतीक्षित थी–उसकी युक्तियुक्त एवं सर्वांगपूर्ण योजना के लिए आदरणीया श्रीमती कमला अभिनन्दनीय हैं।"

●

डॉ० प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' नाट्याचार्य
बी 181, जनता कॉलोनी
जयपुर

जिस भाषा में वेदत्रयी, अथर्ववेद, भगवद्गीता, ब्राह्मण, उपनिषद्, योग, दर्शन, वृहद्देवता, अनुक्रमणिकाएँ, आयुर्विज्ञान, धर्मविज्ञान और उसके चमत्कारपूर्ण विविध प्रयोग, गान्धर्ववेद शिक्षा, निरुक्त, स्मृतियाँ, पुराणेतिहास, छन्द, ज्योतिर्विज्ञान, गणित तथा उसके विभिन्न प्रकार—बीज, रेखा ज्यामिति, त्रिज्यामिति ; नाट्यशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र रत्न-परीक्षा शास्त्र—जिनमें 32 प्रकार की मणियों के प्रभाव प्रयोगों पर गवेषणात्मक सामग्री उपलब्ध है ; वास्तुशास्त्र, पशुपरीक्षा-विज्ञान, शिल्पशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, तर्कशास्त्र और मनोविज्ञान सम्बन्धी बड़ा ज्ञान भण्डार भरा हो–उसमें शोध के लिए जितनी गुंजाइश है, संसार की किसी सन्य उर्वर मानी जाने वाली भाषा में भी नहीं है।

वास्तव में ऐसे असीम सान भण्डार के लिए संस्कृत सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती कमला जी की शोध संस्थान स्थापना सम्बन्धी सूझ मूल्यवान और महत्वपूर्ण है, इसमें दो राय नहीं। यह शोधकार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी अनिवार्यतः रूपान्तरित कराया जाय ताकि जन सामान्य की पहुँच उस ज्ञान–विज्ञान की रूपरेखा और उसकी दैनिक जीवन में उपादेयता तक हो सके।

●

डॉ० बी. एन. शर्मा
पूर्व निदेशक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

योजनैषा प्रशंसनीया। संस्कृतप्राचीनपाण्डुलिपीनां महत्करणीयमवशिष्यते। एवंविध शोधप्रसंगेन पाण्डुलिपिगतविषयवस्तुनः आधुनिकज्ञानेन सह सम्बन्धप्रदर्शन पुरस्सरं तुलनात्मकमध्ययनं भविष्यति तेन वः संस्कृतस्याधुनिकी प्रासंगिकता सुस्पष्टा सेत्स्यति।

●

प्रो० आर. पी. अग्रवाल
कुलपति, राजस्थानविश्वविद्यालय
जयपुर

शोध परियोजना की परिकल्पना यद्यपि विलम्ब से की गई है, पर इसी से इसका महत्व कम नहीं हो जाता। किसी भी भाषा का समृद्ध एवं सम्पन्न होना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् उस भाषा के समुचित प्रचार व प्रचार का प्रयास भी उतना ही महत्वपूर्ण है। संस्कृत भाषा की समृद्धि एवं सम्पन्नता सर्वविदित है। ज्ञान का अतुल भण्डार इस भाषा के साहित्य में छुपा हुआ है। इस परियोजना से राजस्थान में अनुभव की जा रही कमी दूर होने के साथ-साथ संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में एक अनुपम योगदान मिल सकेगा।

यद्यपि राजस्थान विश्वविद्यालय भी इस दिशा में निरन्तर सक्रिय है किन्तु प्रस्तुत संस्थान का अपना महत्व है। इससे ज्ञान के नये-नये क्षितिज खुलेंगे। इस परियोजना की क्रियान्विति उत्साह एवं निष्ठा से की जानी चाहिए।

इस स्तुत्य प्रयास के लिए माननीया कमलाजी प्रशंसा एवं बधाई की पात्र हैं।

●

डॉ० जयमन्त मिश्र
पूर्व कुलपति, कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय
दरभंगा (बिहार)

"आज विश्व के सभी विवेकी मनीषी इस बात पर एकमत हैं कि वैज्ञानिक आविष्कार से मानव समाज एक ओर सुख सुविधाओं का अनुभव कर रहा है तो दूसरी ओर उसे अनवरत रोमांचकारी विनाशक बिन्दु भी दीख रहे हैं। अतः आज भौतिकवाद पर अध्यात्मवाद का अंकुश नितान्त आवश्यक है। इसमें न केवल विश्वकल्याण अपितु अस्तित्व भी निहित है। ज्ञान और अध्यात्म का सही-सही बोध संस्कृत वाङ्मय में निहित विषयों के समुद्घाटन तथा प्रचार प्रसार से ही संभव है।

संस्कृत विद्या के क्षेत्र में राजस्थान की भूमिका अति प्राचीनकाल से सराहनीय रही है। अतः वहाँ संस्कृत शोध संस्थान की स्थापना का परम औचित्य है।"

•

पद्मधर पाठक
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

"राजस्थान में शोध संस्थान की स्थापना के लिए तैयार की गई योजना पूर्णतः समयानुकूल है।

•

प्रो० (कुमारी) सुशीला व्यास
निदेशक, वनस्थली विद्यापीठ,
जयपुर

देश की स्वतंत्रता के बाद हमें अपनी अस्मिता को पहचान कर ज्ञान-विज्ञान की अपनी परम्पराओं का मौलिक विकास करना चाहिए था, किन्तु इस विषय में भी हम पश्चिम के मुखापेक्षी बन गये हैं। भारत की आत्मा भारतीय संस्कृति है और उसका निर्मल रूप संस्कृत भाषा में रचे गये समृद्ध साहित्य में सुरक्षित है। मेरा विश्वास है कि संस्कृत साहित्य प्राचीन होते हुए भी शाश्वत विचारों का भण्डार है और जो शाश्वत है, वह कभी पुराना नहीं होता। आवश्यकता उसकी सही खोज करने की है।

राजस्थान की भूमि माघ जैसे कवियों, ब्रह्मगुप्त जैसे ज्योतिषियों, कुम्भा जैसे कलाविदों, मधुसूदन ओझा जैसे वेद विज्ञान वेत्ताओं की जन्मदात्री रही है। राजस्थानी रियासतों के राजाओं के आश्रित संस्कृत विद्वानों और कवियों ने ज्ञान साधना कर संस्कृत साहित्य की सदा वृद्धि की है। प्रायः सभी राजाओं के निजी ग्रंथागारों, विद्या प्रेमी जनों के घरों, मन्दिरों व मठों में संस्कृत की अमूल्य ग्रंथ निधि सुरक्षित है। इन सबकी न किसी को पूरी जानकारी है और न आज तक कोई ग्रंथ सूची ही तैयार हुई है, जिसके अभाव में या तो ये ग्रन्थ कीड़ों के भोज्य बन रहे हैं या चोरी-छिपे विदेशियों को बेचे जा रहे हैं। देश की इस अमूल्य सम्पदा की सुरक्षा और उसका उपयोग होना ही चाहिए।

इस दिशा में राजस्थान संस्कृत शोध संस्थान की स्थापना का आपका संकल्प सर्वथा उचित एवं प्रशंसनीय है।

•

जगन्नाथसिंह मेहता
अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
अजमेर

राजस्थान में शोध संस्थान की स्थापना का अच्छा विचार है। संस्कृत देव भाषा है और यह शाश्वत सत्य है कि संस्कृत में अटूट ज्ञान का भण्डार है और विज्ञान का भी। आवश्यकता इस बात की है कि इस ज्ञान और विज्ञान का अध्ययन व शोध कर इसे प्रकाश में लाया जाय। यह निर्विवाद सत्य है कि संस्कृत भाषा देश की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक एकता की आधार शिला है। परिषद् का शोध संस्थान स्थापित करने का प्रस्ताव स्तुत्य है। आशा है इस पर राज्य सरकार विचार कर इसकी स्थापना में योगदान करेगी।

•

विद्वदभिनन्दनम्

राजस्थानधरा धन्या संस्कृतं यत्र राजते । संस्कृतस्य प्रचारे, प्रसारे प्रौढपाण्डित्यपरम्परायां राजस्थानस्य स्वकीयं महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते । अनवरतमक्षुण्णा राजस्थानस्य वैदुष्यपरम्परा । अस्यामेव शताब्द्यां विद्यावाचस्पतिमधुसूदनो झा, म० म० पं० गिरिधरशर्मचतुर्वेद, श्रीवीरेश्वर–शास्त्रिद्रविडसदृशाः विद्वत्तल्लजाः स्वीयप्रौढपाण्डित्येन राजस्थानभुवमलञ्चक्रुः । अस्मिन् वैदुष्यमहिम–मण्डिते राज्ये तस्यामेव परम्परायामद्यापि बहवो विद्वांसोऽत्र विराजन्ते । एषु विद्वत्सु मूर्धन्याः केचन विद्वांसः महामहिम्ना भारतराष्ट्रपतिना विगतवर्षेषु सम्मानिताः । गीर्वाणवाणीगुणगौरवाढयैरेभिर्विद्वद्भिः राजस्थानस्य भालं समुन्नतं कृतम् ।

राजस्थानसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनेनापि स्वीय-चतुर्दशमहाधिवेशनावसरे विदुषामेतेषामभिनन्दनाय निश्चयो विहितः । तदनुसारं राजस्थानप्रदेशस्य मुख्य–मन्त्रिणा पं० श्री हरिदेवजोशी महाभागेन विभिन्नेभ्यः प्रान्तेभ्यः समागतानां शिक्षाविदां विद्वत्तल्लजानां च साक्ष्ये विद्वत्त्रयीयं सबहुमानं सम्मानिता ।

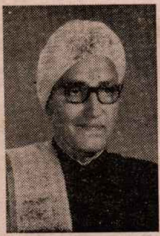

पण्डितः श्री नवलकिशोरः काङ्करः

प्रौढपाण्डित्यपरम्परायामग्रणीः श्रीकाङ्करः "महामहोमोपाध्याय" पदवीविभूषितः । साहित्याचार्य - व्याकरणशास्त्रि - काव्यतीर्थ - साहित्यरत्नाकर-साहित्यरत्न-प्रभाकर-प्रभृतिभिः परीक्षोपाधिभिर्विभूषितः । वेदान्तसाहित्याचार्याणां प्रथितपाण्डित्यानां जयपुरमहाराज - संस्कृत - महाविद्यालये साहित्य-विभागाध्यक्षाणां श्रीविहारिलालशर्ममहाभागानां साहित्यविषये सविशेषमध्यापितोऽयं शिष्योऽस्ति'। वेद-वेदाङ्ग-दर्शनादिषु वैदिकविज्ञान-विषये चैनं म०म० पण्डित श्रीमधुसूदनझा–महाभागाः दीक्षितवन्तः शिक्षितवन्तश्च । पारीकमहाविद्यालये संस्कृतविभागाध्यक्षपदे कार्यं कुर्वतानेन सहस्रशश्छात्रा अध्यापिताः ।

अनेन शतशो निबन्धाः लिखिताः । धर्मकर्मसर्वस्व – जीवनदर्शन – द्विजदशाप्रकाश-शास्त्र–सर्वस्व-प्रबन्धामृत-प्रबन्धमकरन्द-यात्राविलासादीनि पुस्तकानि महाभागेनानेन रचितानि । न केवल संस्कृते, अपितु राजस्थान्यां हिन्द्यामप्यनेन काव्यानि विरचितानि । "नवल सतसई" हिन्दीभाषायां लिखितं मुद्रितमस्य प्रमुखं काव्यमस्ति, राजस्थान्यां 'सैलसपाटा' इति गद्यकाव्यं "लाखीणा बोल' इति च गद्यकाव्यं बहुचर्चितमस्ति ।

वैदिकवाङ्मयेऽपि विलक्षणः प्रतिभाप्रसारोऽस्य दरीदृश्यते । संस्कृतकाव्यवदनेन वैदिक-भाषायां वैदिकेष्वेव छन्दःसु सभाष्यो 'राष्ट्रवेद-ग्रन्थो विनिर्मितः । संस्कृतसाहित्ये 'राष्ट्रवेदस्य' स्वस्मिन्नवीन एव कश्चन आविष्कारो वर्त्तते यं वैदेशिका अपि प्रशंसितवन्तः । एतल्लिखितं 'यात्रा-विलास'काव्यं जर्मनदेशीयाः, हालेण्डदेशीयाश्च विद्वांसः प्रशंसितवन्तः ।

'राजस्थान-साहित्य-अकादमी'-संस्थया सबहुमानं विद्वत्सम्मानपत्रप्रदानेन सम्मानितोऽसौ अ० भा० संस्कृतमहासम्मेलनस्य मुजफ्फरनगरीय–पञ्चममहाधिवेशने सभापतिपदमप्यलमकार्षीत्। अस्मिन्नेव सम्मेलने "कविशिरोमणी" त्युपाधिनाविभूषितोऽयम्। उत्तरप्रदेशे गौंडानगरे संस्कृत–सम्मेलनेनायं "विद्यावाचस्पति" रित्युपाधिना समलङ्कृतः। काङ्करोली-विद्याविभागदशाब्दी – जयन्त्युत्सवे "कविभूषणोपाधिना" सत्कृतः। अ. भा. प्रौढ़संस्कृतगद्य-लेखनप्रतियोगितायां "गद्यसम्राट्" इत्युपाधिनापि सम्मानितः। "यात्राविलास" गद्य–काव्यलेखने राजस्थानसर्वकारः सार्धद्विसहस्ररूप्यकैः सत्कृतवानमुं तथा संस्कृतानुसन्धानकार्ययोजनायाञ्च पञ्चशतरूप्यकप्रदानेनापि पुरस्कृतवान्। 'यात्रा-विलास' कृते उत्तरप्रदेशसर्वकारेणापि अस्मै एकाधिकसहस्र—रूप्यकाणि सादरमुपहारीकृतानि। राजस्थान-साहित्य-अकादमी-संस्थया त्रिसहस्ररुप्यकात्मकेन माघपुरस्कारेण मेवाड़फाउण्डेशनसंस्थया हारीतपुरस्कारेणच पुरस्कृतोऽसौ। राजस्थान शासनेन संस्कृतदिवसे प्रौढ़पण्डितेषु सम्मानितः। प्रौढ़पाण्डित्यपरम्परायां महामहिम–भारतराष्ट्रपतिना "राष्ट्रपतिपुरस्कारेण" श्रीमानयं सम्मानितः इत्यप्यस्य नाल्पीयसो वैदुष्यस्य परिणामः।

एतल्लिखितानि अनेकानि मौलिक-संस्कृत-पुस्तकानि राजस्थान-नागपुरादि-विभिन्न-विश्व-विद्यालयानां शास्त्रि– बी. ए.–एम. ए. परीक्षासु पाठचपुस्तकत्वेन निर्धारितानि सन्तीत्यपि महद् गौरवं बिभर्त्त्ययम्।

महोदयेनानेन निम्नाङ्किताः ग्रन्थाः भूमिकोल्लेखपुरःसरं सम्पादिताः—

- श्रीमधुसूदनग्रन्थमाला
- शालिहोत्रग्रन्थः
- विज्ञानविद्युत्
- गीताविज्ञानभाष्यभूमिका
- विहारिस्मारिका
- अथर्ववेदद्वादशकाण्डस्याभिनवसायणभाष्यम्
- अथर्ववेदस्य चतुर्दशपञ्चदशषोडशकाण्डानामभिनवसायणभाष्यम्
- अथर्ववेदस्य विंशकाण्डस्य सायणभाष्यम्

पञ्चसप्ततिवर्षात्मकोऽयं काङ्कर-महाभागः साम्प्रतं शताधिकवर्षायुषां वेद-दर्शनाचार्याणां वेदभाष्यकाराणां महामण्डलेश्वर-श्रीमद्-गङ्गेश्वरानन्दस्वामिमहानुभावानां सहस्रपृष्ठात्मकस्य बृहदाकारस्य 'गुरुवेदज्योतिः' इत्यभिधेयस्य अभिनन्दनग्रन्थस्य सम्पादनं कुर्वाणो वरीवर्त्ति।

महाभागस्यास्य दीर्घायुष्यं नैरुज्यञ्चाभिलषामः। □

पण्डितः श्रीजगदीशशर्मा साहित्याचार्यः

प्राचीनप्रणाल्या असौ कनिष्ठिकाधिष्ठितः प्रौढ़ो विद्वान् राजस्थान-गौरवश्चेति शङ्काशून्यं वचः । विद्वद्वर्य-श्रीविहारिलालमहाभागेभ्यः श्रीमत्यां पार्वत्यां 1967 मिते वैक्रमाब्दे समुत्पन्नोऽयमद्य षट्सप्ततिवर्षात्मके वयसि विद्यमानोऽपि स्वीयाद्भुतवैदुष्य लुब्धैर्वनस्थलीविश्वविद्यालयसंचालकैस्तत्र मानद-प्राचार्यपदे सनिर्बन्धं संस्थापितोऽस्ति । संस्कृतवाङ्मयस्य साहित्यन्याय-व्याकरण-ज्योतिषादिषु सर्वेषु शास्त्रेष्वप्रतिहतगतिरसौ प्रखरमतिजुषामपि विदुषां सर्वगर्वापनोदनक्षमः । साहित्यस्य काव्यप्रकाशध्वन्यालोकरसगङ्गाधरप्रभृति सिद्धान्तग्रन्थानाम-सावेक एव सम्प्रति सफलो व्याख्याता । एतत्सम्बन्धे संक्षेपत इदमेव सोसूच्यते—

शास्त्रे व्याकरणे प्रवीणधिषणाः साहित्यपारङ्गताः,
साङ्गे वेदचतुष्टये कृतधियो लब्धास्पदा ज्योतिषे ।
न्याये साङ्ख्यनयेऽथ धर्मविषयेष्वप्युच्छलद्-वैभवाः,
श्रीमन्तो जगदीशशर्मविबुधाः विद्वत्सु लब्धादराः ॥

महाभागोऽयं वेदान्तसाहित्याचार्येभ्योमहाराज–संस्कृतकालेज-जयपुरे साहित्यविभागाध्यक्षेभ्यः स्वपितृचरणेभ्यः श्रीविहारिलालशर्मभ्य एव साहित्यशास्त्रस्य सिद्धान्तग्रन्थानधीत्य महाराज-संस्कृतमहाविद्यालयत एव साहित्याचार्यपरीक्षामुदतरत्। प्रख्यातविद्वद्भ्यः श्रीवीरेश्वरशास्त्रिद्रविड-महाभागेभ्योऽयं मीमांसाव्याकरणसांख्ययोगन्यायशास्त्राण्यधीतवान् ।

अध्ययनसमाप्त्यनन्तरमनेन फतेहपुरनगरे चमड़िया-संस्कृत-महाविद्यालये प्राचार्यपदे कार्यं प्रारब्धम् । वर्षद्वयं यावत् तत्र कार्यं कृत्वा खेतड़ीनगरे संस्कृतमहाविद्यालये प्राचार्यपदे कार्यं कृतम् । जयपुरं स्वकीयं गृहमिति कृत्वासौ ततः महाराजसंस्कृतमहाविद्यालयस्य विद्यालयविभागे शिक्षणकार्यं प्रारभ्य यथासमयं तत्रैव स्वपितृपादाधिष्ठिते साहित्यविभागाध्यक्षपदे चिरं विद्यार्थिनोऽपीपठत् तत एव च राज्यसेवातो निवृत्तः ।

1967 मिते ख्रिष्टाब्दे राजस्थानराज्यपालमहोदयैः सफलशिक्षकत्वेनाऽसौ सम्मानितः । तस्मिन्नेव वर्षे राजस्थानमुख्यमन्त्रिणा श्रीमोहनलालसुखाड़िया-महाभागेन माध्यमिक-शिक्षामण्डल-तत्त्वावधाने ग्रन्थोपहारैरभ्यर्चितश्च । 1974 वर्षीये संस्कृतदिवसे राजस्थान संस्कृतसंविदा सम्मानितः । 1977 वर्षे च विश्वहिन्दूपरिषदा सम्मानितः ।

1983 मिते ख्रिष्टाब्दे महामहिम्ना भारतराष्ट्रपतिना "राष्ट्रपतिपुरस्कारेण" सम्मानितः ।

महाभागस्यास्य बहवः सुयोग्याः शिष्याः सन्ति तेषु प्रमुखाः —

1. श्रीकलानाथशास्त्री	निदेशकः	भाषाविभागः, राजस्थानम्
2. श्रीमोतीलालजोशी	प्राचार्यः	आचार्यसंस्कृतमहाविद्यालयः, मनोहरपुरम्
3. श्रीप्यारेमोहन शर्मा	आचार्यः	महाराज संस्कृत कॉलेज, जयपुरम्
4. श्रीउमेश शास्त्री	संस्कृतविभागाध्यक्षः	पारीकमहाविद्यालयः, जयपुरम्
(अशीतिपुस्तकानां लेखकः)	निदेशकः	बालाबक्षशोधसंस्थानम्
5. श्रीनरोत्तमचतुर्वेदः	साहित्यविभागाध्यक्षः	महाराजसंस्कृतकालेजः, जयपुरम्
6. श्रीश्यामसुन्दरचूलेटः	प्राचार्यः	शास्त्री संस्कृतमहाविद्यालयः, कालाडेरा
7. डॉ० मण्डनमिश्रः	निदेशकः	राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्ः, नई दिल्ली
8. डॉ. रामनारायण चतुर्वेदः	,,	संस्कृत शिक्षाविभागो राजस्थानम्

अन्ये च श्री सत्यव्रत-प्रियव्रत-अनन्तराम-रूपनारायण-रामदयालु-घनश्याम-रामजीलाल शास्त्री प्रभृतयःसंस्कृतशिक्षायाः प्रचारे प्रसारे अध्यापने च संलग्नाःसन्ति । महाभागस्यास्य नैरुज्यं चिरायुष्यञ्च कामयामहे । □

डॉ० श्रीमण्डनमिश्रः

महानुभावोऽसौ जयपुरमण्डलान्तर्गत विराटनगरविधानसभाक्षेत्रस्य हणूत्या-ग्रामे पं० श्रीकन्हैयालालमिश्रस्यगृहे जनिं लब्धवान् । महाभागेनेन प्रारंभिकी संस्कृतशिक्षा ग्रमरसरस्थ श्रीसीताराम-संस्कृत-विद्यालये, पं० घासीराम तिवाड़ी पं० रामेश्वर शास्त्रि पं० हर्षनाथमिश्रादीनां विदुषां सान्ध्यि जाता। तदनु स्वर्गतस्य प्रसिद्धवैय्याकरणस्य पं० रामेश्वरप्रसाददाधिमथस्य सान्निध्ये जयपुरस्थ-लालहाथीमन्दिरेति प्रसिद्धे सनातनधर्मसंस्कृतविद्यापीठे सम्पन्ना । उच्चशिक्षायैग्रसौ जयपुरस्थमहाराज.संस्कृतकालेजं प्रविष्टः, तत्र च भारतप्रसिद्धविदुषः पं० श्रीपट्टाभिरामशास्त्रिणः सान्निध्ये मीमांसादर्शनमधीतवान् । शास्त्रिपरीक्षामुत्तीर्य्यासौ कालेजेऽस्मिन्नेवाध्यापकपदे नियुक्तः । गुरुचरणानुरक्तेनानेन मीमांसादर्शन एव प्रथमश्रेण्यामाचार्योपाधिर्लब्धः । "मीमांसा-दर्शनाभिधं" शोधप्रबन्धमाधारीकृत्य राजस्थान-विश्वविद्यालयतः 'पी एच. डी' त्युपाधिश्चाधिगतः ।

स्वातन्त्र्योत्तरं संवृत्ते देशविभाजने पञ्चनदसिन्धादिप्रदेशेभ्यः समागतानां पुरुषार्थिनां राष्ट्रभाषाज्ञानायग्रसौ जयपुरनगरे भारतीयसाहित्यविद्यालयं स्थापितवान्। कार्येणानेनास्य यशः समाजसेवाक्षेत्रे प्रासरत् । ग्रस्य कार्यकौशलेन प्रभावितैः म० म० श्रीगिरिधरशर्मचतुर्वेदमहाभागैरसौ प्रथमं राजस्थानसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनस्य तदन्तरञ्च ग्रखिल-भारतीय-संस्कृत-साहित्य-सम्मेलनस्य कार्यं कर्तुमाज्ञाप्तः । ग्रनेनापि सफलतया सम्मेलनकार्यं प्रसारितम् । ग्रस्य महामन्त्रित्वे संस्कृतक्षेत्रे ग्रनेकानि महत्त्वपूर्णानि कार्याणि संवृत्तानि । तेषु कतिचन प्रमुखानि अधस्तान्निर्दिश्यन्ते—

(1) सम्मेलनस्य स्वर्णजयन्तीसमारोहः महतोत्साहेन नवदिल्लीस्थे विज्ञानभवने समजायत

(2) भारतस्य राजधान्यां केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठस्य स्थापना संस्कृतपुस्तकालयस्य प्रवर्तना च

(3) संस्कृतशताब्दीग्रन्थस्य प्रकाशनयोजना, तस्याः क्रियान्वितिश्च

(4) केन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठस्य तत्वावधाने ग्रन्थानां प्रकाशनम्

(5) शारदीयज्ञानमहोत्सवस्य सम्मानना

साम्प्रतमसौ बहूनां सारस्वतसंस्थानानां प्रामुख्यं बिभर्ति । तेषु राष्ट्रियसंस्कृत-संस्थानस्य निदेशकत्वं राजस्थानसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनस्योपसभापतित्वं राजस्थानसंस्कृताकादम्याश्चाध्यक्ष्यमुल्लेखनीयानि। महानुभावोऽयं बहुभिः संस्थाभिरनेकधा सम्मानितः। जयपत्तनेऽखिलभारतीयसंस्कृतशिक्षासम्मेलनस्याधिवेशनद्वयममुना समायोजितम् ।

उत्तरप्रदेशसर्वकारेणासौ दशसहस्ररूप्यकाणामुपहारेण सम्मानितः। उदयपुरस्थ-मेवाड़फाउण्डेशनेनासौ त्रिसहस्ररूप्यकाणां हारीतपुरस्कारेण पुरस्कृतः । 1984 वर्षे महामहिमभारतराष्ट्रपतिना "राष्ट्रपतिपुरस्कारेण" सभाजितः ।

राजस्थानममुष्यसंस्कृत-सेवया गौरवान्वितं वरीवर्ति । महानुभावस्यास्य सुस्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं च समभिलषामः । □

संस्कृत के नये क्षितिज

—कमला वशिष्ठ

प्राचार्य, राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ,
शाहपुरा बाग, जयपुर

- रूसी भाषा में 'श्रीमद्भगवद्गीता', 'ऋग्वेद' और 'अथर्ववेद' उपलब्ध
- चीनी भाषा में 'मनुस्मृति' प्राप्य
- मंगोल भाषा में कालिदास का 'मेघदूत' अनूदित
- 1985 में फिलाडेल्फिया (अमेरिका) में छठा विश्व संस्कृत सम्मेलन आयोजित
- 1985 में पश्चिम बर्लिन में विश्व संस्कृत कवि सम्मेलन आयोजित
- स्विस विद्वान् एरिकवान के अनुसार संस्कृत साहित्य में 'नक्षत्र-युद्धों' का वर्णन उपलब्ध
- लुसियाना विश्वविद्यालय, अमेरिका के इलेक्ट्रोनिक्स प्रोफेसर द्वारा संस्कृत सर्वश्रेष्ठ कम्प्यूटर भाषा घोषित
- शिमला में 'संस्कृत भवन' की स्थापना
- इलाहाबाद उच्चन्यायालय के न्यायमूर्ति श्री बी. एल. यादव द्वारा संस्कृत में अब तक सात निर्णय दिए जा चुके हैं
- विधिमंत्री भारत सरकार द्वारा भारतीय संविधान के संस्कृत संस्करण का विमोचन
- वर्तमान में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, जगन्नाथ विश्वविद्यालय, पुरी कार्यरत हैं तथा शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय केरल में होगा। इस पर 13.43 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है।
- 1981 का एक लाख रुपये का विश्वभारती संस्कृत पुरस्कार श्री करपात्रीजी की कृति "वेदार्थ पारिजातम्" पर तथा 1982 का एक लाख रु० का पुरस्कार पं० श्री रघुनाथ शर्मा की कृति "वाक्यपदीय की अम्बाकर्त्री व्याख्या" पर प्रदत्त।
- चैकोस्लोवाकिया में चलने वाले 20 भाषा विवरण शिक्षण विद्यालयों में 17000 विद्यार्थी विदेशी भाषाओं का अध्ययन कर रहे हैं–इनमें संस्कृत अत्यन्त लोकप्रिय है तथा संस्कृत पढ़ने वालों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।
- चीनी विश्व विकास के मुख्य सम्पादक श्री जिनवान के अनुसार चीनी भाषा एवं संस्कृति पर संस्कृत की गहरी छाप है। चीनी पौराणिक ग्रन्थ "जिन बन्वाइ-सुन" भारतीय "सांख्य" का ही चीनी रूपान्तर है। वहाँ के पौराणिक पात्र "हनुमान्" से प्रेरित हैं। परार्थ शास्त्र जैसे मौलिक ग्रन्थ चीन में सुरक्षित हैं–जबकि भारत में इनकी मूल प्रति उपलब्ध नहीं।

गौरव ग्रंथों की जननी : संस्कृत

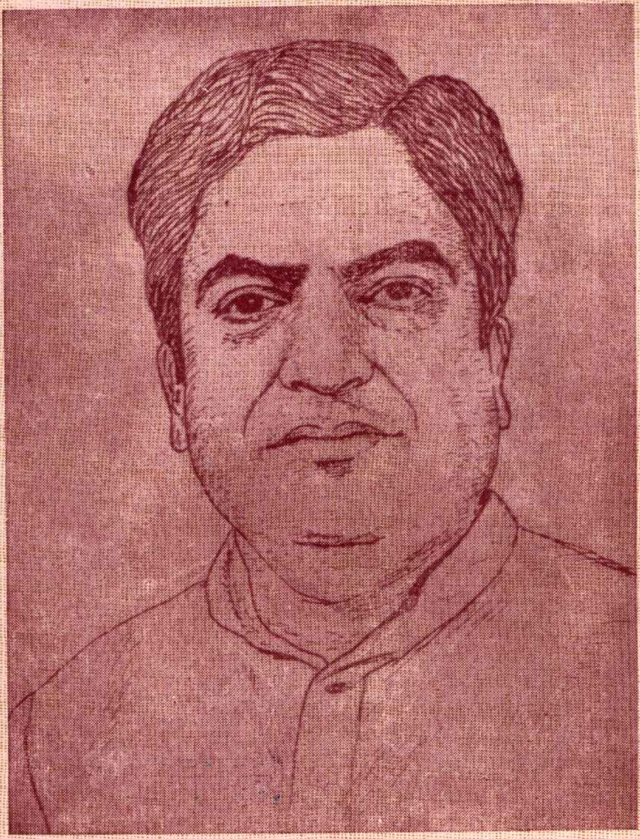

'संस्कृत, हमारी संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य का स्रोत है। यह हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। शताब्दियों की सामाजिक उथल-पुथल भी इसको छिन्न-भिन्न नहीं कर पायी। यही वह भाषा है; जिसने मानव को वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत और शाकुन्तल दिये हैं। मेरी कामना है कि संस्कृत-शिक्षा और उसके विकास की योजनाएँ अनवरत विकासमान रहे।'

—मोहनलाल सुखाड़िया
अध्यक्ष
राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन

28 अगस्त, 1977

● प्रकाशक : राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलनम् शाहपुरा बाग, जयपुर

● मुद्रक : श्री शंकर आर्ट प्रिण्टर्स, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

संस्कृत : संस्कृति का मूल

संस्कृत और भारत के प्राचीन गौरव का सम्बन्ध अटूट है। संस्कृत के ज्ञान के बिना हमारी संस्कृति, साहित्य, प्रादेशिक भाषायें, कलायें और इतिहास का वास्तविक ज्ञान अपूर्ण है। संस्कृत वस्तुतः भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मूल है।

विश्व की भाषाओं में संस्कृत ने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे ग्रंथों ने हजारों वर्षों से भारत की हर पीढ़ी की जिन्दगियों का तानाबाना बुना है।

भारत की सांस्कृतिक ज्योति को जलाये रखने के लिए संस्कृत भाषा को समृद्ध बनाना है— ताकि अतीत के गौरव के साथ वर्तमान और भविष्य की परिकल्पनाओं का योग हो सके।

—इन्दिरा गाँधी

25/-